दनदना

[उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत]

उपन्यासकार

यज्ञदत्त शर्मा

: १ :

मेरठ-पुलिस-लाइन का ठाट भारत के सब जिला-पुलिस-लाइनों से निराला था। वहाँ के अफ़सर और सिपाही सभी शौकीन थे। वहाँ के अफसरों और सिपाहियों में आपसी प्रेम भी कमाल का था। क्या मजाल जो वहाँ का कोई अफसर अपने किसी सिपाही को आँच आजानेदे, या कोई सिपाही अपने अफसर की आज्ञा का उलंघन करे। पुलिस के नाम और उसकी शान पर हर अफ़सर, हर सिपाही, जानदेता था।

सिपाही यों एक-से-एक जीदार और रंगीला था लेकिन रामदयाल अफ़सरों के अधिक सिरचढ़ा और मुँह लगा था। आजकल वह पुलिस-लाइन में था। एस. पी. से लेकर दीवान तक, सभी उसे मित्रता की दृष्टि से देखते थे। मित्रता का अर्थ यह था कि वह समय-वे-समय सभी के साथ हमप्याला-हमनिवाला होतारहता था।

पुलिस-लाइन में जो उत्सव होते थे उनका प्रबन्ध उसीके हाथों में रहता था। अफ़सरों के लिए शराब और उत्सव के अवसर पर नृत्य-संगीत का प्रबन्ध करना उसीका काम था। ये दोनों काम रामदयाल अपनी काली मूँछों पर शान से मरोड़ीदेकर करता था। आज उसने दारोगाहातिमसिंह से कहा, "केवल ये ही तो दो काम मुझे दिए हैं हुजूर ने। ऐसा प्रबन्ध कियाजाएगा कि आप भी वाह-वाह करउठें। क्या एस.पी. साहब भी आरहे हैं कल के उत्सव में?"

"मेमसाहब के साथ आरहे हैं। उनकी मेमसाहब विलायत से आई हैं। इसी उपलक्ष में यह पार्टी दीजारही है। मेमसाहब को डाली देनी है।" हातमसिंह बोले।

"तो हुजूर! डालीदेने का काम रामदयाल के ही हाथों से होनाचाहिए।"

"यह काम तू नहीं करेगा तो और कौन करेगा? लाइन में एक तुझमें ही इतनी योग्यता है कि डाली का उचित प्रबन्ध करसके।"

रामदयाल के सीने में उभार आगया। उसकी छाती फूलकर दो इंच और चौड़ीहोगई। वह गर्व के साथ उभरकर बोला, "दारोगाजी

तो आपने बहुत किए और देखे हैं लेकिन कल का उत्सव भी देखना। बड़ी बात नहीं कहता आपसे, लेकिन इतना तो आप समझ ही लें कि जिसपर भी दृष्टि रखदूँगा, बिंधीहुई चलीआएगी।"

दारोग़ाजी मुस्कराकर यह कहतेहुए दूसरी तरफ को चलदिए, "अच्छा जाओ, काम करो। आज और कल की परेड से तुम्हें छुट्टी दीजाती है, परन्तु प्रबन्ध में कमी न आए।"

रामदयाल मस्ती में झूमता और गुनगुनाताहुआ अपनी बारक को चलदिया। बारक में पहुँचकर उसने देखा कि उसके पासवाली चारपाई पर उसका मित्र करीमखाँ लेटाहुआ बीड़ी पीरहा था और गारहा था, "माशूक बेवफ़ा हैं अबके ज़मानेवाले,"

"सच कहा है किसी शायर ने मित्र क़रीमखाँ!" क़रीमखाँ की कमर थपथपातेहुए रामदयाल बोला, "परन्तु उस्तादों ने भी वे फन्दे तैयार किए हैं कि बेचारा माशूक एक बार फन्दे में गर्दन डालभरदे, बस फिर वह जीवन-भर को यारों का दास होगया।"

क़रीमखाँ के बदन में रामदयाल को देखते ही ताजगी आगई और वह की बात अनसुनीकरके बोला, "क्या आज परेड नहीं है तुम्हारी?"

"है क्यों नहीं, परन्तु जो दर्द देता है, दवा भी वही करता है। यदि परमात्मा ने लाइन में भेजने का दुर्भाग्य दिया था तो हातमसिंह जैसा जीदार अफ़सर भी उसने यहाँ भेजदिया है।" मुस्कराकर रौबीली मूँछों पर तनाव चढ़ाताहुआ रामदयाल बोला।

"दारोगा हातमसिंह के क्या कहने? हीरा-है-हीरा।" क़रीमखाँ बोला।

"बड़े-बड़े पीनेवालों के साथ रहचुका हूँ क़रीमखाँ! लेकिन जो कमाल हातमसिंह में है वह कम आदमियों में देखने को मिलेगा।" हातमसिंह की वीरता और दिल खोलकर पीने तथा उसे पचाजाने की प्रशंसा करतेहुए रामदयाल का दिल गुलाब की तरह खिलउठा।

"सुना है कल कोई जशन होगा और उसमें एस. पी. साहब भी तशरीफ़ लारहे हैं। उनकी मेमसाहब विलायत से आई हैं।" क़रीमखाँ ने पूछा।

"यही तो बात है जनाब! उसी के प्रबन्ध के लिए हमें आज की परेड से छुट्टी मिली है। पार्टी के लिए शराब और नाच-गाने का प्रबन्ध करने का

काम दारोग़ाजी ने मुझे सौंपा है।" गर्व के साथ रामदयाल बोला।

"तब तो मज़ा आगया यार रामदयाल! अपने लोगों की भी ठाटदार दावत उड़ेगी। यार के हाथों में जब समंदर लहराएगा तो क्या दो-चार कतरे यारों के सूखे हलक़ में नहीं पड़ेंगे?"

"क्यों नहीं पड़ेंगे यार क़रीमख़ाँ! प्रबन्ध तो सब तुम्हें ही करना है। परन्तु अब समय नष्ट करने से काम नहीं चलेगा। आज-ही-आज का तो दिन है अपने पास।" रामदयाल ने कहा।

"आज-आज में तो दुनियाँ बदली जासकती रामदयाल! तेरी दिलरुबा रामप्यारी भी क्या याद रखेगी कि तूने उसकी इतने बड़े-बड़े अफ़सरों से मुलाकात कराई। अफ़सरों के साथ-साथ शहर के रईसों में भी उसकी रप्त-ज़प्त बढ़ेगी। वह तेरी एहसानमन्द है।" क़रीमख़ाँ बोला।

"एहसामन्दी की बात जानेदो यार! दुनियाँ में कोई किसी का एहसान-मन्द नहीं है। बस चलतीजारही है दुनियाँ और उसीमें हम भी बहते जारहे हैं। गुपचियाँ लगातेजारहे हैं। कभी उन गुपचियों में दम घुटने लगता है और कभी आनन्द आनेलगता है। जब मज़ा आता है तो मुँह से निकलता है, 'परमात्मा तेरी कृपा है' और जब दम घुटने लगता है तो मन कहता है कि इस जीने से तो मरजाना अच्छा है।" रामदयाल तनिक दुःखी होकर बोला।

"मालूम देता है रामप्यारी से इधर कुछ नाचाकी चलरही है राम-दयाल!" यह कहकर क़रीमख़ाँ मुस्कराया। "इसीलिए ये फ़िलासफ़ी छाँटी जारही है।"

रामदयाल एक लम्बा साँस भरकर बोला, "क़रीमख़ाँ! रामप्यारी के भी अब पर लगनेलगे हैं। वह दिन तुम्हें याद है जिस दिन उस फटी चार-खाने की बदबूदार धोती और फटी कमीज में नंगे पैर मैंने इसे उस दस नम्बरी बदमाश के चंगुल से छुड़ाया था।"

"अरे! कल-परसों की ही तो बात है। क्या इतनी जल्दी चीजें भूली जा सकती हैं? लेकिन तेरा खयाल है कि वह तुझसे नाराज है। तू सच जान, वह जान देती है तुझपर। जरा नखरा करना ते... अदा।"

रामदयाल गुनगुनाया :

"किसी की जान जाती है,
किसी की दिल्लगी ठहरी।"

दोनों मित्रों ने अपने चारखाने के तेहमद बाँधलिए। ऊपर वर्दी की कलफ़दार नुकीले कालरोंवाली कमीजें पहनीं और पैरों में पेशावरी चप्पलें। हाथों में बेंत पर चमड़ा चढ़े दो गोल डण्डे लिए और शान के साथ पुलिस-लाइन से निकले। पहले शराब की दूकान पर पहुँचे। वहाँ उन्हें आवभगत के साथ बिठायागया। ये थे कांस्टेबिल ही परन्तु ठेके का मुंशी बोला, "आइए दीवानजी! बैठिए।" और गद्दी छोड़कर खड़ाहोगया।

"ठेकेदार साहब कल दावत है आपकी।" रामदयाल बोला।

तभी ठेकेदार भी वहाँ आगया।

"कैसी दावत है दीवानजी?" ठेकेदार ने पूछा।

"एस. पी. साहब की मेमसाहब को पार्टी दी जारही है। तुम्हें शराब का प्रबन्ध करना है। मेम साहब के लिए एक बोतल एक्शा नं० वन...।"

यह सुनकर ठेकेदार का दिल अन्दर-ही-अन्दर घुटगया। तीन चार सौ की चपत लगगई, परन्तु फिर भी ऊपर से मुस्कराकर ही बोला, "तुम मालिक हो दीवान जी! आपकी बदौलत ही तो हमारा कारोबार चलता है। लेकिन क्या......?"

"सब मुफ्त नहीं होगा ठेकेदार, लेकिन इस समय, मुफ्त ही समझो। दारोगा हातमसिह से याराना करादूँगा। कौन जाने कब और कहाँ क्या काम आएँ। विलायती शराब की बोतल मेमसाहब को तुम अपने हाथ से पेश करना। एक बार मुफ्त देकर हमेशा के लिए अपनी ग्राहक बनालेना उन्हें। सुना है बड़ी पीनेवाली हैं।" रामदयाल बोला।

"क्यों मराजारहा है ठेकेदार! पिछले जुम्मे की बात भूलगया। अगर मैं उस वक्त यहाँ न आजाता तो वे दस नम्बरी गुण्डे तेरी दूकान में एक भी बोतल सहीसलामत न छोड़ते।" रौब के साथ करीमखाँ बोला।

"यदि तुम्हें कठिनाई हो, तो मैं दूसरा प्रबन्ध करूँ। मैं तो तुम्हें अपना आदमी समझकर यहाँ चलाआया हूँ, वरना इतने पैसे तो दारोगा हातमसिह की एक भेंट के होते हैं लाला! कौन जाने महीने में कै-कै बार भरनेपड़ें?" अकड़ के साथ खड़े होने का उपक्रम करतेहुए रामदयाल ने कहा।

यह सुनकर ठेकेदार को पसीना आगया। रामदयाल की घुड़की सहन करना सरल काम नहीं था। वह जानताथा कि उससे बिगाड़कर वह अपनी दूकान नहीं चलासकता। वह गिड़गिड़ाकर बोला, "दीवानजी, आप तो तनिक-सी बातपर गुस्सा होगए। हम तो आपको ही माई-बाप समझते हैं। फिर आपसे अपने दुख-दर्द की बात न कहें तो और किससे कहनेजाएँ ?"

"फिर कह तो दिया हमने कि पीछे सब समझलेंगे। क्या स्टाम्प लिखकर दें दो-चार-सौ रपूलियों का ? किसी मूजी को पकड़कर दो-चार-सौ दिला देंगे तुम्हे। होसकता है आज-कल में ही कोई काठका उल्लू फँसजाए।" उसी रौबीले अंदाज़ के साथ रामदयाल बोला।

ठेकेदार ने रामदयाल की मिन्नत करके उसे वहीं बिठालिया और फिर मुस्कराकर बोला, "आज तो शंतरे को पिएँगे दीवान जी !"

"नहीं आज हम नहीं पिएँगे।" ऊपरी अकड़ के साथ रामदयाल बैठता हुआ बोला।

"अरे पी भी लो यार !" करीमखाँ बोला। उसके होठ शराब का लबालब प्याला छूने के लिए लपलपारहे थे। "ठेकेदार भी अपना यार है। इससे तुम नाराज न हुआ करो रामदयाल ! और हाँ ! ये बातें दारोग़ाजी से न कहना, वरना लाला उनकी नज़रों से गिरजाएँगे। हमें लाला को चढ़ाना है अफ़सरों की नज़रों में।"

"करीमखाँ, सच जानो, मैं तो स्वयं इनका बहुत ध्यान रखता हूँ, परन्तु यह कभी-कभी साधारण-सी बातोंपर मन ख़राब करदेते हैं।" नर्म पड़तेहुए रामदयाल बोला।

शंतरे की बोतल खुलगई। रामदयाल और करीमखाँ ने देखते-देखते पूरी बोतल चढ़ाली। उसके सरूर में उनका बदन फूल जैसा हल्का होगया। उनकी आँखों में खुमारी के लाल डोरे खिचगए। उनका मन मौज की बहारों में नाँच उठा।

"अच्छा ठेकेदार ! अब यार लोग चले।" कहकर करीमखाँ रामदयाल के साथ तनिक सँभलकर खड़ाहोगया।

"शराब की बोतलें आज रात को ही [illegible] में पहुँचजानीचाहिएँ !" रामदयाल मूछों पर ताव देताहुआबोला।

...रहें दीवानजी ! लेकिन मुझ गरीब का भी जरा ख़याल रखना।" हाथ जोड़कर ठेकेदार बोला।

"मरे मत जाओ ठेकेदार ! अधिक पैसा जोड़कर जो तिजोरियाँ भरते जारहे हो,वे साथ नहीं जाएँगी। मैं तो कहता हूँ कि एक और बोतल खोलकर तुम भी पीओ। दुनियाँ में जो आनन्द लियाजासके लेलो ठेकेदार ! पता नहीं दूसरे जनम में आदमी की जून मिले या न मिले।"

इतना कहकर बिना ठेकेदार के उत्तर की प्रतीक्षा किए रामदयाल करीमखाँ की पीठ ठोंकताहुआ बोला, "करीमखाँ ! अब चलो, यहाँ बहुत समय नष्ट होगया। असल चीज़ का प्रबन्ध करना तो अभी रहाही है।"

"वह भी होजाएगा रामदयाल ! तेरा सितारा आजकल बुलन्दी पर है। जिस चीज के लिए तू 'हाँ', करदे वह 'हाँ' होहीजाती है। दारोगा हातमसिंह तेरे इशारे पर नाचते हैं।" करीमखाँ लड़खड़ातेहुए बोला।

"अरे नाचते क्या यूँही हैं, नचाने में भी खर्च करनापड़ता है। तूने देखा ... कभी मुझे अपने घर एक कौड़ी भी भेजतेहुए? जो कमाता हूँ यारबाशी में खर्च ...रदेता हूँ। दारोगाजी और रामप्यारी, रामप्यारी और दारोगाजी, बस अपनी ...माई तो इन्हीं दो के लिऐ हैं।" रामदयाल बोला।

दोनों झूमतेहुए बाज़ार की ओर चलपड़े। बातों-बातों में रास्ता तै होगया ... दोनों रामप्यारी के कोठे के नीचे जाखड़ेहुए। परन्तु रामदयाल आखिर ... बहाने से रामप्यारी के कोठे पर जाता। कल ही तो वह वहाँ से नाराज़ ...रगया था।

रामदयाल ने कुछ रुपया इधर-उधर से करके रामप्यारी का वह काम ...ादिया था। तफ़री के लिए अपने कुछ मित्रों को वहाँ लाकर कुछ आय ...धन भी उसीने बनाया था। परन्तु वह बराबर अपनी जेब से पैसे देता ...ह उसके लिए कठिन था। आखिर था तो बेचारा साधारण पुलिस ...विल ही।

...ब वह पुलिस-चौकी पर था और शहर के चौरस्ते पर उसकी ड्यूटी थी, ... एक रईस आदमी था; वह बीड़ी नहीं, सिग्रेट पीता था; एक पैसे का ... पैसे का पान खाता था ; हर ताँगेवाला उसे सलाम करके चलता ... बदमाश उसके नाम से थर्राता था, उससे मित्रता रखने की ताल में

रहता था; कोई जुआ सट्टा खेलनेवाला बिना उसकी जानकारी के एक दाव नहीं लगासकता था। परन्तु जबसे वह लाइन में गया था, उसकी आय सूखा वेतन-मात्र ही रहगई थी। उस वेतन में क्या तो वह अपने शौक पूरे करता और क्या रामप्यारी को......।

"करीमखाँ ! मैं ऊपर पर नहीं जाऊँगा और यह भी जानले कि आज यहाँ तेरे कहने से चलाआया हूँ। यदि आज यहाँ से अपमानित होकर जानापड़ा तो फिर इसे मेरठ में नहीं रहनेदूँगा।"

रामदयाल अपने को मेरठ का राजा समझता था। उसकी इच्छा के विरुद्ध वहाँ बसना, उसके विचार से सम्भव नहीं था।

"अमा क्या कहनेलगे तुम भी यार रामदयाल ! रामप्यारी यह सुनकर कि तुम नीचे खड़ेहो, कोठे से उतरी न चलीआए, तो तब कहना ? क्या शामत ने धक्का दिया है उसको ?" यह कहताहुआ करीमखाँ रामप्यारी के कोठे पर चढ़गया।

रामप्यारी के कोठे पर ठाट की मैफिल जमी थी। करीमखाँ भी जाकर एक कोने में खड़ा होगया। शौकीन तमाशबीन फूलों के गजरे हाथों में लिए, गोल तकियों से कमर लगाए गोलाकार बैठे थे। रामप्यारी नाचने के लिए तय्यार थी।

करीमखाँ ने रामप्यारी को एक ओर बुलाकर कहा, "नीचे रामदयालजी खड़े हैं। कल लाइन में जशन है। एस० पी० साहब की मेमसाहब को पार्टी दीजारही है। उसी में मुजरे के लिए तुम्हें मदू करने आए हैं।"

"कल तो मुझे एक सेठ के यहाँ जाना है। वहाँ जाना बहुत आवश्यक है। पाँच सौ रुपया पेशगी देगए हैं सेठ साहब।" इतना कहकर और कुछ भी कहेबिना रामप्यारी मुस्कराताहुई अपने कमरे में चलीगई।

करीमखाँ देखता-का-देखता रहगया। रामदयाल के बारे में एक शब्द भी रामप्यारी ने नहीं कहा। उसके कोठे के नीचे कौन खड़ा था, इसकी उसने कोई परवाह नहीं की। उसके सम्बन्ध अब बड़े लोगों से बनचुके थे, फिर वह कान्स्टेबिल रामदयाल की भला क्या परवाह करती ?

करीमखाँ उतरासा मुँह लेकर कमरे से नीचे उतरआया। उसका चेहरा उतराहुआ देखकर रामदयाल बोला, "आखिर हुई न [illegible]

नहीं आई नीचे उतरकर।" फिर कुछ ठहरकर बोला, "चलो कोई बात नहीं। यह फिर देखा जाएगा। इस समय कलके जशन का प्रवन्ध करना है।"

वहाँ से चलकर दोनों मित्र गुलाब के कमरे पर गए। गुलाब रामप्यारी के बाद दूसरे नम्बर की नाँचने-गानेवाली थी मेरठ में। वह यह भी जानती थी कि उस बाजार में रामप्यारी को लाकर जमाना रामदयाल का ही काम था। रामदयाल को देखकर वह आदरपूर्वक बोली, "आज दीवानजी इस नाचीज के ग़रीबखाने पर कैसे भूलकर आगए?"

"भूलकर नहीं गुलाब, मैं जानकर यहाँ लाया हूँ इन्हें। जा तो यह रामप्यारी के ही यहाँ रहे थे लेकिन मैंने इनसे कहा कि आप अफ़सर हैं और अफसर को सबका ख़याल रखनाचाहिए। गुलाब क्या रामप्यारी से किसी बात में कम है, हुस्न में, नाज़ोअंदाज़ में, नाच-गाने में, मुस्कराहट में, सलीके और बर्त्ताव में,बल्कि मैं तो यही कहूँगा कि वह हर बात में उससे बढ़ी-चढ़ी है। यह एक खांदानी पेशेवर है और रामप्यारी एक जंगल का फूल, जिसे दीवानजी ने अपनी मेहरबानी बख्शकर इस गुलशन में खिलादिया है।"

गुलाब अपनी प्रशंसा करीमखाँ के मुंह से सुनकर खिलउठी और एक अंदाज से बोली,"तशरीफ रखिए दीवान जी! मैं जिस क़ाबिल भी हूँ, आपकी [illegible] के लिए तैयार हूँ। आपका हुक्म हमेशा मेरे सिर-आँखों पर रहेगा।"

गुलाब ने दूसरे दिन जशन में आना स्वीकार करलिया। रामदयाल और करीमखाँ बात पक्की करके पुलिस-लाइन लौटे।

करीमखाँ मस्त था क्योंकि सब प्रबन्ध ठीक होगया था, परन्तु रामदयाल के दिल में रामप्यारी ने उसका अपमान करके जो काँटा गुभादिया था वह कसकरहा था, दर्द पैदा कररहा था। उस दर्द को दबाने के लिए वह लौटते समय फिर शराब के ठेके पास से निकला और शंतरे की देसी शराब का एक और अद्धा लेकर पीगया। शराब का नशा और तीव्र होगया और उसके मन के सब विचार तथा उसकी सारी चेतना,मादकता की गोदमें आराम से सोगए।

: २ :

जशन बहुत शानदार रहा। दावत भी खूब मजे की रही और मुजरा भी लाजवाबरहा। उसकी सभी दर्शकों ने प्रशंसा की और प्रबन्ध की सराहनाकी। एस० पी० साहब ने भी प्रशंसा की और उनकी मेमसाहब ने भी।

हातमसिंह मुस्कराकरबोले, "रामदयाल! तुम्हारी यह गुलाब भी अच्छा नाचलेती है। लेकिन आज रामप्यारी को क्या होगया? मैं तो समझता था कि वही आएगी।"

"सरकार ज़रा नखरे होगए हैं आजकल उसके। आप जानते ही हैं कि रामदयाल किसी का नखरा सहन करना नहीं जानता। यदि हुजूर मुझे एक बार फिर उस चौकी पर भेजदें तो देखिए क्या गत बनाता हूँ उसकी।" त्यौरी चढ़ाकर रामदयाल बोला। रामदयाल की आँखों के डोरे और भी लाल होगए थे यह बात कहतेहुए।

"जाने भी दे इन बातों को रामदयाल! आज तो एस० पी० साहब से हाथ मिलवादिया तेरा। मेमसाहब को भी एक्शा नम्बर वन की बोतल पर दृष्टि डालकर आधी बोतल का नशा होगया था। अब तू जो चाहेगा, वही होगा रामदयाल! मेमसाहब को प्रसन्न रखना तेरा काम है।" हातमसिंह बोले।

दारोगा हातमसिंह की भी प्रशंसा कम नहीं हुई। एस० पी० ने दो-तीन बार उनके ऊपर अपनी कृपा-दृष्टि डाली।

"मेमसाहब को आप चिंता न करें दारोगाजी! शराब का शौकीन मेरा मित्र न बने, यह असम्भव है।" गर्व के साथ रामदयाल बोला। रामदयाल के सीने में उभार था और चारों ओर से प्रशंसा सुन-सुनकर उसमें और भी हवा भरगई थी।

रामदयाल अभी तक मामूली कान्सटेबिल ही था परन्तु उसकी ख्याति पूरे ज़िले के पुलिस-अफ़सरों, दारोगाओं और दीवानों में हो

से सब परिचित होगए थे कि वह एस० पी० साहब की मेमसाहब के पास सीधा विना रोक-टोक के जासकता था और अपनी हर वात साहब के कानों तक पहुँचासकता था। पुलिस-लाइन में अभी तक रामदयाल का केवल एक ही मित्र था, करीमखाँ। अब मित्रों की संख्या बढ़नेलगी। लोगों को रामदयाल में मिठास आनेलगा। रामदयाल इन नए मित्रों को खूब पहचानता था। वह किसी का काम करने से पूर्व अपने चार काम उससे करालेने की कला में पूर्ण दक्ष होगया था।

रामदयाल अब पुलिस-लाइन से बदलकर फिर उसी चौकी पर पहुँचगया था जिसके पास वेश्याओं का बाजार पड़ता था। चौकी के दीवान खान अब्दुलबेग से उसकी पुरानी मित्रता थी। रामदयाल जैसे सिपाही को पाकर अब्दुलबेग बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि उसके साथ शायद कभी उसे भी अपनी बात एस० पी० साहब के पासतक पहुँचाने का अवसर मिलसके। जिन्दगी बीतीजारही थी उसी दीवानी में। दारोगाई के कई अवसर उसके हाथ में आ-आकर निकलगए थे।

अब्दुलबेग की इस इच्छा को भाँपलेने में रामदयाल को तनिक भी समय न लगा। वह अब्दुलबेग के रहस्य की वात थी और किसी के रहस्य को जान-कर लाभ उठाना वह जानता था।

"चौकी के मालिक बनकर रहो रामदयाल! जब तक रोजनामचा मेरे हाथ में है, तुम्हारे सात खून माफ़ हैं।" दीवानजी बोले।

"आप भी जानते , दीवानजी! रामदयाल नमक-हलाल सिपाही। वह कभी किसी अफ़सर की कृपा को भुलाता नहीं। यहाँ आपकी मुझपर ...ना रहेगी तो ऊपर के कामों से आपको चिंता-मुक्त करदूँगा। आप जानते हैं कि मेमसाहब मुझपर कितनी दयावान् हैं।" रामदयाल बोला।

"भय्या रामदयाल! ये सब भाग्य की बातें हैं। दारोगा हातमसिंह के ...चढ़े सिपाही हो, इसीलिए तो एस० पी० साहब को डाली पेश करने का मौक़ा मिला। खुदा की कसम जो मौका तुम्हें मिला वह अच्छे-अच्छों को ...व नहीं होसकता।" रामदयाल की नामवरी पर अन्दर-ही-अन्दर कुढकर ...से प्रसन्नता प्रकटकरतेहुए दीवानजी बोले।

...चौकी की बारक में एक खाट पर रामदयाल का विस्तर लगा था। ...

ठाट के साथ दीवान जी का दामाद बनकर उसपर लेट लगारहा था। उसके मित्रों ने भी वहाँ आना-जाना प्रारम्भ करदिया था। वह चौकी, अन्य सिपाहियों के लिए चौकी थी लेकिन रामदयाल के लिए वह अपने गाँव की चौपाल थी, जिसपर बैठकर वह शान से हुक्का पियाकरता था। संध्या को करीमखाँ ने आकर पहले दीवान अब्दुलबेग को सलाम झुकाया और फिर उसके पास ज़मीन पर बिछी दरी पर बैठताहुआ बोला, "दीवान जी! क्या रामदयाल को कहीं काम से भेजा है आपने? दिखाई नहीं देरहा यहाँ।"

"अबे करीमखाँ! क्या बातें करता है तू भी? रामदयाल और काम पर जाएगा किसी के? अन्दर बारक में लेटरहाहोगा। वह भला किसका काम करने लगा है? काम करता, तो घर की ज़मींदारी छोड़कर कानिस्टबिली करता?"

"यह बात नहीं है दीवानजी!" करीमखाँ बोला, "आपकी बड़ी इज्जत करता है रामदयाल। यह सच है कि वह अच्छे-अच्छे दारोगाओं को भी मुँह नहीं लगाता, लेकिन सच जानिए कि आपका बड़ा ख़याल रखता है।"

करीमखाँ की बात सुनकर दीवान अब्दुलबेग की आत्मा प्रसन्न होगई। रोजनामचे में हस्ताक्षर भर करने से रामदयाल की ड्यूटी पूरी होनेलगी थी। वह एक सप्ताह में सम्भवतः एक बार भी वर्दी पहनकर किसी जगह ड्यूटी पर खड़ा नहीं होता था। अपनी चौकी और बारक की खाट को छोड़कर वह बहुत कम इधर-उधर जाता था।

रामदयाल को अवकाश ही कहाँ था ड्यूटी देने का। वह तो इलाके के झंझटों और उनके फैसलों में ही फँसारहता था। जबदेखो तब उसकी अदालत चलतीरहती थी।

ये झगड़े तीन प्रकार के होते थे। पहली प्रकार के झगड़े वह स्वयं निपटा देता था, दूसरे प्रकार के झगड़ों का निपटारा दीवान अब्दुलबेग को बीच में डालकर कियाजाता था तथा तीसरे प्रकार के झगड़े दारोगा हातमसिंह की सहायता से सुलझाएजाते थे।

रामदयाल की विशेषता यही थी कि उसके झगड़े उससे आगे नहीं बढ़ने पाते थे। वह मिल-बाँटकर खाने के सिद्धान्त को माननेवाला था। स्वार्थ को वह अपने पास तक नहीं फटकनेदेता था। वह पैसे को हाथ

ा और उसे पानी की तरह वहाता था। उसके खुले दिल की उसके अ
ी सराहनाकरते थे।

रामदयाल के उसइलाके में आनेकी सूचना वहाँ विजली कीतरह फैलग
नाचने-गानेवालियों के वाजार में आज सनसनी थी। रामप्यारी को इस व
की सूचना मिली तो उसे पसीना आगया। रामदयाल के वे शब्द जो करीमख
ने उससे जाकर कहे थे, उसके कानों में वजरहे थे। उसके दिल की धड़क
वढ़गई थीं और वह भयभीत होउठी थी।

वह करीमखाँ के सामने गिड़गिड़ाकर वोली. "उन्हें प्रसन्न करना आपका
काम है मियाँ करीमखाँ ! क्या आप उन्हें एक वार यहाँ नहीं लासकते ?"

"क्या पगली होगई है रामप्यारी ! रामदयाल तेरे यहाँ आएगा। तेरा
दिमाग तो खराव नहीं होगया है। तेरे हुस्न का जादू अव रामदयाल पर नहीं
चलसकता। वह आदमी जितना रहमदिल है उतना ही संगदिल भी है। तूने
उसे ग़लत समझा है। किसी भी आदमी को वह सिर्फ एक वार ही परखकर
ेखता है, दो वार नहीं। वह कहचुका है कि रामप्यारी को अगर उसने उसी
टे हाल में मेरठ से न निकाला, जिस हाल में वह यहाँ आई थी तो, उसका
म रामदयाल नहीं।" करीमखाँ गम्भीरतापर्वक वोला।

उसी दिन रात्रि को रामदयाल ने रामप्यारी के कोठे पर उस सेठ के वेटे
, जिनके पिता के अभी कुछ दिन पूर्व देहान्त हुआ था और जिसके घरपर
मुजरे में जाने की कारण रामप्यारी ने पुलिस-लाइन के मुजरे में आने से
इन्कार करदिया था, वन्दी वनाया।

रामदयाल ने स्वयं वहाँ जाकर दो कांस्टेविलों को आज्ञा दी, "वन्दी
वनालो इस वदमाश को और रामप्यारी को भी। दोनों को हमारी चौकीपर
चलो।"

वात-की-वात में रामप्यारी के कोठे पर एकत्रित तमाशवीनों की भीड़ छट
। वे सव नौ-दो-ग्यारह होगए। जिस कमरे के वातावरण में अभी कुछ ही
पूर्व मधुर संगीत का स्वर गूंजरहा था और पैरों में वँधे घुंघरुओं की
र लहरारही थी, वहाँ रामदयाल के कर्कश शब्द गूंजरहे थे।
सेठ जी के पुत्र की दशा तो उस समय देखते ही वनती थी। उसके
वाइयाँ उड़रही थीं और दिल वैठनेलगा था

और सिर चकरानेलगा।

उसे क्या पता था कि रामप्यारी के घर [illegible] हथकड़ियों का फंदा बनजाएगा। उसकी [illegible] लगगया। एक शब्द भी वह नहीं बोलसका। [illegible] दबोचा जैसे चूहे को बिल्ली अपने पंजों में जकड़लेती है।

रामप्यारी गिड़गिड़ाकर रामदयाल के पैर पकड़कर बोली, "[illegible] इस बार मेरा अपराध क्षमा करदीजिए, [illegible] नहीं होगा।"

"काठ की हाँडी एक बार ही [illegible] है [illegible]!" [illegible] बोला और सिपाहियों को आज्ञा दी, "[illegible] क्या देखते हो? इसके हाथों में हथकड़ियाँ [illegible] हुए चौकी पर लेजाओ।"

"दीवान जी! इतने सख्त न बनो [illegible]!" [illegible] पड़ताहुआ सरल वाणी में बोला।

"बको मत, करीमखाँ!" रामदयाल [illegible] बोला, "[illegible] ही कहने से मैं यहाँ चला आया था और यह [illegible] कोठे के नीचे तक आने का कष्ट भी न किया। मेरे दिल की यह [illegible] जीवन में कभी बुझसकेगी?" रामदयाल बोला, "[illegible] है कि [illegible] मेरठ के बाजार में कैसे बैठसकेगी?"

"वह तो वाक़ई इसकी भूल थी रामदयालजी! लेकिन [illegible] तरह मुँह नहीं लगाजाता है। आप अपनी [illegible] और यह अपनी [illegible]। रामप्यारी लाख नालायकी करे लेकिन आपको अपनी उस [illegible] नहीं भूलजाना है, जो आपने इसपर की थी।" [illegible] रामदयाल की ठोड़ी में हाथ डालकर गिड़गिड़ाताहुआ बोला।

रामदयाल ने तनिक नर्म होकरकहा, "तो ठीक है, [illegible] को तो हवालात में बन्द करके ही दम लूँगा। इसी तरह के कुछ [illegible] ने इस बाजार में अशान्ति फैलाईहुई है। [illegible] करसकता। अपने क्षेत्र में मैं यह [illegible] नहीं [illegible]।" [illegible] रामदयाल ने मूँछों पर ताव दिया।

रामप्यारी फिर रामदयाल के पैरों पर गिरपड़ी और गिड़गिड़ाकर बोली 'दीवान जी ! इन्हें इस बार मेरे लिए छोड़दें। इनका कोई अपराध नहीं है। बेचारे गऊ आदमी हैं। इनकी आपसे जिसने शिकायत की है, वह ग़लत है। यह आपसे किसी भी तरह बाहर नहीं हैं।" रामप्यारी ने अन्तिम वाक्य में वह बात कहदी जिसका पाठ उसे रामदयाल ने ही पढ़ाया था।

करीमखाँ रामदयाल का संकेत पाकर रामप्यारी को अन्दर कोठे में ले गया और कुछ रहस्यपूर्ण बातें कीं।

रामप्यारी बोली, "करीमखाँ ! आपने दीवानजी से मुझे क्षमा करादिया, इसकेलिए मैं आपकी जीवन भर आभारी रहूँगी। अब कहिए इस सेठ के बच्चे को आप जैसा कहें वैसा पाठ पढ़ादूँ।"

"पाठ क्या पढ़ाना है इसे, नकद-नारायण की बात करो रामप्यारी ! इस समय तो रामदयाल पाँचसौ से एक कोड़ी भी कम लेनेवाला नहीं है।"

"पाँच सौ !" आश्चर्य से रामप्यारी ने कहा और फिर मुँह का भाव बदलकर बोली, "अच्छा करीमखाँ ! तुम भी क्या यादरखोगे रामप्यारी को। आज पाँच सौ ही न दिलवाए तो मेरा नाम भी रामप्यारी नहीं।"

ये बातें करके करीमखाँ कमरे से बाहर चलाआया।

रामप्यारी डबडबाई आँखोंसे बाहर आई और सेठ को कमरेमें लेगई उसके सामने रामप्यारी ने ऐसा मुँह बनाया कि मानो उसे करीमखाँ और रामदयाल असीम घृणा थी और जोकुछ वह कहरही थी वह उसके सम्मान की रक्षा के लिए कहरही थी। उसका हृदय उस समय अत्यन्त व्यथित था। वह सेठ पर अकारण आई उस विपत्ति से व्यथित थी। उसका हृदय टुकड़े-टुकड़े हुआजारहा था।

सेठ रामप्यारी की शोकपूर्ण दशा में देखकर बोला, "क्या बातें हुईं इन लोगों से रामप्यारी ? क्या चाहते हैं ये लोग ? क्या सजा करानाचाहते हैं ?"

रामप्यारी कलापूर्ण अभिनय के साथ बोली, "ये लोग बहुत कमीने हैं सेठ जी ! इनसे जान बचाने के लिए जितना चाँदी का जूता सफल होता है उतना और कुछ नहीं होता।" भयभीत स्वर में रामप्यारी ने कहा। वह काँपरही थी। उसके नेत्र सजल थे।

"जैसा तुम कहो, हम इस समय अपने मान की रक्षा के लिए वैसा ही

करेंगे। यहाँ से अगर ये कमीने हमारे हाथों में हथकड़ियाँ डालकर बाजार के बीच से लेगए तो हम कहीं मुँह दिखानेयोग्य न रहेंगे। इन लोगों ने हमारी आबरू पर हमला किया है।"

"इसमें क्या सन्देह है? यही तो मैं भी सोचरही हूँ।" रामप्यारी गम्भीरतापूर्वक बोली। "आपकी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिलजाएगी। मेरी तो खैर कोई बात नहीं है। मैं इस समय आपके लिए ही परेशान हूँ।"

"तो फिर हमारे विचार से इस समय इन्हें चार-पाँच सौ रुपया देकर खरीदलियाजाए। यह कैसा रहेगा?" बातों की दिशा बदलतेहुए सेठ बोला।

रामप्यारी ने सेठ की यह बात सुनकर आँखें उससे मिलाई तो वह मुस्कराउठा। अब उनकी सूरत पर कोई चिन्तान का आसार नहीं था। वह मुस्काराहा था।

अपनी सम्पत्ति की ओर उसकी दृष्टि गई और फिर उसने फटीचर रामदयाल की शक्ल देखी तो समझलिया कि वह खेल कुछ पैसों का ही था। रामप्यारी को सजाकर मेरठ के बाजार में उसी ने बिठाया था। यह बात सेठ का बेटा रामप्यारी के मुख से सुनचुका था।

उसके यहाँ आने के कारण एक दिन रामप्यारी ने उसके अपने कोठे के नीचे खड़े रहने की बात सुनकर भी वह उससे मिलने नहीं गई थी।

सेठ जहाँ एक ओर इस तमाशबीनी में फँसा था वहाँ [illegible] अपने काम की ओर से भी अचेत नहीं था। उसकी दोनों [illegible] कररही थीं।

सेठ के पिता मेरठ-जिले की अमन-सभा के [illegible] सभा के लिए बीस हजार रुपया [illegible] सेठ के बेटे को स्मरण होआई।

वह खड़ा-खड़ा गुनगुनानेलगा [illegible] "रामप्यारी! क्या कहूँ? मेरे [illegible] आज की इस घटना का फल दूसरा ही होता। इन [illegible] समय बरखास्त न करादियाहोता तो मेरा भी नाम [illegible] होता। अब इन बातों को जानेदो। इस समय तो तुम्हारा ही विचार ठीक है। इसके मुँह पर चाँदी का ही जूता मारनाचाहिए।"

रामप्यारी ने रुपया देने की बात रामदयाल की ओर झुककर कही थी क्योंकि अब वह उसके क्षेत्र की चौकी पर आगया था। इसलिए उसका झुकाव उसकी ओर होना स्वाभाविक ही था।

रामदयाल इस समय उसका मौजूदा अफ़सर था। उसकी बात हर अफ़सर मानता था।

सेठ दामोदर प्रसाद ने रुपया देदिया। रुपया लेकर रामदयाल सेठ दामोदरप्रसाद का मित्र बनगया।

कमरे के द्वार बन्द करदिएगए। जो दो कांस्टेबिल रामदयाल के साथ हथकड़ियाँ लेकर आए थे उन्हें दस-दस रुपए पुरस्कार देकर विदा करदिया गया और वहाँ रहगए सेठ दामोदरप्रसाद, रामदयाल, करीमखाँ, रामप्यारी और उसके साजिन्दे।

सेठ ने सोचा कि जब पाँच सौ रुपए में रामदयाल को खरीद ही लिया तो फिर क्यों न उसके मन की गहराई तक पहुँचाजाए।

गर्मी के दिन थे। बढ़िया जिनकी बोतलें मँगाने को उसने रामप्यारी के सामने एक सौ रुपए का नोट फेंकदिया और शराब आगई।

रामदयाल और करीमखाँ ने आज-जैसी शराब पहले कभी नहीं पीथी। देखी अवश्य थी कई बार और उनका मन भी ललचाया था, परन्तु वह इतनी मती थी कि वे पीने का साहस नहीं करसके थे। इतने पैसे खर्च करने की उनकी सामर्थ्य नहीं थी।

आज मुफ्त की शराब मिली थी। दोनों ने खुलकर पी, जी खोल कर पी, और पीते-पीते जब बदन हल्का होकर ऊपर को उड़नेलगा तो रामदयाल हँसकर बोला, "यार दामोदर! तूने मजेदार शराब पिलाई है आज। आज तू जो चाहे माँग, माँग सकता है। यह रामदयाल बैठा है तेरी बगल में। यह है तो एक साधारण पुलिस कन्सटेबिल ही परन्तु इस समय तू इसे अपने जिले के एस० पी० की नाँक का बाल समझ।"

सेठ दामोदरप्रसाद बोला. "तो मित्रता पक्की रही हमारी-तुम्हारी। तुम भी क्या याद रखोगे कि किसी सेठ से तुम्हारी मित्रता हुई थी।"

रामप्यारी के पैरों में बँधे घुंघरू धीरे-धीरे दोनों के कानों में रस घोलने लगे। शराब के नशे में रामप्यारी जब नृत्य करतीहुई उन दोनों के सामनेआई

तो सेठ दामोदरप्रसाद बोला, "रामप्यारी! हमने अब दीवान जी को अपना मित्र बनालिया है। आजसे इनकी भी खातिर उसी प्रकार होगी जैसी हमारे विशेष मित्रों की होती है।"

"उनसे भी अधिक!" रामप्यारी ने एक लहजे के साथ कहा और अपने बंकिम विशाल नेत्र रामदयाल के चेहरे पर फैलादिए।

रामदयाल के दिल पर सेठ दामोदरप्रसाद के शब्द तीर की तरह लगे। उनका अर्थ यह था कि रामप्यारी का मेरठ में उस समय स्वामी सेठ दामोदरप्रसाद था, रामदयाल नहीं। रामदयाल अपने आपको रामप्यारी का स्वामी मानता था। फिर सेठ ने वे शब्द क्यों कहे?

रामदयाल ने उस आघात को मुस्कराते हुए ही सहन किया और मुस्करा कर ही बोला, "कोई बात नहीं सेठ दामोदरप्रसाद! हम तमाशबीन अफ़सर ठहरे। इश्क लड़ाना अपना काम नहीं है। तुम्हारी रामप्यारी तुम्हें मुबारिक हो। हम मेहमान बनना ही पसन्द करेंगे।"

रामप्यारी दीवान रामदयाल के निकट आकर उसकी ठोड़ी में हाथ डाल-कर बोली, "बस रूठगए! कितने भोले हो रामदयाल! सचमुच तुम्हें दुनियाँ जितना चालाक समझती है तुम उतने नहीं हो। तुम्हारा दिल बहुत नर्म है।"

रामप्यारी ने देखा कि रामदयाल के नेत्र पर्यासिक्त थे। उनमें करुणा झलकरही थी। उसके दिल में रामप्यारी के लिए कुछ था, वह क्या था यह सम्भवतः रामदयाल भी समझने में असमर्थ था। वह रामप्यारी पर अपना कुछ अधिकार समझता था और जिन दिन रामप्यारी ने उसकी उस भावना को ठेस पहुँचाई थी उस दिन उसकी क्या दशा हुई थी, उसे वही समझसकता था।

रामप्यारी रामदयाल को पहिचानती थी, परन्तु असमर्थ थी वह क्योंकि उसकी आवश्यकताओं को वह पूर्ण नहीं करसकता था। कोई दूसरा सहारा खोजना अनिवार्य था उसके लिए।

रामप्यारी ने बोतल से शराब उडे़लकर दो-जाम भरे और एक साथ एक सेठ को तथा दूसरा रामदयाल को दिया।

रामदयाल ने वह जाम अपने होंठों से लगाकर केवल इतना ही कहा, "रामप्यारी! तुझे क्या होगया था उस दिन?"

रामप्यारी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह नेत्र ऊँचे करके

रात्रि को सेठ दामोद प्रसाद रामदयाल और करीमखाँ को अपनी फ़िटन में विठाकर उसकी चौकी पर छोड़ताहुआ अपने घर गया।

: ३ :

रामदयाल का दबदबा मेरठ में जमताजारहा था। शहर की एक चौकी का साधारणसा सिपाही और सम्बन्ध उसके एस. पी. की मेमसाहब तक। पुलिस का हर अफ़सर सोच-समझकर उससे बातें करता था।

पुलिस-लाइन में दीगई पार्टी के फलस्वरूप हातमसिंह को मेरठ की शहर-कोतवाली मिली थी। हातमसिंह की शहर-कोतवाली रामदयाल की शहर-कोतवाली थी। यह सुनते ही वह हातमसिंह के पास पहुँचा और मुबारिकबाद देने के पश्चात् बोला, "दरोगा जी! अब देखिएगा आप अपना दबदबा। मेरठ-निवासी भी क्या याद रखेंगे कि कोई शहर-कोतवाल आया था मेरठ में।"

"यह सब तुम्हीं पर आधारित है रामदयाल! परन्तु अब अधिक दिन नौकरी का विचार नहीं है मेरा। मैं चाहता हूँ कि बस यहीं से सम्मानपूर्वक अपने घर चलाजाऊँ।" हातमसिंह बोले।

"आप जो चाहेंगे वही होजाएगा दारोगाजी! जब अफ़सरों पर आपका प्रभाव है तो फिर घर जाने की बात क्यों सोचरहे हैं आप?" रामदयाल बोला।

"भाई रामदयाल! इस पुलिस की नौकरी का कोई भरोसा नहीं। आज अफ़सर प्रसन्न हैं तो कल क्रुद्ध भी होसकते हैं। मैं चाहता हूँ कि बाल-बच्चों के लिए लाख-दो-लाख रुपया ऐसे समय में जमा करलूँ जब अफ़सर लोग प्रसन्न हैं।" हातमसिंह बोले।

"विचार तो आपका नेक है और इसमें कुछ कठिनाई भी मुझे दिखाई नहीं देती। मेरठ की शहर-कोतवाली में लाख-दो-लाख रुपया भी न बनाया तो फिर आपने किया ही क्या?" एक अंदाज़ के साथ रामदयाल बोला।

उसी समय दफ्तर की डाक हातमसिंह के हाथों में आई और वह एस.

पी. साहव की कहीगई वात को याद करतेहुए बोले, 'रामदयाल ! मैं तो भूल ही गया था तुमसे कहना । परसों एस. पी. साहब ने मेरठ में फिर से अमन-सभा वनाने की वात कही थी । यदि तुम चाहो तो सेठ दामोदरप्रसाद को उसके पिता के स्थान पर अमन-सभा का प्रधान बनासकती है सरकार ।"

"वात तो आपने वहुत पते की कही दारोगा जी ! मुझे विश्वास है कि वह काठ का उल्लू आपके इस जाल में फँसजाएगा । आप कहें तो मैं आज उससे वातें करके देखलूँ ।" रामदयाल वोला ।

"अवश्य देखलो । यह निशाना खाली नहीं जाएगा । परन्तु दस-पन्द्रह हजार से कम का काम नहीं है । तुम उसी दिन भूल करगए । रामप्यारी के कोठे पर उसे पाँच सौ रुपए लेकर ही छोड़दिया । तुम चाहते तो उसी दिन पाँच हजार ऐंठसकते थे ।"

"आप हैं तो वड़े दरोगा जी ! परन्तु मैं मुर्गी को एक ही बार में खाजाने की नीति को सही नहीं मानता । अंडे देरही है मुर्गी और जब तक हमारे दड़बे में रहेगी,देती ही रहेगी । आप दड़बा तोड़-ताड़कर, नौकरी छोड़, घर चले-जाना चाहते हैं, इसीलिए ऐसी नीति अपनाना चाहते हैं । यह नीति हानि-कारक भी होसकती है ।" गम्भीरतापूर्वक रामदयाल बोला ।

हातमसिंह को रामदयाल के गम्भीर विचार के सम्मुख झुकनापड़ा । वह मुस्करातेहुए वोले, "अच्छा भाई ! तू जो उचित समझे, कर । मेरे वाल-बच्चे भी तो तेरे ही वाल-बच्चे हैं ।"

"यह कहने की बात नहीं है दारोगा जी ! मैं आपके वेटे हिम्मतसिंह को अपना ही वच्चा समझता हूँ ।" रामदयाल बोला ।

उसी समय हिम्मतसिंह कोतवाली के मैदान से खेलता-खेलता दफ्तर में आगया । धूल-भरे हिम्मतसिंह को रामदयाल ने गोद में उठालिया और प्यार से पूछा, "आज क्या बनाया है तुम्हारी अम्मा ने ?"

"कठहल का साग बना है चचा ! और दमदार प्याज के आलू । कहें तो लेआऊँ ? आज पूड़ियाँ बनाई हैं अम्मा ने ।"

"हाँ-हाँ क्यों नहीं ?" हातिमसिंह वोले । "यहाँ क्या लाओगे, कोठी पर ही लेजाकर खाना खिलाओ अपने चचा को । तुम्हारे लिए देखो यह कितने फल, मिठाई और मेवे लाए हैं ।" जो मेवे-मिठाई रामदयाल लाया था उनके

थैले हिम्मतसिंह को देतेहुए हातमसिंह बोले ।

"यह बात नहीं है दरोगा जी ! हिम्मतसिंह और इसकी माताजी, कभी भी मैं जब कोठी पर पहुँचजाता हूँ तो बिना कुछ खिलाए-पिलाए वहाँ से नहीं आनेदेतीं। हिम्मतसिंह में आपके ही जैसा स्नेह कूट-कूट कर भरा है । मेरी तो यह उतना ही इज्जत करता है जितनी आपकी ।"

बेटेकी प्रशंशा सुनकर हातमसिंहका मन खिलगया । जो बच्चा उनके इष्ट-मित्रों और मिलनेवालों का इतना आदर करता था वह उनका कितना मान करेगा । भविष्य का एक काल्पनिक स्वप्न उनकी आँखोंके सामने नाँचनेलगा । उनका दिल गुदगुदाउठा ।

रामदयाल कोतवाल साहब के पास से सीधा अपनी चौकीपर आया । वहाँ दीवान जी से यह कहकर कि वह ज़रा कलक्टर साहब के किसी आवश्यक कार्य से जारहा है, चलने ही वाला था कि सामने से करीमखाँ आता दिखाई-देगया ।

"सवारी किधर बढ़रही है जनाब की ?" करीमखाँ ने पूछा ।

"शहर में अमन-सभा कायम की जाएगी । कांग्रेस ने नाक में दम किया हुआ है । हुल्लड़बाजी से राज्य प्राप्त करनाचाहते, हैं पागले कहींके । अंग्रेजी तोप-बन्दूकों के सामने यह गांधी का चर्खा समझ में नहीं आता कैसे लड़- ।" रामदयाल गम्भीरतापूर्वक बोला ।

करीमखाँ की समझ में कुछ भी न आया । सोचा, जो होगा होता रहेगा । उसका इन बातों से क्या सम्बन्ध । बड़ी-बड़ी समस्याएँ सुलझाने के लिए उसका मित्र रामदयाल पर्याप्त था ।

"इस अमन-सभा का क्या बनेगा रामदयाल ?" दीवान अब्दुलबेग ने कलम डेस्क पर रखकर रोज़नामचा बन्द करतेहुए पूछा ।

"ये राजनीति की बातें हैं दीवान जी ! इसमें सरकार शहर के बड़े आदमियो को रखेगी । उन्हें पदों से सम्मानित करेगी और वे लोग अपने-अपने प्रभाव से अपने-अपने क्षेत्र में अमन स्थापित करेंगे । जनता से कहेंगे कि जनता काँग्रेस की बातें न सुने और सरकार से व्यर्थ झंझट मोल न ले ।"

"खुदा की कसम, तब तो हम लोगों की भी जान बचजाएगी । नाक में दम करदिया है इन लोगों ने । जिस दिन भी कोई तूफ़ान खड़ा करदेते हैं उसी

दिन हमारे तस्मे खिचजाते हैं।" दर्द के साथ दीवानजी बोले।

"आप सच कहते हैं। इसी की रोक-थाम के लिए सरकार अमन-सभाएँ बनारही है। इनमें शहर के सभी सम्मानित व्यक्तियों को सम्मिलित कियाजाएगा। यह कार्य कोतवाल साहब ने मुझे सौंपा है।" रामदयाल बोला।

रामदयाल को विलम्ब होरहा था। वह करीमखाँ को साथ लेकर सेठ दामोदर प्रसाद की ओर चलदिया। मार्ग में करीमखाँ के कंधे पर हाथ रखकर बोला, "कैसी चलरही है करीमखाँ?"

"खूब रौब-दाब की। मजे की छनरहीं है यारों की। पूरा महकमा तुम्हारा एहसान मानता है। सब कहते हैं कि तुमसे ज्यादा ईमानदारी के साथ ऊपरी आमदनी की तक़सीम आज तक मेरठ-पुलिस में नहीं हुई।" रामदयाल को बढ़ावा देतेहुए करीमखाँ ने कहा।

"करीमखाँ! तू मुझे भली प्रकार जानता है। तुझे ज्ञान है कि मैंने कितना रुपया कमाया है?" मुस्कराकर रामदयाल बोला।

"तुम बादशाह आदमी ठहरे। घर के जमींदार हो। रुपए का तुम्हें करना ही क्या है? नाम पैदा कररहे हो। यह क्या कुछ कम है? किसी दिन बड़े अफ़सर बनोगे।" करीमखाँ बोला।

बातों-ही-बातों में सेठ दामोदरप्रसाद का घर आगया। रामदयाल रुककर बोला, "करीमखाँ! अब तुम जाओ। संध्या को आना। आज रात्रि को गुलाब के यहाँ महफ़िल जमेगी। खाना-पीना भी वहीं होगा। दिन में वहाँ जाकर पूछआना, किसी चीज़ की आवश्यकता तो नहीं है। यदि हो तो उसे पहुँचादेना।" यह कहकर दस रुपए का नोट करीमखाँ के हाथ पर रखदिया।

"बहुत अच्छा, लेकिन आज की तो रामप्यारी ने भी पीने की दावत दी थी आपको।" स्मरण करातेहुए करीमखाँ बोला।

"मुझे याद है। तुम पहले चौकी पर आना। वहीं से चलाजाएगा। पहले रामप्यारी के यहाँ चलेंगे। वहाँ दो-चार पेग लेकर फिर गुलाब की ओर चलना है। शाम अपनी है, रात अपनी है, किसी के दास नहीं हैं हम। किसी के बंधन में बँधकर रहना हम नहीं जानते।"

करीमखाँ के चलेजाने पर रामदयाल ने सेठ दामोदरप्रसाद के घर में

प्रवेश किया। मुनीमजी ने रामदयाल को आदर-भाव से मसनद पर बिठाया। एक गोल तकिया कमर से लगाने को दिया और पान तथा लौंगों की तश्तरी उसके सामने करतेहुए कहा, "सेठजी अभी आरहे हैं। यह पान लीजिए। सिग्रेट पिएँ तो मँगाऊँ।"

"नहीं मुनमजी ! सिग्रेट की आवश्यकता नहीं है। दामोदरप्रसाद की और हमारी घर की सी बात है।" रामदयाल आराम से मसनद पर बैठताहुआ बोला।

वेश्याओं के यहाँ आने-जाने से रामदयाल को बड़े आदमियों के यहाँ जाने-आने, बैठने-उठने और बातें करने की सभ्यता आगई थी। यों वह स्वयं भी दर्जा चार पास था और मिडिल स्कूल की छठी कक्षा से भागकर पुलिस की नौकरी पर आगया था।

उर्दू का उसे अच्छा ज्ञान था। उसका परिवार सुशिक्षित था। उस शिक्षा का प्रभाव भी उसके जीवन पर दिखाईदेता था।

रामदयाल ने सेठ की मसनद पर बैठकर गोल तकिए से कमर लगाई और पान का बीड़ा गाल में दबातेहुए मुनीमजी से अफ़सराना ढंग से बोला, "मुझे शीघ्र जाना है। मैं कलक्टर साहब का एक संदेश लेकर सेठ दामोदर प्रसाद के पास आया हूँ। उनसे कहो, शीघ्रता करें।"

कलक्टर साहब का नाम सुनकर मुनीमजी अपनी तोंद को सँभालतेहुए खड़ेहोगए। उन्होंने अपने चिकन के कुर्ते को, जो बैठने से सिलवटें खागया था, खींचकर धोती की फेंट तक किया और हवेली के अन्दर चलेगए।

वह सेठ दामोदरप्रसाद से बोले, "दीवान रामदयाल आए हैं। कहते हैं बहुत आवश्यक कार्य है कलक्टर साहब का।"

"कलक्टर साहब का !" आश्चर्यचकित होकर सेठ ने कहा और फिर पलंग पर बैठतेहुए बोले, "मैंने कहा न था मुनीम जी ! ये पाँच सौ रुपए किसी दिन पचास हज़ार बनकर लौटेंगे।

"पचास हज़ार !" अभी तक लड़ने-झगड़नेवाली सेठाइन ने पास आकर पूछा।

"और नहीं तो क्या ? कलक्टर साहब की एक भेंट के होते हैं पचास हज़ार तो। वह अपने जिले के अफ़सर हैं। क्या जानें क्या पुरस्कार दे-

डालें।"

"ठीक कहते हो बेटा! दीवान रामदयाल तेरा बड़ा आदर करते हैं। तेरा बहुत ध्यान है उन्हें। उन्हें प्रसन्न रखना। हमने भी सब पता निकाल-लिया है बेटा!" बूढ़े मुनीमजी बोले। मुनीमजी सेठ दामोदरप्रसाद के पिता के विशेष मित्रों में से थे। उनका दामोदरप्रसाद अपने पिता के ही समान मान करते थे।

"आपने क्या पता निकाललिया है मुनीमजी?" दामोदरप्रसाद ने पूछा। मुनीमजी ने जो रहस्य खोजे थे, उन्हें सुनने के लिए उसके कान उत्सुक होउठे। उसके नेत्र और कान उनके चेहरे से चिपकगए।

"बड़े रहस्य की बात है बेटा! एस. पी. साहब की मेमसाहब को दीवान रामदयाल ने प्रसन्न कररखा है। उन्हें शराब पिलाने का काम यही करते हैं। इसीलिए वह इनकी हर बात साहब से मनवालेती हैं। यह बड़े काम के आदमी ।" मुनीमजी ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

सेठ दामोदरप्रसाद ने मुनीमजी की बात गम्भीरतापूर्वक सुनी और फिर तुरन्त गले में कुर्त्ता डालताहुआ वह बाहर अपनी गद्दी पर आगया।

रामदयाल ने खड़े होकर सेठ का स्वागत किया। दोनों दो मित्रों की तरह मिले। सेठ दामोदरप्रसाद बोले, "आप तो ईद के चाँद होतेजारहे हैं भैय्या रामदयाल! मैंने तीन-चार बार मुनीमजी को चौकीपर भेजा, परन्तु आपसे भेंट ही न होसकी।"

"ईद के चाँद की बात नहीं हैं सेठ दामोदरप्रसाद! काम ही कुछ ऐसा आगया है। हम लोग आपकी तरह गद्दीदार सेठ तो हैं नहीं, चाकरीपेशा ठहरे। अफ़सर ने जिधर को आज्ञा दी बस उधर ही घूमजाना होता है। जब से कोत-वाली में कोतवाल हातमसिंह आए हैं तब से तो एक क्षण का भी अवकाश नहीं मिलता। मेरे अतिरिक्त किसी अन्य का उन्हें विश्वास ही नहीं है। हर बात की खोज के लिए मुझे ही जानापड़ता है।"

"सुना है आजकल तो आपका कलक्टर साहब के पास तक भी आना-जाना बनगया है?" सेठ दामोदरप्रसाद ने यह जानतेहुए भी कि रामदयाल का अंतिम सम्बन्ध एस० पी० साहब तक ही था, उसका सम्बन्ध कलक्टर साहब से जोड़दिया।

सेठ दामोदरप्रसाद की बात सुनकर रामदयाल का दिल गुलाब जैसा खिलगया। ये शब्द उसके कानों में घुसकर मादक बनगए। उनके मद ने उसके मस्तिष्क में एक नवीन संसार की सृष्टि की। रामदयाल ने अपने को कलक्टर साहब के विशेष कार्यकर्त्ता के रूप में देखा।

वह तनिक मुस्कराकर बोला, "सेठ दामोदरप्रसाद जी ! यह सब मित्रों की कृपा का फल है। सचाई से काम करनेवाले व्यक्ति के सम्बन्ध बढ़ते ही जाते हैं। रामदयाल ने हानि सहन करना सीखा है। अपने को चाहे पाई न बचे, परन्तु अफ़सर को प्रसन्न रखना रामदयाल जानता है। रामदयाल अपने जीवन के उद्देश्यों पर सचाई के साथ चलता है। इसीलिए उसकी बात दुनियाँ मानती है।"

"इसमें क्या संदेह है।" सेठ दामोदरप्रसाद के साथ उनके पुराने मुनीम जी भी प्रशंसात्मक स्वर में बोले।

"अफ़सर लोग कुछ कम बुद्धिमान नहीं होते हैं सेठ दामोदरप्रसाद ! वे दयालू तो अवश्यहोते हैं, परन्तु समझते सबकुछ हैं। अंग्रेज हिन्दुस्तानी अफ़सर से अच्छा होता है। एस. पी. साहब की मेमसाहब एक बोतल में ही प्रसन्न होजाती हैं बेचारी, और साधारण दारोग़ाओं को रक़म काटकर देनीपड़ती है।" रामदयाल ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

"यह तुमने पते की बात कहदी दीवानजी !" मुनीमजी बोले। "जब नहर के जंगल का हमारे बड़े सेठजी ने ठेका लिया था तो इंजीनियर अंग्रेज था। उनकी मेमसाहब के अर्दली ने ही हमारा सब काम करादिया था। वह भी-आपकी ही तरह बहुत भला आदमी था।" मुनीमजी ने सरलतापूर्वक राम-दयाल की प्रशंसा में कहा।

परन्तु उन्हें पता नहीं था कि रामदयाल इंजीनियर साहब का अर्दली नहीं था। उसने सेठ दामोदरप्रसाद से उसके हाथों में हथकड़ियाँ डालकर मित्रता की थी। पाँच सौ रुपया सेठ ने अपने सम्मान की रक्षा के लिए दिया था। उसका कोई आभार नहीं था रामदयाल पर। रामदयाल ने ही उन्हें बहुत कम मूल्य पर छोड़कर उनपर दया की थी, इतने कम मूल्य पर छोड़देना उस समय हातमसिंह को भी खटका था।

मुनीमजी की बात रामदयाल के कलेजे को चीरतीहुई चलीगई। सेठ से

मित्रता रखने का लालच उसे उसके मुनीमजी की बात सुनने तक न गिरा सका। रामदयाल कड़ककर बोला, "तो आपने मेरी समानता इंजीनियर साहब के अर्दली से की मुनीमजी ! मैं आपको और आपके सेठजी को दो कौड़ी का आदमी समझता हूँ। मैं आपलोगों से भविष्य में कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता।" इतना कहकर रामदयाल खड़ाहोगया।

बातों-ही-बातों में बातों का रंग बदलगया। सेठजी और मुनीमजी दोनों सिटपिटागए। दोनों रामदयाल के सामने हाथजोड़कर खड़ेहोगए। मुनीमजी बोले, "मुझसे नासमझी में जो भूल हुई उसे क्षमा करदीजिए। मैंने जानबूझकर कोई ऐसी बात नहीं कही, जो आपके सम्मान के विरुद्ध हो।"

"हाँ भाई रामयाल जी ! मुनीमजी की आयु का ही ध्यान करके इन्हें क्षमा करदो। इनका आशय वह नहीं था जो तुम समझगए।" दामोदरप्रशाद बोले और उन्होंने रामदयाल को अपने पास बिठालिया।

सेठजी ने फिर सम्मान के बोझ से उसे इतना लाददिया कि उसके नीचे रामदयाल के हृदय में धधकनेवाले ज्वाला के अंगारे दबकर राख बनगए।

"तुम भी मित्र ! तनिक-तनिक सी बातों पर रूठजाते हो।" सेठ दामोदरप्रसाद बोले। "अफसर हो, थोड़ी तो सहनशीलता से काम लियाकरो।"

"मैं अपमान तनिक भी सहन नहीं करसकता दामोदरप्रसाद ! अपमान के सामने सोचने-समझने के लिए कोई बात नहीं रहती मेरे पास। मैं दो टूक बातें करनेवाला व्यक्ति हूँ।" रामदयाल गम्भीरतापूर्वक बोला।

सेठ दामोदरप्रसाद ने आज बातों को आगे बढ़ाना उचित नहीं समझा। वह रामदयाल को वहीं पर शान्त करदेना उचित समझते थे। उन्होंने बातों की दिशा बदलतेहुए कहा, "आज रात्रि का क्या कार्यक्रम है रामदयालजी ?"

"कोई विशेष नहीं !" रामदयाल माथे पर पड़ी सिलवटें लिएहुएबोला। "तुम्हारे मुनीमजी ने सब आनन्द भंग करदिया। वरना आज बहुत बड़ी चीज लेकर आया था तुम्हारे पास।" गम्भीरतापूर्वक रामदयाल बोला।

मुनीमजी उस समय तक वहाँ से बाहर चलेगए थे। दामोदरप्रसाद ने आँखों के संकेत से सबको बाहर चलेजाने का आदेश दिया था।

"जो बड़ी चीज मेरा मित्र रामदयाल मेरे लिए लाया है, वह वापस लौटाकर लेजानेवाली नहीं है, यह मैं भली प्रकार जानता हूँ। मित्र

नने में दामोदरप्रसाद जीवन में कभी भूल नहीं करसकता।" कहकर दामोदर प्रसाद ने रामदयाल के कंधे पर हाथ रखा।

रामदयाल के चेहरे पर भी मुस्कान खिलउठी। वह सँवर कर बैठगया। वह कुछ कहने को ही था कि बीच में दामोदरप्रसाद बोलउठे, "इस समय काम की कोई बात नहीं होगी। रामदयाल ! पहले यह बताओ कि क्या पीओगे ?"

"यह पीने का समय नहीं है सेठ! मैं बिना समय कभी नहीं पीता। पीने का समय रात्रि का है और रात्रि को रामप्यारी और गुलाब, दोनों के यहाँ दावत है। रामप्यारी के यहाँ दो-चार पेग लेकर फिर गुलाब के यहाँ जमकर खाना-पीना चलेगा।"

सेठ दामोदरप्रसाद ने संध्या को रामप्यारी के यहाँ मिलने का वचन दिया। सेठ दामोदरप्रसाद रामदयाल को ड्योढी तक छोड़ने के लिए गए।

: ४ :

मेरठ के बजारों से होताहुआ कांग्रेस का एक ढाई मील लम्बा जुलूस निकला। सारा दिन शहर में हड़ताल रही। शहर की एक-एक दूकान बंद थी। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, सभी ने दुकान बंद करके उस जुलूस में भाग लिया। इतना बड़ा जुलूस मेरठ शहर में पहले कभी नहीं निकला था।

विद्यार्थियों की संख्या जुलूस में सबसे अधिक थी। शहर के शिक्षित और अशिक्षित दोनों वर्ग उसमें सम्मलित थे। सरकारी नौकरों में से भी बहुतों की सहानुभूति जुलूस के साथ थी परन्तु उनके पेटों की दासता ने उन्हें जुलूस में सम्मलित होने से रोकदिया था।

डाँडी में नमक-कानून तोड़ने के अपराध में अपने साथियों के साथ महात्मा गाँधी को सरकार ने वन्दी बनालिया था। इस समाचार की सनसनी देश के कोने-कोने में फैलगई थी।

देश के सभी नगरों में कांग्रेस की ओर से जुलूस निकालेगए थे और बाजारों में हड़तालें कीगई थीं। अधिकांश लोगों की सहानभूति कांग्रेस के

साथ थी। स्वतंत्रता का प्यारा शब्द सभी के कानों में रस घोलरहा था। 'इंक़-लाब जिनाबाद' का नारा मुर्दा दिलों में भी [illegible] पैदा करहा था।

सरकार ने कांग्रेस को अनियमित घोषित करदिया था। इसकी प्रत्येक कार्यवाही को कड़ाई से कुचलने का सरकार ने निश्चय करलिया था।

मेरठ के बाजारों की हड़ताल को देखकर हातमसिंह [illegible] उन्हें कलक्टर साहब की आज्ञा मिली थी कि वह इस [illegible] शक्ति का प्रयोग करें।

कांग्रेस का जुलूस बहुत शांति के साथ महात्मा गांधी की जै के नारे लगाताहुआ आगे बढ़रहा था। कहीं से किसी अशांति की सूचना हातमसिंह के कानों में नहीं आई थी। वह सोचरहे थे कि वह अपने सिपाहियों [illegible] जुलूस पर बरसपड़ेंगे।

हातमसिंह सोचरहे थे कि कहीं कोई झगड़ा होना ही चाहिए। अगर कहीं से भी किसी झगड़े की सूचना मिले तो वह अपनी शक्ति का जौहर दिखाकर एस. पी. और कलक्टर साहब की गुड-बुक्स में अपना नाम लिखालें। वह अवसर की खोज में थे, परन्तु वह उन्हें मिल नहीं रहा था।

तभी रामदयाल उन्हें कोतवाली में आता दिखाईदिया। वह रामदयाल को लेकर अपने कमरे में चलेगए और बोले, "रामदयाल! सुना है कि जुलूस बहुत शांति के साथ निकलरहा है। कोई झगड़ा होने की सम्भावना नहीं है।"

"दशा तो यही है कोतवालसाहब! परन्तु झगड़ा खड़ाकरदेना कौन कठिन काम है। आप चिन्ता न करें। मैं सब प्रबन्ध करके आरहा हूँ।" [illegible] रामदयाल बोला।

"मैं [illegible] कि तुमने क्या कुछ किया है रामदयाल। [illegible] आशाएँ तुम्हीं पर [illegible] हैं। अभी-अभी [illegible] साहब से [illegible] उन्होंने [illegible] किया कि [illegible] में और [illegible] विचार में [illegible] साहब अवश्य इन कांग्रेसियों से [illegible]

धर-पकड़ बड़ी जोरों की होनेवाली है। यदि तुम्हारा कोई आदमी पकड़ा-जाए तो तुरन्त मुझे सूचना देना। और खुश तो हो न तुम ! तुम लोगों को पुरस्कार दिए जाएँगे।" रामदयाल ने कहा।

"आप मालिक हैं दीवानजी! हम लोगों के यहाँ कोई खेती तो होती नहीं है और न ही हम लोग कोई नौकरी करते है। पहनवान लोग हैं और आप जैसे हाकिमों के सहारे ही अपनी जिंदगियाँ चलाते है।" हाथ जोड़कर कल्लू पहलवान ने कहा और आशा भरी दृष्टि से रामदयाल की ओर देखा।

"आनन्द किए जाओ कल्लू पहलवान ! जब तक रामदयाल मेरठ में हैं तब तक तुम्हें आँच आनेवाली नहीं है। सेठदामोदरप्रसाद के पास चलेजाओ। वह तुम्हें दो सौ रुपया देदेगा। उससे मेरा नाम लेना। यह रुपया अपने पट्ठों में बाँटदेना।" रामदयाल मुस्कराकरबोला। अपनी बुद्धिमत्ता पर वह उस समय गर्व से फूला नहीं समारहा था।

कल्लू पहवान रामदयाल को सलाम झुकाकर कमरे की चिक उठाकर बाहर चलागया और फिर धीरे-धीरे अपने भारी बदन को लेकर जीने से नीचे उतरगया।

"क्या कोई झगड़ा होगया आज ?" गुलाब ने पूछा।

"होगयाहोगा ! तुझे क्या लेना है इन बातों से ? झगड़े तो जीवन के ५ लगे ही रहते हैं, परन्तु तू क्यों झगड़ों की बातें सुनती है गुलाब ? खिड़की खोलदे और प्यारी-प्यारी हवा को कमरे में आनेदे। सामने बैठकर शराब की बोतल खोलले तू।" पलंग के सिरहाने से कमर लगाकर आराम के साथ बैठेहुए रामदयाल बोला।

"शराब बहुत पीनेलगे हैं आप।" रामदयाल के पास से उठकर आलमारी से बोतल निकालतीहुई गुलाब बोली, "आपको शराब पिलाने में मुझे बहुत आनन्द आता है। मुझे तो खुदा ने पैदा ही आपके लिए किया है दीवानजी !"

गुलाब ने रामदयाल के सामने बैठकर शराब की बोतल खोली और उसे जार में उडेलकर उसी के अन्दर एक बीयर की बोतल उडेलदी। दोनों को मिलाकर बढ़िया काकटेल तैयार की।

गुलाब के हाथ में शराब का जाम था और उसके नेत्रों से भी मदिरा बरसरही थी। गुवाब का यौवन फूटापड़रहा था। वह उस समय और भी

तरंगित होउठा ।

रामदयाल पर इधर कुछ दिन से गुलाव की बातें सुन-सुन कर ही गुलावी मादकता सवार होनेलगती थी उसके हाथसे मदिरा लेकर पीनेपर आनन्द का सागर लहरा उठता था। जो सुख उसे आज प्राप्त था उसने उसकी पहले जीवन में कभी कल्पना भी न की थी।

कमरे में इस समय उसके सामने शराब थी गुलाव और वह वैठा था। संसार की कोई वाधा, कोई दुर्वलता,कोई चिंता, कोई भय नाम मात्र के लिए भी नहीं थी। वह था, आनंद और मदिरा से भरा प्याला।

जीवन का यह आनंद उसे उसकी पुलिस-कांस्टेविली ने दिया था, जिसे करने के लिए उसे उसके परिवार के हर व्यक्ति ने मना किया था।

"गुलाव! तू कितनी मीठी है, यह तुझसे क्या कहूँ?" मदिरा के मद में चूर रामदयाल बोला।

"और आप क्या कम मीठे हैं दीवानजी?" प्रेम-विभोर गुलाव इठलाकर रामदयाल से सटकर वैठतीहुई वोली।

रामदयाल का वाँकापन गुलाव की आँखों की पुतलियों में उतर आया। गुलाव का दिल खिलाहुआ था। यों वह एक पेशेवर नाँचने-गानेवाली थी परन्तु रामदयाल के वदन की वनावट और उभरी जवानी ने उसे अपने वश में करलिया था। वह रामदयाल पर आसक्त होचुकी थी और उसपर अपना सर्वस्व न्यौछावर करसकती थी।

गुलाव की अम्मी ने मरते समय जो नसीहत उसे दी थी, वह यह थी कि कभी किसी तमाशवीन से प्रेम न करना। गुलाव अपनी अम्मी जान के उपदेश को छोड़कर प्रेम का खेल-खेलरही थी। उसका हृदय उसके वश में नहीं रहा था। रामदयाल उसके मन-मन्दिर में वसगया था।

रामदयाल भी गुलाव का दास वनता जारहा था। उसके हृदय में गुलाव के लिए एक विशेष स्थान वनचुका था। उसके जीवन के दो पक्ष पृथक-पृथक चलरहे थे। जीवन का जो पक्ष गुलाव के निकट आया था उसमें उसके परिवार की आन, जात-विरादरी के वंधन, पिता, चाचा ताऊ, माता और अन्य नातेदारों का कोई कहीं स्थान नहीं था। उन्हें पूछकर रामदयालके जीवन का वह पक्ष नहीं उभरा था रामदयाल के जीवन के उस पक्षमें केवल गुलाव और

रामदयाल ही थे, अन्य कोई नहीं था। अन्य किसी को वह उस सम्बन्ध के बीच में लाना भीं नहीं चाहता था।

उनके पारस्परिक मेल-मिलाप को कोई रोकनेवाला नहीं था। दोनों के बीच में रखी थी मदिरा की बोतल, जो दोनों को और भी प्यार के साथ एक दूसरे से आवद्ध करनेवाली थी।

रामदयाल गुलावमय होचुका था और गुलाव के जीवन में रामदयाल समागया था। दोनों ने एक दूसरे की ओर प्यार की दृष्टि से देखा।

"रामदयाल के हृदय को तूने ही प्रेमासक्त किया है गुलाव! रामप्यारी के साथ मैंने लाख दया-व्यवहार किया और उसने लाख अपने सौन्दर्य का प्रभाव मुझपर डालने का प्रयास किया, परन्तु सच जानले गुलाव! कभी उसका मुँह चूमने को मेरी इच्छा नहींहुई। तेरे अन्दर जो मैंने अपनापन पाया है वह मुझे अन्यत्र दिखाई नहीं दिया।"

रामप्यारी नाचनेवालियों के इस बाजार में गुवाव से वढ़ी-चढ़ी थी। उसकी निंदा रामदयाल के मुँह से सुनकर गुलाव को वहुत प्रसन्नता हुई। वह रामदयाल के पास को सिमटकर वोली, "दीवानजी! मैं आपकी दया से वहुत दवचुकी हूँ। अब और प्रशंसा करके मुझ लज्जित न कीजिए। लौंडी हूँ मैं तो आपकी?"

उस वाजार की चौकी का मालिक आजकल रामदयाल था। वैसे तो वह आज शहर कोतवाल ही था मेरठ का। उसके विना हिलाए शहर में पत्ता भी नहीं हिलसकता था। उसके एक संकेत पर शहर में तूफान आसकता था। शहर में वही होता था जो रामदयाल चाहता था। वड़े-वड़े फन्नेखाँ रामदयाल का नाम सुनकर थर्राते थे।

रामदयाल को ध्यान आया कि एक वार कोतवाली की सूचना लेआए और देखे कि क्या गुल खिलादिया था हातमसिंह ने।

गुलाव से ठंडा पानी मँगाकर रामदयाल ने मुँह-हाथ धोए और फिर कुल्ला करके एक नया वीड़ा पान का दाढ़ के नीचे दवातेहुए वोला, "गुलाव! अव काम पर जाना है मुझे। कह नहीं सकता रात को किस समय तक लौटना हो। तुम सोजाना। मेरी प्रतीक्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

"ये वातें न किया करो दीवानजी! आप जिस समय भी आएँगे, दरवाजा खुलामिलेगा। मैं आपकी सेवा के लिए हाजिर मिलूंगी।" गुलाव रामदयाल

के दोनों हाथों को अपने हाथों में लेकर बोली।

रामदयाल गुलाब की बात का कोई उत्तर न देकर चलदिया और धीरे-धीरे जीने की सीढ़ियों से नीचे उतरगया। रात्रि के दस बजचुके थे। बैली बाज़ार की सब दूकानें बन्द होगई थीं। उन्हें जीने से उतरते देखकर चार-पाँच रिक्शावाले उनकी ओर को अपनी-अपनी रिक्शा दौड़ाकर लपके और वह उनमें से एक पर सवार होकर बोले, "कोतवाली लेचलो।"

रिक्शा चलदी और गुलाब अपने मकान के छज्जे पर खड़ी यह सब देखतीरही और उस समय तक देखतीरही जब तक रिक्शा उसकी आँखों से ओझल न होगई।

: ५ :

कोतवाल हातमसिंह ने, आज कांग्रेस के जुलूस पर भयंकर डंडों की वर्षा कराई। कितने ही लोग घोड़ों की टापों के नीचे कुचलेगए। स्त्रियों को पुलिस के सिपाहियों ने निर्लज्जता के साथ सड़कों पर घसीटा। युवकों पर कड़ाकड़ डंडे बरसाए। शहर में कोहराम मचगया। भय से नगरवासियों के कलेजे काँपउठे। सारा शहर आतंकित होउठा।

कोतवाल हातमसिंह अपनी पूरी नौकरी का पुरस्कार इसी अवसर पर कलक्टर साहब और एस०पी० साहब को प्रसन्न करके पाजाने के इच्छुक थे। वह अपनी निर्दयता में कोई कमी रहनेदेनेवाले नहीं थे। कांग्रेस की लहर को दबाने का उन्होंने अपने मन में पूर्ण निश्चय करलिया था।

मारपीट के पश्चात् धर-पकड़ प्रारम्भहुई। रात्रि को बहुत से घरों पर पुलिस ने छापे मारे और बहुत से युवकों और युवतियों को हवालात में बन्द करदियागया। पुलिसवालों को इस समय अपने शत्रुओं से काँटे निकालने का अच्छा अवसर मिला। सिपाहियों ने उन सभी लोगों से बदले लिए जो उनकी नित्य की आमदनी में बाधा उपस्थित करते थे या उनके [illegible] आते थे।

बाहर आए और उसे अपने साथ लेकर कोतवाली की ऊपरीमंज़िलमें चलेगए जहाँ उन्होंने अपना निजी दफ्तर बनायाहुआ था। कोई रहस्य की बात होती थी तो वह अपने उसी दफ्तर में बैठकरकरते थे। बातें करतेसमय वहाँ किसी अन्य को आने की आज्ञा नहीं थी।

"कहिए कोतवाल साहब! काम कुछ करके दिखाया या नहीं रामदयाल ने? गिरफ्तारियाँ करके सब हवालातें ठसाठस भरदीजिए। शहरभर में सनसनी फैलजाए। फिर कोई कांग्रेसके जुलूसों में जाने का साहस न करेगा। जो लोग हवालातों में बन्द होगए हैं वे सभी कुछ-न-कुछ आपको भेंट देकर ही जाएँगे वहाँ से।" रामदयाल आरामकुर्सी पर बैठताहुआ बोला।

"काम तुमने लाजवाब किया है रामदयाल! मुझे तुमसे यही आशा थी। अब इस अवसर-से लाभ उठाने की बात है। कलक्टर साहब और एस० पी० साहब तो बहुत ही प्रसन्न होंगे इससे। उन्होंने कड़ाइ के साथ इसे दबाने का आदेश दिया था। मैंने उनकी इच्छा पूरी करने में कोई कमी नहीं की है।"

"अप्रसन्न क्यों नहीं होंगे वे कोतवाल साहब? परन्तु अफ़सरों को यह ज्ञात होजानाचाहिए कि उनकी इस प्रसन्नता का पौधा रामदयाल के हाथों से लगायागया है।" रामदयाल मूंछें चढ़ाताहुआ बोला।

"अवश्य-अवश्य", हातमसिंह ने कहा। "तुम्हारा नाम हम सबसेपहले लेंगे ... और एस० पी० के सामने। हम वायदा करते हैं कि तुम्हें कांस्टेबिल से मुंशी के पद पर नियुक्त करादेंगा।"

मुंशीगीरी की बात सोचकर रामदयाल को अपने दीवान होने में कोई कठिनाई दिखाई नहीं दी। बात सर्वदा वह एक दर्जा आगे की ही सोचता आया था। वह छोटी बात कभी सोचता ही नहीं था।

"ये सब बातें आप जानें कोतवाल साहब!" मन-ही-मन लड्डू फोड़ता हुआ रामदयाल बोला। "मैं तो अपने काम-से-काम रखता हूँ। अब देखिए शहर के दुधाल लोगों को रामदयाल कैसे आपके सामने ही दूह-दूहकर आपकी दुहावना भरता है। गरी-गिरी भी दस-पन्द्रह हजार की गोली तो बनवा ही दूंगा।"

"यह सब तुम जानो रामदयाल! हमने तो हवालातों को ठसाठस भर-दिया है और शहर के अच्छे-अच्छे घरों पर छापा मारा है।" कोतवाल

हातमसिंह ने कहा।

देखते-ही-देखते कोतवाली के सामने लोगों की भीड़ जुड़नी प्रारम्भ हो गई। कुछ अपने बेटों के लिए चीख-पुकार कररहेथे तो कुछ अपने और सम्बन्धियों के लिए। वे सब लोग अपने किसी-न-किसी सम्बन्धी के लिए वहाँ आए थे।

कुछ लोग वहाँ ड्यूटी पर लगे सिपाहियों से कहरहे थे, "हमारा बेटा कांग्रेस के फेर में आकर पकड़ागया है। उसके विषय में किससे मिलें हम लोग?"

ऐसे लोगों को कांस्टबिलों से यही उत्त र मिलता था, "देखो भैया, हम तुम्हारे भले की बात बताते हैं। तुम जाकर रामदयाल से मिलो। वही तुम्हें सही मार्ग सुझासकता है। उससे शीघ्र तुम्हारा कार्य अन्य कोई नहीं करा सकता।"

उन लोगों ने रामदयाल की खोज की। रामदयाल उनसे गम्भीरता-पूर्वक मिलता था। उसका सबसे एक ही प्रश्न था, "आप अपने बेटे को बचाने के लिए कुछ पैसा खर्च करसकते हैं?"

"हम सब बातों के लिए उद्यत हैं सरकार! हमारे लड़के ने बड़ी मूर्खता की जो इस फेर में पड़गया।" कुछ मिलनेवालों ने कहा।

"तो फी व्यक्ति सौ रुपया लगेगा भैया! प्रबन्ध करके आजाओ और अपने लड़कों से क्षमा मँगवाओ।"

रामदयाल ने कुछ सौदे बनाए, परन्तु अधिक सफलता न मिली। दूसरे दिन उसने सौदे की दर में पर्याप्त कमी करदी। केवल पच्चीस रुपए देकर ही अपने कोई नातेदार को छुड़ासकता था। अन्त में दस-दस रुपए में भी रामदयाल ने कुछ निर्धनों पर दया करके उन्हें हवालात से छुड़ाया। दो-चार को, जो अधिक निर्धन थे मुफ्त छोड़दिया। परन्तु अधिकांश ने रुपया देना उन्हें स्वीकार नहीं किया और मुक्त होने की इच्छा ही प्रकट नहीं की।

जहाँ रुपए लेकर छोड़ने की बात शहर में फैली वहाँ मुफ्त छोड़देने की भी चर्चा हुई। रादमयाल की सभी ने प्रशंसा की। अब शहर के गरीब और अमीर सभीकी जबानों पर रामदयाल का नाम एक दयावान अफसर के नाते चढ

गया था।

कोतवाल हातमसिंह के दमन-चक्र के सामने मेरठ का वातावरण क्षुब्ध हो-उठा था। जो लोग क्षमा माँगकर चलेगए, वे चलेगए, शेष का चालान कर-दियागया। पकड़ेजानेवालों में दर्शकों के अतिरिक्त वे सम्मानित व्यक्ति भी थे, जो देश-भक्ति के लिए जुलूस में सम्मिलित हुए थे और पुलिस की लारी में बैठकर जेल की ओर जातेहुए भी वे उसी जोस के साथ नारे लगारहे थे, जिस जोश के साथ शहर की सड़कों पर उन्होंने पुलिस के डंडों से पिटतेहुए नारे लगाए थे।

रामदयाल को अपनी इस चाल से कुछ रुपया ऐंठने का अवसर मिला अवश्य, परन्तु उतनी सफलता न मिलसकी जितना की वह आशा करता था। उसने यह कार्यक्रम बहुत बड़ी आशा लेकर बनाया था परन्तु उसने देखा कि युवकों में जेल जाने की उत्कंठा छूटजाने से कहीं अधिक थी, परन्तु उन्होंने क्षमा करदियागया।

रामदयाल एस. पी. साहब की कोठी पर भी गया। मेमसाहब ने अपनी नई सीखी लड़खड़ाती हिन्दुस्तानी भाषा में पूछा, "वैल रामडयाल! आज टुमारा शेहर का क्या हाल-चाल ऐ। सुना ऐ टुमारा गाँडी बाबा का लोगों ने बोट बडमाशी फैलाया ऐ। अमारा अफ़सर लोग बौत जोर से लरा। शुना ऐ होश खराब कर डिया गाँडी का लरने वालों का।"

"बिल्कुल खराब करदिया मेमसाहब, बिल्कुल खराब। अब आगे से कोई मेरठ में गाँधी और कांग्रेस का नाम लेने का साहस नहीं करेगा। कोतवाल हातमसिंह साहब ने सब को ठीक करदिया है। क्या मजाल जो उनके सामने अब कोई सिर उठासके।" सीना उभारकर शराब की बोतल मेम साहब की मेज पर रखताहुआ रामदयाल बोला।

"टुम बोत अच्छा आडमी ऐ रामडयाल!" शराब की बोतल पर दृष्टि जाते ही मेमसाहब के मुख से निकला। "अम शाब को बोलकर टुमको बौत जल्द टरक्की डिलाएँगे।"

यह बात मेमसाहब रामदयाल से हर बार जब वह शराब की बोतल उन्हें पेश करनेआता था, कहती थीं; परन्तु अभी तक रामदयाल कांस्टेबिल से मुंशी के पद पर भी नहीं पहुँचपाया था।

रामदयाल ज्यों-ही शराब की बोतल वहाँ रखकर कोठी से बाहर होता था तो मेमसाहब अपनी बात को भूलजाती थीं।

जब एस. पी. साहब आते थे तो मेज पर भोजन से पूर्व दो पेग रखे होते थे।

ड्यूटी से छूटतेही साहबमेमसाहब से मिलते, प्रेम की बातें करते और सीधे मेज पर रखे जामों के पास चलेजाते। फिर जाम-पर-जाम उँडेलते-उँडेलते दोनों चिरानन्द की सीमा में प्रवेश करजाते। बेचारे रामदयाल की तरक्की की बात इस आनन्द की दुनियाँ में न जाने कहाँ दबी-दबाई रहजाती। उसका ध्यान ही मेमसाहब को न आता।

आज रामदयाल ने तनिक साहस करके कहा, "मेमसाहब ! यदि क्रुद्ध न हों तो आज एक बात कहने का साहस करूँ।"

"जरूर करो, जरूर करो रामडयाल, अम टुमको केहने का इजाजत डेटा ऐ।" मेमसाहब ने कहा।

"मैं जब भी आपके पास आया हूँ तो आप मेरी तरक्की कराने का वायदा करती हैं, परन्तु साहब ने आज तक मेरी तरक्की की ओर ध्यान नहीं दिया।" रामदयाल भयभीत स्वर में बोला।

"अम शमझा रामडयाल ! टुम ठीक केटा ऐ। शाब वेचारा क्या करटा? गलटी अमारा ऐ। सच केटा ऐ रामडयाल ! अम खुड वूल जाटा ऐ टुमारा चलाजाना के वाद। फिर जब टुम आटा ऐ, टो वाट फिर याद आ ऐ। अब अम जेरूर-जेरूर टुमारा [illegible] करेगा।"

रामदयाल का साहस अब अंग्रेज औरतों के सामने बातचीत करने से खुलता जारहा था। आज मेमसाहब से उसने अपनी तरक्की की बात दोहराकर अपने अन्दर खुशी का अनुभव किया।

रामदयाल मेमसाहब को सलाम करके बंगले से चलाआया।

दशा बहुत सुधरगई थी। चौकी के सामने जहाँ पहले उजाड़पड़ा था;वहाँ रामदयाल ने बागीचा लगवादिया था। इधर-उधर से टूटी-फूटी ईंटों और सीमेन्ट को भी उसने अपने इलाके के किसी ठेकेदार से कहकर ठीक करादिया था। चौकी पर उसने सफेदी कराई थी और वहाँ पर बैठनेवालों की चौकड़ियाँ भी अब कई-कई प्रकार की लगनेलगी थीं। कई प्रकार के लोग अब रामदयाल को पूछने के लिए वहाँ आते थे।

सरकारी इमारत को रामदयाल अपनी इमारत समझता था। वह जहाँ रहता था, सफाई के साथ रहता था। वह चौकी उसका ठिकाना था। उसी की बदौलत वह दुनियाँभर का खेल खेलता था।

रामदयाल के आने से चौकी की आमदनी पहले से दसगुनी होगई थी। जिन सिपाहियों को कभी कुछ भी नसीब नहीं होता था, उन्हें भी अब अपने वेतन से तिगुने-चौगुने रुपए ऊपर की आय से प्राप्त होनेलगे थे। सभी रामदयाल के कृतज्ञ थे। सन्ध्या को चौकी के सामने छिड़काव किए लॉन में जब वह खटिया डालकर बैठता था तो उसका ठाट निराला ही होता था। सिर पर चारखाने का लाल अँगोछा बाँधकर वह चारपाई पर बैठता था और फिर हुक्का ताजा करके लाने की किसी आदमी को आज्ञादेता था। एक ठाट था उसका।

आज रामदयाल के बैठते ही अब्दुलबेग भी वहीं पर अपना मूढ़ा डलवा कर आबैठे। चौकी पर केवल वे दोनों ही थे। रामदयाल ने मुस्कराकर पूछा, "कहिए दीवान जी! मेरे यहाँ आने से आप अप्रसन्न तो नहीं हैं? आपकी अप्रसन्नता की तो कोई बात मैंने नहीं की?"

"अप्रसन्न कहोगे रामदयाल! चौकीवालों के बाल-बच्चे भी तुम्हें दुआ देते है। तुमने इस उजाड़पड़ी चौकी को आबाद करदिया। सूखे बंजड़ को गुलशन बनादिया।" मित्रता के स्वर में शेख अब्दुलबेग ने उत्तर देतेहुए अपनी गुम्फेदार दाढ़ी दोनों हाथों से सहलाई।

"तो कोई असंतुष्ट नहीं है न रामदयाल से? केवल यही बात सुनने के लिए मेरे कान उत्सुक रहते हैं। यह जीवन जितना भी औरों के काम आजाए उतना ही अच्छा है। रामदयाल मित्रों का मित्र है। उसे अपने मित्रों पर सर्वदा गर्व रहा है।

सच कहता हूँ दीवानजी ! आज तक मेरे साथ जो एक बार बैठकर मदिरापान करचुका है, उसने मुझे कभी धोखा नहीं दिया। मैंने भी कभी उसको नहीं भुलाया। जिसकी मित्रता मुझसे शराब की बोतल बीच में रखकर होती है उसे मैं अपना भाई मानता हूँ।"

"बहुत खूब, रामदयाल, बहुत खूब ! यही तो यार की खूबी है। जाम-से-जाम लड़ाकर जो यार बनायाजाता है वह भाई से क्या कम है ?" दीवान अब्दुलबेग ने इस प्रकार झूमकर यह बात कही कि पता नहीं कितनी बोतलों का नशा उस समय उन्हें होरहा था।

"परन्तु दीवान जी ! अब ऐसा लगरहा है कि हमारा और आपका साथ छूटनेवाला है।" गम्भीरतापूर्वक रामदयाल बोला। "कोतवाल साहब रिटायर होनेवाले हैं। अन्तिम दिनोंमें हमने तो उनका साथ निभाहीदिया। दो साल में एक लाख की गोली बनवादी है। अब आनन्दपूर्वक रिटायर हों और उस रुपए से कुछ भी कारोबार करें, या बैठकर खाएँ।

यह सब काम मित्रता में किया है मैंने। शपथ लेली जो आजतक एक पैसा भी कभी मैंने अपने घर भेजा हो।"

"तुम यारों यार हो रामदयाल ! यह मैं नहीं कहरहा, सारा महकमा कहता है। हर अफ़सर और हर कांस्टेबिल कहता है। कोतवाल हातमहिस के साथ तुमने जो कुछ सुलूक किया है, उसका बदला वह तीन जन्म में भी नहीं उतारसकते।" दीवान अब्दुलबेग ने गम्भीर वाणी में कहा।

"बदला उतरवाने के के लिए रामदयाल ने कभी कुछ नहीं किया दीवान जी !" उनसे भी गम्भीर होतेहुए रामदयाल बोला। "हाँ, तो मैं आपसे कह-रहा था कि अब हमारा और आपका साथ शायद छूटनेवाला है।"

"ऐसा न कहो रामदयाल ! यदि तुम कुछ दिन और बनेरहोगे इस चौकी पर तो सभी कांस्टेबिल दुआदेंगे तुम्हें। बेचारे सिपाहियों के तो जीवन सुधरगए तुम्हारे यहाँ आने से। ये सब कर्ज से दबेजारहे थे। तुम्हारे सहारे से इनके घर-बार बचगए। नहीं तो कर्ज़ में नीलाम होजाते।"

रामदयाल ने खान अब्दुलबेग के कान में कुछ मुस्करातेहुए कहा तो अब्दुलबेग प्रसन्नता से उछलपड़े और हाथ मिलातेहुए बोले, "मुबारिक हो पुलिस की दीवानी रामदयाल ! मैं तहेदिल से तुम्हारी तरक्की पर खुश हूँ।"

कुछ देर बाद दीवान अब्दुलबेग और रामदयाल बाजार की सैर को गए रात का झुटपुटा हुआ तो दोनों गुलाब के कमरे पर पहुँचगए।

गुलाब ने दोनों की आवभगत की।

पिछले महीने की आय का रुपया आज ही रामदयाल ने बाँटा था। दीवान अब्दुलबेग की जेब में सौ रुपए का करारा पत्ता था। इसीलिए रामदयाल उसे आज विशेष रूप से वहाँ लाया था।

रामदयाल को जहाँ अपने साथियों का खयाल रहता था वहाँ वह गुलाब को भी कभी नहीं भूलता था। सबकी नेक कमाई में वह गुलाब का भी हिस्सा समझता था।

आज गुलाब के यहाँ दीवान अब्दुलबेग के सौ रुपयों का रंग जमा। एक बढ़िया बोतल शराब की मँगाईगई और उसी की खुमारी में गुलाब का नृत्य देखागया। दीवान अब्दुलबेग ने विदा होते समय अपनी जेब खाली करके कहा, "लो भाई दीवान रामदयाल! आज का यह मुजरा तुम्हारी दीवानी की खुशी में करादिया हमने।"

रामदयाल ने मुस्कराकर दीवान अब्दुलबेग की कौली भरली और फिर दोनों नशे में चूर कोठे से नीचे उतरगए।

: ७ :

दूसरे दिन संध्या-समय रामदयाल कोतवाल हातमसिंह से मिलनेगय तो वह रामदयाल से मुस्कराकर हाथ मिलातेहुए बोले, "रामदयाल! अ हम तुम्हारी पुलिस की नौकरी से स्तीफ़ा देरहे हैं। एक लाख रुपया ज तुमने कमवादिया है, बस वही हमारी जमा-पूंजी है। उसीसे सोचा है कि अ खेती का फ़ार्म चलायाजाएगा।"

"परन्तु आपने अपने रिटायर होने की बात पहले मुझसे कभी नह कही।"

"कही कैसी नहीं रामदयाल! तुमसे तो मैंने स्पष्ट कहाथा कि मैं स्तीफ़

था। उससमय भी शानदार आयोजन हुआ। शहर की सभी प्रतिष्ठित नाचने गाने वालियों ने उसमें भागलिया था।

अब दीवान रामदयाल वास्तव में दीवान रामदयाल बने। अभी तक कांस्टेविल होने पर उसका मान बढ़ाने के लिए उन्हें दीवानजी कहदियाजाता था।

दीवान-पद प्राप्त कर दीवान रामदयाल का मस्तिष्क आकाश से बातें कररहा था।

उसके पिता ने एक दिन उसे प्यार से कहा था, "बेटा रामदयाल! तू एक दिन दीवान बनेगा।"

दीवान रोजनामचे का मालिक होता है। उसके हाथों में परमात्मा की लेखनी होती है। उसके लिखे को देवता भी नहीं बदलसकते। वह न्यायालयों के लिए परमात्मा की आज्ञा मानीजाती है।

रामदयाल कल तक ज़बान का ही मालिक था। वह सब उलट-फेर करता था परन्तु अब सरकार ने उसके हाथ में कलम भी देदी थी। उसकी कलम पूरे इलाके के भविष्य को बना और बिगाड़सकती थी।

चौकी पर रामदयाल पहुँचा तो करीमखाँ वहाँ पहले से उपस्थित था। उसे सूचना मिलचुकी थी। उस समय चौकी का ठाट निराला ही था। सभी सिपाहियों के हाथों में चमेली की मालाएँ थीं और दीवान अब्दुलबेग के हाथों गुलाब के फूलों का बड़ा हार था।

रामदयाल के वहाँ पहुँचने पर सबसेपहले शेख अब्दुलबेग ने आगे बढ़ अपनी माला पहनाई, उसके पश्चात् अन्य सिपाहियों ने रामदयाल के गले मालाएँ डालीं। दीवान रामदयाल ज़मीन से ऊपर उठगए।

अभीतक वे लोग पूरी तरह से बैठे भी नहीं थे कि सेठ दामोदरप्रसाद नीमजी चार थाल मिठाई के लेकर आगए। मिठाई सामने रखकर जी बोले, "सरकार! मिठाईभेजी है सेठजी ने और आपको बधाईदी है।"

"बहुत अच्छा मुनीम जी! मिठाई करीमखाँ को देदीजिए और सेठजी री राम-राम कहिए। इधर कई दिन से भेंट नहीं हुई सेठ जी से।" रामदयाल ने कहा।

ठजी आज ही बाहर से पधारे हैं। आते ही आपकी तरक्की की ...

मिली तो सच जानिए विना कपड़े उतारे ही पहले मिठाई का प्रवन्ध करके मुझे इधर भेजा, तव अन्दर गए।" मुनीमजी वोले।

दीवान रामदयाल ने मिठाई चौकी के सिपाहियों में वँटवादी और एक थाल कोतवाल हातमसिंह के यहाँ भिजवादिया।

दीवान रामदयाल के दीवान वनने की प्रसन्नता में सेठ दामोदरप्रसाद ने एक शानदार आयोजन किया। उसमें रामदयाल ने एस० पी० साहव को भी आमंत्रित किया। मेमसाहव ने भी उसमें भाग लिया। कोतवाल हातमसिंह तो पाँच दिन तक केवल उसी में भाग लेने के लिए ठहरेरहे। कासिममिरजा भी, जो मेरठ के नए शहर-कोतवाल वनकर आए थे, आयोजन में सम्मिलित हुए।

उसी अवसर पर हातमसिंह ने कासिममिरज़ा की दीवान रामदयाल से भेंट करातेहुए कहा, 'आपका जो काम किसी से न निकलसके उसे दीवान रामदयाल को सौंपकर आप चैन की नींद सोसकते हैं। काम पूरा होगा।"

"क्या कहते हो रामदयाल? क्या तुमपर मैं भी कोतवाल साहव की तरह विश्वास करसकता हूँ?" कासिममिरज़ा ने पूछा।

"कोतवाल साहव, यही तो आज तक कमाई की है रामदयाल ने। पास चाहे एक पाई न हो, परन्तु महकमे का हर आदमी मेरी ज़वान का विश्वास करता है। इस ज़वान से जिस वात के लिए एक वार 'हाँ' निकलजाएगी, वह 'नाँ' नहीं होसकती और जो 'नाँ' निकल जाएगी, वह 'हाँ' होनी असम्भव है।" रामदयाल वोला।

कासिममिरज़ा ने रामदयाल के चेहरे पर दृष्टि डाली और फिर गम्भीरता पूर्वक कहा, "तो हाथ मिलाओ और वचन दो कि कभी मेरे रहस्य को अपने से वाहर नहीं जानेदोगे।"

"वचन देता हूँ।" हाथ मिलाकर दीवान रामदयाल ने कहा।

"मुझसे हाथ नहीं मिलायाजाता कासिममिरज़ा! यह दीवान रामदयाल नहीं, मेरा छोटा भाई है। इसे जव जो आज्ञा करोगे वह इसके सर [illegible] रहेगी। इसका निशाना कभी चूकता नहीं है।" मूछों पर ताव देकर [illegible] ने कहा।

आयोजन आज का शानदार रहा। एस० पी० साहव [illegible]

थोड़ी देर में विदा होगए। कोतवाल हातमसिंह और कासिम मिरजा खूब जमे। गुलाब और रामप्यारी दोनों थीं जशन में। दोनों अपना-अपना कमाल प्रस्तुत कररही थीं और दोनों के ही साजिन्दे लोग अपने-अपने हाथ दिखारहे थे।

करीमखाँ अपनी शान में आज किसी को नहीं बदरहा था। मस्ती में झूमकर उसकी जबान से निकला।

यार भया दीवान।
अब डर काहेका।

गुलाब का स्वर रामप्यारी से ज्यादा सुरीला था, परन्तु सुन्दरता में रामप्यारी कहीं अधिक थी। नृत्य भी रामप्यारी को गुलाब से अच्छा आता है। दोनों अपना-अपना कमाल दिखाने में जुटी थीं।

दर्शक बहुत थे, परन्तु जिनकी ओर गुलाब और रामप्यारी की दृष्टि जमी थी वे चार ही व्यक्ति थे। हातमसिंह, कासिममिरज़ा, दीवान रामदयाल और सेठ दामोदरप्रसाद।

उन्हीं के सम्मुख नई-नई अदा के साथ गाने का बंद छेड़ाजाता था और उन्हीं के हाथों से पाँच-दस रुपए के नोटों मे गाने का पुरस्कार मिलता था।

आयोजन रात्रि के दो बजे तक चलतारहा। कासिममिरज़ा ने घड़ी देखी तो तनिक सकपकाकर बोले, "ग़ज़ब होगया। पूरी रात निकलगई। यह तो दो बजे हैं।"

"यह मेरठ की कोतवाली है कासिममिरज़ा! यहाँ तुम्हें स्वर्ग के दृश्य देखने को मिलेंगे। जन्नत की हूरें क्या गुलाब और रामप्यारी से सुन्दर होंगी आपके विचार से? बजे की चिंता महफिल में बैठकर नहीं करनीचाहिए।" हातमसिंह सुधरकर बैठतेहुए बोले। फिर रामप्यारी से कहा, "रामप्यारी, क्या थकगई? तुम्हारे नए शहर-कोतवाल साहब को नींद आनेलगी है। ऐसा नृत्य दिखाओ कि इनका मन भी नाँचउठे और नींद काफ़ूर होजाए।"

"ऐसा ही लीजिए हुज़ूर!" रामप्यारी ने कहा और फिर अपने पैरों के घुंघरुओं को ठीक से बाँधतेहुए साजिन्दों की ओर देखा। तबलची की ओर रामप्यारी की दृष्टि गई तो उसने हथेली से ताल देतेहुए कहा:

ता धिन—धिन ना, ता धिन—धिन ना,
ता धिन—धिन ना, ता धिन—धिन ना।

श्रोता शान्तहोगए। नृत्य का स्वर वहाँ के वायुमंडल में आच्छादित होगया। कासिम मिरज़ा भी सुधरकर बैठगए।

एक ओर रामप्यारी नाचरही थी और दूसरी ओर रामदयाल का संकेत पाकर गुलाब पानों की तश्तरी लेकर कासिममिरज़ा के पास जापहुँची। वह अदा के साथ बोली, "हुजूर पान नोश फ़रमाइए।"

'हाँ-हाँ लीजिए कासिममिरज़ा! यह आपके इलाके में हमने गुलाब का फूल खिलादिया है। अब इसकी रौनक को बढ़ाना आपका काम है। हाकिम को चाहिए कि वह अपने इलाके सौंदर्य के को बढ़ाए।"

कासिममिरज़ा मुस्कराकर पान लेतेहुए बोले, "मेरठ के बागीचे में तो कोतवालसाहब आपने सचमुच बहुत सुन्दर फूल खिलाएहुए हैं। मैं आपकी प्रशंसा नहीं करसकता।"

"मेरी प्रशंसा की आवश्यकता नहीं है कासिममिरज़ा! प्रशंसा इस गुलाब की कीजिए।" गुलाब को अपने पास बिठातेहुए उसके चेहरे को ठोड़ी से ऊपर उठाकर हातमसिंह बोले। प्रशंसा के योग्य ये फूल है। जो बगीचा मैंने लगाया है उसे आज आपको सौंपरहा हूं। इसकी देखभाल अब आपको करनी है।"

"आपका लगायाहुआ बागीचा सदा हरा-भरा रहेगा कोतवाल साहब! अपनी शक्तिभर इसे कभी नहीं सूखनेदूंगा और नए सुन्दर गुलाब ही इसमें खिलाने का प्रयत्न करूंगा।" मुस्करातेहुए कासिममिरज़ा बोले।

कोतवाल हातमसिंह ने कासिम मिरज़ा का सेठ दामोदरप्रसाद से परिचय करातेहुए कहा, "आप सेठ दिगम्बरप्रसाद के सुपुत्र श्री दामोदरप्रसाद हैं। आपके पिता शहर की अमन-सभा के प्रधान थे और आप भी सरकार के विशेष सम्मानित व्यक्तियों में से हैं।"

हाथ मिलातेहुए कासिममिरज़ा बोले "आपका नामतो मैंने सुना है।" ख़ूब ही सेठ के पेट में बड़प्पन की हवा भरने के लिए कासिममिरज़ा ने कहा। कासिम मिरज़ा इस प्रकार का बढ़ावा देने में बहुत कुशल थे।

"यदि आपको फिर शहर में अमन-सभा बनाने के लिए कलक्टर से आज्ञा मिले तो आप सेठ दामोदरप्रसाद से उस काम में पूरी सहायता लेसकते हैं।" हातमसिंह बोले।

सेठ दामोदरप्रसाद बोले,"मैं जिस योग्य भी हूँ, आपके सर्वदा काम आता रहूँगा।"

उसके पश्चात् कासिम मिरज़ा और कोतवाल हातमसिंह कार में बैठकर चलेगए।

अन्त में बैठे रहगए केवल दीवान रामदयाल और दामोदरप्रसाद। दीवान रामदयाल का नशा अब टूटचुका था और उनका बदन गिरनेलगा था। वह करीमखाँ को आवाज़ देकर बोले, "करीमखाँ, कोई बोतल बचीहो तो यहाँ लेआओ।"

"बची क्यों नहीं है दीवानजी! आपके लिए तो मैंने पहले ही बचाकर रख लीथी।" करीमखाँ ने आदरपूर्वक कहा। दीवान रामदयाल अब चौकी के अफसर थे और उनका सम्मान करना आवश्यक था।

दीवान रामदयाल और सेठ दामोदरप्रसाद ने थोड़ी-थोड़ी शराब ली और जब उसके सरूर से उनका थकान कुछ दूरहुआ तो दीवान रामदयाल बोले, "अफ़सर हो तो कोतवाल हातमसिंह जैसा हो! रिटायर होने पर भी आनेवाले अफ़सर से वे ही ताल्लुकात बनादिए जो उनसे चलेआरहे थे।"

"कोतवाल हातमसिंह के क्या कहने। जिस ठसके की कोतवाली हातमसिंह मेरठ में करचले वैसी आज तक किसी ने नहीं की। फिर सबसे बड़ी बात यह है कि किसी के बुरे नहीं बने। चार पैसे की आमदनी तो दुनियाँ में सभी करते हैं। मैं उसे बुरा नहीं मानता। अपने बाल-बच्चों का पेट भरने का सभी को अधिकार है।" गम्भीरतापूर्वक सेठ दामोदरप्रसाद ने कहा।

"यही बात है, बिल्कुल यही बात है। कोतवाल हातमसिंह शानदार अफ़सर थे। मेरा कितना ध्यान रखते थे, यह क्या तुमसे छिपाहुआ है?" दीवान रामदयाल बोले।

"अब दीवान रामदयाल! तुम्हें कासिममिरज़ा को अपने हाथों में रखने का प्रयत्न करनाचाहिए।" सेठ दामोदरप्रसाद बोले।

"प्रयत्न मुझे करनाचाहिए! आखिर यह क्यों! कासिममिरज़ा मुझसे बनाकर मालामल होसकते हैं। मुझसे बिगाड़कर कोई अफ़सर यहाँ से दो कौड़ी भी कमाले तो मेरा नाम रामदयाल नहीं।" अकड़ के साथ दीवान

रामदयाल बोले और अपने सामने रखी बोतल से थोड़ी शराब लेकर उसमें सोड़ा मिलाकर पीगए ।

"अफ़सर से जहाँ तक भी हो, बनाकररखने में ही लाभ है ।"

"यह मैं जानता हूँ । अपने काम में मैं किसी की राय नहीं लेता सेठ ! समय स्वयं बताता है कि उस समय क्या करनाचाहिए । यों देखती आँखों पहाड़ से टकराने का रामदयाल को शौक नहीं है ।" इतना कहकर दीवान रामदयाल उठकर बाहर चलेगए ।

करीमखाँ को बाहर दीवान रामदयाल ने घूमते देखा । उसे देखकर बोले, "अरे करीमखाँ, तुम अभीतक यहीं घूमरहेहो । चौकी पर क्यों नहीं चलेगए ?"

"चौकी पर भला कैसे चलाजाता दीवानजी ? आपको क्या यहाँ अकेला छोड़देता ? आप सेठजी को अपना मित्र समझते हैं परन्तु मैं ऐसा नहीं समझता । जिस व्यक्ति के हाथों में आप एक बार हथकड़ियाँ डालचुके हैं, उसे मित्र कैसे समझा जासकता है ?" करीमखाँ ने गम्भीरतापूर्वक कहा ।

दीवान रामदयाल करीमखाँ की बात पर ध्यानपूर्वक सोचतेहुए उसके साथ चौकी की ओर चलदिए ।

: ८ :

दीवाद रामदयाल ने चौकी के दीवान बनकर शान से वहाँ का रोज़नामचा सँभाला । पुलिस ने रोज़नामचे की शक्ति का अनुमान कभी-कभी दीवन रामदयाल ने अपनी कांस्टेबिली के समय में लगाया था । वह करीमखाँ से बोला, "करीमखाँ ! मैं आज के दीवान लोगों को बेवकूफ़ समझता हूँ । ये लोग अपनी शक्ति का सही अनुमान नहीं लगासकते । अब रोज़नामचा मेरे हाथों में आया है तो देखना मेरे अफ़सरा भी मेरे संकेत पर नाँचते दिखाई देंगे ।"

करीमखाँ ने पूछा, "दीवानजी ! रोज़नामचे में ऐसी क्या करामात है जो सब अफ़सरों को तुम्हारा दास बनादेगा और सब तुम्ह

देंगे।"

दीवान रामदाल बोले, "यह तुम नहीं समझसकोगे करीमखाँ! यह मेरे समझने की बात है। तुम आनन्द किएजाओ बस! जब तक दीवान रामदयाल का हाथ तुम्हारे ऊपर है तबतक तुम्हारे कहे को मेरठ में कोई नहीं टालसकता।"

करीमखाँ बोला, "आज तो रोज़नामचे के मालिक हैं आप? आप कहा-करते थे कि इसमें बड़ी-बड़ी करामातें हैं।"

"रोज़नामचे की करामातों का अब कुछ-कुछ पताचलेगा करीमखाँ! जब मेरा क़लम रोज़नामचे पर चलेगा तो तुम्हारे क़दम किसी मुल्ज़िम की खोज में बढ़ेंगे और जितने अधिक मुल्ज़िम यह रोज़नामचा तैयार करताजाएगा उतनी ही अपनी आय बढ़ती जाएगी। समझे! परन्तु तुम समझने का प्रयत्न न करना। तुम यही करना कि जब मैं तुम्हें इसबार ऊपरी आय के रुपए दूं तो तुम उनसे हमारी भाभी-जान को एक नया सिलवार और रेशमी कुर्ता सिलवा देना।"

करीमखाँ आयु में दीवान रामदमाल से एक-दो वर्ष बड़ा था, परन्तु उसकी पत्नी नई थी। न जाने कहाँ से अपना पुलिस का दाव-पेंच भिड़ाकर वह लेआया था। करीमखाँ की पत्नी पर एक दिन दीवान रामदयाल की भी दृष्टि पड़-गई थी। 'पत्नी सुन्दर लाया है करीमखाँ।' उनकी जबान से निकला और उसी ...न से वह करीमखाँ से बातचीत में उपहास के ढंग से उसपर ढालकर कुछ-...न-कुछ कहहीदेते थे।

करीमखाँ दीवान रामदयाल के इस कहने को मित्र का प्रेम समझता था। उसने भी मुस्कराकर जवाब दिया, "दीवानजी आप दीजिए तो सही रुपया। फिर जिस काम में भी आप कहेंगे लगादूँगा।"

दीवान रामदयाल परमात्मा को माननेवाले कट्टर हिन्दू थे। परन्तु मित्रता में मुसलमानों के साथ भी उनका घनिष्ट सम्बन्ध था। उनका हिन्दू और मुसलमान सभी में घुल-मिलकर खाना-पीना चलता था।

दीवान रामदयाल ने अपने क्षेत्र में तीन जुआ खेलने के नए अड्डे बनवाए। उसमें एक अड्डा कल्लू पहलवान को खुलवाया। सट्टे के काम में भी उन्नति हुई। वेश्याओं के बाजार में रात को तमाशबीनों की रौनक़ बढ़ी। शहर के रईस लोगों के नौजवान लड़कों में नाँच-गाना सुनने की बान पैदाहुई। नृत्य

और संगीत-कला की उन्नति में सहयोग देना दीवान रामदयाल अपना कर्त्तव्य समझते थे।

दीवान रामदयाल अपने मन में मेरठ की जनता का अपने को संरक्षक समझते थे। वह कभी-कभी करीमखाँ से कहाकरते थे, "करीमखाँ ! मैं जोकुछ भी करता हूँ वह औरों की भलाई के लिए ही करता हूँ। अमीर लोगों का पैसा ग़रीब लोगों तक कैसे पहुँचे, मैं इसी चिन्ता में रहता हूँ। बेचारी नर्तकियों के पास तक यदि ये रईसों के छोकरे न जाएँ तो ये बेचारी कैसे जीवित रहेंगी ?"

"और इसी तालमेल में तुम अपना दाव गाँठलेते हो दीवानजी ! आज समझपाया हूँ आपकी कारीगिरी। वैसे रुपया गरीब से आए तो क्या और अमीर से आए तो क्या, आप तो अपनी मेहनत का फल पाते हैं। उससे अधिक तो आप लेना नहीं चाहते किसी से।" करीमखाँ ने सम्मान और गम्भीरतापूर्वक कहा।

"परमात्मा जाने, बिल्कुल नहीं। मैं तो बड़े संतोष का आदमी हूँ। तुमसे मेरा कुछ छिपा नहीं हैं करीमखाँ।"

"अब आप रोजनामचे के मालिक हैं दीवानजी ! देखें क्या-क्या करामात दिखाता है आपका रोजनामचा।" करीमखाँ ने आशाभरे स्वर में कहा।

"आजकल कैसी दशा है नाचने-गाने वालियों के बाजार की ?" दीवान रामदयाल ने पूछा।

"बड़ी रौनक है दीवानजी ! बाजार बहुत अच्छा चलरहा है। मामूली-से-मामूली टखियारी भी अपना पेट चलालेती हैं। गुलाब ने तो सुना है ठाठ-बाट खड़ी करली है।" करीमखाँ जरा अन्दाज के साथ बोला।

"तो उनका पेशा उन्नति कररहा है। सुना है गुलाब कोई [illegible] लाई है।" रामदयाल ने पूछा।

"सुना तो मैंने भी है दीवानजी ! लेकिन मैं अभी ठीक से कुछ नहीं कह-सकता।" करीमखाँ बोला।

"गुलाब को वह बात हमसे नहीं छिपानीचाहिए थी। उसे [illegible] हमारे सामने खोलदेना चाहिए था।" दीवान रामदयाल ने दृष्टि कड़ी करके कहा। फिर तनिक सोचकर बोले, "जरा वर्दी तो पहनआओ [illegible] ! "

"करीमखाँ तुरन्त वर्दी पहनआया । दीवान रामदयाल की आज्ञाके पश्चात 'क्या', 'क्यों' का कोई प्रश्न नहीं था ।

दोनों एक ताँगे पर बैठकर बैली बाज़ार के चौरस्ते पर पहुँचे और ठीक गुलाब के ज़ीने के नीचे ताँगे से उतरकर ऊपर चढ़गए ।

करीमखाँ ने गुलाब का कुण्डा खटखटाया और किसी लड़की ने आकर द्वार खोलदिया । करीमखाँ बोला, "गुलाब बाई को भेजो । दीवान रामदयाल आए हैं । उन्हें बयान लेना है उनका ।"

लड़की ने अन्दर जाकर गुलाब को सूचना दी तो उसके पैरों के नीचे से ज़मीन निकलगई । वह भयभीत होउठी । दीवन रामदयाल को वह अपने चंगुल में समझती थी और इसीलिए उसने उस लड़की के आने की सूचना पुलिस में नहीं दी थी ।

वह घबराईहुई दीवान रामदयाल के पासतक पहुँचजानाचाहती थी परन्तु करीमखाँ ने उसे बीच में ही रोकतेहुए कड़ककर कहा, "यह नई लड़की कौन आई है तुम्हारे यहाँ ? कहाँ से आई है ? इसकी इत्तला तुमने चौकी पर क्यों नहीं दी ?"

गुलाब चुप थी । गुलाब के पीछे खड़ी लड़की आगे बढ़करबोली, "दीवान जी ! मैं अपनी कहानी आपको खुद सुनाती हूँ । इनसे आप मेरी कहानी क्या पूँछते हैं ? मैं यहीं की रहनेवाली हूँ । कांग्रेस के एक जुलूस में मैं आफत की मारी शामिलहोगई थी । जुलूसपर रास्ते में पुलिस ने बहुत बेरहमी से लाठियाँ बरसाईं । उसी झगड़े में मुझे तीन बदमाश उठाकर लेगए । उन बदमाशों ने मुझे इधर-उधर छिपाकररखा और अब चन्द दिन पहले मुझे उन्होंने इनके हाथों बेचदिया मैं इनकी जरख़रीद गुलाम हूँ । क्या आप मुझे मुक्त करासकते हैं इनसे ?"

दीवान रामदयाल को कांग्रेस के जुलूस पर बरसाईगई मार की याद आई और फिर कल्लू पहलवान ने जो लड़की भीड़ से उठाई थी, उसकी भी याद आई । दीवान रामदयाल ने सोचा हो-न-हो यह लड़की वही है । वह गुलाब से बोले, "करीमखाँ के साथ लड़की को लेकर तुरन्त चौकी पर हाज़िर हो ।"

"जो हुकुम दीवानजी !" कहकर गुलाब और करीमखाँ ऊपर चलेगए और दीवान रामदयाल चौकी पर लौटआए ।

चौकी पर पहुँचकर दीवान रामदयाल ने कल्लू पहलवान को बुलवाया और इसी बीच में गुलाव और करीमखाँ भी उस लड़की को लेकर चौकी पर आगए।

पुलिस की चौकी पर आकर उस लड़की ने समझा कि चलो उस अंधकार से तो कुछ प्रकाश में आई। यों पुलिस भी बड़ी बदमाश होती है, परन्तु फिर भी सरकारी महकमा है। शायद इन दीवानजी के ही दिल में भगवान् का कुछ निवास हो।

दीवान रामदयाल कल्लू पहलवान से बोले, "पहलवान! क्या इस लड़की को तुमने गुलाव को दिया है?"

"जी दीवानजी!" वह हाथ जोड़कर बोला।

"तो जो रुपया तुम्हें गुलाव ने दिया हैं वह गुलाव को वापस लौटादो और इस लड़की को हमें देदो।"

कल्लू पहलवान ने तुरन्त अपनी फेंठसे रुपए निकालकर गुलाव को गिनदिए और लड़की दीवानजी ने अपने क्वार्टर पर भेजदी।

दीवान रामदयाल अब अपने क्वार्टर में अपनी पत्नी के साथ रहते थे। दीवान रामदयाल की पत्नी हमेशा की बीमार थी। शादी होने के तुरन्त बाद ही वह बीमार होगई थी। दीवान रामदयाल उसकी बीमारी का विशेष ध्यान रखते थे। उनकी आधी आय उसी की बीमारी में लगती थी और आधी में वह अपने शौक पूरे करते थे।

वह लड़की मेरठ के एक भले घर की थी। उसे दीवान रामदयाल ने उसके घरवालोंके पास ऐसे पहुँचादिया कि किसीको कानों-कान भी सूचना न मिलसकी।

जब यह खबर कासिममिरजा को मिली तो उससे पहले दीवान रामदयाल अपने रोजनामचे में उसके घरवालों की यह रिपोर्ट दर्ज करचुके थे, 'हमारी लड़की बिनाकहे अपने मामा के यहाँ चलीगई थी। आज उसके मामा उसे लेकर आगए। हमारी खोईहुई लड़की हमें मिलगई।"

दीवान रामदयाल के इस काम को शहर की हिन्दू-जनता ने विशेष सम्मान के साथ देखा। आर्य समाज के मंत्री पंडित रामखिलावन स्वयं दीवानजी के पास धन्यवाद देने आए और सेठ दामोदरप्रसाद से जाकर उन

प्रसंशा की।

पुलिस के मुसलमान दारागाओं और दीरानों ने मिलकर एक मीटिंग की और सब मिलकर कासिममिरजा से मिले। सबने प्रार्थना की, "कोतवाल साहब! दीवान रामदयाल ने एक लड़की गुलाब के कोठे से उड़ाकर शहर के हिन्दुओं को देदी है। आपके कोतवाल रहते क्या मेरठ के हिन्दू इसतरह मुसलमानो पर हावी होजाएँगे? यह बहुत बड़ा जुल्म है मुसलमानों पर। आज जो बात गुलाब के कमरे पर हुई है, कल वही बात किसी खांदानी मुसलमान के घर पर भी होसकती है।"

कासिम मिरजा तनिक सोच-समझकर चलनेवाले व्यक्ति थे। वह काफ़ी शिक्षित थे। धार्मिक कट्टरता उनके मस्तिष्क में इस कदर नहीं घुसीहुई थी कि सब उन लोगों की बात सुनकर एकदम आग-बगूला होउठते और आँखें मीचकर कोई कार्यवाही करडालते। उन्होंने सबको समझाकर वापिस कर दिया और अपने अर्दली को भेजकर दीवान रामदयालको बँगले पर बुलवाया।

कासिम मिरजा का संदेश पाकर दीवान रामदयाल मुस्कराए और अर्दली से कहा, "कोतवालसाहब से कहना, मैं दो बजे हाजिरहूँगा।"

ठीक दो बजे दीवान रामदयाल कासिममिरजा की कोठी पर पहुँचे। कासिम साहब की त्योरी तनिक चढ़ीहुई थी। वह बोले, "कहिए दीवान जी! कैसे हाल-चाल हैं? अब तो आपके पास मिलने-जुलने के लिए भी समय नहीं रहा।"

"आपकी आज्ञा पाकर कभी न आया हूँ, ऐसा तो मुझे याद नहीं पड़ता कोतवाल साहब! परन्तु एक बात कहदूँ आपसे कि ये कान भरनेवाले लोग बड़े ही ज़लील होते हैं। मुझे जो कुछ कभी कहना होता है वह मैं सबके मुँह पर कहता हूँ। क्या आप मेरी शिकायत करनेवालों में से किसी को मेरे सामने बुलासकते हैं?" बात को सीधी पकड़तेहुए दीवान रामदयाल बोले।

"लेकिन तुम्हें यह कैसे पता चला कि तुम्हारी किसी ने मुझसे शिकायत की है।" कासिममिरजा ने पूछा।

"सरकार! भला यह भी कुछ पताचलने की बात है। जो लोग आपके पास शिकायत करने आते हैं वे ही मुझे जाकर सब खबर देदेते हैं। दीवान रामदयाल से छिपाकर पेट में कोई बात रखेगा तो क्या उसकी शामत ने धक्क

दिया है ?"

"तो ये हरामज़ादे दोनों ओर की बजाकर हमारा आपस में झगड़ा करानाचाहते हैं। कोतवाल हातमसिंह ने ठीक कहा था कि इन्हें मुँह नहीं लगाना। लेकिन वह लड़कीवाला मामला क्या है, ज़रा मैं भी तो जानलूं।"

"मामला ! आपसे मैं कभी कोई बात नहीं छिपाता। एक बार शराबकी बोतल पर क़सम खाने के बाद फिर छिपाना ही क्या ? कोई हिन्दू हो या मुसलमान, इससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं। हमारे समाने तो सरकार और अपना पेट, बस ये ही दो चीज़ें हैं। सरकार इसलिए कि वह हमें रोज़ी देती है और पेट इसलिए कि उसके लिए सरकार की नौकरी की है।"

कासिम मिरजा दीवान रामदयाल की बात सुनकर बोले, "तो तुमसे कोई लड़की गुलाब के कमरे से निकाली है।"

"ठीक है, कोतवाल साहब ! मैंने निकाली है, लेकिन उसे वहाँ फँसानेवाला भी मैं ही था। जो लोग आपसे आकर मुसलमानयित के नाम पर मेरी शिकायत करगए है, ज़रा उनसे पूछिए कि क्या वे लाए थे उस लड़की को यहाँ ?या गुलाब के पेट से निकली थी वह लड़की ?

काँग्रेस के जलूस में से कल्लू पहलवान को कहकर मैंने एक लड़की उठवादी थी। इसलिए नहीं कि वह हिन्दू है या मुसलमान। जुलूस में झगड़ा पैदा कराना था और उसी झगड़े की बदौलत कोतवाल हातमसिंह को नकद बीस-पच्चीस हज़ार रुपया कमाकर दिया था। आप जैसे बड़े अफसरों को इन साधारण बातों में दिमाग़ नहीं लगानाचाहिए।"

दीवान रामदयाल की शिकायत करनेवाले लोग समझरहे थे कि उन्होंने कोतवाल साहब से चुगली करके उनके मेरठ से पैर उखाड़दिए। परन्तु जब तीन चार दिन तक दीवान रामदयाल उसी चौकी पर बनेरहे और उनका तबादला होना तो दूर की बात रही कोई चारचोट भी उन्हें नहीं मिली, तो उनमेंसे एक-एक ने आकर दीवान रामदयाल से जाकर कहना आरम्भ किया, "मैंने कहा दीवानजी अदाबेअर्ज़ !"

"अदाबेअर्ज़ दरोगा जी !" दीवान रामदयाल ने बैठे-ही-बैठे उत्तर दिया, "आइए तशरीफ लाइए दारोगाजी !"

दारोगा करीमबेग तनिक मुस्कराकर मूढ़े पर बैठगेहा

बड़े ऐश की छनरही है दीवान जी ! मुकद्दर का तुम्हे भी अल्लाहताला ने बादशाह बनाकर भेजा है ।"

"सब आप जैसे अफ़सरों की कृपा है दरोग़ाजी !" सम्मानसूचक शब्दों में मिठास के साथ दीवान रामदयाल बोले "मैं तो आप जैसे अफ़सरों को ही अपना परमात्मा मानता हूँ, परन्तु कभी-कभी देखता हूँ कि परमात्मा कोई और ही है ।" तीखे व्यग्य से दीवान रामदयाल बोले ।

"दीवान रामदयाल ! तुम ग़लत समझरहेहो कि कोतवाल साहब से मैंने तुम्हारी शिकायत की । कुछ लोगों के मजबूर करनेपर मैं उनके साथ चला जरूर गया था लेकिन खुदा की कसम जो मैंने अपनी ज़बान से तुम्हारे खिलाफ़ कुछ भी कहाहो ।"

"इसमें क्या संदेह है दारोग़ाजी ! आप मेरे सर्वदा से मेहरबान रहे हैं । फिर भला आप मेरे विरुद्ध शिकातत कैसे करसकते थे ?" मन में घृणा लिए-हुए दीवान रामदयाल ने कहा ।

उसी दिन संध्या को दीवान रामदयाल जब एस. पी. साहब की कोठीपर शराब की बोतल पहुँचानेगए तो साहब बाहर बग़ीचे में टहलरहे थे । साहब ने दीवान रामदयाल को बुलाकर पूछा, "वेल डीवान रामडयाल टुमारा हाल-ल केशा ऐ । टुमारा इलाका में सब लोग खुश मालूम डेटा ऐ ।"

"सब ठीक है साहबबहादुर ! आप जैसा अफ़सर पाकर भी प्रसन्न न होंगे तो फिर कब होंगे ?"

"टुमारा नेया कोटवाल मिरजा टुमारा वोट टारीफ़ करटा था ।"

'कोतवाल साहब बहुत नेक अफसर हैं । उनकी बड़ी कृपा है मुझपर ।"

"हमने सिरफ डारोगा करीमबेग़ को टुमारो बुराई करटे सुना है। एक लरकी का वाट केटा था वो । क्या बात था वो ?" साहब ने पूछा ।

"हुज़ूर मैं दारोग़ा करीमबेग को भी अपना अफ़सर मानता हूँ । वह जो कुछ कहें सो ठीक है परन्तु जब हुजूर पूछ ही रहे हैं तो बयान करता हूँ ।

हुज़ूर, मैंने एक लड़की को, जिसे एक गुण्डे ने शहर से उड़ाकर एक वेश्या के यहाँ बेचदिया था, छुड़ाकर उसके माँ-बाप के हवाले करदिया । अंग्रेजी राज्य में जुल्म नहीं होसकता, मैंने यह साबित करदिया और लड़कीवालों से कहदिया कि जब तक मेरठ में साहबबहादुर हैं तब तक वे आनन्द से पैर फैला-

कर सोएँ।"

एस० पी० साहब की तारीफ़ के साथ अंग्रेजी सरकार की बड़ाई ने साहब के दिमाग़ पर गुलाबी नशा बिछादिया। वह बोले,"शाबाश डीवान रामडयाल! टुमने अंग्रेज शरकार का इज्जत बराया। टुमने जो कुछ किया, ठीक किया। डारोगा करीमबेग हमें बडमाश आडमी मालूम डेटा ऐ। उसका टबाडला हम गैर जिला को करेगा।"

"सरकार जो ठीक समझें करें, परन्तु रामदयाल कोई काम ऐसा नहीं करेगा जो अंग्रेज-सरकार और साहबबहादुर की शान के खिलाफ़ हो। आपकी शान बढ़ाने में रामदयाल की जान भी चाहिए तो हाजिर है।"

"अम जानटा ऐ, अम शब जानटा ऐ काम करनेवाले को और हराम-खोर को।

टुमारा इलाका में कहीं कांग्रेस का टो कोई गुलगपाड़ा नहीं है। कांग्रेश के जुलूस में टुमने जो कारगुजारी किया वो हमको कोटवाल हाटमसिंह ने सब बटलाडिया था। हमने टुमारा हिस्ट्री-शीट में बौट बरिया रिमार्क डिया है।"

"सरकार की कृपा से ही मैं सबकुछ करने में कामयाब होजाता हूँ। मेरे इलाके में कांग्रेसी लोग क्या खाकर गुलगपाड़ा करेंगे? मेरा नाम सुनकर उनके दम खुश्क होजाते हैं।"

"बौत अच्छा, बौत अच्छा! हम तुमसे बौत खुश हैं। मेमशाब टुमारा बौत टारीफ़ करटा ऐ। टुम मेमशाब को बौट बरिया शेराब पिलाटा ऐ। हमारा मेम शाब जब पीकर मजे में आटा ऐ तो टुमारा नाम लेना नहीं भूलटा। कहता है कि हिन्दुस्तान का आडमी बौत अच्छा होता है। बौत बरिया शराब पिलाता ऐ।"

दीवान रामदयाल साहब की कोठी से लौटकर अपनी चौकी पर आए तो बहुत प्रसन्न थे। करीमखां ने उन्हें आते ही सूचना दी, "सेठ दामोदरप्रसाद के यहां से मुनीमजी आए थे। उन्होंने किसी बहुत जरूरी काम से आपको याद किया है।"

दीवान रामदयाल ने अपनी कलाई पर बँधी घड़ी पर देखा तो सात बजे थे। वह बोले, "अच्छा करीमखां! ज़रा एक तांगा तो मंगाओ ज[illegible] चलो

सेठजी के यहाँ होआएँ।"

करीमखाँ ताँगा लेने चलागया।

: ६ :

मेरठ की पुलिस में आजकल मुसलमान अफ़सरों का ज़ोर था। शहर-कोतवाल मुसलमान था और दारोगा भी अधिकांश मुसलमान ही थे, परन्तु चौकियों के दीवान नव्वें प्रतिशत हिन्दू थे।

मेरठ के हिन्दुओं की सुरक्षा का भार आजकल इन्हीं दीवानों के हाथों में था और उनके मुखिया दीवान रामदयाल थे।

सेठ दामोदरप्रसाद को भी गुप्त सूचना पहुँचानेवाले लोगरहते थे। दीवान रामदयाल के विरुद्ध मुसलमान दारोग़ा मिलकर शहर-कोतवाल कासिम मिरज़ा से मिले, यह सूचना सेठजी को मिली तो उन्हें चैन नहीं पड़ी। उन्होंने अपने मुनीमजी को दीवान रामदयाल की चौकी पर भेजा, परन्तु वहाँ दीवानजी न मिले।

सेठ दामोदरप्रसाद स्वयँ यह सूचना लेकर जाने को उद्यतहुए तो सामने मुस्करातेहुए दीवान रामदयाल आगए। उनका मुस्कराताहुआ चेहरा देखकर उन्हें तनिक शांति मिली।

सेठजी ने खड़े होकर दीवानजी को मसनद पर बिठाया और मुनीमजी को दो गिलास शर्बत मँगाने को कहा।

आराम से बैठकर दीवान रामदयाल बोले, "किस लिए याद किया सेठजी ने? क्या कोई नया समाचार है? क्या दीवान रामदयाल के विरुद्ध कोई नया जाल रचाजारहा है?"

"बिल्कुल नया दीवानजी! बिल्कुल नया! दारोग़ा करीमबेग ने सब मुसलमान दारोग़ाओं के साथ जाकर आपकी कोतवाल साहब से शिकायत की है?"

"क्या शिकायत की है करीमबेग ने?"

"बेबात की बात खड़ी की है दारोग़ाजी ने। गुलाब के कोठे से जिस

लड़की को आपने छुड़ादिया था, उसीको लेकर बात का बतंगड़ बनालिया है। कहते हैं कि एक मुसलमान लड़की को दीवान रामदयाल ने हिन्दुओं को दे-दिया है।"

"हूँ!" कहकर बड़ी गम्भीर मुद्रा बनातेहुए दीवान रामदयाल बोले, "देखलिया आपने सेठजी! कितने संकट का काम करता हूँ मैं। धर्म के लिए मैंने सब अफसरों को अपना शत्रु बनालिया है। मेरठ के हिन्दुओं में इस बात की कैसी चर्चा है?"

"चर्चा की बात कुछ न पूछिए दीवानजी! आपपर आज मेरठ का हिन्दू बच्चा-बच्चा जानदेने को तत्यार है। सच कहता हूँ लोगों में तुम्हारे इस काम से आपका सम्मान बहुत बढ़गया है। पंडित रामखिलावन आपके इस कार्य पर लट्टू हैं। उन्होंने आपकी कहाँ-कहाँ कितनी प्रशंसा की है मैं बयान नहीं करसकता।"

"तो ठीक है सेठ दामोदरप्रसाद!" मुस्कराकर दीवान रामदयाल बोले। "दारोगा करीमबेग जैसे कीड़े-मकोड़े को दीवान रामदयाल कुछ नहीं समझता। नाखुन के मैल के बराबर भी मैं उसे नहीं मानता। इसी सप्ताह यदि उसे मेरठ न छोड़नापड़े तो मेरा नाम भी दीवान रामदयाल नहीं।" उन्होंने सीना उभारकर शान से कहा।

सेठ दामोदरप्रसाद के गोलमटोल चेहरे पर खुशी की रेखाएँ खिचगईं। उनका डूबताहुआ दिल खुशीसे फुरवालियाँ लेलेगा। वह बोले, "मैं तो पहले ही जानता था कि दीवान रामदयाल पर हाथ डालकर मूर्खता की है करीमबेग ने। अच्छीखासी आमदनी का टरहा था आपके साए में। गधे ने अपने पैरों में स्वयं कुल्हाड़ी मारली।"

दारोगा करीमबेग को अचानक अपने तबादले की सूचना मिली तो उन्हें पसीना आगया। कासिममिरजा के हाथों में करीमबेग के तबादले का आज्ञा-पत्र पहुँचा तो उन्होंने खुदा को लाख-लाख शुक्रिया भेजा कि उन्होंने दीवान रामदयाल के विरुद्ध एस० पी० साहब से कुछ न कहकर उल्टी उनकी प्रशंसा ही की।

दारोगा करीमबेग का तबादला मेरठ पुलिस और जनता में एक सनसनी थी। आज पुलिस-लाइन मेंइस चर्चा के अतिरिक्त आपसमें [illegible] का कोई

अन्य विषय ही नहीं था।

दारोग़ा करीमवेग ने अपनी वात के समर्थन के लिए कल्लू पहलवान को भी अपनी अपनी ओर फोड़लिया था। वह भी कासिममिर्जा से जाकर मिला था, परन्तु इस तवादले की सूचना ने उसके भी पैर उखाड़दिए थे। वह वहुत घवराउठा था।

दीवान रामदयाल ने उसी दिन करीमख़ाँ को चार सिपाहियों के साथ कल्लू पहलवान को वुलानेभेजा।

कल्लू पहलवान समझगया कि दीवान रामदयाल पर उसकी दारोग़ा करीमवेग से की गई साँठ-गाँठ का भेद खुलगया है।

वह उनके समक्ष आते ही उनके पैरों पर गिरपड़ा, परन्तु दीवान रामदयाल ने अपने पैर पीछे खींचतेहुए कहा, "मुझे मालूम नहीं था कल्लू ! कि तू इतना नमकहराम निकलेगा। तू तुरन्त मेरठ छोड़कर वाहर चलाजा, वरना तीन दिन के अन्दर जेल में डालदूँगा।"

"दीवान जी······!" गिड़गिड़ाकर कल्लू पहलवान ने कुछ कहनाचाहा परन्तु दीवान रामदयाल ने एक शब्द भी न सुना। दीवान रामदयाल स्पाती निश्चय के व्यक्ति थे।

करीमख़ाँ की कुछ समझ में न आया। उस तूफान में दो वड़े वृक्ष गिरे और ३५८ मेरठ से वाहर जापड़े, एक दारोग़ा करीमवेग और दूसरा कल्लू २लव · ।करी मखाँ को अभीतक रहस्य का कुछ पता न चला था। कभी-कभी कुछ हल्की सी आवाज उसके कानों में पड़ी थी, परन्तु क्या होरहा था, यह उसे कुछ ज्ञात नहीं था।

जव सव चलेगए तो करीमख़ाँ ने पूछा, "दीवानजी ! कई दिन से आप वड़े चिंतित थे। आखिर मैं भी तो सुनूँ कि क्या वात थी ? मेरी तो हिम्मत ही नहीं हुई, आपसे कोई वात पूछने की।"

"तुमने ठीक ही किया करीमख़ाँ ! जो इस वीच में मेरा मस्तिष्क नहीं चाटा, वरना तुम एक नई परेशानी वनजाते मेरे लिए।"

आज मैं विल्कुल निश्चित हूँ। तुम जो चाहो प्रश्न करसकते हो। अव तुम्हें भाभी का रेशमी सूट वनवाने के लिए वहुत जल्द कोई मोटी रकम कटवाऊँगा।"

'वह सब तो होता रहेगा दीवानजी ! पहले जरा यह तो बताइए कि मामला क्या था ? बेचारे करीमबेग पर बैठे बिठाए बिजली कैसे गिरी और ठेकेदार कल्लू पहलवान पर आपकी इतनी सख्त नजर क्यों हुई ?'

'यह नमकहरामी का दण्ड है। ये कहते हैं कि मैं हिन्दू हूँ और मुसलमानों पर अत्याचार करता हूँ, उनकी लड़कियों को भगाकर हिन्दुओं को देआता हूँ। क्या यह सच है करीमखाँ ? तुम एक सच्चे मुसलमान हो। पांच समय नमाज पढ़ते हो और तीस रोजे रखते हो। क्या तुमने मुझे कभी हिन्दू-मुसलमान का सवाल उठाते देखा ? तुम लोगों के साथ हिल-मिलकर रहनेवाला मुझ जैसा हिन्दू क्या कोई और तुम्हें मिलनेवाला है ?"

"आपके बारे में कोई मुसलमान यह कहता है तो वह मुसलमान नहीं है।" करीमखाँ ने बहुत दृढ़ता के साथ कहा।

करीमखाँ ने दीवान रामदयाल का मित्र स्वरूप देखा था। वह उन्हें एक सच्चे भाई और संरक्षक के रूप में देखता था। उसके जीवन की बेफिक्री और आनन्द दीवान रामदयाल की ही प्रदान की हुई थी। उन्ही की कृपा से वह अपने बाप-दादों का ऋण समाप्त करपाया था।

करीमखाँ ने पुलिस के मुसलमान सिपाहियों और दीवानों के बीच बैठकर दूसरे ही दिन स्पष्ट शब्दों में कहा, "आप लोग दीवान रामदयाल को नहीं पहचानते। वह न हिन्दू है और न मुसलमान। वह एक इन्सान है। जिसे वह अपना यार कहदेता है, उसके लिए मिटना जानता है और जिसके सिर पर हाथ रखदेता है उसके लिए सब कुछ करसकता है। मेरे देखने में ऐसा नेक और सच्चा इन्सान दूसरा नहीं आया।"

"एक बात तो हम भी कहेंगे" उन्हीं में से एक दीवान बोला, "दीवान रामदयाल बड़े ईमानदार आदमी हैं। मिल-बांटकर खाने को वह अपना फ़र्ज़ समझते हैं। किसी दूसरे का हक़ मार जाना वह नहीं जानते।"

'दीवान रामदयाल के जीवन की मैं कई घटनाएँ बता सकता हूँ, जब उन्होंने मुसलमानों को हिन्दुओं से बचाया है। पांच वर्ष पूर्व की बात [illegible] [illegible] [illegible] तब उन्होंने तीन मुसलमान लड़कियों को हिन्दू [illegible] था। अपनी जान पर खेलकर वह काम किया था उन्होंने।

करीमखाँ के साथ दीवान रामदयाल की [illegible]

व चुप थे, लज्जित थे। उन सबने आगे-पीछे जाकर दीवान रामदयाल से पनी मूर्खता के लिए क्षमा-याचना की।

दीवान रामदयाल के दिल पर उस हर व्यक्ति का नाम लिखा था जो मर्जा के पास गया था। उनमें से जो-जो आकर क्षमा माँगतेगए, उनके नाम ह काटतागया और जो नहीं आए उनके नीचे एक मोटीलाल लकीर वींचदी।

दीवान रामदयाल का भाग्य-नक्षत्र उस समय ऊँचे आकाश में चमकरहा था। दीवान होने पर भी वह दारोगाओं को कुछ नहीं समझते थे। उनके एस. पी. साहब से सीधे सम्बन्ध थे।

एस. पी. साहब से सम्बन्ध बनाने में वह जितना भी रुपया कमाते थे, सब व्यय करदेते थे। आज वह बहुत देर तक साहब की कोठी पर उनसे बातें करतेरहे।

साहब बोले, "वैल डीवान रामडयाल! टुमारे घर पर क्या काम होटा है?"

"हम जमींदार लोग हैं सरकार! जिसे आप अंग्रेज़ी में लैंड-लार्ड कहते हैं।" कुछ शब्द अंग्रेजी के भी दीवान रामदयाल ने सीखलिए थे।

"टुम जमींदार होकर नौकरी जरूर शौक के लिए करटा होगा।" एस. साहब ने कहा।

"बिलकुल ठीक फ़रमाया सरकार ने। मैं नौकरी पेट पालने के लिए नहीं करता। मैं घर का ज़मीदार हूँ। मुझे पुलिस की नौकरी का शौक है सरकार! यदि आपकी कृपा रहेगी और आप मुझे किसी योग्य समझेंगे तो तरक्की अवश्य देंगे।" दीवान रामदयाल ने कहा।

"जरूर-जरूर डीवान रामडयाल हम टुमको जरूर टरक्की डेगा। टुम बौत काबिल आडमी है।" साहब बोले।

दीवान रामदयाल एस. पी. साहब से अपनी प्रशंसा सुनकर हवा में उड़ने लगे। उनके दिल का गुलाब खिलताजारहा था।

दीवान रामदयाल की उन्नति का लक्ष्य केवल दारोगाई तक ही था। दारोगा के पद से ऊपर उठने की उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

दीवान रामदयाल अब जीवन के दूसरे लक्ष्य पर खड़े थे। पहले लक्ष्य में

उन्होंने शराब, और ऐश प्राप्त की। घर का कोई उत्तरदायित्व उनके सिर पर नहीं था। जो कमाया यारबाशी और ऐश में उड़ाया और उसी की बदौलत बड़े-बड़े सम्बन्ध बनाए।

वह जीवन के दूसरे लक्ष्य की ओर बढ़ना ही चाहते थे कि उनके पिता उन्हें धोखादेगए। उनका स्वर्गवास होगया और परिवार का उत्तरदायित्व उनके सिरपर आगया।

उनकी माँ, जो अपने पिता की अकेली सन्तान थीं, अपने पिता के घर चलीगई थीं। अपनी पत्नी को वह अपने पास लेआए थे।

दीवान रामदयाल की पत्नी बीमार थीं। उनके पास आजाने से दीवान रामदयाल के रहन-सहन में अन्तर आगया था।

अब उन्हें जिस रात्रि को घर नहीं आनाहोता था, वह करीमखाँ को अपनी पत्नी के पास भेजकर सूचित करादेते थे।

दीवान रामदयाल साहब की कोठी से सीधे गुलाब के यहाँ पहुँचे। घर जाने को उनका मन नहीं हुआ।

गुलाब एक अन्दाज के साथ बोली, 'दीवान जी! यह बात आपने मुझे पहले नहीं बताई।" उसका मतलब दीवानजी की शादी से था। गुलाब अभी तक दीवानजी को अविवाहित ही समझती थी।

"इनके विषय में तुमने कभी पूछा भी नहीं गुलाब! क्या मैं स्वयं ही अपनी पूरी हिस्ट्री तुम्हें सुनानेलगता?" सचाई के साथ दीवान रामदयाल ने कहा।

"तो कोई बात नहीं सरकार! हम लोग तो पेशेवर ठहरीं। उनसे मेरा सलाम कहना। खुदा आपके लड़का दे, तो वह नाच नाचूँ, वह नाच नाचूँ कि लोग देखकर दंग रहजाएं।"

शराब की खुमारी में दीवान रामदयाल गुलाब को अपने पास बिठाकर उसके दोनों गालों को अपनी हथेलियों में हल्के से भींचतेहुए बोले, "गुलाब! मेरी दीवानन भी क्या है, चार हड्डियों का ढाँचा है। परन्तु जिस दिन मैं उसे ब्याहकर लाया था, तो क्या रूप था उसपर, परन्तु वह सब तो अब स्वप्न होगया।"

"सुना है बेचारी बीमार रहती है।" गुलाब बोली।

"वहुत वीमार है गुलाव ! परन्तु बड़ी नेक औरत है। तू कभी मिलेगी उससे, तो तुझे प्रसन्नता होगी।"

"मैं जरूर मिलूँगी दीवान जी ! खुदा वह दिन दिखाए जब उस नेक-वख्त के पेट से वेटा पैदा हो और मैं उसमें खुशियाँ मनाऊँ। सच जानो दीवान जी ऐसी दावत करूँगी जैसी अपने पेट की लड़की की करती।"

यह कहकर गुलाव ने अपना सिर दीवान रामदयाल के सीने पर टिका दिया और अपनी अँगड़ाई में फैली वाहों के अन्दर दीवानजी को कसकर बोली, "दीवानजी ! एक बात पूछूँ, आपसे !"

"एक नहीं, तुम दो बात पूछसकती हो गुलाव !" प्यार से सिर पर हाथ फेरकर उसके उलझे वालों को सुलझाने के लिए उनमें ऊँगलियाँ डालतेहुए दीवान रामदयाल ने कहा।

"सच-सच कहना, क्या तुमने कभी उनके सामने मेरा नाम लिया है ? अगर न लिया हो, तो खुदा के लिए एक नाचनेवाली ही मुझे रहनेदेना।"

दीवान रामदयाल ने गुलाव को कभी ग़लत नहीं समझा, परन्तु उन्होंने अपने को भी सर्वदा ठीक रहनेदिया। गुलाव ने अव इस क़रीने के साथ अपने को वापिस खींचा कि दीवान रामदयाल को तनिक भी कष्ट न हुआ।

दीवान रामदयाल वहाँ इस तरह जाते थे कि मानो अपने ही घर में चले-गए हों। गुलाव को उनकी सेवा करने में आनन्द आता था।

तभी किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। गुलाव जीने पर गई तो देखा करीमखाँ खड़े थे। गुलाव ने धीरे से कहा, "दीवाननजी से कहदेना कि दीवानजी गश्त पर गए हैं।"

करीमखाँ गुलाव को सलाम करके वापस चलागया और गुलाव आलमारी से शराव की वोतल निकालकर दीवान रामदयाल के पास पहुँचगई।

दो गिलासों में शराव उड़ेलकर एक दीवान रामदयाल के हाथ में दिया और दूसरे को अपने हाथ में लेकर वोली, "दीवानजी मैंने वड़े-वड़े पीनेवाले देखे हैं। यहाँ सभी तरह के लोग आते हैं, परन्तु आपके सामने कुछ नहीं, सच जानिए दीवानजी ! जवसे मैंने आपके साथ पीना शुरू किया है तवसे किसी ऐरा-ग़ैरा के साथ हाथ में गिलास लेते शर्म आती है।"

"गुलाव ! वह दिन याद है तुझे जव हम रामप्यारी के यहाँ से तेरे

पास आए थे।" बात बदलतेहुए दीवान रामदयाल ने कहा।

"मेरे दिल पर आपकी हर बात नक्श है दीवानजी! आप कहें तो एक-एक बात गिनादूं आपको।"

"वह दिन था और आजका दिन है गुलाब! दीवान रामदयाल के शरीर को वह नहीं छूसकी। सेठ दामोदरप्रसाद उसे रुपया अवश्य अधिक दे-सकता है, परन्तु ज़िन्दगी का जो आनन्द मैं देसकता हूँ, वह उसके पास कहाँ?" दीवान रामदयाल ने गुलाब की आँखों में आँखें डालकर उसे अपनी प्यार की भुजाओं में कसकर कहा।

"परन्तु इस ज़िन्दगी के मज़े को समझने की तमीज भी तो होनीचाहिए दीवानजी! इसीलिए तो करीमखाँ ने उस दिन कहा था कि हम पेशेवर नाचने-वाली हैं और वह एक जंगल का फूल है, जिसे दीवान जी की मेहरबानी ने लाकर गुलशन में खिलादिया है।

देखते नहीं हो क्या, चेहरे पर हवाइयाँ, उड़तीजारही हैं उसके। मैं पूछती हूँ, कहाँ है, वह हुस्न, कहाँ है वह नाज़ और अन्दाज़, कहाँ है वह चेहरे की बनावट, कहाँ है वह होठों की मुस्करान और आपकी गुलाब ज्यों-की-त्यों है।" एक ठसके के साथ गुलाब ने कहा।

"यानी हुस्न को कैद करलिया है मेरी गुलाब ने? गुलाब तुम बड़ी ही खतरनाक हो। तुम्हारा काटा पानी नहीं माँगसकता। परन्तु दीवान रामदयाल भी कुछ कम विषैला नहीं है। इसलिए बस यही यादरखना कि एक साँप को छोड़कर दूसरे से लिपटने का प्रयास न करना।"

"तोबाह, तोबाह! क्या कहरहे हो दीवानजी! गुलाब का यह सिर जो दीवान रामदयाल की गोद में रखा है, किसी और की गोद में नहीं रखाजासकता। जो होंठ आपके होंठों को छूचुके हैं उन्हें दौलत दूसरे होंठों से नहीं चिपकासकती। हम पेशेवर जरूर हैं लेकिन हमारा भी कुछ दीन-ईमान होता है। हम बहुत सोच-समझकर किसी को अपना दिल देती हैं। और जिसे एक बार दिल देदेती हैं फिर उसपर अपनी जान तक कुर्बान करने को तैयाररहती हैं।"

दीवान रामदयाल ने गुलाब को अपनी बाहुओं में भरकर सीने से लगाते-हुए कहा, "गुलाब! तुमने जादू करदिया है मुझपर। तुमने

जगह मेरे दिल में वनाली है, वह तुम्हारी होचुकी है गुलाव ! उस जगह कोई दूसरी कमी जीवन में नहीं आसकेगी।"

दो जीवन मिलकर एक होगए थे। दोनों ने एक दूसरे की आँखों में देखा और दोनों एक दूसरे में खोगए।

: १० :

दीवान रामदयाल जहाँ एक ओर अपनी ऐश की जिन्दगी विताते थे, वहाँ दूसरी ओर अपनी पत्नी का भी पूरा-पूरा ध्यान रखते थे। उन्हें मेरठ लाते ही उन्होंने उनका इलाज पुलिस-हस्पताल के वड़े डाक्टर से कराना आरम्भ किया। डाक्टर ने वड़े ध्यान से उनका इलाज किया।

वीमारी की ही दशा में उनके दो लड़के और दो लड़कियाँ हुईं। जब पहला लड़का हुआ तो शानदार दावत की। दीवानजी की माताजी भी आईं। परन्तु दुर्भाग्य यह रहा कि एक भी वच्चा न वचा। उनकी पत्नी की दशा पहले से भी अधिक खराव होगई। उनके वदन का ढाँचा मात्र रहगया।

दीवान रामदयाल की माँ ने देखा कि उनके लड़के का जीवन वहू की वीमारी ने नष्ट करदिया था। वह एक दिन दीवान रामदयाल से वोलीं, "वेटा रामदयाल ! करेगा तो तू अपने मन की ही, परन्तु फिर भी मैं कहती हूँ कि यदि वहू की छोटी वहन से तू अपना विवाह करले तो वहू को भी आराम हो-जाएगा और मेरी आत्मा को भी शान्ति मिलेगी।"

दीवान रामदयाल यह सुनकर हँसतेहुएवोले, आप जो कुछ कहरहीं हैं मेरी भलाई के लिए कहरही हैं माताजी ! परन्तु यदि इसकी वहन भी यहाँ आकर इसी तरह वीमार पड़गई तो मैं दोनों का इलाज कराने के लिए रुपया कहाँ से लाऊँगा ? देख नहीं रही हैं आप कि मैं जो कुछ कमाता हूँ, सव इसकी वीमारी में लगजाता है।"

इस वात की भनक वहू के कानों में पड़ी तो उसने अकेले में ही रोना प्रारम्भ करदिया। अपने दिल की वात उसने किसी से न कही। दिल के

गुबार आँसुओं से धोकर आँखों से बाहर निकालदिए।

दीवान रामदयाल क्वार्टर से बाहर निकलआए।

वह चौकी पर पहुँचे तो करीमखाँ ने सूचना दी, "सुना है आज कांग्रेस ने बड़ा बवंडर खड़ा कियाहुआ है! हमारे इलाके के किसी मकान में आज नमक बनाया जाएगा।"

"तुम्हें इस बात की किसने सूचना दी?" दीवान रामदयाल ने पूछा।

करीमखाँ ने एक छपाहुआ इश्तहार दीवान रामदयाल के हाथ में दिया तो वह पढ़कर आगबबूला होउठे। वह मुझसे बोले, हरामजादे कहीं के। मेरी हिस्ट्रीशीट पर धब्बा लगवाना चाहते हैं। शहर के सब इलाके छोड़कर उन्हें मेरा ही इलाका मिला है यह कुकर्म करने को। एक-एक की चमड़ी न उधड़वाडालूँ तो मेरा नाम भी दीवान रामदयाल नहीं।"

"सुना है बैलीबाजार के किसी मकान में यह सब कुछ होनेवाला है।" करीमखाँ बोला।

"कोई बात नहीं। जहाँ कहीं भी होगा, देखाजाएगा। आखिर आएगा तो सामने ही।"

"इसमें क्या शक है।"

उसी समय कोतवाली का एक सिपाही आया। उसने दीवान रामदयाल को सलाम करके कोतवाल साहब का संदेश देतेहुए कहा, "कोतवाली में गारद की कमी नहीं है। आपके इशारे पर जहाँ आप चाहेंगे पहुँचजाएगी।"

"कोतवाल साहब से कहदेना कि यहाँ उनकी पल्टन की आवश्यकता नहीं होगी। मेरे पास सब प्रबन्ध रहता है। यदि बात हद से बढ़ी तो सूचना पहुँचा-दूँगा।" दीवान रामदयाल बोले।

करीमखाँ से कहा, "तुम लीले पहलवान को बुलालाओ। कहना, जिस दशा में भी हो, उठाचलाआए।"

कोतवाली का सिपाही संदेश देकर कोतवाली चलागया। लीले पहलवान करीमखाँ के साथ वहाँ आगया।

लीले पहलवान का रंग एकदम नीला था। नाटा क़द, पेट नाभी से साथ बाहर निकलाहुआ, चलते समय दोनों जांघें एक दूसरी से रग

पहिनता था। पैर आम तौरपर नंगे रहते थे।

दीवान जी का संदेश सुनकर लीले पहलवान अखाड़े की मिट्टी-लगे बदन पर यों ही मलमल का कुर्त्ता गले में डाल, लँगोटे पर तेहमद मारे, नंगे पैरों चलाआया था। वह सलाम झुकाकर बोला, "किस लिए याद किया हुजूर ने।"

"आगए लीले पहलवान! क्या हाल-चाल है तुम्हारे अखाड़े का? कितने पट्ठे पालेहुए हैं?" दीवान रामदयाल ने पूछा।

"बीस-पच्चीस पट्ठे पालेहुए हैं दीवान जी! लेकिन ग़ज़ब के लौंडे हैं, बिच्छू के बच्चे हैं। आप कहदें तो पूरे मेरठ को अपनी लाठियों के सामने भेड़-बकिरियों की तरह हाँकलें।" सीना उभारकर लीले पहलवान बोला।

"और कल्लू पहलवान के अखाड़े का क्या हाल-चाल है?" दीवान रामदयाल ने ज़रा मुस्कराकर पूछा।

"वह तो कभी का खत्म होचुका दीवानजी! अखाड़े सूखे पड़े हैं। कौन जाएगा वहाँ अब? जिस अखाड़े पर आपकी नजरेंइनायत न हो, वहाँ परिन्दा भी पर नहीं मारसकता।' लीले पहलवान बोला।

"अपने पठ्ठों को लेकर गुलाब के कमरे पर पहुँचजाओ और जब तक मेरा इशारा न हो नहीं रहना। तुम्हारे पट्ठों के पीने के लिए बीस बोतलें शराब मैंने वहाँ भिजवादी है। और किसी चीज की जरूरत हो तो गुलाब को बोलदेना, वह मँगादेगी।" दीवान रामदयाल बोले।

लीले पहलवान की खुशी का पारावार न रहा। उसके पट्ठे तो उससे कई दिन से शराब पिलाने को कररहे थे। खुदा ने उनकी इच्छा पूरी करदी।

लीले पहलवान ने अपने सूखे होठों पर जीभ फेरी और मुस्कराकर बोला, "दीवानजी! आप मेरे मन की बात खूब ताड़ते हैं। आपने कैसे जान लिया कि मेरे पट्ठे मुझे कई दिन से शराब के लिए तंग कररहे थे?"

"मैं अपने आदमियों के मन की बात खूब पहचानता हूँ लीले पहलवान! मेरे साथ वफ़ा करनेवाला इन्सान कभी धोखा नहीं खासकता और मुझसे बेवफ़ाई करके कोई पनप नहीं सकता।

अब देर न करो लीले! तुरन्त अपने पट्ठों को लेकर गुलाब के कोठे पर पर पहुँचजाओ।" इतना कहकर दीवान रामदयाल मूढ़े से उठखड़ेहुए और बागीचे के छोटे से लॉन में घूमनेलगे।

दीवान रामदयाल को रह-रहकर कांग्रेसियों पर क्रोध आरहा था। अपने इलाके में अशांति फैलानेवाले इन गुण्डों को वह बिलकुल नापसंद करते थे। आज़ादी की बात उन्हें मज़ाक मालूम देती थी। जिस राज्य को प्राप्त करने के लिए इतने दिन तक अंग्रेज़ों ने प्रयत्न किया, भयंकर लड़ाइयां लड़ीं, धोखे और चालबाज़ियों का प्रयोग किया, सन् अठारह सौ सत्तावन के विद्रोह को कुचला, उसे इन दो अंगुल की बाढ़वाली टोपी लगानेवाले गांधी के गुलमटों के हवाले भला कैसे करजाएंगे; यह बात उनकी समझ में नहीं आती थी।

दीवान रामदयाल अपने इलाके में हुड़दंगेबाजी को नहीं पनपने देसकते थे। उन्होंने निश्चय करलिया था कि कोतवाल हातमसिंह ने जुलूस पर क्या क़हर ढाया होगा जो वह आज की इस नमक-कानून तोड़ने वाली सभा पर ढाएंगे।

संध्या के चार बजे, ठीक उसी समय जो इश्तहार में छपा था, काँग्रेस का एक जत्था महात्मा गाँधी की जै, भारत माता की जै, इन्क़लाब-ज़िन्दाबाद के के नारे लगाताहुआ आया। वह घंटाघर से चलकर टाउन-हॉल में चलागया।

टाउन-हॉल में पहले से भी कुछ लोग एकत्रित थे।

इस जत्थे ने टाउन-हाल के मैदान में जाकर अपना झंडा गाड़दिया। जत्थे के जत्थेदार ने छोटा सा भाषण दिया। उसके पश्चात उसने अपने झोले से निकाल कर एक नमक की पुड़िया का नीलाम किया। वह पुड़िया पाँच-सौ रुपए में बिकी।

करीमख़ाँ ने दीवान रामदयाल को उस जत्थे की सूचना दी। दीवान रामदयाल ने पूछा, "सभा पूरीतरह जुटगई करीमख़ाँ ?"

"जी हाँ। नमक की पुड़ियों का नीलाम होरहा है। एक टके की पुड़िया पाँच सौ में ली है तमाशबीनों ने।" करीमख़ाँ ने उत्तर दिया।

"पाँच सौ में!" दीवान रामदयाल आश्चर्य चकित रहगए।

दीवान रामदयाल करीमख़ाँ और चौकी के दस सिपाहियों के साथ गुलाब के कमरे पर पहुँचे। लीले पहलवान के पट्ठे, शराब में धुत्त,लेट लगारहे थे। दीवान रामदयाल को देखकर सब एकदम खड़े होगए और लीले पहलवान ने सलाम झुकातेहुए कहा, "सब पट्ठे हाज़िर है दीवान जी!"

"ठीक है। तुम सब हमारे सिपाहियों के साथ चलेजाओ और उसने पार्क

में जो जलसा होरहा है, उसके बीच में घुसजाओ। इन लोगों की मेज़-कुर्सियाँ उठाकर फेंकदो और जो आदमी लेक्चर देरहा हो उसकी गर्दन पकड़कर ज़मीन पर गिरादो। जो तख़्त पर बैठे हों उन्हें इतनी करारी मार लगाओ कि अधमरे होजाएँ। पर यह ध्यान रखना कि कोई मरने न पाए।"

"ऐसा ही होगा दीवानजी!" लीले पहलवान ने कहा, "आप बिलकुल बेफ़िक्र रहें।"

"मार-पीट के बाद सबको रस्सियों में बाँध-बाँधकर चौकी पर लिवालाना करीमखाँ! मैं चौकी पर जारहा हूँ।" दीवान रामदयाल बोले।

"बहुत अच्छा दीवानजी!" करीमखाँ ने कहा और वह लीले पहलवान के बीस पट्ठे और दस सिपाहियों को लेकर जलसे में पहुँचगया।

उन्हें देखकर स्टेज से बोलनेवाला काँग्रेस का जत्थेदार बोला, "भाइयो और बहिनो! अब आप लोगों की परीक्षा का समय आगया है। पुलिस के कुत्ते आचुके हैं। जोलोग उनसे डरते हों वे चुपचाचाप अपने-अपने घरों को चलेजाएँ। होसकता है अब यहाँ जलियाँवाले बाग का ही दृश्य सामने आए।"

लीले पहलवान के पट्ठे दनदनातेहुए भीड़ में घुसतेचलेगए और उन्होंने सबके देखते-देखते स्टेज पर शान्त बैठे लोगों पर डंडे बरसाने प्रारम्भ करदिए। उनका किसी ने विरोध नहीं किया और न भगदड़ ही मची।

दीवान रामदयाल अपनी चौकी के सामने मूछों पर ताव दिए घूमरहे थे।

कोतवाली में कासिम मिरजा परेशान थे। उनकी समझ में नहीं आरहा था कि दीवान रामदयाल आख़िर कर क्या रहे थे। उन्होंने फिर एक सिपाही दीवान रामदयाल के पास भेजनाचाहा। उन्होंने लिखा, "काँग्रेस को सरकार ने नियम-विरुद्ध घोषित करदिया है। ऐसी दशा में यदि शहर में काँग्रेस का जल्सा होगया तो मेरी बदनामी होगी। मेरी हिस्ट्री-शीट ख़राब होजाएगी। उसपर काला दाग़ लगजाएगा।"

यह लिखकर ही उन्हें सब्र नहीं हुआ। उसे वहीं फाड़कर पुलिस की छोटी गाड़ी मँगाई और उसमें बैठकर सीधे दीवान रामदयाल की चौकी पर पहुँचे।

उन्होंने देखा कि दीवान रामदयाल मौज से चौकी के बाहर घूमरहे थे। कोतवाल साहब को कार से उतरते देखकर दीवान जी ने आगे बढ़कर उन्हें सलाम किया।

"तुम यहाँ घूमरहे हो ?" कासिममिरज़ा ने पूछा ।

"और जहाँ आप आज्ञा करें वहाँ चलूँ ।" मुस्कराकर दीवान रामदयाल बोले ।

"मेरा मतलब है कि तुमने काँग्रेस के जुलूस और जलसे को रोकने के लिए क्या किया ?" कासिममिरज़ा ने पूछा ।

"जोकुछ कियाजासकता था, वह सभी कुछ करदियागया है कोतवाल साहब ! दीवान रामदयाल के इलाके के लिए आपको चिंता करने की आवश्यता नहीं है । दीवान रामदयाल के किसी काम से कभी आपको बदनामी नहीं आएगी ।" दीवान रामदयाल सीना उभारकर बोले ।

तभी उन्हें सामने से रस्सियों में बँधे तीस-पच्चीस काँग्रेसी और बीस-तीस दर्शक लाएजाते दिखाईदिए ।

"लीजिए वह आरहा काँग्रेस का वह जुलूस और जल्सा जिसके लिए आप परेशान थे । अब आप कहें तो इसका यहींपर निपटारा करदूँ और चाहें तो कोतवाली भेजदूँ ।" मुस्कराकर दीवान रामदयाल बोले ।

वह दृश्य देखकर कासिम मिरज़ा की जान-में-जान आई । उनके चेहरे पर मुस्कराहट दिखाई दी और उन्हें उन लोगों पर हँसी आई जो उन्हें दीवान रामदयाल के विरुद्ध उकसातेरहते थे ।

कासिम मिरज़ा कार में बैठतेहुए बोले, "दीवान रामदयाल ! इस मामले को यहीं पर निपटादो । कोतवाली में केवल उन लोगों को भेजना, जिन्हें जेल भेजनाहो ।"

"जो हुक्म ! आप निश्चिन्त रहें इस ओर से । दीवान रामदयाल के रहते आपको चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है । आपके कान भरनेवाले आपको व्यर्थ परेशान करते हैं । आप उनके साथ कड़ाई से काम लें तो आपकी आधी परेशानी जातीरहे ।"

"तुम ठीक कहते हो दीवान रामदयाल !" कासिम मिरज़ा ने कहा । "सच बात यही है । उन लोगों में आप जैसी [illegible]नियत नहीं है । आपकी तरक्की को देखकर उन्हें हसद होती है । ये सब मुझे व्यर्थ परेशान करते हैं । आज मैंने निश्चय करलिया है कि किसी भी चुगलखोर को अपने पास नहीं फटकनेदूँगा ।"

कोतवाल साहब कार में बैठकर कोतवाली चलेगए।

लीले पहलवान के पट्ठों ने रस्सियों में बँधे काँग्रेसियों और दूसरे लोगोंको लाकर चौकी के सामने खड़ाकरदिया।

दीवान रामदयाल उनके सामने जाकर गरजतेहुए बोलें, "हरामजादो! बतलाओ किस-किस को आजादी चाहिए? मैं दूँगा तुम्हें आजादी।"

दीवान रामदयाल की बात सुनकर काँग्रेसी जत्थेदार बोला, "आजादी ज़िन्दाबाद!" उसके बोलते ही सब रस्सियों में बँधे वीरों ने नारा लगाया, "आजादी जिन्दाबाद! इन्कलाब जिन्दाबाद!"

यह नारा सुनकर दीवान रामदयाल का दिल भक्क-भक्क करके जलउठा, मानो फूस के जलते हुए छप्पर पर किसी ने स्प्रिट डालदी। दीवान रामदयालका पारा सातवें आसमान पर पहुँचगया। वह क्रोध में पागल होकर बोले, "करीम खाँ! क्या देखरहे हो। इन पाजियों की ज़रा करारी मरम्मत कराओ, तब अक्ल ठिकाने आएगी। शायद अभी इनकी हड्डियाँ सहीसलामत बनीहुई हैं। जब तक दो-चार की हड्डियों का चूरा नहीं होजाएगा तब तक इनके मस्तिष्क ठीक नहीं होंगे।"

लीले पहलवान को बुलाकर दीवान रामदयाल ने कहा, "अब ज़रा बेंतें निकाललो और सड़ासड़ बरसाओ इन हरामखोरों पर।"

"जो हुक्म सरकार का।" कहकर लीले पहलरान ने अपने पट्ठोंको बेतों लैस करदिया और फिर पाँच मिनट तक इतनी ज़ोर से बेंतें बरसाईं कि कई लोग अचेत होकर जमीन पर गिरपड़े। उनकी अचेतन अवस्था में भी उनके बदन पर लीले पहलवान के पट्ठों की बेंतें बरसतीरहीं।

जब बेंतों की मार का दौर समाप्त हुआ तो दीवान रामदयाल फिर बाहर निकले और मूँछों पर ताव देतेहुए गरजकर बोले, "अब आज़ादी जिन्दाबाद है या मुर्दाबाद! कोई जवाँमर्द अब भी जिन्दाबाद कहनेवाला हो तो जबान निकाले। दीवान रामदयाल के सामने जबान निकालनेवाले की जबान खींच-लीजाती है।"

काँग्रेसी जत्थेदार बेंतों की मार खाकर बेहोश होगया था परन्तु दो जीदार सत्याग्रहियों को अभी कुछ होश था। उन्होंने 'आजादी जिन्दाबाद' का नारा लगानाचाहा परन्तु जबान न हिलसकी।

अब दीवान रामदयाल के चित्त को शांति मिली। एक भी जबान उनकी बात का उत्तर देने को न हिली। अपना सामना करनेवाले को दीवान रामदयाल सहन नहीं करसकते थे।

लीले पहलवान के पट्ठों को आज की जवाँमर्दी के लिए दीवान रामदयाल ने दो-दो रुपए इनाम दिलाया। उससे कहा, "जाओ सेठ दामोदरप्रसाद से पचास रुपए हमारा नाम लेकर लेलेना। तुम्हारे काम से आज हम बहुत खुश हुए।"

"दीवान जी की नज़रेइनायत रहनी चाहिए। आपके हर काम के लिए खादिम हमेशा तय्यार मिलेगा।" लीले पहलवान बोला।

"अखाड़े में पट्ठों की तादाद बढ़ाने का प्रयत्न करो। कम-से-कम पचास पट्ठे हर समय तय्यार रहने ही चाहिएँ।" दीवानजी बोले।

"पट्ठे तो मैं आज पचास करलूँ दीवानजी! लेकिन उनके खाने-पीने के खर्च का भी तो सवाल है।" लीले पहलवान ने कहा।

"अबे! कुछ करके तो दिखा लीले! खर्च सब भगवान् देता है। खुदा पर भरोसा रख। जो बीस का खर्च चलाता है, वह पचास का भी चलाएगा।" दीवान रामदयाल मुस्कराकर बोले।

दीवान रामदयाल के मुस्कराते आश्वासन पर लीले पहलवान क्या नहीं करसकता था। वह मगन मुस्कराते हुए बोला, "इस बार जब सरकार अखाड़े में तशरीफ लाएँगे तो आपको पचास से कम पट्ठे नज़र नहीं आएँगे।"

"तो उनका प्रबन्ध भी होजाएगा।" दीवानजी ने कहा।

"मुझे आपसे पूरी-पूरी उम्मीद है। आपके ही दमपर तो मैं मेरठ का उस्ताद कहलाता हूँ।" लीले पहलवान बोला।

मस्त तमाशबीन के रूप में देखा, एक शराबी के रूप में देखा, एक रसिया के रूप में देखा, परन्तु जिस रूप में उसे कल देखा, वह एक जल्लाद का रूप था। उसे देखकर जनता के दिल को भयँकर ठेस लगी।

कांग्रेस के निहत्थे जल्से पर जिस बेरहमी से उसने लाठियाँ बरसवाईं, वह बहुत भयानक दृश्य था। शहर के सम्मान के संरक्षक दीवान रामदयाल ने शहर के छटेहुए गुण्डों से शहरकी बहू-बेटियों और शहर के नौजवानों की धज्जियाँ बिखरवादीं।

मेरठ का नौजवान खून उबाल खाउठा। दीवान रामदयाल के इस कार्य को सबने घृणा की दृष्टि से देखा। देवनागरी हाई स्कूल के चार लड़कों ने मिलकर कसम खाई कि मेरठ में या तो वे ही रहेंगे या दीवान रामदयाल।

अंधी जवानी ने इन चार फूलों को पहाड़ से टकराने के लिए हवा पर उड़ादिया। वे अपने भयंकर इरादे बनानेलगे।

दूसरे दिन दीवान रामदयाल संध्या के झुटपुटे में कासिममिरजा से उनकी कोठी पर मिले और दो हजार के नोट पेश करतेहुए बोले, "सरकार! कोई बदमनी तो नहीं नजर आई आपको मेरे इलाके? मेरे कारण कोई बदनामी तो नहीं हुई आपकी?"

दो हजार के नोट लेकर कासिम मिर्जा बोले, "कोतवाल हातमसिंह ने कुछ तुम्हारे बारे में कहा था, तुमने सच करदिखाया। तुम्हारी हिम्मत, होशियारी और सचाई का मैं कायल हूँ? एस. पी. साहब कहते थे कि तुमने मेरी उनसे बहुत तारीफ की है। मैं तुमसे बहुत खुश हूँ।"

दीवान रामदयाल का दिल खिलउठा कोतवाल साहब के मुँह से अपनी तारीफ सुनकर। इसके पश्चात वह विनम्रतापूर्वक मुस्कराकर बोले, "आप अफ़सर हैं कोतवाल साहब! मेरी हिम्मत तो आप लोगों के बूते पर ही है। आप लोग मौका ही न दें तो मैं क्या खाकर हिम्मत दिखाऊँ? लेकिन हाँ, जहाँ तक सचाई का सवाल है, मैंने लाखों का वारा-न्यारा किया है और फिर भी मेरे पास एक पाई नहीं है। जहाँ से जो दौलत कमाता हूँ वहीं पर लुटादेता हूँ। मेरठ जिस दिन जाऊँगा, उस दिन आप देख लेना, सफ़र-खर्च के अतिरिक्त आपको और कुछ नहीं मिलेगा मेरे पास।

परमात्मा से हमेशा यही मनातारहता हूँ कि हर रोज़ इज्जत से आए और इज्जत से जाए। रुपया-पैसा तो हाथों का मैल है।"

कासिम मिरज़ा दीवान रामदयाल की बात सुनकर बहुत खुश हुए। उनके खर्च को देखकर वह यह अंदाज़ लगाचुके थे कि वे शाहाना थे।

दीवान रामदयाल कोतवाल साहब का हक उन्हें देकर सीधे चौकी पर पहुँचे तो देखा क़रीमखाँ के पैर पर पट्टी बँधी थी और वह खाट परप ड़ा कराह-रहा था।

दीवान रामदयाल ने आगे बढ़कर एक सिपाही से पूछा, "यह क्या हुआ? करीमखाँ को चोट कैसे लगी?"

"जान बचगई, बस यही ग़नीमत समझिए हुज़ूर! करीमखाँ आपके मूढ़े पर बैठे हुक्का पीरहे थे कि इतने में चार लड़के इधर से गुज़रे। बड़े तेज़ तर्रार थे चारों।"

"फिर कुछ हुआ भी? यह बताओ कि करीमखाँ को चोट कैसे लगी?" दीवान रामदयाल ने पूछा।

"दीवानजी, क्या कहें? उन लड़कों ने एक हाथ का बना बम इतने ज़ोर से फेंका कि करीमखाँ ज़रा-ज़रा बचगए। फिर भी वह इनके पैरों के पास आकर फटा और उसमें से निकलनेवाली कीलों और काँच के टुकड़ों ने इनके दोनों पैर घायल करदिए।"

"फिर क्या किया तुमने?" दीवान रामदयाल ने दाँत किटकिटाकर मूँछें चढ़ातेहुए पूछा।

"हम लोग कर ही क्या सकते थे दीवानजी! फ़ौरन करीमखाँ को हस्पताल लेगए और इनके दोनों पैरों में पट्टियाँ बँधवाकर लेआए। डाक्टर साहब ने कहा है...।"

दीवान रामदयाल को क्रोध आगया सिपाही की बात सुनकर। वह गरज-कर बोले, "मैं यह नहीं पूछता कि डाक्टर ने क्या किया और करीमखाँ का क्या हुआ? मैं पूछता हूँ कि उन बदमाश लड़कों का क्या बना, जो दीवान रामदयाल की चौकी पर आकर ऐसी हरकत करगए?"

"उन्हें पकड़ने की हम लोगों ने बहुत कोशिश की परन्तु हवा थे वे दीवान जी, हवा। इतने तेज़ भागकर गलियों में लापता होगए कि पकड़े ही न जासके।

शहर की भीड़ ने उन्हें अपने सीने में इस तरह छिपालिया कि जैसे माँ अपने बेटे को छिपालेती है।" सादगी से सिपाही बोला।

"तब तुम लोग सब एक-एक चूल्लू पानी में डूबकर मरजाओ। मुझे मुँह दिखाने की ज़रूरत नहीं है। शेर की माँद में आकर वे नाचीज़ बच्चे करीमखाँ को घायल करगए, यह कम लज्जा की बात नहीं है।" दीवान रामदयाल ने दर्द भरे स्वर में कहा।

दीवान रामदयाल ने सोचा कि वे लड़के उसीपर हमला करने आए थे। करीमखाँ पर भला बम कौन खराब करनेलगा था।

दीवान रामदयाल का मस्तिष्क उन चार लड़कों की खोज में लग-गया। अब वह कहीं भी जातेसमय उन्हें अपने मस्तिष्क से निकालकर नहीं चलसकते थे।

दूसरे दिन जब वह एस० पी० साहब की मेमसाहब को शराब की बोतल पहुँचानेगए तो साहब बहादुर ने बड़े आदर के साथ उन्हें बागीचे में बुलाया और बोले, "डीवान रामडयाल, अमने शुना ऐ कि कल टुमारा चौकी पर किशी बडमाश ने कोई हाट का बना गोला फेंक डिया। उस बडमाश ने हमला टुम पर कियाहोगा, क्योंकि टुमने काँग्रेश का मीटिंग पर लाठी-चार्ज किया था।"

"मेरा भी यही खयाल है सरकार!" दीवान रामदयाल बोले।

"टुमको अब हर वक्ट हिफ़ाजट से चलनाचाहिए। हम तुमको रिवालवर लाइसेंस डेगा।" साहब ने कहा।

"आपकी मेहरबानी होगी सरकार! लेकिन मैं इन लोगों को नाचीज़ समझता हूँ। किसी दिन मेरी नज़र के नीचे आजाएँगे तो आप सुनेंगे कि शहर की किसी खंदक में पड़े चार शव सड़रहे थे।" दीवान रामदयाल एक अकड़ के साथ बोले।

"टुम बोत होशियार आडमी ऐ डीवान रामडयाल! अम टुमशे बोत खुश हैं।" ठहाका मारतेहुए हँसकर साहब ने कहा और मेमसाहब से, जो हिन्दी बहुत कम समझती थीं, अंग्रेजी में कुछ गिटपिट की। दीवान रामदयाल समझगए कि निश्चय ही साहब ने उनकी तारीफ़ की होगी।

"मेमशाब आज टुम डीवान रामडयाल को अपना हाथ से एक पेग शराब पिलाओ। यह बोत काम का आडमी है। अंग्रेज़ी शरकार का बरा खैरखा

मीठी-मीठी हरकत और तीखी-तीखी कसक-सी पैदा करहीदेती थी।

आज प्रथम वार दीवान रामदयाल ने मेमसाहव से दृष्टि मिलाई देखा कि उनकी दृष्टि में अतृप्त वासना झाँकरही थी। मेमसाहव की जवा एक नौजवान पुरुष के पुरुषत्व की भूखी थी। वह खूराक उसे पचास सा साहववहादुर के ढाँचे में नहीं मिलरहीथी।

दीवान रामदयाल की दृष्टि फिर साहव की ओर गई। उसका कलेजा अन्दर तक हिलउठा। उसे भय लगा कि कहीं साहव को उसके दृष्टि मिलाने में उन दोनों के मेल-मिलाप की वू न आनेलगीहो। वह घवराया कि कहीं इस आज की शराव पीने का परिणाम पेशकारी मिलने के स्थान पर वर-खास्तगी न होजाए।

परन्तु उसने तभी साहव को कहतेसुना, "वेल रामडयाल! टुम वौट अच्छा आडमी ऐ! हमारा मेमशाव टुमें वौट पशंड करटा ऐ। टुम डांश जानटा ऐ टो मेमशाव को डांश केराशेकटा ऐ। अमारा वाडी में अव उटना टाकट नईं ऐ।"

"हुजूर मैं डाँस नहीं जानता, लेकिन शराव मैं अवश्य पिलासकता हूँ मेम-साहव को। आपका शरीर पुराना पड़चुका है और आप शराव पीने में मेम-साहव का साथ भी नहीं देसकते। हुजूर का हुक्म हो तो मैं साथ देसकता ।" दीवान रामदयाल ने अपने दोनों हाथ जोड़कर कहा।

"वेल डीवान रामडयाल टुम वौट वरिया आडमी ऐ। अम और अमारा व टुम शे वौट खुश ऐ। टुम मेमशाव को खुश करो। मेमशाव का ा रेना शे अम खुश रेटा ऐ।" साहववहादुर वोले।

दीवान रामदयाल ने अवतक केवल पाँच ही पेग लिए थे। वे पाँच पेग के लिए तो कुछ नहीं थे परन्तु एस० पी० साहव उन्हें पीकर लड़खड़ा-ी।

"शाव वाडुर इटना से जादा शेराव नईं पीशेकटा।" मेमसाहव ने दीवान ाल से कहा, "अमारा शाथ टूटजाने शे अम भी रुकजाटा ऐ। अकेला टवियट नेईं ओटा।"

ापका फ़रमाना वजा है मेमसाहव! शराव अकेले पीने की चीज है । कोई मीठा शरवत तो है नहीं शराव! कड़वी चीज

तक को छीलती चलीजाती है। जब तक इस कलेजे को छीलनेवाली चीज़ के साथ-साथ उसपर मरहम लगानेवाली दूसरी कोई चीज़ सामने न हो, तब तक पीने का मजा ही क्या है ?" दीवान रामदयाल बोले।

साहब को अब नशे में अपनी सुध नहीं रही थी। दीवान रामदयाल और मेमसाहब ने उन्हें उठाकर पलंग पर लिटादिया और ऊपर से बिजली का पंखा खोलदिया। बिजली के पंखे की हवा में नशा और गहरा होकर साहब बहादुर को नशीली दुनियाँ के स्वर्गिक झूले पर झुलानेलगा। खुमारी के स्वर्ग में थे उस समय साहबबहादुर।

उनकी दुनियाँ में अब केवल वह थे और उनकी शराब।

मेमसाहब और दीवान रामदयाल आमने-सामने बैठगए। मेमसाहब ने दो पेग और डाले और गिलास उठाकर होठों से एक चुस्की लगाकर बोलीं, "टुम बौट मीटा-मीटा वडमाश आडमी मालूम डेटा ऐ डीवान रामडयाल ! टुमने अमे आज टक नई वटाया कि टुम इटना वरिया शेराव पिलाना जानटा ऐ।"

"बताता क्या सरकार, आप लोग बड़े आदमी हैं, अफ़सर ठहरे। डर लगता है आप लोगों से। हम बेचारे मामूली दीवान, डरते हैं कि कहीं खुशी-खुशी में आप नाराज न होबैठें।" दीवान रामदयाल बोले।

"टुम बौट बाट बेनाना जानटा ऐ दीवान रामडयाल ! अमने उस रोज़ मेफ़िल में टुमारा गुलाब और राम⋯⋯अम बूल गेया उशका नाम, डेका। बौट अच्चा टो दो, लेकिन क्या टुमारा मेम शाब अच्चा नई लगटा टुमें ?" नशीली आँखोंवाले चेहरे को, मेज पर रखी अपने दोनों हाथों की कोहनियों पर टिके दोनों हाथों के बीच सँभालतीहुई मेमसाहब बोलीं।

दीवान रामदयाल भी आखिर पत्थर के बनेहुए नहीं नहीं थे, रति उनके सामने नंगी नृत्य करे और वह अपने ब्रह्मचर्य पर काबू किए बैठेरहें, ऐसा योग भी उन्होंने नहीं सीखा था। साहब का थोड़ा सा भय था उन्हें, परन्तु शराब के गुलाबी नशे के रंग में वह भय भी घुल-मिलकर न जाने किधर बहगया था अब।

दीवान रामदयाल ने मेमसाहब की आँखों की ओर हल्की-सी दृष्टि डाली तो उन्हें दिखाईदिया कि वहाँ काम-पिपासा का गहरा समुद्र लहरें माररहा

था। वह जरा सँभलकर बोले, "क्या पीने-पिलाने का काम समाप्त होगया मेमसाहब ?"

"टुम और माँगटा ऐ डीवान रामडयाल ! अमारा टाकट टो अब और लेने का नेई ऐ।" मेमसाहब ने कहा।

"तो मुझे इजाजत मिलनीचाहिए ! साहबबहादुर ने मुझे आपको शराब पिलाने की ही आज्ञा दी थी।" इतना कहकर दीवान रामदयाल कुर्सी से खड़ेहोगए।

मेमसाहब की तरसती आँखें दीवान रामदयाल की जवानी पर ललचाती रहगईं।

मेमसाहब बोलीं "टुम जाटा ऐ डीवान रामडयाल ! अमारा ड्राइवर टुमें चौकी पर छोर आएगा। चलो अम बोल डेटा है अपना ड्राइवर को।"

"मैं पैदल चला जाऊँगा मेमसाहब ! आप तकलीफ़ न करें। अब जरा आप साहबबहादुर की खबर लें। बेचारे कितनी देर से नशे में चुप-चाप पड़े सोरहे हैं।" दीवान रामदयाल दरवाजे की ओर बढ़तेहुए बोले।

मेमसाहब भी उनके साथ-साथ होलीं और दीवान रामदयाल का हाथ अपने हाथ में लेकर बोलीं, "शाब का खेवर अम क्या लें डीवान रामडयाल ! जब टुम अमारा खेवर नई लेटा ऐ। जवानी का खेवर जवानी लेशकटा ऐ। बुढ़ापे का खेवर जवानी क्या लेगा और जवानी का खेवर बुढ़ापा क्या लेगा ?"

दीवान रामदयाल ने मेमसाहब का मुलायम हाथ धीरे से अपनी दोनों हथेलियों के बीच रखकर दबादिया और न जाने कैसे दोनों के तरसतेहुए होंठ एक-दूसरे से मिलते-मिलते रहगए।

: १२ :

दीवान रामदयाल साहब की कोठी से कार में बैठकर चौकी पर आए। एस० पी० साहब की कार को पुलिस का हर सिपाही पहचानता था। उसके हार्न की आवाज़ से हर सिपाही परिचित था।

चौकी के पास आकर ड्राइवर ने हार्न बजाया और मोटर की चाल हल्की की तो चौकी के पहरे के सिपाही ने आगे बढ़कर राइफ़ल से सेल्यूट दिया।

कार रुकी और उसके अन्दर से दीवान रामदयाल निकले। दीवान रामदयाल को देखकर सिपाही की जान-में-जान आई।

दीवान रामदयाल ने कार से उतरकर पाँच रुपए का नोट ड्राइवर के हाथ में थमाया और बड़ी मोहब्बत के साथ कहा, "चौहान भय्या! मजे में रहो। किसी चीज़ की आवश्यकता हो तो दीवान रामदयाल को याद करलेना। रामदयाल जब तक मेरठ में है, किसी बात का कष्ट न उठाना।"

"आपके रहते भला किसी को कष्ट होसकता है दीवान जी! आप जैसा परवरदिगार अफ़सर तो आज तक दृष्टि से नहीं गुजरा।" बड़े अदब के साथ एस० पी० साहब के ड्राइवर ने कहा। "साहब की कोठी के सभी नौकर-चाकर आपके गुण गाते हैं; दुआ माँगते हैं परमात्मा से आपकी अफ़सरी की।"

दीवान रामदयाल अपने क्वार्टर पर जाने से पहले करीमखाँ के क्वार्टर पर गए। करीमखाँ चारपाई पर लेटा हुक्का पीता मिला। उस समय उसकी तबियत ठीक थी और पैरों के जख्मों में चीस नहीं थी।

"करीम खाँ! तुमपर आज परमात्मा ने बैठे-बिठाए आपत्ति डालदी।"

"आदाबेअर्ज दीवान जी! बड़ी देर में आरहे हैं आज। इस तरह रात को अकेले जाना-आना खतरनाक है। देख नहीं रहे हो कैसा घायल हुआपड़ा हूँ।" करीमखाँ बोला।

"बात तो तुम पते की कहते हो करीमखाँ, परन्तु मैं भी आदत से मजबूर हूँ। मुझे बिना खतरनाक काम किए चैन ही नहीं पड़ती। आखिर तुम ही कहो, कौन-कौन से कामों को स्तीफ़ा देदूं? कोतवाल साहब की हाजिरी न बजाऊँ या एस० पी० साहब की?" दीवान रामदयाल बोले।

"काम तो सभी करने होते हैं दीवानजी! लेकिन जान-बूझकर अपनी जान को खतरे में धकेलदेना भी कुछ समझदारी नहीं है। कांग्रेस का जो यह तूफ़ान है, इसमें माना कि गाल-पीटनेवाले लाल्ले लोग भी हैं लेकिन इनके पीछे एक खूंख्वार लोगों का भी गुट है। वे चार लड़के क्या तुम समझते हो इस नाचीज करीमखाँ की टाँगें जख्मी करने आए थे?"

"मैं सब कुछ समझता हूँ करीमखाँ और इन अपने को क्रांतिकारी कहने

वालों की भी नब्ज को खूब पहचानता हूँ। क्रांति के नाम पर लड़कियाँ खूब फिसलती हैं, बेवकूफ होती हैं न औरतें। औरतों की अक्ल गुद्दी के पीछे होती है।" दीवान रामदयाल बोले।

"यार दीवान जी ! क्या कहदिया आपने ! मेरे दिल की बात को होठों पर लेआए आप ! इन औरतों के दिमाग में भेजा तो होता ही नहीं। जिधर को हाँकती हैं, सरपट हाँकती हैं। रुककर सोचने-समझने का मौका ही नहीं होता इनके पास।" करीमखाँ बोला।

"इसीलिए तो कहता हूँ करीमखाँ ! यह क्रांति-क्रांति का ढोंग सब लड़कियों की मजलिस में जाकर खत्म होजाता है। मैंने कितने ही घुंघराले बालोंवाले, चपटे गालोंवाले, नाक पर डोरीदार चश्मा चढ़ानेवाले, नाजुक कलाई पर सोने की चेनवाली घड़ी बाँधनेवाले, बिना शिकन के रेशमी कुर्ते की जेब में तीन-तीन फोन्टेनपेन लगानेवाले, चुनटदार सुपरफाइन की बारीक धोती पर मखमली चप्पल पहननेवाले क्रांतिकारी देखे हैं।

करीमखाँ, अगर फूंक मारदूं तो एक फूंक के झोके से ऐसे चार-चार क्रांतिकारी तलमुण्डी ऊपर पाँव होसकते हैं।" सीने में उभार लाकर दीवान रामदयाल कड़ककर बोले। उनकी जबान से निकलनेवाले हर शब्द में जीदारी भरी थी।

"इसमें कोई शक नहीं है दीवान जी !" लेटे से बैठाहोता हुआ करीमखाँ बोला, "लेकिन फिर भी होशियार रहना अच्छा है हर हालत में। मुझे वे लौंडे जो उस दिन बारूद का गोला फेंकगए थे, खतरनाक मालूम देते हैं।" करीमखाँ बोला। उसके मस्तिष्क पर गोले का भयंकर शब्द अभी तक छाया-हुआ था।

दीवान रामदयाल भी लाख अपने मन से उन चार लड़कों की छाया को भगादेने का प्रयास करते थे परन्तु उनकी छाया भूत की तरह उनकी छाती पर सवार रहती थी। जब वह मेमसाहब से बातें कररहे थे, तब भी वह उन्हें नहीं भूले थे। वे बराबर उनके मस्तिष्क में चक्कर लगारहे थे।

करीमखाँ के पास से दस बजे दीवानजी अपने क्वार्टर में पहुँचे। उनकी बीमारी पत्नी ने खाट से खड़ी होकर उनका स्वागत किया। उसने अभी तक भोजन नहीं किया था। भोजन दीवान रामदयाल ने भी नहीं किया था।

दीवानजी ने पूछा, "खाना खालिया तुमने !"

पत्नी मुस्कराई और धीरे से बोली, "आप नित्य कहजाते हैं कि मैं खाना बनने ही खालिया करूँ, परन्तु क्या करूँ, खाया ही नहीं जाता। जबतक आप आ नहीं जाते हैं टुकड़ा हलक में डालने को मन नहीं करता।

"यह पुलिस की नौकरी है। इसमें समय-बे-समय चलता ही रहता है। परमात्मा ने भाग्य में ऐसी बदनसीब नौकरी लिखदी है कि आराम से औरत का इलाज भी नहीं करासकता।" दीवान रामदयाल ने कष्टपूर्ण स्वर में कहा।

शीला बैठकर बोली, "इलाज तो सब ठीक चलरहा है मेरा। उसकी आप क्यों इतनी चिन्ता करते हैं ? मेरे भाग्य में स्वस्थ होना जब है ही नहीं तो आप क्या करसकते हैं इसमें ?"

"पुलिस की नौकरी में आदमी का जीवन मशीन बनजाता है शीला ! चौबीस घण्टे की गुलामी है यह। चचा रेल पर नौकरी करारहे थे। उस समय हकूमत की तू इधर खींचलाई। यहाँ से लाख दर्जे अच्छा रहता रेल की नौकरी में। दुनियाँभर की सैर करने को मिलती और यह रात-दिन की गुलामी न होती।" दीवानजी नशे की झोंक में जिधर की भी बात दिमाग में आजाती थी कहतेचलेजाते थे। शीला चुपचाप उन्हें भावुकता में आकर सुनरही थी।

नशे में इधर-उधर की परेशानियों को डुबाए वह खाट पर बैठगए। शीला ने फिर खड़ीहोकर थाली में खाना परसा और खाट पर ही लेजाकर थाली उनके सामने रखदी।

दीवान रामदयाल ने खाना खातेसमय शीला को अपने पास बिठालिया। उसकी कमजोर कमर को सहलातेहुए बोले, "शीला ! आज सच-सच कहना तू मुझसे नाराज तो नहीं है। मैं तेरे पास अधिक नहीं बैठसकता। नौकरी ही ऐसी है। परन्तु तू सच समझ कि मुझे चौबीसों घंटे तेरे आराम का ध्यान रहता है।"

"क्या कहरहे हैं आप ? आपसे नाराज होने का तो कोई कारण ही नहीं है। दुनियाँ में बहुत बुरे-बुरे लोग होते हैं। औरतों को शादी करके निभाना मामूली बात नहीं है। और फिर मेरे जैसी बारहों महीने की बीमार

औरत की गाड़ी को घसीटना तो और भी कठिन है।

मैं तो, आप सच जानिए, भगवान् से यही प्रार्थना करती हूँ कि वह हर औरत को मेरे जैसा पति दे।" शीला ने कृतज्ञता प्रकट करतेहुए दीवान रामदयाल के पास को सिमटकर कहा।

"शीला! तुम मेरे दिल की रानी हो। जिस दिल को मैं एक बार अपनी शीला को देचुका, वह उसके साथ-ही-साथ उसकी चिता की ज्वाला में जलकर राख होजाएगा।

शीला, तेरे अलावा इस दुनियाँ में सब धोखा है। माँ को मैंने एक-एक रुपए पर आज़माकर देखा है। रुपया पास होने पर भी एक-एक रुपए के लिए मैंने उन्हें अपने सिर की कसम खातेसुना है।

एक तू है कि जिसके हाथों में से लाखों रुपए निकलगए, लेकिन तूने कभी एक पैसा इधर से उधर नहीं किया।

छोटा भाई है, उसका कहना ही क्या है? बेटे के समान है वह। देखें कैसा निकलता है?"

"अच्छे ही निकलेंगे मेरे देवरजी! उनके पढ़ाने-लिखाने में आप कोई कमी न करें। मैं तो कहती हूँ कि आप माजी को भी खर्च भेजें। उन्हें जो आपने नानाजी के पास छोड़ाहुआ है, यह मुझे अच्छा नहीं लगता।" शीला ने कहा।

दीवान रामदयाल का जी चाहा कि वह शीला की सिधाई पर उसका मुँह चूमलें। वह क्या जाने कि दीवान रामदयाल अपने नाना का भी नाना था, अपनी माँ की भी वह माँ था, वह दुनियाँ में हरएक को परखकर चलता था।

दीवान रामदयाल ने अपनी माँ को अपने नाना जी के यहाँ छोड़ाहुआ था। उनकी माँ अपने पिता की अकेली सन्तान थीं। इसलिए यदि वह वहाँ रहती थीं तो उस घर पर दीवान रामदयाल का अधिकार था।

दीवान रामदयाल को चाहे कितनी भी आय थी परन्तु वह अपने नाना को सर्वदा यही ज़ाहिर करते थे कि उनका कार्य बड़ी कठिनाई से चलरहा था। उनकी इस बात पर खीजकर उनके बूढ़े नाना कहाकरते थे, "अबे जा, रामू! तू भी यूँही रहा। पुलिस की भी क्या नौकरी है? दो-दो चार-चार

रपूलियों पर हर समय हाथ फैलाएरहते हैं।"

यह सुनकर दीवान रामदयाल मुस्कराते और कहते, "आपने ठीक कहा नाना जी ! पुलिस की नौकरी में किसी का पूरा नहीं पड़ता। लाइए पांच रुपए किराए के लिए देदीजिए। बड़ी कठिनाई से यहाँतक आने का किराया जुटापाया हूं।"

"तो भय्या रामू, आने की आवश्यकता ही क्या थी ? तीन पैसे का कारट छोड़ देता। पांच रुपए तूने अपने खराब किए और पांच की चपत इस बुढ़ापे में मुझे लगादी। क्या मेरे बेटे हैं कमानेवाले, जो कमाकर देजाते हैं ?"

"आप तो ऐसी ही बातें कियाकरते हैं नानाजी !" दीवान रामदयाल खिल-खिलाकर हँसतेहुए कहते और उन्हीं से पांच रुपए लेकर वापस मेरठ आने का टिकट कटाते।

दीवान रामदयाल अन्दर-ही-अन्दर बहुत-सी बातें सोच-समझकर शीला से बोले, "तू बड़ी बावली है शीला ! माताजी को यदि मैं खर्च दूंगा तो क्या नानाजी कभी लेने देंगे ? यह उनके अपमान की बात है। और यदि मैं माँ को लेआऊँ तो इस बुढ़ापे में नानाजी का खाना खराब होजाएगा।"

"यह तो मैं भी सोचती हूँ।" शीला ने कहा।

शीला को दीवान रामदयाल वास्तव में बहुत चाहते थे। उसके इलाज में दीवान रामदयाल ने कोई कसर नहीं रखी, परन्तु बीमारी शरीर में कुछ ऐसी रमचुकी थी कि कोई दवा कारगर नहीं होती थी।

दवाइयों के बल पर शीला का बदन आजु पकड़ता जारहा था। जब वह मेरठ आई थी तो केवल कुछ हड्डियों का ढांचामात्र थी। अब वह कई-कई घण्टे बैठसकती थी और आराम से खाना बनालेती थी। थोड़ा घूम-फिर भी लेती थी।

दीवान रामदयाल के घर की इस बगिया में चार कलियां मुस्काईं, परन्तु उनमें से एक भी खिलकर फूल न बनसकी। घर का लहलहाताहुआ पौधा दो ठूंठों से आगे न बढ़सका। उसमें न तो नए पौधे ही उगे और न नए फूल ही खिले। घर और बाल-बच्चों की ओर बढ़तीहुई दीवान रामदयाल की भावना लाचार होगई थी। केवल शीला ही थी उनकी आंखों के सामने।

दीवान रामदयाल एक आज़ाद पक्षी थे, परन्तु इधर [illegible] की इच्छा

से उनका कुछ उत्तरदायित्व बढ़गया था। भाई की शिक्षा के लिए भी उन्हें हर महीने कुछ रुपया भेजनापड़ता था।

दूसरा बोझ उनके सिर पर छोटी बहिन की शादी का था। आजकल दीवान रामदयाल के सिर पर उसी की चिन्ता थी। परन्तु अपनी चिन्ता को किसी के सामने रखनेवाले दुर्बल व्यक्तियों में से रामदयाल नहीं थे।

दीवान रामदयाल को दूसरे दिन एस० पी० साहब ने दफ्तर में बुलाया और बोले, "वेल डीवान रामडयाल, अमने टुमको अपना पेशकार की जगह टैनाट किया। टुम आज से यहाँ काम करेगा।"

दीवान रामदयाल साहब के दफ्तर से सीधे अपने क्वार्टर पर पहुँचे। उनका विचार था कि उन्हें जो ये बड़े पद मिलतेजारहे थे, वे सब शीला की परमात्मा के चरणोंमें कीगई प्रार्थना के ही फल-स्वरूप मिले थे। वरना तो वह स्वयँ तो जो कुछ भी था, वह उससे पिछा नहीं था।

दीवान रामदयाल शीला की ठोड़ी को प्यार से ऊपर उठातेहुए बोले, "शीला! तेरा दीवान आज पेशकार रामदयाल होगया। साहब की पेशी में साल भर भी जमगया, तो वारे-न्यारे करदूंगा।"

शीला मंत्र-मुग्ध होकर, भगवान् के चरणों में नतमस्तक होगई। भगवान् ने उसके पति को इतना बड़ा पद प्रदान किया था। इससे अधिक प्रसन्नता की और क्या बात होसकती थी?

: १३ :

दीवान रामदयाल के पेशकार बनने की सूचना मेरठ के चप्पे-चप्पे में फैलगई। क्या कोतवाली, क्या पुलिस-लाइन और क्या शहर की अन्य चौकियाँ। यहाँ तक कि पुलिस-क्लब में ठहरेहुए ज़िले के अन्य थानों के दारोग़ाओं और दीवानों के द्वारा ज़िले के थानों में भी यह सूचना फैलगई।

सेठ दामोदरप्रसाद को जब यह सूचना मिली तो उनका दिल खिलउठा। दीवान रामदयाल एस० पी० साहब की पेशकारी पर चलेगए तो मानो उन्होंने

मेरठ-शहर की पुलिस को ही खरीदलिया था। दा॰
दामोदद प्रसाद को पुलिस की हर चौकी का हर सिपाही
जानता ही नहीं था वरन् खड़ा होकर सलाम झुकाता था। सेठ
में एक बार पुलिस की सब चौकियों पर मिठाई भिजवाते थे। राज्य
चारियों को वह कहते हाकिम थे परन्तु अपना ज़र-ख़रीद गुलाम समझते थे।

दीवान रामदयाल ने देखा कि सेठ दामोदरप्रसाद अपनी फिटन से उतर-कर चौकी की ओर मुस्कराते चलेआरहे थे। उनके हाथ में चमेली के फूलों का हार था और पीछे-पीछे मुनीमजी मिठाई की टोकरी लिए आरहे थे।

सेठजी दीवानजी से गलेमिले। यह गलेमिलना पहले गलेमिलने से एकदम भिन्न था।

"बैठिए सेठजी ! आप बहुत कष्ट करते हैं इस नाचीज़ के लिए।"

"जितने बड़े होतेजारहे हो दीवानजी उतने ही झुककर बातें करना आपको शोभा देता है। परन्तु सच कहता हूँ कि आज तक मेरठ में किसी ने इतना यश प्राप्त नहीं किया जितना आपने इस थोड़े से समय में करलिया। आपका व्यवहार ही आपको उन्नति के शिखर पर लेजारहा है।

ये सब मित्रों की दुआएँ काम देरही हैं सेठ दामोदर प्रसाद ! और अफ़सरों की कृपा। नेकनीयती और ईमानदारी का फल है यह। क्या अफ़सर, क्या महकमे के लोग, और क्या रिआया, किसी को रामदयाल से यह शिका-यत नहीं होसकती कि मैंने जिससे जो कहा उसे पूरा नहीं किया।"

करीमखाँ बीच में ही बोलउठा, "तभी तो अफ़सर भी आपके गुलाम हैं और अमले के लोग तो आपको अपना वारिस समझते हैं। रिआया को भी हम यही कहते सुनते हैं कि दीवान रामदयाल जैसा परवरदिगार अफ़सर मेरठ में नहीं आया।"

"तुमने सच कहा करीमखाँ ! रिआया में दीवान रामदयाल का नाम पुजता है। सबके काम आनेवाला अफ़सर दिलों में घर करलेता है।" सेठ जी बोले।

आज दिनभर दीवान रामदयाल के पास मिलनेवालों का तांता बँधा रहा। दीवान अब्दुलबेग, जो गढ़मुक्तेश्वर के थाने में दीवान थे, एक टोकरा खरबूजे लेकर मिलनेआए। खरबूज़े उनके इलाके के सबसे अ

"दीवान रामदयाल ! आपने कमाल करदिया। इसे कहते हैं मुकद्दर और इसेकहते हैं अक्लमन्दी ! भय्या, अब मेरी नौकरी का सिर्फ एक साल बाकी है। इस बीच साहब से कहकर कुछ मेरे लिए करादो तो मेरे भी बाल-बच्चे पलजाएँगे और तुम्हें दुआदेंगे।" दीवान अब्दुलबेग बोले।

दीवान रामदयाल मुस्कराकर बोले, "जिस दिन से बदलकर गएहो दीवानजी ! आज दर्शन दिए हैं आपने। ये खरबूजे क्या आपके इलाके में इसी वर्ष पैदा हुए हैं ?

दीवान रामदयाल कभी किसी के एहसान को नहीं भूलता। तुम मेरे अफ़सर रहचुके हो। मैं उसी नज़र से आज भी तुम्हें देखता हूँ। परमात्मा ने चाहा तो तुम दारोगाई से रिटायर होगे।"

दीवान अब्दुलबेग लज्जित थे कि जिस दिन से वह गढ़मुक्टेश्वर गए थे तब से कितनीहीबार मेरठ आए, परन्तु कभी दीवान रामदयाल की चौकी पर नहीं

दीवान रामदयाल दूसरे दिन रोब के साथ पेशकारी की कुर्सी पर जाकर बैठे। जिले के थानों से आज जो-जो दारोगा या दीवान मेरठ आए, वे अपने-अपने इलाकों के तोफे पेशकार साहब के लिए लाए।

आज पेशकार साहब के यहाँ ज़िले की फ़सलों के उम्दा-से-उम्दा नमूने लाकर पेश किएगए। शाहजहाँनपुर का पौंडा, महलवालें का खरबूजा, बागपत और रटौल के बेफ़स्ली आम, निवाड़ी का केला, आड़ू और फ़ालसें और इसी तरह और भी सब्जियों का ढेर लगगया। जहाँ फल और सब्जियाँ नहीं होती थीं वहाँ से घी, दूध की सौगातें आईं।

आज की सौगातों में मुर्गे और उनके अंडे भी शामिल थे। बकरों और सूअरों के लिए पेशकार साहब ने मना करदिया था।

यह सब सामान पेशकार रामदयाल के क्वार्टर पर आज इतना एकत्रित हुआ कि उसे रखने के लिए स्थान कम पड़गया।

शीला अपने पति की इस तरक्की को देखकर दंग रहगई। उसे क्या पता था कि दीवान रामदयाल से पेशकार रामदयाल बनते ही उनका घर परमात्मा की कृपा से ऐसा भरपूर होजाएगा।

शीला के हृदय की प्रसन्नता का आज पारावार नहीं था। उसने आज

भगवान् की पूजा भी पाँच-दस मिनट न करके पूरे एक घंटे की और राधा-कृष्ण की मूर्तियों के सामने अनेकों वार मस्तक टिकाकर हृदय से कहा, "भगवान् ! तुम वड़े दयालु हो। मुझ वीमार-दुखिया की तुम ही सुधि लेनेवाले हो। मेरे पति का विश्वास है कि मेरी पूजा के फलस्वरूप आपने उन्हें यह ओहदा प्रदान किया है। इस वीमार औरत का मान उसके पति के हृदय में आप ही स्थापित करनेवाले हैं। आपके चरणों में मैं वार-वार नतमस्तक होती हूँ भगवन् ।"

शीला ने घर में आएहुए सभी पदार्थों में से थोड़ा-थोड़ा राधा-कृष्ण को भोग लगाया, काम करनेवाली गरीव औरतों को दिया, उनके वच्चों को दिया और द्वार पर भीख माँगने आनेवालों को दिया ।

शीला को आशीश देतीहुई गरीव औरतें वोलीं, "दीवाननजी ! आप आस-औलादवाली हों। आपका सुहाग सदा वनारहे। आप सदा फलें-फूलें और आपका घर सदा भरा-पूरा रहे।"

आस-औलाद की वात सुनकर शीला के हृदय में टीस-सी उठखड़ीहुई। उसने चार वच्चों को जन्म दिया था, परन्तु भगवान् ने एक की भी आयु नहीं लगाई। उनके नेत्र डवडवाआए।

फिर भी शीला होठों पर मुस्कान लेकर वोली, "आस-औलाद का तो अव समय ही निकलगया डोकरी ! अव तो भगवान् से यही कहो कि मेरा सिरताज वनारहे और उनके हाथों से मेरी हड्डियाँ ठिकाने लगजाएँ। वस यही मनाती हूँ मैं तो भगवान् से।"

संध्या को पेशकार रामदयाल ने अपने घर आकर यह ठाट-वाट देखा तो उनकी आत्मा खिलउठी। वह मुस्करातेहुए शीला से वोले, "शीला ! तुमने इनमेंसे कुछ खाया या नहीं ! कितने वढ़िया खरवूज हैं। केले की गहलें वहुत उम्दा हैं और पौंडों की तो कम्वख्त पूलियाँ ही काटलाए।"

"खाया नहीं है, परन्तु वरनाया अवश्य है आपसे विनापूछे। द्वार पर [illegible]-वाले फकीरों को और कुछ वूढ़ी डोकरियों को जीभरकर दिया है।"

"इसमें पूछने की क्या आवश्यकता थी? तुम चाहो तो [illegible] रामदयाल क्या अपनी शीला से कभी कुछ कहनेवाला है? [illegible] मेरे भाग्य से नहीं, तेरे ही भाग्य से आया है।"

पेशकार रामदयाल ने दफ्तर के कपड़े उतारकर तेहमद बाँधा और मख-मली पंजाबी जूतियाँ पहिनकर सोने के बटनोंवाली रेशमी कमीज़ गले में डाली। घर के चौक में खटिया डालकर उसपर बैठतेहुए बोले, "लाओ शीला! ज़रा हम भी तो देखें क्या-क्या सौगात आई हैं? दो बढ़िया से खरबूजे और कुछ आड़ू, फालसे और केले लाओ।"

शीला ने कुछ खरबूजे पहले से ही ठंडे पानी में डालेहुए थे। उन्होंने पेश-कार साहब की खाट के पास पीढ़े पर बैठकर खरबूजा काटतेहुए कहा, "महँक तो मीठे की है। देखिए कैसा निकलता है।"

"खरबूजे की मँहक तो तुम खूब पहचानताहो शीला। आखिर तुम भी तो जमना-किनारे की रहनेवाली हो। वहाँ खरबूजे खूब होते हैं। परन्तु ये महल-वाले के खरबूजे हैं। ये लखनऊ के खरबूजों को भी मात करते हैं।" पेशकार रामदयाल बोले।

शीला ने एक खरबूजे की फाँकें काटकर पेशकार साहब के हाथ में दी और दूसरे की फाँकें काटनेलगी।

पेशकार रामदयाल एक फाँक शीला के मुँह पर लगातेहुए प्यार से बोले, "शीला पहले तुम ज़रा-सी खाकर बताओ मीठी भी है या नहीं। मैं बाद में खाऊँगा?"

शीला का खरबूजा छीलताहुआ हाथ प्रेमार्द्र-भाव से रुकगया। वह पेश-कार रामदयाल के चेहरे पर देखतीहुई बोली, "आप भी ये क्या बच्चों जैसी ... कियाकरते हैं कभी-कभी। मुझे क्षय-रोग है। डाक्टर ने मेरा जूठा खाने के लिए सबको मना कियाहुआ है। आप मेरा जूठा खाएँ वह मैं सहन नहीं करसकती।"

पेशकार रामदयाल ने शीला का हाथ पकड़कर उसे पीछे से उठातेहुए अपने पास बिठाया और प्यार से खरबूजे की फाक उसके होटों से लगाकर बोले, "शीला! तेरी जूठन किसी अन्य पर प्रभाव डालसकती है, रामदयाल पर तेरी जूठन का प्रभाव नहीं होगा।"

प्रेमविह्वल होकर शीला की आँखों से दो बूँद आँसू ढुलकपड़े और उस-ने जरा-सी ख़रबूजे की फाँक अपने दाँतों से काटली।

उसके पश्चात् पेशकार साहब ने फलाहर किया और फिर मूँछों पर ताव

देकर वह क्वार्टर से बाहर निकले । जवानी और तरक्की की मस्ती थी उनके बदन मे । आज एक विचित्र शान भी उनकी दृष्टि में ।

पेशकर साहब के क्वार्टर के बाहर करीमखाँ ने पहले ही छिड़काव कराकर मूढ़े डलवादिए थे । कई लोग उनसे मिलने के लिए बैठे थे ।

उनके बाहर आते ही सबने खड़े होकर सलाम, नमस्कार किया । वह करीमखाँ से बोले, "इनसे कहो कि आज हमें अवकाश नहीं है बातें करनी का। अभी साहब की कोठी पर जाना है। ये लोग कल सुबह सात बजे मिले और हाँ, तुम भी उस समय आना न भूलजाना ।"

करीमखाँ ने पेशकार साहब की सूचना उन्हें देदीं । वे सब चलेगए ।

उनके चलेजाने पर पेशकार रामदयाल करीमखाँ से बोले, "करीमखाँ ! पहले कुछ फल और सब्जियाँ कोतवालसाहब की कोठी पर पहुँचाआओ । फिर साहब की कोठी पर चलेंगे । कुछ अंडे और मुर्गियाँ भी कोतवालसाहब के लिए लेतेजाओ ।"

पेशकार रामदयाल के पास जो-जो सौगातें आई थीं उनमें से कुछ अपने यहाँ रखकर शेप सब उन्होंने बाँटदीं ।

शीला का मन भी औरों को चीजें बाँटने में बहुत रहता था । घर में कोई बाल-बच्चा न होने से दुनियाँ भर के बच्चों को शीला अपना ही बच्चा समझती थी । वह सबको प्यार करती थी ।

पेशकार रामदयाल को जहाँ अफसरों और पुलिस के अमले के दारगाओं, दीवानों और सिपाहियों में चीज़ें बाँटने में आनन्द आता था वहाँ उन्हें उन गरीब बूढ़ी डोकरियों और उनके बच्चों को देना भला लगता था जो दिन-भर उसके पास पड़ीरहकर उसका मन बहलाती और उनके चार काम आती थीं ।

करीमखाँ कोतवालसाहब की कोठी पर पेशकार रामदयाल की भेजीहुई सौगात पहुँचाकर लौटा तो देखा कि साहब के यहाँ जानेवाली डाली क़रीने के साथ सजीहुई थी । पेशकार रामदयाल ने आज अपना पूरा हुनर उसकी सजावट में लगाया था ।

"खूब करीने से सजाई है आपने डाली ।" करीमखाँ बोला ।

"अभी कसर है करीमखाँ । डाली की जान शराब की बोतलें तो [illegible] ही नहीं । जरा साईकिल पर दो पैडिल मारकर दो बोतलें [illegible]

ग्रौर रास्ते से दो ताँगेवालों को भी पकड़लेलाना।" पेशकार साहब बोले।

"बस गया श्रौर आया।" पैरों में साईकिल दवातेहुए करीमखाँ बोला। वह लौटकर आया तो पेशकार साहब खरबूजों पर चाँदी के वर्क चिपकारहे थे। उसे आता देखकर बोले, "करीमखाँ! सच कहता हूँ, अगर तुम जैसे सिर्फ चार आदमी और हों मेरे पास तो एस. पी. साहब से कहदूँ कि आपको अब कोठी से बाहर निकलने की आवश्यकता नहीं है। पेशकार रामदयाल के रहते तुम कष्ट उठाओ, यह मैं सहन नहीं करसकता।"

अपनी प्रशंसा सुनकर करीमखाँ का दिल खिलगया। करीमखाँ ने नौकरी पर आकर रामदयाल से मित्रता की थी और उस मित्रता को वह निभारहा था। पेशकार रामदयाल का वह मित्र था, साथी था, गुप्तचर था, सेवक था और एक हमदर्द था।

साहब के यहाँ जानेवाली सब चीज़ें ताँगे में रखकर अन्त में वह मुर्गियों का कठघरा और अंडों का पिटारा भी करीमखाँ ने ताँगे के पायदान पर रखदिया। करीमखाँ ने पिटारे के खंडों को देखा और उसकी दृष्टि कुकड़ूँकूँ करतीहुई मुर्गियों पर पड़ी तो उसकी जबान पानी देगई। इधर काफी दिन से उसने मुर्गा नहीं खाया था।

एक दिन उसने कोतवाल कासिममिरजा को मुर्गमुसल्लम खाते देखा था तो उसके मन की क्या दशा हुई थी, यह वही जानता था। आज ये अण्डे और मुर्ग हाथ में आएहुए निकलते देखकर उसका दिल भारी होनेलगा था।

पेशकार रामदयाल ने करीमखाँ की दृष्टि को पहिचानलिया। उन्होंने करीमखाँ के घर अन्य सब चीज़ें तो पहुँचादी थीं, परन्तु वह अण्डों का पिटारा और मुर्गियों का कठघरा नहीं खोले थे। करीमखाँ की दृष्टि को देखकर वह मुस्करातेहुए बोले, "कोतवाल साहब का खायाहुआ मुर्गमुसल्लम याद आ रहा है करीमखाँ? कठघरा तोड़डालो और जितनी मुर्गियाँ चाहो, निकाल लो। अंडों के पिटारे से भी खोलकर जितने अंडे चाहो रखलो। भाभी से कहना जरा लजीज़ बनाएँ। हम भी चखेंगे।"

"पेशकार साहब! आपने मेरे मन की बात भाँपली। बेग़म वह लाजवाब मुर्गा बनाकर खिलाएगी कि ऊँगलियाँ चाटते रहजाएँगे आप। मुर्गी और अंडों के अलावा अगर हुक्म होजाए तो एकछोटा टीन घी का भी भरलूँ।" करीमखाँ

बोला।

"भरलो-भरलो करीमखाँ, परन्तु तनिक शीघ्रता करो। रात होती जा-रही है। शायद गुलाब साहब की कोठी पर पहुँचगई होगी। मैंने सोचा यह सब पेश करते समय क्यों न एक छोटा-सा मुजरा भी होजाए ?" पेशकार साहब बोले।

"खयाल तो नेक है आपका। एस०पी० साहब भी क्या यादरखेंगे कि किसी रईसजादे से पाला पड़ा था।" करीखाँ बोला।

"सो तो तुम्हारी दुआ से मैंने साहब पर काफ़ी रौब डालरखा है। वह जानते हैं कि पेशकार रामदयाल रोटी के लिए नौकरी नहीं करता। वह अंग्रेजी सरकार की ख़िदमत करने के लिए नौकरी करता है, अपने शौक और हकूमत के लिए नौकरी करता है।" पेशकार रामदयाल बोले।

"आपकी इस बात की कोतवाल कासिममिरजा भी तारीफ़ करते थे। बड़ा अदब करते हैं आपका। अपने बराबर की हैसियत समझते हैं आपकी। मुझसे कई बार तारीफ़ करचुके हैं वह।" करीमखाँ ने बड़े अदब के साथ कहा। गुलाब भी वहाँ आचुकी थी।

करीमखाँ ने मुर्गियों के कठघरे से तीन उम्दा मुर्गियाँ और अंडों के पिटारे से दो दर्जन अंडे निकालकर दोनों को बन्द करदिया। फिर दोनों ताँगे से एस०पी० साहब की कोठी पर पहुँचे और साहब के बड़े कमरे में उन तोफों को सजायागया।

जब सब सजकर तैयार होगया तो साहब और मेमसाहब ने उसे आकर देखा। वह खुश होकर बोले, "डीवान रामडयाल ! हमें टुमारा ये शौगाट बौट पशंड ऐ। टुमने एक डिन में कमाल करडिया।"

गुलाब ने अंदाज के साथ एक-एक चीज़ मेमसाहब और साहब के सामने पेश करतेहुए उसकी खूबी बयान की और हिन्दुस्तान के उन तोफ़ों को साहब और मेमसाहब ने चखकर देखा।

पेशकार रामदयाल ने सबसे बाद में मेमसाहब के सामने शराब की बोतलें स्वयं पेश की और मुस्कराकर कहा, "यह सौगात आपके लिए है। साहब तो बेचारे व्यर्थ पीनेबाज़ों में नाम लिखाकर शहीद होजाते हैं।"

पेशकार रामदयाल की बात सुनकर साहब और मेमसाहब दोनों ठहाका

मारकर हँसपड़े। फिर मेमसाहब ने मुस्कराकर कहा, "वैल, पेशकार टुम बरा खेराब आडमी ऐ। वरा मीठा मेजाक करटा ऐ।"

पेशकार रामदयाल ने मेमसाहब के चेहरे पर मुस्कराकर देखा और धीरे से बोले, "आप जो कुछ भी कहें मैं वहीं हूँ मेमसाहब! अच्छा कहें तो अच्छा और खराब कहें तो खराब। एक बार जब अपने को आपकी खिदमत में पेश ही करचुका तो फिर किसी बात का गिला ही क्या?"

"फिर अम को आज शेराब पिलानी होगी टुमें। कल टुमने वोट वरिया शेराब पिलाई। अमारा टबियट वौट कुश उआ।"

"जेरूर पिलानी होगी।" साहब ने अपनी बालउड़ी खोपड़ी पर हाथ फेरतेहुए कहा। "मेम शाव टुमशे वोट कुश ऐ।"

"मैं तो पहले ही कहचुका, खादिम हूँ आपका। साहब का जो कुछ भी हुक्म होगा, बन्दा बजा लाएगा।" पेशकार साहब ने कहा।

गुलाब के मुजरे की बात समाप्त होगई। करीमखाँ और गुलाब को पेशकार रामदयाल ने विदा करदिया और आप साहब तथा मेमसाहब के साथ अन्दर कोठी में चलेगए।

करीमखाँ को विदा करतेसमय पेशकार साहब बोले, "घर पर शीला से कहदेना कि हमें आने में देर लगेगी। साहब ने अपने किसी कार्यवश रोकलिया है। कौन जाने यहाँ से कब छुट्टी मिले।"

गुलाब और करीमखाँ दोनों ताँगे पर बैठकर शहर की ओर चलदिए।

मार्ग में गुलाब बोली, "करीमखाँ, मुझे ऐसा लगता है, जैसे साहब की मेम पेशकार साहब से फँसी हैं।"

"फँसीहोगी गुलाब! अपने को इन बातों से क्या लेना-देना? ये सब दुनियाँ के चक्कर तो चलते ही रहते हैं। आखिर क्या करें बेचारे पेशकार साहब भी! जवान आदमी हैं। खुदा ने औरत दी, तो वह ऐसी कि बारहों महीने की बीमार! और बीमारी भी तपेदिक की। मैं तो कहूँगा कि यह पेशकार रामदयाल का ही कलेजा है जो ऐसी औरत को निभारहे हैं।

लेकिन औरत भी देवी है बेचारी।" करीमखाँ ने चार वाक्यों में सारी बात कहदी। उसके निकट पेशकार रामदयाल को खुले भैंसे की तरह घूमने-फिरने, अय्याशी करने और मेमसाहब से मित्रता करने की खुली छुट्टी थी।

वह उसे कोई बुरा काम नहीं समझता था।

परन्तु गुलाब के दिल में कुछ जलन-सी पैदा होगई। वह लाख उसे भुलाने का प्रयत्न करती रही परन्तु पेशकार और मेमसाहब की मुस्कराती दृष्टि जो उसने एक बार मिलकर एक दूसरी में घुसती देखी थी; उसे वह भुला न सकी। उसके दिलसे एक गहरी साँस निकली और उसने मन-ही-मन कहा, 'मर्द कितना बेवफा होता है?'

: १४ :

मेरठ शहर और जिले में काँग्रेस का आन्दोलन ज़ोर पकड़ता जारहा था। सरकार अपनी दमन-नीति काम में लारही थी। पुलिस जहाँ भी काँग्रेस-आन्दोलन देखती थी उसे कुचलडालने के लिए कुछ नहीं उठा रखती थी।

एस० पी० साहब फौजी जवान थे। उन्हें किसी भी तरह की बदमनी सहन नहीं थी। जनता को सरकार की आज्ञा माननी चाहिए, न कि इन काँग्रेसी गुण्डों की। जो जनता गुण्डों का साथ देती थी, उसे कुचलडालने में देर नहीं करनीचाहिए। बदमनी को न दबाना, सरकार की दुर्बलता थी।

काँग्रेस की आग जो फैलती जारही थी वह बदमनी की चीज थी। उससे व्यापार की हानि थी, गुण्डों को उसकी आड़ में सिर उठाने का अवसर मिलता था। इसी लिए शहरों के शरीफ़ रईस और गाँवों के सम्मानित जमीदारों को वह पसन्द नहीं था।

कलक्टर और कमिश्नर साहब की आज्ञा से एस. पी. साहब उन लोगों की अमन-सभाएँ बनातेजारहे थे।

सेठ दामोदरप्रसाद पेशकार रामदयाल की बदौलत जिले की अमन सभा के प्रधान बने। सेठ साहब ने गर्दन झुकाकर वह सेवा स्वीकार करते हुए कहा, "हूजूर, मैं जी-जान से शान्ति कायम करने में मदद करने का प्रयत्न करूँगा।"

"अमारा शरकार टुमारा शाट ऐ। अमारा पुलिश और फ़ौज टुमारा

शाट ऐ। श्रम चाहें तो वडमनी करनावाला को एक मिनट में सेटम कर शेक्टा ए। श्रम वडमनी श्रौर वडमाशी को नई पनपनेडेगा। श्रम बौट बुरा आदमी है इस माने में।" एस. पी. साहब ने कहा।

सेठ दामोदर प्रसाद का दिल जहाँ अन्दर-ही-अन्दर इस मान को पाकर प्रसन्न हुआ वहाँ वाहर से उनके चेहरे पर भय के लक्षण भी कुछ कम दिखाई नहीं देरहे थे।

सेठ दामोदरप्रसाद जब दूसरे दिन सुबह सोकरउठे तो उनके घरके सामने जो दृश्य था वह बहुत विचित्र था। उनकी ड्योढ़ी के सामने एक अर्थी रखी थी और उसपर एक लाश-सी वँधी थी। उस लाश-सी पर एक गत्ते की तख्ती लगी थी और उसपर लिखा था, "देश के गद्दार, अमन सभा के ठेकेदार, सेठ दामोदरप्रसाद मुर्दावाद, तेरा खानदान मुर्दावाद।" और ये मुर्दावाद के नारे मुहल्ले भर के वातावरण को चीरतेहुए सड़कों तक गूँजरहे थे।

सेठ दामोदरप्रसाद के कानों में ये मुर्दावाद के नारे पड़े तो उनका वदन काँपनेलगा। परन्तु तुरन्त ही उन्हें एस. पी. साहव की पुलिस और सेना का ध्यान आया तो तनिक दृढ़ता से उन्होंने टेलीफ़ोन उठाया और सीधा एस. पी. साहव से मिलाकर कहा, "साहव! वड़ी कठिनाई में जान फँसगई है। भीड़ ने मेरा मकान बुरी तरह घेर लिया है। आप ही वचाएँ तो जान बचसकती है, वरना यह भीड़ मुझे, मेरे परिवार और घर को जलाकर राख करदेगी।"

"वैल, जान का केशा खटरा आगया। श्रम अभी पुलिश भेजटा ऐ। इतना चोटा-चोटा वाट टुम कोटवाल को रेफ़र कर शेक्टा ऐ। श्रमे जिला भर का काम रेटा ए।" कहकर एस. पी. साहव ने रिसिवर रखदिया। परन्तु चन्द मिनटों में ही कोतवाली से पुलिस सेठ दामोदरप्रसाद के मकान पर पहुँचगई। पुलिस को देखकर भीड़ नौ-दो-ग्यारह होगई। कासिम मिरजा स्वयं मौके पर पहुँचे।

भीड़ का वहाँ अब नामोनिशान भी नहीं रहा था। केवल एक अर्थी वाहर पड़ी मिली। अर्थी को पुलिस ने टटोलकर देखा तो ऊसपर लाश जैसा एक पुराना लिहाफ़ वँधा था।

पुलिस के आने पर सेठ दामोदरप्रसाद घर से वाहर निकले और अपने मलमल के कुर्त्ते की आस्तीनें चढ़ाकर कासिम मिरजा से हाथ मिलातेहुए

बोले, "कोतवाल साहब अदावेअर्ज ! आपको कष्ट देनापड़ा, इसका मुझे दुःख है, परन्तु मैं देखरहा हूँ कि गुण्डागर्दी बहुत बढ़तीजारही है। जनता भी गुण्डों का ही साथ देती है और शरीफ़ आदमी का मजाक उड़ाती है। सारे मोहल्ले-वालों का दिमाग खराब होगया है। काँग्रेस का फ़ितूर सभी के दिमागों पर छाताजारहा है।"

"इसमें क्या शक है ?" मुस्कराकर कासिम मिरज़ा बोले। "और सूभती भी इन बदमाशों को खूब है। [illegible] और नहीं हुआ तो आपका जनाज़ा ही तय्यार करलाए। समझ में नहीं आरहा कि काँग्रेस की इस बढ़तीहुई तह-रीक को कैसे रोकाजाए। जितना इसे दबाने की कोशिश कीजाती है, आग उतनी ही तेज और होतीजाती है।"

"चलिए इस बहाने से कासिम साहब ने मेरे गरीबखाने को पवित्र तो किया।" सेठ दामोदरप्रसाद बोले।

"अगर गरीबखाने ऐसे होते हैं सेठ जी !" उनके मकान की ओर दृष्टि घुमातेहुए कहा, "तो अमीरखाने आपकी दृष्टि में कैसे होतेहोंगे ?" जरा मसखरी के साथ बोले।

"कासिम साहब की कुछ मजाकिया आदत मालूम पड़ती है।" सेठ दामोदर प्रसाद ने कहा। "मेरठ शहर का यह वह स्थान है कासिम साहब, जहाँ मेरठ को मेरठ नाम देनेवाला इन्सान आकर बसा था। यह हवेली जो आपको आज चार मंजिली दिखाई देरही है, इसी जगह उसने अपना डेरा [illegible] [illegible]-कर पीछे उसकी कच्ची चहारदीवारी खींचीथी।

यह चहारदीवारी एक दिन पक्की बनगई। फिर यह [illegible] हवेली बनी। उस समय तक यह परिवार सैकड़ों आदमियों का कुनबा था।

परन्तु आज वह दिन है उस सारे परिवार में केवल एक अकेला आदमी आप को दिखाई देरहा है। इसके आगे [illegible]।" अपनी पूरी कहानी [illegible] सेठ दामोदरप्रसाद ने कासिम मिर्ज़ा की ओर [illegible] उस मसनद पर [illegible] जहाँ [illegible] बैठे थे।

"तो उन सैकड़ों आदमियों के परिवार में [illegible] अकेले हैं [illegible] सेठ जी !" कासिम मिरज़ा के दिमाग़ में [illegible]

[illegible]

वह बोले, "तब तो वाकई इस गरीबखाने में सैंकड़ों तिजोरियाँ होंगी और उनमें उतनी ही बहुओं के जेवरात रखेहोंगे। खुदा करे अगर एक साथ सौ-दो-सौ बहुएँ इस घर में आजाएँ तो सभी को सुनहरा जेवर आप पहना-सकते हैं।"

यह सुनकर दामोदरप्रसाद का भाव तुरन्त बदलगया। पुलिस को उन्होंने पुलिस के रूप में देखा और बात बदलतेहुए बोले, "यह बड़े दर्द की कहानी है कासिममिरज़ा! इसकी याद मत दिलाइए। क्या रखा है अब इस हवेली में। एक-एक बहू की बीमारी में दो-दो बहुओं का जेवर स्वाहा होगया। अब तो लुटा-लुटाया यह नाममात्र का सेठ बैठा है आपके सामने।"

कासिम मिरज़ा मुस्कराए और सेठ दामोदरप्रसाद की पीठ पर याराना हाथ फेरतेहुए बोले, "तुम वाकई सेठ बनेरहने के काबिल हो दामोदरप्रसाद! बात को पचाजाने से अधिक मुश्किल है पैसे और जेवर को पचाजाना। पेशकार रामदयाल बात को पचाजाते हैं, इसी लिए वह बात के धनी हैं। तुमने पैसे और जेवर को पचालिया, इसलिए तुम पैसे और जेवर के धनी हो।"

उसी समय पेशकाररामदयाल भी वहींपर आपहुँचे। पेशकार रामदयाल से सेठ दामोदरप्रसाद और कासिम मिरज़ा, दोनों खड़े होकर मिले।

सेठ दानोदर प्रसाद को खड़ेहोते देखकर उन्होंने कुछ महसूस नहीं किया; परन्तु जब कासिम मिरज़ा उठे तो पेशकार रामदयाल को वह दिन याद आगया जब एक साधारण चौकी के दीवान के रूप में कोतवाल हातमसिंह ने कासिम मिरज़ा से उनका परिचय कराया था।

कासिम मिरज़ा से हाथ मिलातेहुए पेशकार रामदयाल बोले, "कोतवाल साहब! मेरे आनेपर खड़े होकर आज आपने मुझे शरमिन्दा करदिया। पेशकार रामदयाल कोतवाल कासिममिरज़ा का वही दीवान है। उसे वह जब चाहें कान से पकड़वाकर अपनी कोठी पर बुलवा सकते हैं।"

"यह मैं जानता हूँ पेशकार साहब! परन्तु हमारा-आपका सम्बन्ध कोतवाल हातमसिंह ने जातेसमय दूसरा ही बतादिया था। क्या आप भूलगए उनके आखरी जुमले को? उन्होंने कहा था कि मैं अपना भाई तुम्हारे सुपुर्द किएजारहा हूँ।"

"भाई अवश्य कहा था कोतवाल हातमसिंह ने कासिममिरज़ा! परन्तु

छोटा भाई कहा था, बड़ा भाई नहीं। इसलिए मेरे कहने पर आपको ऐसा शोभा नहीं देता।"

पेशकार रामदयाल की इस बात पर कासिम मिरज़ा को हँस देना पड़ा और वह मुस्कराते हुए बोले, "अच्छा भाई रामदयाल ! तुम जो कहो वो ही ठीक है। छोटे भाई के आदर का प्यार मैं नहीं रोक सकता हूँ।"

सेठ दामोदरप्रसाद ने आज सन्ध्या को दोस्त कासिम मिरज़ा और पेशकार रामदयाल को दावत दी। दावत कचहरी के एक होटल में दी गई। तीन आदमियों के अतिरिक्त उसमें और कोई नहीं था।

चार खूंट का बड़ा कमरा था। कमरे के फ़र्श पर खूबसूरत दरी बिछी थी। कमरे के बीचोंबीच एक गोल मेज़ रखी थी। मेज़ पर एक हरे रंग की, शीशे की, सुराही थी और उसके पास चार गिलास थे शीशे के। पास में फ़र्श पर बढ़िया जिन और सोडे की बोतलें रखी थीं। मेज़ के चारों ओर चार कुर्सियाँ पड़ी थीं। सेठ दामोदरप्रसाद पेशकार रामदयाल और कासिम मिरज़ा कुर्सियों पर बैठगए।

"यह चौथी कुर्सी किसकी खाली रखाई सेठ दामोदरप्रसाद ?" कासिम मिरज़ा ने पूछा।"

"यह भी कुछ पूछने की चीज़ है कासिम मिरज़ा ! आखिर कहाँ बिना साक़ी के भी कभी पीना-पिलाना चलता है ? और फिर बदकिस्मती है हम तुम जैसे नौकरीपेशा लोगों का, क्योंकि हम लोग शराब सिर्फ शौक के लिए ही तो नहीं पीते। ज़िन्दगी में हज़ारों बार शराब ग़म ग़लत करने के लिए पीनी पड़ती है।" पेशकार रामदयाल बोले।

"सुना है रामप्यारी को सेठ जी ने आजकल अपनी रखैल बनाकर रख छोड़ा है।" कासिम मिरज़ा ने पूछा।

"दिल की बड़ी अच्छी औरत है कासिम मिरज़ा ! पेशेवर होने पर भी पैसे की भूख उसमें क़तन नहीं है। किसी भले घर की लड़की मालूम देती है। पढ़ी-लिखी है। अंग्रेजी भी जानती है।"

सेठ दामोदरप्रसाद की इस बात को पेशकार रामदयाल ने स्वीकार नहीं किया। वह रामप्यारी को पैसे की भूखी औरत समझते थे। यदि वह पैसे की भूखी न होती तो कभी जीवनभर पेशकार रामदयाल का साथ न छोड़ती।

यह सच था कि सेठजी की तरह वह उसे बैठे-बिठाए कभी चन्द मित्रों में बैठने, मुस्कराने और शराब तकसीम करने के लिए काफ़ी रक़म नहीं देसकते थे, परन्तु उनके संकेत पर गुलाब की तीन मंज़िली इमारत बनसकती थी। उन्हें गुलाब के वे शब्द याद थे जो उसने एकांत में पेशकार रामदयाल से कहे थे, "दीवान जी, मैं आपका ऐहसान इस जिन्दगी में नहीं भूलसकती। मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब आपका ही तो है। गुलाब कभी जीते जी आपसे बाहर नहीं जाएगी।"

पेशकार रामदयाल की आँखों में अब रामप्यारी और गुलाब दोनों खड़ी मुस्करारही थीं। दोनों की मुस्कराहट दो प्रकार की थी। एक में प्यार और दूसरी में उनका उपहास छिपा था।

एक बार उनके मन में आया कि वह सेठजी की बात का मुँहतोड़ उत्तर दें, परन्तु फिर सोचा कि चलो इन्हें भी इस भ्रममें रहनेदो। अपना क्या बनता-बिगड़ता है? हम यहाँ पीने-पिलाने के लिए आए हैं, गुलाब और रामप्यारी के चरित्रों का मूल्यांकन करने नहीं आए।

तभी कमरे के पीछे के द्वार से रामप्यारी ने प्रवेश किया। सौंदर्य साकार सामने आकर खड़ाहोगया। कासिम मिरजा की आँखें चौंधियागईं। यौवन का प्याला छलछलारहा था।

रामप्यारी ने सबसे पहले पेशकार रामदयाल के सामने झुककर नमस्कार किया, फ़िर कासिम मिरजा को और अन्त में सेठ दामोदरप्रसाद से दृष्टि मिलाई।

फिर उसने शराब की दो बोतलें खोलकर जार में डालीं और उसी में चार सोड़े की बोतलें खोलदीं। दो बीअर की बोतलें भी उसमें उँडेलडालीं। फिर चार गिलासों में रामप्यारी के कोमल हाथों ने शराब उडेंली। चार छोटे गिलास लबालब भरगए। फिर चारों ने उन्हें अपने हाथों में उठाकर एक दूसरे के स्वास्थ्य के लिए घूंट भरा।

कड़वी शराब को चारों ने ही मुँह बनाकर हलक से नीचे उतारा और फिर गिलास मेज़ पर रखदिए। गिलासों की शराब समाप्त नहीं हुई थी।

रामप्यारी ने कासिम मिरजा को सिग्रेट पेश की और पेशकार रामदयाल ने जेब से जर्मनी लाइटर निकालकर उसे जलवाया।

लाइटर पर दृष्टि जाते ही कासिम मिरजा वोले, "लाइटर तो कहीं से बढ़िया खरीदा है पेशकार साहव !"

"रामदयाल ने आज तक जीवन में कोई शौक की चीज़ नहीं खरीदी कोतवाल साहव ! इस जीवन में शौक के नाम पर तो कुछ है ही नहीं। कल मेमसाहव ने दिया था यह लाइटर। शराव पीते समय वह वहुत सिग्रेट पीती हैं। दियासलाई जलाते-जलाते नाक में दम आजाता था।

परन्तु शराव वह भी खूव पीती हैं।" पेशकार रामदयाल वोले।

"सुना तो हमने भी है कि मेमसाहव खूव शराव पीती हैं। हमने यह भी सुना है कि हमारे पेशकार साहव ने उन्हें भी मात दे-दी है।" कासिम मिरज़ा वोले।

पेशकार साहव के मस्तक पर विजय के चिन्ह दमकउठे। उनके चेहरे पर मुस्कराहट खेलनेलगी। वह संजीदगी के साथ वोले, "पीना भी एक हुनर है कोतवाल साहव ! पीकर नशे में होजाना कोई हुनर नहीं है।"

रामप्यारी वोली, "परन्तु पेशकार साहव ! आज तो आपको भी होश खोनापड़ेगा। सेठ दामोदरप्रसाद ने आज तीन वोतलें मँगाकररखी हैं।"

सेठ दामोदरप्रसाद मुस्कराकर वोले, "पगली कहीं की ! तीन वोतलें क्या हैं पेशकार साहव के लिए और फिर आज तो कोतवाल साहव भी हैं।"

"नाँ-भाई नाँ, यह सव अपने वूते की वात नहीं है।" सिग्रेट का कश खींच-कर उसके छल्ले कमरे की छत की ओर उड़ातेहुए कासिम मिरज़ा वोले, "अपना काम तो एक-दो पेग से ही होजाता है।"

कासिम मिरज़ा ने वहुत वार पेशकार साहव के साथ शराव पी थी। एक-दो पेग पर ही वात रुकजाती थी। आज सेठ दामोदरप्रसाद से पेशकार साहव की प्रशंसा सुनकर कासिम मिरज़ा उनके रौव में आगए।

रामप्यारी जाम-पर-जाम भरकर देती जारही थी और तीनों पीरहे थे। रामप्यारी के होंठों से भी कासिम मिरजा और सेठजी अपने जाम लगादेते थे और रामप्यारी पिलानेवाले की आँखों में आँखें डालकर घूंट भर तो लेती थी। उसकी दृष्टि कहती थी, "कृपा करती हूँ तुमपर।"

परन्तु पेशकार रामदयाल ने अपना गिलास आगे नहीं वढ़ाया। उनके गिलास में रामप्यारी को स्वयं आगे झुककर घूंट भरनापड़ा। पेशकार साहव

की दृष्टि पिलाते समय रामप्यारी से कहरही थी, "कृपा कररहा हूँ तुमपर।"

रामप्यारी अपनी मुस्कान से उसे स्वीकार करती थी। दुबारा जाम भरती थी और उनके होठों तक अपने हाथ से लेजाती थी।

शराब के नशे से अब तीनों के मस्तिष्क हल्के होगए थे। दुनियाँ उनके निकट एक खिलौना मात्र थी। इस बुलन्दी की दशा में तीनों ने अपने को मेरठ का शासन चलानेवालों के रूप में देखा।

कासिम मिरज़ा ने उस दिन प्रातःकाल जब से दामोदरप्रसाद की ड्योढी के सामने वह अर्थी देखी थी, तब से वह उसे अपनी आँखों के सामने से हटा नहीं सके थे। दिन के अन्य झंझटों में उसका विचार उनके मस्तिष्क में कुछ फीका पड़गया था, परन्तु अब शराब ने बीच की रुकावटों को हटाकर उनके मस्तिष्क का सम्बन्ध फिर उस अर्थी से जोड़दिया और वह पेशकार रामदयाल से बोले, "पेशकार साहब! आज आपसे आपका अपना छोटा भाई समझकर एक बात कहरहा हूँ।"

"कासिम साहब! आप रामदयाल से कोई भी बात उसी प्रकार कह सकते हैं, जिस प्रकार आप अपने-आपसे कहते है। विश्वास ही तो कमाई है रामदयाल की। पुलिस का हर व्यक्ति मुझसे अपने मन की बात कहता है। आपको एक भी ऐसा आदमी नहीं मिलेगा जो यह शिकायत करसके कि उसका कोई रहस्य मैंने कहीं खोलदिया।" गर्व के साथ पेशकार रामदयाल बोले।

"यह मुझे मालूम है पेशकार साहब! इसीलिए मैं आज आपसे इतनी [illegible] बात कहनेजारहा हूँ।" कासिम मिरजा बोले।

"आप पेशकार साहब को पहचानते हैं कोतवाल साहब! पेशकार साहब को मैं भी खूब पहचानता हूँ। पेशकार रामदयाल जिसके मित्र हैं, उसे दुनियाँ में किसी की चिन्ता नहीं करनीचाहिए। उसका कोई रहस्य ऐसे स्थान पर नहीं खुलसकता जहाँ वह स्वयँ उसे न खोलना चाहें। पेशकार साहब से शत्रुता करना भी मजाक नहीं है। उनकी पैनी दृष्टि से बचकर निकलना असम्भव है।" सेठ दामोदरप्रसाद बोले।

कासिम मिरजा ने सेठ दामोदरप्रसाद की बात को मूर्खतापूर्ण समझकर "हाँ-हाँ" करतेहुए पेशकार साहब से कहा, "पेशकार साहब! यह काँग्रेस का गुल-गपाड़ा बहुत बढ़ताजारहा है।"

"बढ़ने दो कोतवाल साहब !" सरलतापूर्वक पेशकार रामदयाल बोले। "अपना इसके घटने और बढ़ने से कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है।"

"सरदर्दी तो बढ़ती है।" कासिम मिरजा बोले।

"जितना सरदर्दी बढ़ेगी उतनी ही आपकी आय बढ़ेगी।" मुस्कराते हुए एक लम्बा घूँट भरकर पेशकार रामदयाल बोले।

"यह बात तो आपकी समझ में आती है, परन्तु कांग्रेस के लोगों से दुश्मनी मोललेना अब ठीक नहीं जँचता। अंग्रेजी सल्तनत, आज नहीं तो कल, जाएगी अवश्य।" कासिम मिरजा ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

कासिम मिरजा विद्वान् व्यक्ति थे। देश-विदेश की राजनीति का उनका अच्छा अध्ययन था। पेशकार रामदयाल उनकी योग्यता का सम्मान करते थे।

क़ासिम मिरज़ा की यह बात सुनकर पेशकार रामदयाल को जरा थरथरी सी आगई। वह आश्चर्यचकित होकर बोले, "तो क्या आपका विचार है कि अंग्रेजों का राज्य जातारहेगा ? क्या इन निहत्थे गुलगपाड़ा करनेवालों को सरकारी पुलिस और फ़ौज वश में नहीं लासकेगी ? क्या ये लोग सरकार की शक्ति पर विजय प्राप्त करलेंगे ?"

"एक दिन ऐसा भी आसकता है।" कासिम मिरजा ने दृढ़तापूर्वक कहा। "सरकार की आमदनी के सब मार्ग बन्द होसकते हैं ? गाँधी का यह सत्याग्रह बड़ा भयंकर हथियार है। इसके सामने तोप-बन्दूक सब रखे रह जाएँगे।"

सेठ दामोदरप्रसाद कासिम मिरजा की बात सुनकर सन्न से रहगए।

रामप्यारी उनकी बातें सुनकर मुस्कराउठी। उसकी दृष्टि के समक्ष दो-तीन कबूतर बैठे गुटरगूं-गुटरगूं कररहे थे। वह उन्हें चुग्गा डालनेवाली एक हसीना थी।

"तो जानेदीजिए कोतवाल साहब ! अपना उससे क्या बिगड़ेगा ? हम लोग अपनी आज्ञा से तो कोई काम करते नहीं हैं। अफ़सरों की आज्ञा बजाते हैं। हमारी हिस्ट्री-शीट हमारी नौकरी के चमकदार आयने हैं, जिनमें सरकारी कामों को ईमानदारी से करने की मोहरें लगी हैं।

सरकार जो भी आए, और वह जैसी भी आज्ञा दे, उसे सचाई और ईमानदारी के साथ करना अपना कर्त्तव्य है।" पेशकार साहब बोले।

"तो फिर निरंकुशता की सलाह क्यों देतेहो एस. पी. साहब को ? अपना छोटा भाई समझकर आज यह बात पूछरहा हूँ तुमसे।"

"यह भी क्या कुछ पूछने की बात है कोतवाल साहब ! आप इतने योग्य होकर भी तनिक सा प्रश्न हल नहीं करसके। इसी से पुलिस को आमदनी होती है, इसीसे पुलिस का रौब रहता है, अंग्रेज अफ़सरों की दृष्टि में यही ईमानदारी है और जब नौकरी कीहै तो नमक-हलाली करना अपना कर्त्तव्य है।" मुस्करातेहुए मूँछों पर ताव देकर पेशकार साहब बोले।

कासिम मिर्जा पेशकार रामदयाल को मन से अपना उस्ताद मानते थे। पेशकार साहब से वह अपने मन में उठनेवाली हर बात की सलाह लेते थे। पशकार साहब से अच्छा हमदर्द सलाहकार वह मेरठ जिले में अन्य किसी को नहीं समझते थे।

सेठ दामोदरप्रसाद ने उन दोनों की बातों को सुनकर अपने नम में निश्चय किया कि उन्हें भी अब पुलिस के हाथों में नहीं खेलनाचाहिए। उन्हें काँग्रेस वालों से भी बनाकररखनीचाहिए। अमनसभा का प्रधान होना कोई विशेष बात नहीं है। उन्हें व्यर्थ लोगों की दृष्टि में अपने को अपमानित नही करानाचाहिए।

मुख से सेठ दामोदरप्रसाद ने एक शब्द भी नहीं कहा परन्तु मन में दृढ़ निश्चय करलिया कि उन्हें अब यह पुलिस का झमेला छोड़देना है।

रामप्यारी कासिम मिरजा का जाम भरनेलगी तो वह गिलास पर हाथ रखकर बोले, "अब पेशकार साहब और सेठ दामोदरप्रसाद ही पिएँगे। अपनी ...रिक समाप्त हुई।"

सेठ दामोदरप्रसाद भी एक गिलास और लेकर बस होगए।

सब को पस्त देखकर पेशकार रामदयाल बोले, "तो अब बस करो। अभी मेमसाहब की भी ड्यूटी भुगतानी है कोतवाल साहब ! मेरी प्रतीक्षा में साहब और मेमसाहब दोनों बैठेहोंगे।"

"मैं तुम्हें अभी चन्द मिनटों में साहब की कोठी पर पहुँचादेता हूँ।" खड़ेहोते हुए कासिम मिरजा बोले।

पार्टी के लिए सेठ दामोदरप्रसाद को दोनों ने धन्यवाद दिया, रामप्यारी का अन्दाजभरा नमस्कार दोनों ने लिया और मीठी दृष्टि से मुस्कराकर चलदिए।

चालाकी भी तो कोई चीज है। हम लोग बीच के आदमी हैं। हमें सरकार से केवल उतना ही मतलब है, जितना हम उससे वेतन पाते हैं। जो वेतन देगा वह काम तो लेगा ही। और जो जैसा काम लेने योग्य होगा उसे हम वैसा ही काम देंगे। हम लोग तो मशीन ठहरे। हमारे अन्दर गिरकर अगर कोई पिसजाता है तो हमारा क्या दोष ? हमारा काम है मस्ती की छानतेहुए चलना। जवान मरता है या बूढ़ा, इससे अपना कोई सरोकार नहीं। मशीन को तेल चाहिए चलने के लिए।" मुस्कराते हुए पेशकार रामदयाल कासिम मिरज़ा के कन्धे को पकड़तेहुए ज़रा दबाकर बोले।

पेशकार रामदयाल के पंजे में कासिममिरज़ा का नाजुक-सा कंधा दबकर चरमराने लगा तो वह पेशकार साहब की ओर मुँह करके बोले, "बड़ा खूँखार पंजा है आपका पेशकार साहब ! बचपन में जरूर पहलवानी की होगी आपने।"

"पहलवानी की ही नहीं है कासिममिर्ज़ा ! मैं ख़ान्दानी पहलवान हूँ। हमारे बाबाजी अपने इलाके के नामी पहलवान थे।"

यह सुनकर कासिममिरज़ा भी अपनी खान्दानी प्रशंसा किए बिना न रहे। वह मुस्कराकर बोले, " पेशकार साहब ! शायद सभी के पुर्खा पहलवानी करते थे ?"

"मालूम देता है कि आपके खान्दान में भी कोई जबरदस्त पहलवान हो गुज़रे हैं।"

"यही मतलब है मेरा। हमारे बाबा के बारे में बड़े-बड़े क़िस्से कहे जाते हैं।"

बातें फिर साइमन कमीशन पर आटिकीं। कासिममिरज़ा बोले, "पेशकार साहब ! आज स्कूल के बच्चों ने ग़जब करदिया। कमीशन का रास्ता साफ़ करना मुश्किल होगया। कहीं से भी बच्चे काले झण्डे लेकर निकलपड़ते थे और उनका सँभालना कठिन होजाता था।"

पेशकार रामदयाल को कासिममिरज़ा की बात पर तरस आया, परन्तु ऊपर से उन्होंने कोतवाल सहाब की बात-में-बात मिलाकर कहा, "आपने आज के प्रबन्ध में जैसे काम लिया वह चाहे कुछ अफसरों की दृष्टि में न जँचा हो परन्तु अमन के विचार से ठीक ही था।"

पेशकार रामदयाल का अब इन नित्य के मामलों से कोई सम्बन्ध नहीं था। वह अब इन छोटी-छोटी भगड़ेवाजियों से बहुत ऊपर उठचुके थे। जब तक कोई विशेष बात सामने नहीं आती थी, तब तक वह अपना मत प्रकट नहीं करते थे।

पेशकार रामदयल ने अपने जिले के दारोगाओं को दृढ़ रहने का आदेश दिया था। जो भी दारोगा उनके सम्पर्क में आता था उसे वह यही सलाह देते थे। कहते थे, "जिस थाने में भी रहो शेर बनकर रहो, गीदड़ बनकर नहीं। तुम्हारी पीठ पर सरकार की शक्ति है। तुम अपने इलाके में जिसे चाहो अपमानित करसकते हो, हवालत में बन्द करसकते हो। तुम्हारे हाथों में सरकार का कानून है।

तुम अपने इलाके की सबसे बड़ी शक्ति हो यदि तुम अपनी शक्ति का सही प्रयोग नहीं करसकते तो तुम मेरी दृष्टि से प्रथम श्रेणी के मूर्ख हो।"

अक्लमन्द बनने का जोस और अपने इलाके में शेर की तरह घूमने की आजादी मेरठ जिले के सभी दारोगाओं को पेशकार रामदयल ने दी थी।

कांग्रेस की सरगरमी को देखकर और कासिममिरज़ा की राय से प्रभावित होकर पेशकार रामदयाल कुछ विश्वासपात्र दारोगाओं से यह भी कहदेते थे, "अपने इलाके के कुछ विशेष कांग्रेसियों का भी ध्यान रखाकरो। कौन जाने कब क्या कायापलट होजाए। आज के कैदी कल के हकूमत चलनेवाले भी बनसकते हैं।"

कासिम मिरज़ा आज नित्य और दिन से अधिक पीगए। पेशकार साहब ने उनका हाथ रोकतेहुए कहा, "क्या करहे है आज कासिम मिरज़ा! शराब उतनी ही पीनीचाहिए जितनी होश न बिगाड़दे।"

"आज मैं कुछ नही करसका पेशकार साहब! दिल में बड़ा जोश था कि आज मेरठ में साइमन कमीशन के आने पर ज़रा भी गड़बड़ नहीं होनेदूंगा परन्तु जब मैं कार पर बैठकर कोठी से निकला तो क्या देखा कि आपका छोटा लड़का एक सरकंदे पर काला कागज लगाए, उसे ऊँचा उठाकर 'साइमन गो वेक, साइमन गो वेक' कहता जारहा

मेरा दिल हिलगया। कितनी ताक़त

जिसने उस नादान बच्चे के दिल को भी

"तो होने दीजिए न देश को आजाद ! परेशानी क्या है आपके दिमाग़ में ? शायद डररहे हैं कि एस० पी० साहब नाराज होंगे ?

यह नाराज़गी तो एक दिन सहन करनी ही होगी।" मुस्करातेहुए पेशकार रामदयाल बोले।

"तुम कोई सहायता नहीं करोगे मेरी पेशकार साहब ?" कासिममिरज़ा ने पूछा।

"सहायता क्यों नहीं करूँगा ? कासिममिरज़ा की सहायता नहीं करूँगा तो फिर किसकी सहायता करूँगा ?" यह कहतेहुए पेशकार साहब ने सरकारी हस्पताल के सिविलसर्जन का एक सर्टिफिकेट उनके सामने रखकर कहा, "यह देखा आपने।"

कासिममिरज़ा ने उसे देखकर कहा, "सिविल-सर्जन के सर्टिफ़िकेट का क्या बनेगा पेशकार साहब ? यह किसलिए बनवाया है आपने ?"

"क्या बनेगा ? आपके हिस्ट्री शीट पर जो काला धब्बा आनेवाला था उसे मिटाकर सुनहरी बनादेगा यह सर्टिफिकेट। आपने शहर-कोतवाली की है। माफ़ करना ! यदि दीवानगीरी की होती तो तब आप पुलिस की इस बारीकी को समझपाते।" पेशकार रामदयाल बोले।

कासिममिरज़ा का मस्तिष्क अब कुछ-कुछ काम करनेलगा था। बात की तहतक न पहुँचते हुए उन्होंने पूछा, "तनिक स्पष्ट बताइए पेशकार साहब ! मेरा दिल बैठाजारहा है।" कासिममिरज़ा बोले।

तभी कैसरगंज-चौकी के दीवान ने आकर सलाम झुकाया। वह चुपचाप खड़ा होगया।

"कोतवाल साहब के सामने कहते डर लगता है मौलाना ! कहो, कहते क्यों नहीं ? कोतवाल साहब का तो इसमें लाभ ही है।" मुस्कराकर पेशकार साहब बोले, "हाँ क्या लिखा तुमने रोज़नामचे की रपट में ?"

"यही लिखा है हुजूर ! पुलिस पर किसी ने भीड़ में से एक हथ ...का। शहर-कोतवाल साहब भी मौके पर थे। गोला इतनी जोर से ...वाल साहब को चोट आगई और वह वहाँ से बेहोशी की दशा ...गए।" दीवानजी ने कहा।

...कहकर पेशकार साहब ने एक पाँच रुपए का नोट दीवान

ऊपर ...
के प्रब...
परन्तु ...

जी को देनाचाहा, तो वह सकुचाया।

"लीजो, इसमें क्या है! जब पेशकार साहब मेहरबानी कररहे हैं तो शरमाने की क्या बात है?" कासिममिरज़ा मुस्कराकर बोले।

"आपने कमाल करदिया पेशकार साहब! सच जानिए मेरी तो अब जान-में-जान आई है। मैं तो आज अपनी नौकरी की ओर से एकदम निराश होबैठा था। सोचरहा था कि आज साहब बस खा ही जाएगा फाड़कर।" कासिममिरज़ा दिल से पेशकार रामदयाल के कृतज्ञ थे।

मेरठ के कोतवाल कासिममिरज़ा पर बम फेंकागया। कोतवाल साहब बुरी तरह घायल होने पर सरकारी हस्पताल लेजाए गए। सिविलसर्जन ने रिपोर्ट दी है कि कोतवाल साहब को भयानक चोट आई है।"

मेरठ के दैनिक-पत्रों के प्रतिनिधियों को अपने दफ्तर में बुलाकर संदेश पेशकार साहब ने दिया। दूसरे दिन वह पत्रों में छपगया।

एस०पी० साहब को कोठी पर जाकर पेशकार साहब ने यही सूचना दी।

साहब आज परेशान थे। उनपर शायद कलक्टर और कमिश्नर साहब की झाड़ें पड़ी थीं।

उन्होंने अभी तक भोजन नहीं किया था। सुबह सात बजे से ड्यूटी पर थे। इतनी आयु होने पर भी वह कभी अपनी ड्यूटी से मुँह नहीं मोड़ते थे। वह बड़ी ही लगन से काम करते थे।

वह पेशकार रामदयाल को देखकरबोले, "वेल डीवानरामडयाल! आज हमारा साइमन कमीशन का बरा बेइज्जटी उआ।"

"क्या हुआ साहब?" पेशकार साहब ने सबकुछ जानतेहुए भी पूछा, "हमें तो आपने दफ्तर में ऐसा फँसादिया है कि बाहर का कुछ पता ही नहीं चला। सुना है बेचारे कोतवालसाहब को बहुत चोट आई है।"

"कैसा चोट?" आश्चर्य-चकित होकर एस० पी० साहब ने पूछा।

"सुना है सरकार कैसरगंज की चौकी पर बड़ी भीड इकट्ठी होगई थी। वह भीड़ वहीं पर साइमन कमीशन को काले झण्डे दिखाकर उनके गले में जूतों का हार डालनाचाहती थी। उसे रोकने के लिए जब पुलिस आगे बढ़ी तो कोत--वाल साहब भी वहाँ पहुँचगए।" पेशकार साहब ने कहा।

"फिर कैसा उआ?" साहब ने पूछा।

"हुजर किसी ने हाथ का बम उठाकर कोतवाल साहब पर फेंकदिया। उन्हें बड़ी चोट आई। हस्पताल की एम्बुलेन्स गाड़ी आकर उन्हें हस्पताल लेगई।" पेशकार साहब ने कहा।

"आज गुण्डा लोग बोट हावी ओ गेया टा। गाँडी का गुण्डा लोग अमारा राज को भेगा डेना माँगटा ऐ। डीवाना ऐ। अम लोग ऐशा करके जाने वाला नई हैं।" कुर्सी पर जमकर बैठतेहुए साहब ने कहा।

"इसमें क्या शक है साहब! इतना बड़ा अंग्रेजी राज्य क्या यूँही चला जाएगा? परन्तु साहब! आज कोतवालसाहब ने भी हक अदा करदिया। उन्होंने अपनेआपको मौत के मुँह में धकेलदिया।" पेशकार साहब बोले।

मेमसाहब का इन बातों की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं था। उन्होंने बैरे को अपनी मेज लगाने का हुक्म दिया और देखते-ही-देखते शराब की बोतल खुलगई।

साहब बहादुर आज थककर चकनाचूर होगए थे। सुबह सात बजे के कसे-कसे अब खुले थे बेचारे। जूतों के फ़ीते इतने सख्त बँधे थे कि खून की हरकत धीमी पड़गई थी और पैर कुछ सूजे-सूजे मालूम देनेलगे थे।

वह मेमसाहब से बोले, "वैल मेमशाब, आम वेरी टायर्ड।"

"आफ़ कोर्स।" कहकर मेमसाहब ने एक गिलास में शराब डालकर साहब के हाथ में देतेहुए कहा, "दिस विल हेल्प यू, दिस विल गिव यू रिलीफ़ एण्ड मेक यू फ़्रेश।"

दूसरा गिलास मेमसाहब ने पेशकार रामदयाल को दिया और फिर दौर पर-दौर तब तक चलतेरहे जबतक साहबबहादुर अपना होश खोकर आराम से पलंग पर नहीं लेटगए।

साहब के आराम से सोजाने पर मेमसाहब ने खड़ी होकर कमरे में घूमना आरम्भ करदिया और गर्मी सी अनुभव करतेहुए केवल एक पेटीकोट नुमा घाघरी को छोड़कर शेष सब वस्त्र उतारकर एक ओर फेंकदिए।

पेशकार रामदयाल की दृष्टि मेमसाहब के चिकने सुफेद बदन पर फिरी, जैसे मक्खन की टिकिया पर मक्खन खाने के शौकीन लड़के की जबान फिर जाती है। उनकी दृष्टि उनके मादक यौवन की धारा पर तैरनेलगी। उसकी बलखती हुई जवानी ने पेशकार साहब के गुलाबी नशे को खिला दिया।

मेम साहव ज़रा घूमकर फिर उसी मेज़ के पास आई जहाँ उनका शराब का गिलास भरा रखा था। वह पेशकार साहव के सामने खड़ी होकर बोलीं, "वैल डीवान जी ! टुम हमें बौट टंग करनेलगा ऐ। अगर टुम हमें ऐसा टंग करेगा टो हम टुमारी शावबाडुर से शिकायट करदेगा।"

पेशकार साहव मुस्कराकर बोले, "मेमसाहव ! हम तो आपके खादिम हैं। हमें तो पैदा ही परमात्मा ने आपकी सेवा के लिए किया है। फिर हम आपको भला तंग कैसे करसकते हैं ?"

मेमसाहव पेशकार साहव की कुर्सी के बाज़ू पर जाकर बैठगईं और उनके कंधे पर अपनी क़लाई टिकाकर सहारा लेतेहुए बोलीं, "टुम बौट बाटें बेनाना जानटा ऐ डीवान जी ! टुम हमें जितना अच्छा लगटा ऐ उतना ई खेराब भी लगता ऐ। टुम हमें बौट टंग करटा ऐ।"

इतना कहते-कहते मेमसाहव ने अपना पूरा बदन पेशकार साहव के ऊपर ढुलका दिया। पेशकार साहव अब मेमसाहव से काफ़ी खुलकर बातें करते थे। वह मेमसाहव का भार सँभालतेहुए बोले, "मेमसाहव ! आप तो यदि मेमसाहव न बनकर गुलाब का फूल बनगईहोतीं तो बहुत ठीकरहता। साहव बहादुर का भाग्य है कि उन्हें आप जैसी मेमसाहव मिलीं।"

"और टुमारा भाग कैसा ए दीवानजी ! जो टुमको अमारा जैसा मेम-शाव मिला।" पेशकार साहव की आँखों में झाँकतेहुए मेमसाहव ने पूछा।

शराब का नशा उस समय गहरा होउठा था। पेशकार रामदयाल ने मेमसाहव से कहा, "मेमसाहव ! मेरे दिल की न पूछिए, परन्तु अफ़सरों की पत्नियाँ बड़ी भयानक होती हैं। वे तनिक क्रुद्ध होजाएँ तो तुरन्त साहव से शिकायत करनेलगती हैं।"

मेमसाहव हँसकर पेशकार साहव की गर्दन में अपनी सुडौल बाँह डालकर बोलीं, "वैल डीवानजी ! तुम डर गेया मालूम डेटा ए हमारा बात से। हम टुमारा शिकायट कभी नहीं करसकता। हम टुमें बौट-बौट अच्छा आडमी मानटा ए।"

पेशकार साहव ने काफ़ी समय तक पत्थर बनेरहने का प्रयास किया परन्तु उनका हाड-मांस का बना बदन आख़िर उनके मन के प्रतिबन्ध को स्वीकार न करसका। उनके दिलमें बेचैनी-सी पैदा होनेलगी और वह चुम्बक पत्थर की

ओर लोहे के समान खींचनेलगा।

अभी तक जितनी हरकतें हुई थीं वे सब मेमसाहब की ओर से ही थीं। पेशकार साहब अनुभव कररहे थे कि उनके वदन को कोई मुलायम हाथ छू रहा था। कोई मुलायम वदन उनको स्पर्श कररहा था।

"एक गिलास शराब और मेमसाहब !" मेमसाहब के दोनों हाथ धीरे से अपनी दोनों हथेलियों के बीच दबातेहुए पेशकार साहब ने कहा।

मेमसाहब ने तुरन्त फुदककर पेशकार साहब का गिलास शराब से भर दिया और फिर उनके होटों से लगातीहुई बोली, "टुम को शेराब पिलाने में हमें बोट मजा आटा है ऐ डीवान जी ! शाब बाडुर ने तुमे हमारा शेराब पिलाने के लिए छोरा ऐ और टुम हमशे शेराब पिलाने का काम लेटा ऐ।" मेमसाहब ने मुस्कराकरकहा।

शराब के नशे में पेशकार साहब बोले, "मेमसाहब ! आप बहुत अच्छी हैं। चलिए जरा बाहर बागीचे की सैर करें। आज आसमान में पूरा चाँद निकल रहा है। वह चाँद भी आपके गोल मुँह जैसा ही सुन्दर है।" कहतेहुए पेशकारसाहब ने मेमसाहब के गुलाबी गालों को अपनी दोनों हथेलियों के बीच धीरे से दबाकर हल्के से मसलदिया।

दोनों बाहर बागीचे में पहुँचे तो देखा आसमान में चाँद मुस्करारहा था। उसे देखकर पेशकार साहब बोले, "देखरही हो मेमसाहब, चाँद कितना प्रसन्न है तुम्हारे सुन्दर चेहरे को देखकर ? हसीन चीज सबके मन को लुभानेवाली होती है। परमात्मा ने आपको बहुत ही हसीन बनाया है।"

अपनी सुन्दरता की प्रशंसा पेशकार रामदयाल के मुँख से सुनकर मेमसाहब का दिल खिलगया। उसकी नौजवान जिन्दगी में पेशकार रामदयाल के आने से एक ताजगी आगई।

साहब बहादुर से मेमसाहब को घृणा नहीं थी, लेकिन उनका उपयोग उनके निकट केवल इतना ही था कि वह उनकी बदौलत एस. पी. साहब की मेमसाहब कहलाती थीं, रहने को कोठी थी, सैर के लिए कार थी, और खर्चकरने को पैसे की कमी नहीं थी। इसके अतिरिक्त कभी साहबबहादुर को देखकर उनका दिल गुदगुदाया हो, ऐसी बात नहीं थी। सम्भवतः जीवन में कभी उनका दिल खुश नहीं हुआ।

पेशकार रामदयाल के पास दिल को गुदगुनाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। उसकी निगाहें गजब की थीं। उनका बदन गठाहुआ और सुडौल था। स्त्री की दृष्टि भी उनके चेहरे से चिपकजाती थी।

: १६ :

देश आज़ादी की राह पर आगे बढ़ताजारहा था। पेशकार रामदयाल की ऐश की छनरही थी। उनका मेल-मिलाप अब काँग्रेसी लोगों से भी बढ़ताजारहा था। उनके मित्र दामोदरप्रसाद भी इधर गाँधी जी के मेरठ आने से बहुत प्रभावितहुए थे। गाँधीजी के दर्शन करके उनके ज्ञान-चक्षु खुलगए थे।

सेठ दामोदरप्रसाद ने अब हाथ का कता-बुना खद्दर पहनना प्रारम्भ कर-दिया था। अमन-सभा से उन्होंने त्यागपत्र देदिया था।

त्यागपत्र देने से पूर्व वह पेशकार साहब के मकान पर पहुँचे और शहर की दशा बयान करके बोले, "पेशकार साहब, शहर की दशा बिगड़तीजारही है। मेरे काम को धक्का लगने की सम्भावना है। मेरे लिए अब यही मार्ग है कि मैं काँग्रेसी बनकर अपने मजदूरों का स्वयं नेता बनजाऊँ। इसी में मेरे काम की सलामती है।"

"आपने ठीक सोचा सेठ दामोदरप्रसाद। बुद्धिमान व्यक्ति वही है जो समय की आवश्यकता को पहचानले। मैं तो कहता हूँ कि तुम देश के नेता बन-जाओ। यदि कभी कासिममिरजा का ही विचार ठीक निकला और अंग्रेजी राज्य चलागया, तो तुम्हारा पल्ला पकड़कर यारलोग भी पार उतर जाएंगे।" मुस्करातेहुए पेशकार रामदयाल बोले।

"मैं मजाक नहीं कररहा हूँ पेशकार साहब!" गम्भीरतापूर्वक सेठ —— प्रसाद बोले।

"मेरे मुस्कराने को मजाक मत समझो सेठ! मैं भी सच ... तुम बेफिक्री के साथ कांग्रेस में शामिल होसकतेहो। तु...

हानि नहीं पहुँचेगी।

काँग्रेस में जाते ही तुम्हारे काम चमक उठेंगे। तुम्हारा नाम भी होगा। पुलिस की ओर से तुम निश्चिन्त रहो। जब तक यहाँ तुम्हारा यार रामदयाल बैठा है तबतक तुम मौज की छानसकते हो। तुम्हें कोई किसी प्रकार की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।"

पेशकार रामदयाल की ओरसे निश्चिंत होकर सेठ दामोदरप्रसाद ने जिला-काँग्रेस-कमेटी के मन्त्री महोदय को अपने यहाँ बुलाया और उन्हें बिठाकर उनका हाल-चाल पूछतेहुए बोले, "कहिए मंत्री जी! आन्दोलन कैसा चलरहा है? आपने बहुत बड़ा काम किया है।"

मंत्रीजी अपनी फटी धोती के छेदों को सिकोड़कर मुट्ठी में दबातेहुए बोले, "काम तो अवश्य किया है सेठजी और हो भी रहा है, परन्तु पैसे के अभाव में आप जानते ही हैं क्या कुछ होसकता है।"

"आपका कहना उचित है मंत्रीजी! काम बिना पैसे के नहीं होसकता। परन्तु हमने तो सुना था कि केसरगंज के आड़ती, जत्तीवाड़े के खत्तरी, सदर बाजार के बड़े-बड़े दुकानदार और सर्राफ़े के सर्राफ़, सभी काँग्रेस को दिल खोलकर चन्दा देरहे हैं।" सेठ दमोदरप्रसाद बोले।

"चन्दा तो सभी लोगों ने दिया है सेठजी! परन्तु खर्च भी तो कुछ कम नहीं है। इतनी बड़ी सरकार से लड़ाई छिड़ीहुई है। हजारों सत्याग्रहियों को नित्य भोजन देना क्या छोटी समस्या है? बड़ा भारी खर्चा है सेठसाहब!" मंत्रीजी बोले।

"खर्चा क्यों नहीं है। मैं तो यही कहूँगा कि आपका ही बूता है जो इतने बड़े खर्चे को सँभालेहुएहो, वरना कोई एरा-गैरा होता तो कभी का भागखड़ाहोता।" सेठ दामोदरप्रसाद ने कहा।

"मेरा इसमें कुछ नहीं है सेठजी! यह सब तो महात्मा गाँधी के पुण्य का प्रताप है जो सामने दिखाई देरहा है। उन्हीं के प्रताप से देनेवालों के मन में सद्बुद्धि उत्पन्न होती है।" मंत्री महोदय विनम्रतापूर्वक बोले।

कुछ ठहरकर मंत्रीजी ने कहा, "सेठ जी, आज आपसे एक बात कहूँ। यों कहना मैं तो बहुत दिन से चाहता था परन्तु आज अवसर आहीगया। यदि आप मेरा कहना मानें तो अमन-वमन-सभा छोड़कर काँग्रेस में आजाइए।

केवल दस हजार की एक थैली आप पंडित जी को उनके मेरठ के दौरे पर भेंट करदें तो मैं आपको जिला-कांग्रेस का प्रधान बनवादूँ। फिर देखना अपनी नामवरी को। और कोरी नामवरी ही नहीं होगीसेठजी! आपके कारखानों में जो नित्य झंझट चलतेरहते हैं वे सब भी समाप्तहोजाएँगे। वह ठाट का कारोबार चलेगा कि आनन्द आजाएगा। यदि आप अमन-वमन-सभा में रहे तो हो सकता है कि किसी दिन भीड़भाड़के में कुछ नौजवान जोश में आकर आपके कारखानों को मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगादें।" तनिक अंदाज़ के साथ मंत्रीजी ने कहा।

सेठ दामोदरप्रसाद का दिल हिलगया उनकी बात सुनकर और उनका बतायाहुआ नुसखा भी उनकी समझ में आगया। कुछ दिन पश्चात् ही पंडित जी मेरठ कन्वेंशन में पधारे और सेठ दामोदरप्रसाद ने जिला-कांग्रेस-प्रधान के नाते दसके स्थान पर बीस हज़ारकी निजी और बीस हज़ार की जिला-दानियों की ओर से थैलियाँ उन्हें भेंट कीं।

सेठ दामोदरप्रसाद का एक छोटा-सा भाषण भी आज की सभा में छापकर बाँटागया। मेरठ की जनता ने सेठजी के त्याग को बहुत ऊँची दृष्टि से देखा उसदिन सेठजी ने अपने कारखानों की छुट्टी करदी, जिससे मजदूर भी सभा में जाकर अपने सेठजी के त्याग को देखसकें।

आर्य समाज के मंत्री पंडित रामखिलावन सेठ दामोदरप्रसाद को काफ़ी दिन से मुर्गी के अंडे की तरह सेते चलेआरहे थे। आज की सभा में जिला-कांग्रेस के प्रधान-मंत्री का यह चमत्कार देखकर वह दंग रहगए। उन्होंने कई बार अपने हाथों को इस तरह मला कि जैसे शिकार हाथ से निकलजाने पर शिकारी हाथ मलता है।

सेठ दामोदरप्रसाद का यह कायापलट देखकर रामप्यारी ने सोचा कि क्यों न वह भी उसअवसर का लाभउठाए। उससे भी रहानहींगया। वह सभा के मध्य अपने दमदमातेहुए यौवन को लेकर खड़ीहोगई। उसके खड़े होते ही सबकी दृष्टि उधर खिंचगई। फिर जिधर को उसके पग बढ़े उधर से ही भीड़ हटतीचलीगई। सभी के नेत्र उसके मादक चेहरे पर टिकगए थे।

रामप्यारी मंच की ओर बढ़तीजारही थी। मंच पर पंडित [illegible] रामख[illegible] थे और उनकी बगल में सेठ दामोदरप्रसाद बैठे मुस्कारा[illegible]

रामप्यारी ने अपने गले का रत्न-जड़ित हार उतारकर पंडित जी को भेंट करतेहुए कहा, "यह हार आपकी भेंट है और आज से मेरा शरीर और सर्वस्व कांग्रेस की भेंट हैं। देश की सेवा के लिए मैं अपना सर्वस्व अर्पित करती हूँ।"

पंडितजी ने सहर्ष रामप्यारी की सेवाओं को स्वीकार करके सेठदामोदर प्रसाद की तरफ देखकर कहा, "आप लोगों को चाहिए कि ऐसी वीर देवियों को भी स्वतंत्रता आन्दोलन में भागलेने का अवसर प्रदान करें। शहर की विदेशी कपड़ों और शराब की दूकानों पर पेकेटिंग करने का कार्य इनके सुपुर्द करना चाहिए।" और फिर रामप्यारी की ओर देखकर बोले, "क्यों बहन ! यह कार्य तुम्हारे अनुकूल रहेगा ना ?"

"आपका आशीर्वाद पाकरमैं क्या नहीं करसकूँगी पंडितजी! मेरठ के बजाजे में कल से वह पिकेटिंग आरम्भ करूँ कि क्या मजाल जो कोई एक इंच भी विदेशी कपड़ा खरीदसकें।" रामप्यारी ने गम्भीर मुस्कराहट के साथ सीने में उभार लाकर कहा।

"शाबाश ! मैं तुम्हारा यह हार देश के लिए स्वीकार करता हूँ।" फिर जनतासे पंडितजी ने रामप्यारी को मंचपर खड़ीकरके जनताको दिखातेहुएकहा, "ये भारत की वे त्यागमयी देवियाँ हैं जिनपर भारत को सर्वदा गर्व रहा है, जिन्होंने अपने वीर भाइयों के साथ कंधे-से-कंधा भिड़ाकर स्वतन्त्रता-संग्राम में भाग लिया है और सर्वस्व बलिदान किया है। पराधीनता की बेड़ियों को काटने में इन देवियोंने जो योग दिया है, उसका मैं हृदय से स्वागत करता हूँ।"

जनता ने करतल ध्वनि से पंडित जी की वाणी का स्वागत किया।

समय बदलरहा था परन्तु पेशकार रामदयाल पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। कोतवाल कासिममिरजा की भी वही ऐश की छनरही थी। सेठ दामोदरप्रसाद अब सुफ़ैद बग्ग खादी का कुर्ता पहनते थे और खादी की महीन धोती। गाँधीआश्रम में जो बढ़िया-से-बढ़िया कपड़ा आता था, वह पहले सेठ दामोदरप्रसाद के पास भेजाजाता था।

सेठ दामोदरप्रसाद के आजकल तीन जीवन पृथक-पृथक होगए थे। उनका व्यक्तिगत जीवन पृथक था, उनका राजनैतिक जीवन पृथक और व्यावसायिक जीवन पृथक।

पेशकार रामदयाल और कोतवाल कासिममिरजा से उनकी मित्रता ज्यों-

की-त्यों चलती रही। रामप्यारी को उन्होंने कोठे पर बैठनेवाली, नाचने-गानेवाली वेश्या से बदलकर अपनी दिलरुबा बनालिया था और कचहरी-रोड़ पर एक कोठी उसके लिए खरीदकर देदीथी। उसके कम्पाउँड में एक ऊंचा कांग्रेस का तिरंगा झंडा लगा था। वह कोठी सेठ जी ने रामप्यारी के ही नाम करादीथी।

रामप्यारी का नाम भी अब सेठजी ने बदलकर रामेश्वरीदेवी रखदिया था। नाम के साथ-ही-साथ रामप्यारी का पुराना इतिहास भी बदल गया था। नया नाम, नया जीवन, नई बात। कुछ दिनपश्चात उस पुराने नामके जानकार भी बहुत थोड़े रहगए।

उसी बीच एस. पी. साहब का मेरठ से तबादला होगया। तबादले के समय साहब को शानदार फ़ेयरवेल दियागया।

चलने से पहले एस० पी० साहब ने नए एस० पी० साहब से पेशकार रामदयाल का परिचय करातेहुए कहा, हीयर इज दी मेन आन हूम यू केन रिलाई फ़ार एव्री थिंग।" और स्वयं हाथ मिलाकर उनसे हाथ मिलवातेहुए कहा, "ही कम्ज़ फ्राम ए लेंडलार्ड फेमिली।"

नए एस. पी. साहब ने पेशकार रामदयाल के चेहरे पर देखतेहुए कहा, 'वेल पेशकार साब! हम टुमारा बारा में शाब शे शब कुच सुनकर वीट कुश उआ। जैशा होशियारी शे टुम अब टक काम करटा आया ऐ, वेशाई ओशयारी शे टुम आगे बी करना माँगेगा। अम टुमारा पूरा-पूरा ख्याल रखेगा।"

"हुजूर की मेहरबानी होगी।" सिर झुकाकर आदर के साथ पेशकार रामदयाल बोले, "यों काम तो मेरा आपकी पेशकारी में फाइलें इधर-उधर करना ही है, परन्तु हुजूर मुझसे हर प्रकार का काम लेसकते हैं।"

तभी पुराने एस. पी. साहब की मेमसाहब आगे बढ़कर नए साहब की मेमसाहब से बोलीं, "वेरी गुड ड्रिंकर्ड, वेरी गुड।"

"वंडरफुल!" नई मेमसाहब ने कहा।

नए साहब की मेमसाहब की आयु लगभग पचास वर्ष की थी। पेशकार रामदयाल ने जब उसके सामने अपनी शराब पीने की प्रशंसा करते [illegible] मेमसाहब को सुना तो उनका दिल बैठनेलगा। वह मन-ही-मन सोचनेलगी कि यदि शराब के नशे में उसने भी साहब से शिकायत करने को [illegible]

तो उनकी क्या दशा होगी ?

पेशकार साहब का दम खुश्कसा होगया। वह मुँह के थूक को सटककर गला तर करतेहुए बोले, "हुजूर हमारा पीना-पिलाना ही क्या है ? यह सब तो साहबलोगों की कृपा है, वरना हम किस योग्य हैं। हम लोगों के तो वेतन ही क्या होते हैं जो शराब पिएँगे ?"

नया साहब मुस्कराकर बोला, "वेल पेशकार शाब ! टुमारा आमडनी अम लोग खूब जानटा ऐ। हमशे टुमारा आमडनी चुप मेई शेकता। अमारा हिश्शा में टुम बेईमानी मट करना। अम रिटायर होकर विलायट जाना माँगटा ऐ।"

"मोस्ट ऑनेस्ट।" पहले साहबबहादुर ने कहा।

नए साहब ने पुराने साहबसे पेशकार रामदयाल के विषय में ये शब्द सुन कर कहा, "टुम बौट बरिया आडमी ऐ। अम शब काम टुमारा हाट में चो शेकटा ऐ।"

"विदाउट फीयर, विद फुल कानफ़ीडेन्स।" पुराने साहब ने कहा।

पुराने साहब ने चलते समय पेशकार रामदयाल से पृथक् में कहा, "अम टुमारा बारा में शब बोल डिया ऐ नया शाब को। टुमारा बौट ख्याल करेगा टुम उनको अमारी टरा शेमझना और उनका मेम शाब को बरिया शेराब पिलाना।"

"आप निश्चिन्त रहे, परन्तु यहाँ से चलेजाने पर दीवान रामदयाल को भुला न दें सरकार" पेशकार रामदयाल ने कहा।

वह फिर मेमसाहब से बोले, "मेम साहब ! आपकी याद भुलानी आपके दीवान के लिए असम्भव है। आपकी कृपा-दृष्टि ने रामदयाल पर जो-जो कृपा की हैं वे बयान नहीं कीजासकतीं। आपकी सेवा के लिए यह दास सर्वदा उद्यत रहेगा। जब जहाँ भी आप चाहें सेवक को आधी रात बुला सकती हैं। सेवक सर के बल आएगा।"

"हमको टुमशे ऐशाई उम्मीड ऐ डीवान रामडयाल ! टुम इतना बरिया आडमी ऐ कि टुमारा अम टारीफ नेई कर शेकटा। अम टुमको विलायट में जाकर बी नेई भूल शेकटा।" इतना कहकर मेमसाहब जाकरकार में बैठगई।

पुलिस के सब अफसरों ने उन्हें विदा किया। नए एस. पी. साहब और

उनकी मेमसाहब ने उनसे हाथ मिलाए।

सब ने देखा कि चलने पश्चात् भी एस. पी. साहब और उनकी मेमसाहब ने दो बार घूमकर पेशकार रामदयाल की ओर देखा और पेशकार रामदयाल उस ओर को तबतक देखतेरहे जब तक कार दृष्टि से ओझल नहीं होगई।

उदास मन से पेशकार रामदयाल अपने क्वार्टर पर गए। शीला उन्हें देखकर खड़ी होने का प्रयास करने लगी तो उन्हें बिठातेहुए वह बोले, "शीला! जिस दिन वालिद साहब का अन्तकाल हुआ था, उस दिन भी मुझे इतना दुःख नहीं हुआ था जितना आज एस. पी. साहब के जाने से हुआ है। कितने मेहरबान थे वे दोनों मुझपर?"

"दोनों ही आपका बड़ा ध्यान रखते थे!" शीला ने लम्बा श्वाँस खींचते-हुए कहा। शीला को भी साहब के चले जाने से बहुत दुःख हुआ। उनकी कृपा से पेशकार साहब को कितनी आय थी, यह वह जानती थी।

"चलतेसमय नए साहब से भी मेरे विषय में अच्छी तरह बोलगए हैं साहब। मेमसाहब ने उनकी मेमसाहब से मेरी बड़ी प्रशंसा की। नए साहब ने अपनी कृपा रखने का वायदा किया है। आगे देखो क्या होता है?" कोट उतारकर खूँटी पर टाँगतेहुए पेशकार साहब बोले।

वह शीला की खाट के पास जाबैठे। शीला का स्वास्थ्य इधर एक सप्ताह से बहुत गिरताजारहा था। वह जो कुछ खाती थी, वह पचता नहीं था।

वैद्य रामसहाय की चिकित्सा चलरही थी। उनकी चिकित्सा पर शीला को विश्वास था। वह अब डाक्टरी औषधियों को अपने पास नहीं फटकनेदेती थी। उन्हें किसीने कहा था कि डाक्टरी दवाइयों में अंडा, माँस और शराब का प्रयोग होता है।

शीला पेशकार साहब के पास बैठने पर उनका हाथ अपने हाथ में लेती-हुई बोली, "मुझे लगरहा है कि अब परमात्मा आपको मेरे बंधन से मुक्त करदेगा।" इतना कहकर शीला की चिरबाँ मोटी-मोटी आँखों से दो आँसू की बूंदें निकलकर पेशकार साहब की गोद में गिरपड़ीं।

पेशकार साहब शीला का हाथ, जो चन्द हड्डियों का ढाँचा मात्र था, अपने दोनों हाथों की हथेलियों के बीच लेतेहुए बोले, "शीला! ऐसी बातें न कियाकरो। यह ठीक है कि हमारा कोई बच्चा नहीं है, परन्तु फिर भी हम

दो तो हैं, एक दूसरे के लिए। तेरी चिकित्सा में, तू देखरही है कि मैं कुछ उठा नहीं रखरहा हूँ। जोकुछ कमाता हूँ, इसी में लगादेता हूँ। परन्तु इतना करनेपर भी मैं परमात्मा से नहीं लड़सकता।"

शीला की जबान बन्द थी और वह पेशकार साहब की बातों की सचाई को हृदय से स्वीकार कररही थी। वह धीरे-धीरे बोली, "आप जैसा पति भगवान् हर स्त्री को दे। मेरी तो अपने राधा-कृष्ण से यही विनती है। मैं आपके अन्दर अपने राधा-कृष्ण को बैठे देखरही हूँ।"

यह बात शीला सर्वदा ही अपने पति के लिए कहाकरती थी। वह हृदय से अपने पति की आभारी थी कि जिसने सर्वदा ही उस बीमारी से भरी पत्नी को अपने सिर-आँखों पर रखा था।"

शीला की तबियत बराबर बिगड़ती जारही थी। पेशकार रामदयाल उस दशा को देखकर भयभीत होउठे थे।

आज नए साहब कोठी में आए थे। कोठी का प्रबन्ध ठीक करने को वह अर्दलियों और बैरों को बोलआए थे, परन्तु फिर भी नई मेमसाहब को प्रसन्न करने के लिए उनका वहाँ जाना आवश्यक था।

शीला को तनिक तसल्ली देकर पेशकार साहब बोले, "अभी शीला! मेरा तुम्हारा साथ समाप्त नहीं हुआ है। मैं वैद्यजी के पास जारहा हूँ और करीमखाँ को दवा लेकर भेजता हूँ। माँ तुम्हें दवा पिलादेंगी।"

"मुझे अब दवा नहीं चाहिए। क्या आप आज मेरे पास नहीं बैठसकते?" [illegible]ा ने डबडबाए नेत्रों से उनकी ओर देखा।

"बैठ क्यों नहीं सकता शीला! तू कहे तो मैं सप्ताह भर की छुट्टी लेलूँ। परन्तु लाभ तो औषधि से ही होगा। मेरे यहाँ बैठेरहने से कुछ नहीं बनेगा। मैं वैद्यजी को यहीं बुलाकर दिखाने का प्रबन्ध करता हूँ।" इतना कहकर बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए पेशकार साहब बाहर निकलगए।

पेशकार रामदयाल घर से बाहर निकले तो उन्हें अपनी माँ कहीं पास-पड़ौस से आती दिखाई दीं। उन्होंने पूछा, "कहाँ से आरही हो माँ?"

"जमना सिपाही के घर चलीगई थी। उसके यहाँ एक नई बहू आई है। बड़ी भोली लड़की है।" माँ ने उत्तर दिया।

"परन्तु माँ? तेरे घर की बहू तो विदा होरही है। तुझे पता है कि शीला

क्या स्वस्थ रहना बुरा लगता है ? जब आपके घर आई थी तो क्या मैं ऐसी ही बीमार थी ?" शीला ने कहा।

"बीमार नहीं तो और क्या थी ? ऐसी क्या बीमारी थी कि जो शादी होते ही उभरआई ? किसी ऐरा-गैरा के पल्ले पड़गई होती तो अब तक चुआनों में हड्डियाँ दिखाईदेतीं।" सास ने कहा।

पेशकार रामदयाल की माँ बेटे और बहू दोनों पर दो प्रकार का रौब रखती थीं। शीला से वह कहती थीं, "यह मेरी ही कोख का लाल है जो शादी के प्रण को निभारहा है।" और पेशकार रामदयाल से कहतीं, "मुझे तेरी कमाई की आवश्यकता नहीं है। तू अपना पेट भरतारहे, बस यही पर्याप्ति है। पिताजी तो हँसते हैं तेरी कमाई की बातें सुन-सुनकर। कहते हैं कि पुलिस की कमाई करनेवाले के हाथ साथ-साथ तेहमद से पुंछतेरहते हैं। जो कमाते हैं उसे साथ-साथ हथेली पर रखकर चाटलेते हैं।"

यह पेशकार रामदयाल का उपहास करने का ढंग था। उनकी माँ को अपने पिता को धन पर अभिमान था। उनका कोई विशेष खर्च नहीं था। दो रोटियों के खर्च के लिए वह क्यों बेटे की गुलामी करतीं ?

इसी प्रकार वह अपने पिता पर भी अपने बेटे का रौब रखती थीं और उनके तुनकने पर कहदेती थीं, "इस बुढ़ापे में तुम्हारी रोटियों के लिए यहाँ पड़ी हूँ, वरना मेरा बेटा रामदयाल तो सर्वदा यही कहता है कि माँ तू यहाँ रह और पुई-पुवाई खा। मुझे यहाँ इस बुढ़ापे में टिक्कड़ ठेकने की क्या पड़ी है ?"

ऐसी काँटे की थीं पेशकार रामदयाल की माँ।

पेशकार साहब ने करीमखाँ के साथ वैद्य जी को शीला के पास भेजा और स्वयं करीमखाँ के कान में कुछ कहकर एस० पी० साहब की कोठी पर पहुँचगए।

पेशकार साहब ने नए साहब को सलाम झुकाया और आदरपूर्वक पूछा "सब प्रबन्ध ठीक है हुजूर ?"

"हुमारा इन्टजाम केराब हो नेई शेकटा, शाब बोल गेया ऐ हमको।" नए साहब ने मुस्करातेहुए कहा।

पेशकार साहब अन्दर पहुँचे तो उन्हें पुरानी मेमसाहब के स्थान पर न

मुटल्लो मेमसाहब दिखाई दीं। यह मेमसाहब कद में छोटी और शरीर से मोटी थीं। इनकी एक-एक जाँघ और एक-एक भुजा में एक-एक पहली मेम-साहब बनसकती थीं। जितना पाउडर और लिपस्टिक का प्रयोग इन्होंने किया हुआ था उतना पहली मेमसाहब सम्भवतः एक महीने में भी नहीं करती थीं।

पेशकार साहब को देखकर मेमसाहब मुस्कराकर बोलीं, "वेल पेशकार शाव! हुमारा इन्तजाम का हम [illegible] तारीफ करता है। हमको यहाँ आना में जेरा टकलीफ नेई हुआ।"

पेशकार साहब का [illegible] चेहरा कुछ खिलउठा। मेमसाहब की प्रशंसा ने उनके [illegible] दिल में उत्साह पैदा कर दिया।

उसी समय बाहर से [illegible] ने आकर सूचना दी कि [illegible] ठेकेदार जी एक पेटी लिवालाए हैं।

"एक पेटी।" आश्चर्य से पूछकर मेमसाहब ने कहा, "[illegible] पेशकार शाव! हमारा वास्ते ही एक [illegible]" मेमसाहब बोलीं।

"हुजूर भेज दिया ठेकेदार ने। यह [illegible] वाली चीज है। कुछ खराब तो होती ही नहीं," पेशकार साहब बोले।

उसके पश्चात् शराब के दौर [illegible] मेमसाहब ने पेशकार साहब को न उठने दिया। रात्रि के एक बजे जब पेशकार साहब उनके क्वार्टर से घर पहुँचे तो शीला अन्तिम श्वांस गिनरही थी।

पेशकार साहब लड़खड़ाते हुए उसके अन्दर गए और लड़खड़ाती जबान से बोले, "शीला! तुम जारही हो मुझे छोड़कर। [illegible] मैं तुम्हें नहीं छोड़सकता। यह मेरी माँ बैठी है तुम्हारे सामने। यह इस बात से डरती है कि तुम मरजाओ तो यह अपने बेटे को नई दुलहन लादे। [illegible] विश्वास रखना शीला! रामदयाल तुम्हारे मरने के पश्चात् दूसरी शादी नहीं करेगा। तुम मेरे हृदय की रानी हो शीला! तुम मरकर भी मेरी रानी ही रहोगी।"

पेशकार साहब की आवाज सुनकर शीला ने आँखें खोलदीं। उन्होंने शीला के माथे पर हाथ रखा और पास में रखी औषधि का रस प्याली में निचोड़कर उसके मुंह में डाला। वह धीरे से बोली, "मेरे मरने के पश्चात् आप शादी करलेना।"

"यह मैं नहीं करसकूँगा शीला! शादी का [illegible] दूसरे की [illegible]

मुझमें शक्ति नहीं है। मैं तुम्हारी स्मृति को अपने हृदय से प्रथक नहीं कर-सकता शीला ! यह मैं कभी नहीं करसकूँगा, कभी नहीं करूँगा।"

पेशकार रामदयाल शीला के सिर को अपनी गोद में लेकर वैठगए। प्राणांत हुआहीचाहताथा। श्वाँस धीरे-धीरे लम्बा पड़ताजारहा था और गले की खरखराहट वढ़तीजारही थी।

पेशकार रामदयाल की माँ ने खटिया के पास चौका लगाकर कहा, "वेटा वहू को जमीन पर उतारले, खाटपर प्राणान्त होने से पाप लगता है।"

पेशकार रामदयाल के कान वहरे होगए थे। उन्हें एक भी शव्द सुनाई न दिया। वह उसी प्रकार खाटपर शीला के सिर को अपनी गोद में लिए वैठेरहे और उसी दशा में शीला ने अपने अंतिम श्वाँस समाप्त किए।

पेशकार रामदयाल की आँखों में एक भी आँसू नहीं था। उन्होंने अपनी करनी में कोई कसर नहीं छोड़ी थी शीला की चिकित्सा कराने में।

अन्त में सभी को भगवान् की याद आती है। उसी का नाम लेकर उन्होंने भी कहा, "तेरी इच्छा भगवान् ! एक तो वीमार पत्नी दी मुझे फिर उसकी सेवा करता भी मैं तुझसे न देखागया। तेरी इच्छा के सामने किसी की इच्छा नहीं चलती।"

शीला के शव को पवित्र पावन गंगा के किनारे हरिद्वार लेजायागया और वहींपर उनका दाह-कर्म-संस्कार हुआ। पेशकार रामदयाल ने उनकी अस्थियों हर की पैड़ी पर विसर्जित किया और नेत्रों में आँसू भरकर गंगा के पवित्र जल में स्नान करके वापस लौटे।

: १७ :

पेशकार रामदयाल शीला की मृत्यु के पश्चात् एकदम स्वतन्त्र होगए। शीला वीमार थी और वह घरमें पड़ीरहतीथी तो पेशकार साहव कहीं भीरहते, उन्हें उसका ध्यान रहता था।

गुलाव के कमरे पर, एस० पी० साहव की मेमसाहव के साथ शराव पीते

समय, सेठ दामोदरप्रसाद और कोतवाल कासिममिरजा के साथ गप्पें लगाते हुए और शराब पीकर दुनियाँ के झंझटों से ऊपर उठते समय, जब सब चीजें उनके मस्तिष्क से निकलजाती थीं तो तब भी क्वाटर में खटिया पर पड़ी बीमार शीला और उसके पास बैठी दो डोकरियों की सूरत उनके मस्तिष्क में बनीरहती थी। वह कभी भी विस्मरण नहीं होती थी।

करीमखाँ की माँ की सूरत उनमें सबसे अधिक स्पष्ट नज़र आती थी। उसीके साथ मिलाकर जब पेशकार साहब कभी-कभी अपनी माँ की सूरत देखते थे तो उनकी ज़बान से निकलजाता था, "तुम भी एक माँ हो और यह भी एक माँ है।"

अपने क्वार्टर के सामने मूढ़ा डाले पेशकार साहब बैठे थे। करीमखाँ की माँ लाठी के सहारे कुबड़ातीहुई उधर आनिकली और वहीं उनके मुढ़े के पास बैठगई। वह बहुत देरतक बैठी-बैठी क्वार्टर की ओर देखतीरही। उसकी जबान से एक शब्द भी न निकला।

"क्वार्टर में अब क्या रखा है अम्मी! यह तो अब मृतक के समान है। आज दो महीने से ऊपर होगए, इसमें घुसने का साहस ही नहीं होता।" पेशकार साहब ने कहा। "इसीलिए बाहर बरांडे में दो खूँटियाँ गाड़ली हैं। कचहरी से आकर उन्हीं पर कपड़े टाँगदेता हूँ?" कहते-कहते उनका दिल भरआया और आँखों में आँसू टपकपड़े।

"बेटा खुदा की मरजी में किसी का दखल नहीं है। तूने अपनी करनी में कोई कसर उठा नहीं रखी। बेचारी बहू का भाग ही पोच निकला कि बीमारी ने पीछा ही नहीं छोड़ा। लेकिन थी सच्ची देवी। ग़रीब मोहताजों को भर-भर बेला अनाज दिलाती थी। जिस दिन से खुदा ने उसे उठालिया है उस दिन से देखती हूँ कि हर ग़रीब मोहताज जो इस दरवाजे पर आता है, दो बूँद आँसू उस नेकबख्त को ही देजाता है।"

पेशकार साहब की जबान से एक शब्द भी न निकला।

उनके जीवन में कुछ नई बातें आती थीं और पुरानी बातें हटजाती थीं। परन्तु शीला की मृत्यु का घाव ऐसा था कि जो भरने का नाम ही नहीं लेता था। वह अब भी वैसा ही हरा था।

शीला के गुजरजाने का घाव पेशकार रामदयाल के दिल पर इतना गहरा

था कि उसका भरना असम्भव था। जब तनिक सी ठेस लगजाती थी तो उसमें कसक पैदा होनेलगी थी। शीला की स्मृति दिलानेवाली कोई भी चीज़ सामने आनेपर उनके बदन में एक थरथरी सी पैदाहोजाती थी।

पेशकार रामदयाल का एक छोटा भाई था। पिता के मरने के पश्चात उन्होंने ही उसकी पढ़ाई का प्रबन्ध किया था, परन्तु वह एक जमींदार का बेटा था, उसने नौकरी नहीं की।

नवीं कक्षा से पढ़ाई छोड़दी थी। नाना ने उसकी शादी करदी थी। दो लड़कियाँभी पैदाहोगईं। नानाजी ने उसे अपना गृहस्थ सँभालने का अल्टीमेटम देदिया था। वह उनका और उसके बाल-बच्चों के पालनेका ठेका नहीं लेसकते थे।

पेशकार साहब बैठे करीमखाँ की माँ की बातें सुनरहे थे कि सामने से क्या देखा उनका छोटा भाई हरदयाल अपनी पत्नी को साथ लिए उधर आरहा था।

हरदयाल को आते देखकर पेशकार साहब का मन तनिक कुछ और सा होगया। हरदयाल ने उनके पैर छुए और बोहड़िया ने अपनी छोटी बच्ची को उनकी गोद में देदिया।

करीमखाँ की माँ के मुँह पर भी प्रसन्नता दौड़गई। वह बहू को क्वार्टर में लिवाकर लेगई।

पेशकारसाहब दस बजे दफ्तर चलेगए। उसदिन भी नित्य क भाँति चारों ओर के हल्कों से दारोगा दीवान और सिपाही आए थे। पूरे ज़िले की सूचनाएँ पेशकार साहब को मिलीं। पेशकार साहब एक दारोग़ा से बोले, "बड़ी सुस्ती छाईहुई है तुम्हारे इलाके में। क्या सब मामले वहीं साफ़करलेते हो?"

"यह बात नहीं है पेशकार साहब!" दारोगाजी बोले।

"यह बात नहीं है तो क्या तुम्हारे इलाके के लोग दूध में धुलकर आए हैं? बागपत के इलाके में बीस चोरियाँ हुईं और तीन लड़कियाँ भगाईगईं। मवाने में पाँच डकैतियाँ हुईं और एक सौ बीस डकैतों के चालान हुए। हापुड़ में बारह डकैतियाँ हुईं और पिछत्तर बदमाश गिरफ्तार किएगए। एक तुम्हारा ही इलाका ऐसा है जिसमें कुछ नहीं हुआ। तुम्हारी क्या कारगुज़ारी साहब के सामने पेश करूँ?"

दारोगाजी बेचारे सन्न से रहगए। वह अभी नए-नए आये थे पुलिस ट्रेनिंग

से। दीवानी से दारोगाई पाते तो उन्हें पेशकार साहब की डाट-फटकार न खानीपड़ती। उन्हें पताहोता कि पुलिस में कारगुजारी दिखाने का क्या ढंग है।

"आपके इलाके में कौन दीवान काम करता है ? शायद अब्दुलबेग हैं न यहाँ ?" पेशकार साहब ने पूछा।

"जी हाँ, वही हैं।" दारोगा जी बोले।

"तो आप उनसे मदद लेसकते हैं अपने काम में। आपको भी आखिर उन्नति करनी है जीवन में। मैं तो यही सोचता हूँ कि जितने दिन यहाँ पेशकारी पर रहूँ उतने दिन जितने लोगों का भी कुछ भला करसकूँ, करदूँ। परन्तु जब आपकी कारगुजारियाँ ही इस प्रकार की हैं तो भला मैं आपकी क्या सहायता करसकता हूँ ?"

दारोगाजी सोचते-विचारते पेशकार साहब के पास से बाहर बराँडे में आगए। उनकी समझ में ही न आया कि आखिर पेशकार साहब का क्या तात्पर्य था। जब इलाके में कोई चोरी हुई ही नहीं तो वह चोरी की रपोट कहाँ से अपने रोजनामचे में दर्ज कराएँ और जब इलाके में डकैतियाँ पड़ी ही नहीं तो वह वहाँ डकैतियाँ होती कैसे दिखाएँ।"

तभी अब्दुलबेग भी अपनीदाढ़ी सँवारते हुए वहाँ आपहुँचे। अपने इलाके के दारोगाजी को उदास मन देखकर मुस्करातेहुए बोले, "कहिए दारोगा जी ! कैसे उदास क्यों हैं ? क्या पेशकार साहब से भेट नहीं हुई ?"

"अभी-अभी वहीं से आरहा हूँ दीवानजी !" दारोगा जी बोले।

शेख अब्दुलबेग पुलिस के पुराने खुर्राट थे। ऊँची-नीची न जाने कितनी घाटियोंमें से उतरचुके थे कितनेही अफ़सर उनके ऊपर आए और चलेगए,परन्तु वह ज्यों के त्यों थे। पुराने-पुराने दारोगाओं को वह खेल खिलाचुके थे। यह तो बेचारा तो चार दिन का छोकरा था। उनके सामने चीज़ ही क्या था ?

जिस दिन उसने थाने का चार्ज लिया था तो उसने दीवान अब्दुलबेग को बुलाकर कहा था, "मेरे इलाके में पूरी तरह अमन रहनाचाहिए। किसी ने कोई पैसा घूस का लियागया है, यह सूचना मेरे कानों तक नहीं आनी चाहिए। बस जाओ, अपना काम करो।"

जिस दीवान को उस नौजवान दारोगा ने यह कहा था, उसी से आज पेशकार साहब ने सलाह दी कि वह यदि अपनी उन्नति चाहते हैं तो

उससे सलाह लें।

लंच के समय पेशकार साहब और शेख अब्दुलबेग पास के किसी होटल में चलेगए। चाय पीते-पीते पेशकार साहब बोले, "अब तो हाथ-पैर सभी घी में होंगे शेखसाहब! काठ का उल्लू दारोगा भेज दिया है हमने तुम्हारे यहाँ।"

"काठ के उल्लू दारोगा से तो पुराने खुर्राट ही अच्छा रहता पेशकार साहब! वह दिमाग तो नहीं चाटता व्यर्थ। अपने हिस्से का पैसा भर चाहता सो उसे अब्दुलबेग देदेता।" अब्दुलबेग बोला।

"सब ठीक होजाएगा दीवान जी, कोई चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। हमने आज तुम्हारे काठ के उल्लू को वह डोज दी है कि शाम तक तुम्हारे पैरों पर नाक न रगड़े तो हमारा नाम रामदयाल नहीं। बस तुम पत्थर की तरह सख्त बनेरहना।

फिर भी यार! कुछ तो आमदनी हुई ही होगी। ऐसी भी क्या खुश्की?" पेशकार साहब बोले।

"खुदा की कसम पेशकार साहब! जब से यह नामाकूल आया है क़सम खाने को एक इकन्नी भी किसी ने रोज़नामचे पर नहीं रखी।

रोज़नामचा क्या आपने देखा नहीं है। काँस्टेबिलों की ड्यूटी बदलने के अलावा और कुछ दिखाईदिया आपको उसमें?" अब्दुलबेग बोले।

पेशकार रामदयाल को चुप रहजानापड़ा क्योंकि बात सच थी। पेशकार रामदयाल किसी भी जगह के रोज़नामचे को देखकर वहाँ की ऊपरी आमदनी का सही अनुमान लगाने में दक्ष थे। उनसे छुपाया नहीं जासकता था कुछ भी।

"तो क्या एकदम खाली हाथ चलेआए मेरठ? तुम्हारा मामला भी बड़ा खुश्क है दीवान जी! आज छोटा भाई अपने बाल-बच्चों को लेकर चला आया है।"

"तो यों कहिए न! आपका छोटा भाई क्या मेरा छोटा भाई नहीं है।' कहतेहुए दीवान अब्दुलबेग ने पचास रुपए के नोट जेब से निकालकर पेशकार साहब को दिए।

पेशकार साहब के उतरेहुए चेहरे पर ज़रा ताज़गी आगई। आज सुबह

से ए; पैसा भी नहीं आया था उनकेपास ।

चाय पीकर पेशकारसाहब ज्योंही अपनी कुर्सी पर जाकर बैठे तो उनके पुराने मित्र कोतवाल हानमसिंह का लड़का हिम्मतसिंह अपने पिता का पत्र लेकर आपहुँचा ।

पेशकार साहब हिम्मतसिंह से बातें करतेहुए दफ्तर से बाहर चलेआए और प्यार से पूछा, "तो शादी इसी बीस तारीख की है न ! कोतवाल साहब से कहना कि मैं शादी पर अवश्य आऊंगा और अभी दो घंटे बाद तुम्हारे साथ कोतवाल कासिममिरजा और सेठ दामोदरप्रसाद के पास चलूंगा । तुमने अभी तक खाना भी तो नहीं खायाहोगा ?"

अर्दली को बुलाकर बोले "इन्हें साहब को बाजारवाले होटल में ले जाओ और कहना कि पेशकार साहब के मेहमान हैं ।"

कोतवाल हानमसिंह का लड़का अपनी शादी का कार्ड लेकर पेशकार साहब के पास आया था । उन्हें लगा कि मानो वह उनके अपने लड़के की शादी थी ।

दफ्तर का कार्य समाप्त कर, समय से पूर्व ही वह हिम्मतसिंह के साथ चल दिए । उन्होंने पूछा, "क्या कुछ पढ़े-लिखेलिए बेटा हिम्मतसिंह ?"

"इस वर्ष ट्रेनिंग का इम्तहान दिया है मुरादाबाद से ।" हिम्मतसिंह ने बताया ।

"बेटा ! तुम एक दिन उसी दबदबे के शहर-कोतवाल बनोगे जिस दबदबे के तुम्हारे पिता थे । योग्य पिता की योग्य सन्तान हो तुम । उनसे पीछे रहनेवाले नहीं हो ।" पेशकार साहब प्रसन्नतापूर्वक बोले ।

हिम्मतसिंह के साथ उन्हें कासिम मिरजा और सेठ दामोदर के पास जाना था । इसलिए घर पहुँचने में देर हो सकती थी । उन्होंने कर्मचारी को बुलाया और दस रुपए देकर कहा, "थोड़ा सामान खरीदना है घर पर ; दाल, साग, आटा, नमक, मिर्च और घी लेकर पहुँचाना । कुछ फल और मिठाई भी लेते आना बच्चों के लिए ।"

फिर लौटने पर कोतवाली पहुँचे । [illegible] के हाथ पर रखकर पूछा, "कहिए, ठीक है न ?"

"आप यह भी न दें सरकार !" [illegible] ने कहा

"नहीं उस्ताद ! किसी गरीब आदमी का पैसा रखना पेशकार रामदयाल के लिए हराम है।" मूंछों पर ताव देकर पेशकार साहब बोले।

हिम्मतसिंह को उस कोतवाली का अपना पुराना जीवन याद आगया वहाँ जाकर। उसने उस मैदान को देखा जिसमें धूल से भरा वह खेलाकरता था। उसे वह मकान दिखाईदिया, जिसमें रहकर उसने अपने बचपन के कई वर्ष व्यतीतकिए थे और फिर चचा पेशकार रामदयाल का आशीर्वाद उसके कानों में गूंजा, "एक दिन तुम भी उसी दबदबे के शहर-कोतवाल बनोगे।"

पेशकार सहाब क़ासिम मिरज़ा के दफ्तर में गए। कासिमसाहब ने खड़े होकर उनसे हाथ मिलाकर आवभगत की।

"कैसे तकलीफ की पेशकार साहब !"

"इसे पहचानते हो ?" हिम्मतसिंह की ओर संकेत करतेहुए बोले, "कोतवाल हातमसिंह का पुत्र हिम्मतसिंह है। इसकी शादी है। उसी का निमन्त्रण-पत्र लेकर आया है आपके पास।" कहकर उन्होंने छपाहुआ कार्ड सामने मेज़ पर रखदिया।

कासिम मिरजा शादी के कार्ड को देखकर बहुत प्रसन्नहुए और बिना तारीख देखे ही बोले, "भाई हातमसिंह के लड़के की शादी में शरीक नहीं होंगे तो और किसकी शादी में शरीक होंगे पेशकार साहब ! खूब ठाटबाट के साथ चलेंगे। गुलाब को भी लेचलना। तीन-चार दिन खूब ठाट की छनेगी।"

"जरा सेठ दामोदरप्रसाद को भी टेलीफोन करके देखिए, घर हैं या दफ्तर में। उन्हें भी निमन्त्रित किया है।" पेशकारसाहब बोले।

"सेठ दामोदरप्रसाद अब बहुत बड़ा आदमी होगया है पेशकार साहब रोज अखबारों में उसका नाम छपता है। मेरठ जिले में आजकल उसकी तूती बोल रही है। मुझे तो कठिन लगता है उनका चलना। परन्तु आप कहरहे हैं तो टेलीफ़ोन किएलेता हूँ।" कासिम मिरज़ा ने कहा।

पेशकार रामदयाल को कासिम मिरज़ा की इस बात पर क्रोध आगया वह मूंछें चढ़ातेहुए बोल, "कासिमसाहब हाकिम होकर क्या छोटी-छोटी बातें करनेलगते हैं आप ? सेठ दामोदरप्रसाद सेठ होगा तो अपने घर का होगा और यदि वह कांग्रेस का प्रधान है तो उन चपरक़मातियों का प्रधान होगा जो सिरपर डेढ़ इंची टोपियाँ लगाए पैरों में फटी चप्पलें घसीट

फिरते हैं। हमारा इन चीजों से कोई सम्बन्ध नहीं है। हम यार की यारी से मतलब रखते हैं। उसका बड़प्पन हमारे एहसानों से ऊपर नहीं उठ सकता।"

कासिम मिरज़ा ने सेठ दामोदरप्रसाद से टेलीफोन मिलाकर पेशकार साहब से कहा, "लीजिए आप ही बातें करलीजिए !"

पेशकार साहब ने टेलीफ़ोन हाथ में लेतेहुए अफ़सराना अन्दाज में कहा, "कहो सेठ, क्या हालचाल हैं ? आजकल तो बड़े व्यस्त मालूम देरहे हो। पिछले सप्ताह में एक बार भी शक्ल देखने को नहीं मिली। शायद बहुत मँहगे होगए हैं आपके दर्शन ?" कटु-व्यंग्य से पेशकार साहब बोले।

सेठ दामोदरप्रसाद आजकल बहुत ऊँची हवा में थे। देश के नेता थे। दो मिलों के मालिक थे। पुलिस अफ़सरों से उनकी मित्रता थी, क्या नहीं था उनके पास जो किसी दुनियां के ऊँचे-से-ऊँचे व्यक्ति के पासहोनाचाहिए।

बातें करने में सेठ दामोदरप्रसाद बहुत मीठे व्यक्ति थे। उनकी नाँ को भी लोग उनकी हाँ ही समझकर न जाने कितने दिन तक भ्रम में चक्कर लगायाकरते थे। इस भ्रम के फैलाव को वह आज की राजनीति का सबसे निखराहुआ स्वरूप मानते थे।

परन्तु उनका यह भ्रम पेशकार रामदयाल के सामने आतेही काफ़ूर हो जाता था। उनकी आँखों के सामने उनका वही पुराना चित्र आजाता था जब उन्होंने उन्हें रामप्यारी के कोठे पर हथकड़ियाँ लगवाई थीं। वही कांस्टेबिल रामदयाल आज पेशकार रामदयाल था। वह पेशकार रामदयाल जो जिले के सब थानों के दारोगाओं और दीवानों को अपने हाथ की कठपुतली समझता था, वह रामदयाल जिसके संकेतों पर जिले के रोजनामचे लिखेजाते थे, वे रोजनामचे जिनकी रिपोर्टें फ़ौजदारी के मुकदमों का कानून थीं।

यही बात एक दिन पेशकार रामदयाल ने सेठ दामोदरप्रसाद पर रौब जमाने केलिएउन से कही थी, जिसे सुनकर सेठजी थर्राउठे थे। उससमय पेशकार नहीं थे, चौकी पर दीवान थे। उन्होंने कहा था, "सेठजी ! यह रोजनामचा सबसे बड़ा अस्त्र है। इसमें हम जो दर्ज करदें, वह पत्थर की लकीर बन जाता है। जो रिपोर्ट रोजनामचे में दर्ज कीजाती है और उनपर रपट लिखानेवालों का निशान-अँगूठा लेलिया जाते हैं। वह उसे फाँसी के तख्ते पर

भी लटकवा सकता है।

रिपोट लिखने का काम दीवान करता है। इसलिए आज सब की ज़िंदगी का बनाने और बिगड़नेवाला पुलिस का दीवान है।'

दीवान नाम से सेठ दामोदरप्रसाद भयभीत होउठे थे। वह गिड़गिड़ाकर बोले, "मैं तो बहुत व्यस्त पेशकार हूँ साहब! बहुत से झमेलों में फँसा हूँ, परंतु आपकी आज्ञा नहीं टाली जासकती। मैं शादी में अवश्य चलेगा।"

पेशकार साहब टेलीफोन-रिसीवर पर हाथ रखतेहुए कासिम मिरजा से बोले, "लीजिए तैयार हैं चलने को। एक बार भी ज़बान से नाँ नहीं निकली। अब जरा और काम की बातें करलूँ।"

पेशकार साहब बोले, "सेठजी, क्या रामेश्वरी देवी नहीं चलेंगी? हम तो उन्हें जब एक बार आपके संरक्षण में देचुके इसलिए सीधे उनके पास नहीं पहुँच सकते। वह चाहे लाख कांग्रेस की मंत्राणी हैं, परंतु हमारे लिए तो वह वही हमारे यार सेठ दामोदरप्रसाद की रखैल है।"

सेठ दामोदर प्रसाद पेशकारसाहब की बात सुनकर खूब हँसे और बोले, "पेशकार साहब! आजकल बड़े नखरे हैं रामेश्वरीदेवी के। अब वह बात नहीं रही है उनकी। वे पुरानी बातें उसे याद नहीं रहीं। क्या बताऊँ कितने नखरे में बातें करती है?"

"तो यों कहिए सेठ साहब! कि आपका सब खिलाया-पिलाया व्यर्थ होगया। जब रामप्यारी थी तब भी बेवफ़ा थी और आज जब रामेश्वरीदेवी बनी, तब भी बेवफ़ा निकली। इसके पास वफ़ा नाम की कोई चीज न कभी थी और न आज है। कोरा रूप का भुलावामात्र है।

इसे या तो शासन झुका सकता है या पैसा। आज उसे पैसे की भी आवश्यकता नहीं है। हमारे देश में जो राजनीति का कारोबार चलारहा है उसकी तिजोरी की कुंजी संभालनेवाली रामेश्वरी देवी आज तुम्हारी दो मिलों की क्यों चिंता करे?"

"आपने बिल्कुल ठीक कहा पेशकार साहब! रामेश्वरी दोग़ली औरत निकली। यह कभी जीवन में एक जगह जमकर नहीं रहसकती। इसी को वह अपनी उन्नति का रहस्य समझती है।" सेठ दामोदरप्रसाद बोले।

"यह बात उसकी किसी सीमा तक ठीक भी है, परंतु मित्र! जो आनंद

मित्रता में है वह तो राजनीति के बड़प्पन में नहीं है और नहीं पुलिसकी चौधराहट में। पैसा हाथ का मैल है। इसकी क्या चिंता की जाए?" पेशकार साहब बोले।

"पैसे को मैं भी हाथ का मैल ही समझता हूँ पेशकार साहब! आपकी कृपा से पैसा इस थली पर पतझर के पत्तों की तरह बरसता है। रात को चार-चार मुनीम गिनती करते हैं और नित्य ही रात के बारह बजजाते हैं।" सेठजी बोले।

"यह सब मित्रों के भाग्य से ही समझो सेठजी!" पेशकार साहब बोले।

"इसमें कोई संदेह नहीं?" सेठजी ने कहा।

तो फिर अपने मित्र कोतवाल साहब के लड़के की शादी में क्या कुछ मित्रता का प्रमाण दोगे? मेरे विचार मे तो आप गुलाब को ही लेचलो। आपकी रामेश्वरी देवी से तो आशा ही क्या की जाए? और फिर नाचने वाली का काम वह अब भला क्यों करनेलगी है?" पेशकारसाहब बोले।

"राम का नाम लीजिए पेशकारसाहब! दुनियाँ बहुत बदलचुकी है अब। आप जिस समय की बातें सोचरहे हैं, वह समय स्वप्न बनचुका। आज रामेश्वरी देवी सेठ दामोदरप्रसाद को ही कांग्रेस से बाहर निकालकर खड़ाकरने की चिंता में है।" सेठ दामोदरप्रसाद बोले।

"आपने अपने मित्र पेशकार रामदयाल को याद नहीं किया अपनी मदद के लिए।" पेशकारसाहब बोले?

सेठजी की गर्दन झुकगई पेशकार रामदयाल के सामने। उन्होंने अपनी भूल स्वीकार की।

बातें समाप्त करके टेलीफोन बन्द करने पर पेशकार साहब बोले, "लीजिए सब प्रबन्ध ठीक करदिया। अब पूरे ठाट-बाट से चलेंगे बेटे हिम्मतसिंह की शादी में।" हिम्मतसिंह की पीठ ठोंककर बोले, "कोतवाल साहब से कहना कि हम लोग एक दिन पहले ही गांव में पहुँचजाएँगे।"

: १७ :

रामेश्वरी देवी को अब रामप्यारी नाम से जाननेवाले कुछेक व्यक्ति ही रहगए थे। अब किसी का उससे यह कहने का साहस नहीं था कि वह कभी वेश्या थी।

विदेशी कपड़े की दूकानों पर जो पिकेटिंग रामेश्वरी देवी ने किया उसने विदेशी कपड़े का व्यापार एक-दम ठप्प करदिया। आजकल उनका बोल वाला था। उनके फ़ोटो सिनेमा-स्टारों की तरह सड़कों पर बिकते थे।

कांग्रेस में सेठ दामोदरप्रसाद की अपेक्षा रामेश्वरीदेवी का सम्मान अधिक बढ़ताजारहा है। वैसे सेठदामोदरप्रसाद का पलड़ा जब हल्का पड़नेलगता था तो वह थैली का मुंह खोलदेते थे।

परन्तु रामेश्वरीदेवी के समक्ष उनकी यह कला अब व्यर्थ होगई थी। जनता के बीच तिरंगे झंडे के नीचे खड़ीहोकर जब रामेश्वरीदेवी वन्दे मातरम गाती थी तो सेठदामोदरप्रसाद की थैली हल्की पड़जाती थी। अब वह व्याख्यान भी धुंआधार देती थी। वह बोलती थी तो जनता मंत्र-मुग्ध होजाती थी व्याख्यान सुनकर।

इसके ठीक विपरीत जब सेठदामोदरप्रसाद मंच पर खड़ेहोकर भाषण देने का प्रयास करते थे तो जनता खिसकनेलगती थी।

पेशकार रामदयाल का रामेश्वरी के यहाँ आना-जाना तभी बन्द होगया था जब वह रामप्यारी थी। तभी उन्होंने उसे बेवफ़ा घोषित करके सेठदामोदर प्रसाद को सौंपदिया था।

गुलाब एक खांदानी पेशेवर थी। पेशकार साहब को प्रसन्नता करके उसने उनसे पर्याप्त लाभउठाया था। बैली-बाज़ार में तीन मंजिल की कोठी खड़ीकर ली थी उसने।

आज पेशकार रामदयाल ने सोचा कि चलें गुलाब से भी बीस तारीख को कोतवाल हातमसिंह के यहाँ चलने की बात पक्की करलें। जो काम समाप्तहो

होजाए, वही अच्छा है। कोतवाल हातमसिंह भी क्या याद करेंगे कि उनके लड़के की शादी में रामदयाल ने कुछ रौनक की थी और अपने पुराने सम्बन्धों को निभाया था।

गुलाब पेशकार साहब की आवभगत करतीहुई बोली, "आइए पेशकार साहब! आपतो अब ईद के चाँद होगए। क्या कुछ कसूर होगया है बांदिया से जो आना-जाना बन्द करदिया?"

"ये बातें न किया करो गुलाब! अब इस जीवन में पेशकार रामदयाल के पास आने-जाने का और ठिकाना ही कौन-सा रहगया है? क्वार्टर पर एक बीमार औरत थी, उसे भी भगवान् ने उठालिया।" लम्बा श्वास खींचकर पेशकारसाहब बोले।

पेशकार साहब का मन कुछ एकदम उदास होगया। वह गुलाब के पलंग पर लेटतेहुएबोले, "गुलाब! ला ज़रा-सी पिलातोदे गुलाब! परमात्मा ने जाने नहीं दुनियांभर का ग़म क्यों लाकर मेरे दिल में भरदिए हैं?"

इस तरह की बातें पेशकारसाहब सर्वदा ही गुलाब के यहाँ आकर करते थे। शराब के दो पैग हलकसे नीचे उतरजाते थे और वह ग़म बहारों में बदल जाता था। ग़म की उदासी काफ़ूर होजाती थी और यौवन की मादकता छाती चलीजाती थी।

"आज तो आप ग़लत कहरहे हैं कि आपको ग़म है।" शराब का गिलास भरतेहुए गुलाब ने कहा। "आपके चेहरे पर प्रसन्नता के आसार दिखाई देरहे हैं।" मुस्कराकर गुलाब ने कहा।

"यह तुमने कैसे जाना गुलाब?" पेशकार साहब ने पूछा।

"आपके मुँह को देखकर आपके मनके भाव जानलेना अब मेरेलिए कठिन नहीं रहा है।" कहकर गुलाब ने अपनी इठलाती हुई गोल सुडौल मांसल बाँहें धीरे से उठाकर पेशकार साहब की गर्दन पर रखतेहुए उनकी जेब तक हाथ पहुँचा दिया और दो उँगलियों से जेब में पड़े तीन दस-दस के नोट ऊपर उभारकर बोली, "क्या यही कारगुज़ारी है आज दिन भर की?"

पेशकार रामदयाल चुपचाप लेटेरहे। फिर तनिक सँभलकर बोले, "... नौकरी समाप्त होती जारही है गुलाब! अब नौकरी के दाव-घात न रहे। ऐसी अफ़सरों की मातहती, कुत्तेकिसी रहगई है।"

"तो क्या अब साहब भी कोई देसी ही आनेलगे हैं ?" आश्चर्य प्रकट करतेहुए गुलाब ने पूछा।

"यही तो बात है गुलाब ! इसबार एस० पी० भी हिन्दुस्तानी आया है। वह चाहता है एक ही दिन में दुनियाँ को लूटकर अपना घर भरले। खाना-खिलाना भी कायदे का होता है। गरीबों के गले घोंटकर रुपया नहीं कमाया जासकता।

कोई करे, रामदयाल यह नहीं करसकता।" इतना कहकर पेशकार साहब ने गुलाब की ठोड़ी के नीचे उँगली लगाकरकहा, "कोतवाल हातमसिंह के लड़के की शादी है। तुम्हें भी चलना है शादी में।"

"आपकी कान पकड़ी चेली हूँ पेशकार साहब ! जब जो आज्ञा होगी, गुलाब उसका पालन करेगी ?" गुलाब बोली।

'मुझे तुमसे यही आशा थी। तुम्हारे जाने-आने का व्यय और तुम्हें इनाम देने का भार मैंने सेठदामोदरप्रसाद पर डालदिया है। कसकर वसूल करलेना जरा।" पशकार साहब बोले।

"सेठ दामोदरप्रसाद और वेश्या का नाँच कराएँगे ? आप भी क्या बातें कररहे हैं पेशकार साहब ?" गुलाब इठलाकर मुस्करादी।

पेशकार रामदयाल वहाँ से सीधे अपने क्वार्टर की ओर चलदिए। मार्ग में उन्हें जाने क्या ध्यान आया कि मार्ग बदलदिया और क्वार्टर पर जाकर रामेश्वरीदेवी की कोठी पर पहुँचगए।

द्वारपाल ने पेशकार साहब को द्वार पर रोकतेहुए पूछा, "आप किससे ... चाहते हैं ? आपका शुभ नाम ?"

"रामेश्वरी देवी से। हमारा नाम पेशकार रामदयाल है।" पेशकार रामदयाल ने मूँछें चढ़ातेहुए कहा।

द्वारपाल ने अन्दर जाकर रामेश्वरीदेवी को पेशकार रामदयाल के आने की सूचना दी। एक क्षण के लिए तो रामेश्वरीदेवी का मुँह फीका पड़ा परन्तु फिर बोले, "उन्हें आदरपूर्वक अन्दर बिठाओ। मैं अभी आती हूँ।"

पेशकार रामदयाल को सादर पीछे के विशेष कमरे में लेजाकर बिठाया गया। वह कमरा बड़े क़रीने से सजा था। उसकी दीवारों पर महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल के चित्र टँगे थे। फ़र्श पर बढ़िया कालीन

बिछा था और एक बहुत सुन्दर सोफासेट पड़ाहुआ था। पेशकार रामदयाल उसी सोफे पर ठाट से बैठगए।

उनके बैठने के दो-चार मिनट पश्चात् ही रामेश्वरी देवी ने कमरे में मुस्करातेहुए प्रवेश किया।

रामेश्वरी देवी ने खद्दर-सिल्क की साड़ी पहनीहुई थी। उसी सिल्क का चुस्त ब्लाउज था, जिसमें से बदन का उभार पूरी तरह दर्शक को आकर्षित कररहा था। माथे पर वही गोल बिंदी लगी थी जिसने कभी रामदयाल के दिल पर घावकिया था। कलाई पर मूल्यवान रिस्टवाच बँधी थी और ब्लाउज में बटन के ऊपर फाउन्टेन पेन लगाहुआ था।

रामेश्वरी देवी का रूप अब पहिलेसे कहीं अधिक निखराहुआ था। आँखों में वही शोखी थी। बातों का वही अंदाज था। पेशकार साहब को पुरानी रामप्यारी और नई रामेश्वरी देवी में कोई विशेष अन्तर दिखाई नहीं दिया। उनके लिए वह एकदम वही थी।

रामेश्वरी देवी कमरे में प्रवेश करतीहुई बोली, "नमस्कार पेशकार साहब! आज सूर्य किधर से निकलआया? मैं तो समझी थी कि पेशकार साहब ने मुझे भुला ही दिया।"

"अब तुम देवी बनगईहो रामप्यारी! अब तुम्हें भुलाना क्या सरल बात है? तुम्हारे संकेत पर मेरठ-शहर का बच्चा-बच्चा नाँचता है। सुना है कि आज-कल तो सेठ दामोदरप्रसाद को भी तुमने नचायाहुआ है।" मुस्कराकर पेशकार रामदयाल बोले।

सेठ दामोदरप्रसाद की बात सामने आनेपर रामेश्वरीदेवी तनिक सँभलकर बैठतीहुईबोली, "सेठसाहब की बात आप जानेदीजिए पेशकारसाहब! उन जैसा बोगला व्यक्ति मेरी दृष्टि में नहीं आया। उन्होंने समझा था कि मैं उनकी जरखरीद बाँदी बनगई। यह उनकी मूर्खता थी। आवश्यकता पड़ने पर आदमी गधे को भी बाप बनासकता, परन्तु अवसर पाकर आगे बढ़ने का हर व्यक्ति को अधिकार है।

सेठ जी ने मुझे रुपया दिया तो मेरे उपकार भी उनपर कम नहीं हैं। आप ही सोचिए कि यदि उस दिन मैं उनके हथकड़ियाँ लगजाने देती और आपके सिपाही उनके हथकड़ियाँ लगाकर मेरे कमरे से बैली बाजार

बजाज़ा और फिर गुदड़ी से होतेहुए तहसील पर कोतवाली की हवालात में लेजाते तो उनकी क्या दशा होती ? आपने उस दिन मेरी बात मानली, उसके लिए मैं जीवनभर आपकी उस कृपा को नहीं भूलासकती ।"

पेशकार साहब रामेश्वरी देवी की बातें चुपचाप सुनतेरहे और उनके मुँह से अपनी प्रशंसा सुनकर जो भाव वह रामेश्वरीदेवी के प्रति मन में बना-कर आए थे, वे धीरे-धीरे तिरोहित होनेलगे ।

रामेश्वरीदेवी बोलीं, "पेशकार साहब ! मैं आपकी इससे भी अधिक कृपा मानती हूँ । अनुकूल परिस्थिति न मिलने पर यदि स्वतन्त्रता की आँधी किसी को गड्ढे में गिरासकती है तो अनुकूल परिस्थिती आने पर वह उसे चार चाँद भी लगासकती है, उसे उठाकर आसमान पर भी चढ़ा सकती है । आज मैं आपको अपने जीवन की पुरानी कहानी सुनाती हूँ ।"

रामेश्वरी देवी ने आज पेशकार साहब को बताया कि उन्होंने बी. ए. पासकिया था । वह एक सभ्य परिवार की महिला थीं । चन्द गुण्डों और पुलिस के चंगुल में फँसकर उन्हें अपना शरीर बेचना पड़ा । समय निकालने के लिए उन्होंने वह सबकुछ किया क्योंकि उस परिस्थिति में वह फिर अपने घर वापस नहीं लौटसकती थीं ।

पेशकारसाहब ने देखा कि रामेश्वरी देवी लजा रही थीं अपनी बीती कहानी सुनाते समय और उन्हें उससे भी अधिक आश्चर्य तब हुआ जब उन्हें यह पता चला कि वह अपने इस रहस्य ठंडे फोड़े के समान दुनियां से छिपाकर नहीं चलरही थीं । उन्हें यह सरेआम मानने और कहने में कोई लज्जा नहीं थी कि वह एक दिन मेरठ के बैली-बाजार के कोठे पर बैठकर अपना शरीर बेचा करती थीं ।

यही वह धमकी और घुड़की थी जिसका सहारा लेकर पेशकार राम-दयाल रामेश्वरीदेवी को कोतवाल हातमसिंह की शादी में निमंत्रित करने के लिए आए थे । उन्हें दृढ़ विश्वास था कि रामेश्वरीदेवी अपने जीवन के उस पुराने रहस्य को छिपाने के लिए पेशकार साहब की हर बात स्वीकार कर लेंगी ।

पेशकार साहब ने अनुभवकिया कि जब-जब भी कभी रामेश्वरीदेवी ने उनकी कोई बात मानी थी, तो उनके चेहरे पर कैसी-कैसी पीड़ा की रेखाएँ

खिंची थीं। उस समय वे सब पेशकार साहब के मस्तिष्क में उतर आईं।

शराब के नशे में भावना और भी तीव्र गति से बहने लगी। पेशकार साहब मनमें अन्दर-ही-अन्दर अपनी करनी पर लजाए, परन्तु ऊपर से मुखपर उन्होंने कोई भाव नहीं आनेदिया।

वह बात बदलकर बोले, "यह कहानी रामेश्वरीदेवी ! यदि तुमने मुझे उसी समय सुनादी होती जब तुम्हें मैंने उन बदमाशों से छुड़ाया था, तो मैं तुम्हारी सभ्य किसी युवक से शादी करादेता।" गम्भीरता-पूर्वक पेशकार रामदयाल बोले।

"वह समय नहीं था यह बात बताने का। उससमय सम्भवतःआप विश्वास भी न करते और जब मैं शादी करने से इन्कार करदेती तो आप मुझे न जाने क्या समझ बैठते ? इसीलिए मैं कभी इस बात पर विचार नहीं करती कि अन्य कोई मुझे क्या समझता है ? मैं अपने को खूब समझती हूँ और अपना मार्ग बनाती जारही हूँ। मैंने अपना मार्ग स्वयं बनाया है। ठोकरें खा-खाकर मैं आगेबढ़ी हूँ।" सीना उभारकर रामेश्वरीदेवी बोलीं।

उस समय रामेश्वरीदेवी के दमदमातेहुए प्रकाश के नीचे पेशकारसाहब का सारा अभिमान, सारा घमंड, दबकर मौन होगया। उनके हृदय में एक तीखी जलन-सी हुई। परंतु मुंह पर कोई भाव न आया।

वह सरलतापूर्वक बोले, "आजसे मैं भी आपको रामेश्वरीदेवी ही कहा करूँगा।"

"आपके मुंह से रामेश्वरीदेवी सुनकर मुझे प्रसन्नता नहीं होगी। मुझे रामप्यारी सुनने में ही आनन्द आता है। आप मेरे दुर्भाग्य-काल के साथी हैं। आपने मेरी सहायता की थी चाहे उसमें आपका कोई स्वार्थ ही क्यों न रहा हो, क्योंकि बिना स्वार्थ के यह दुनियाँ एक इंच भी आगे नहीं बढ़ती।

सेठ दामोदरप्रसाद को ही लीजिए। संसार में कौन अपनी स्थिति का लाभ नहीं उठाता। आप अपनी पुलिस की नौकरी का [illegible] लाभ उठाते हैं और सेठ दामोदरप्रसाद अपने [illegible] नहीं है दोनों में।"

रामेश्वरीदेवी की बात सुनकर पेशकार [illegible] [illegible] ! [illegible] आज [illegible]

रामेश्वरीदेवी फिर मुस्कराकर बोलीं, "आप पुलिस के दमपर सीना फुलाकर जीवन में चलते रहे हैं, चलरहे हैं, और सेठ दामोदरप्रसाद अपने पैसे ही हवा में उड़ानें भरते हैं। मैंने भी विचार किया कि मैं भी किसी का सहारा पकड़ूं। सहारे के लिए मेरे पास मेरे शरीर के अतिरिक्त और कुछ न निकला,तो मैंने अपने शरीर का ही सहारा पकड़ा और आखिर अपना मार्ग बना ही लिया

आप देखेंगे पेशकार साहब कि जमाना अब अपने शरीर का ही सहारा पकड़ने का आरहा है। अब मजदूर और किसान का राज्य आरहा है।"

रामेश्वरीदेवी के मस्तिष्क में हर समय वही व्याख्यान घूमाकरता था जो वह मंच पर खड़ीहोकर देती थीं। उसकी रमक उनकी हर बात में आप-से-आप उभरआती थी।

पेशकार साहब अपने मन की बात मन में दबाकर बोले, "जो कुछ भी सही रामेश्वरीदेवी! तुमने उन्नति खूब की। हम तो एक सिपाही से दीवान और पेशकार ही बनपाए, परंतु तुम मेरठ-निवासियों के दिलों पर राज्य कररही हो। तुम्हारा स्वप्न सत्य हुआ। तुम्हारी सफलता की मैं हृदय से दाद देता हूँ।

हमारे ऊपर तनिक कृपा दृष्टि रखना।"

रामेश्वरीदेवी पेशकार रामदयाल की ये बातें सुनकर ठहाका मारकर हँस पड़ी। वह बोलीं क्या कहरहे हो पेशकार साहब! कृपा-दृष्टि तो आपकी ही चाहिए। जिला-पुलिस की नकेल संभाले बैठो हो। जब जहाँचाहो उपद्रव खड़ा करादो, जिस गाँव को चाहो लुटवादो, जिसे चाहो हवालात में बन्द करा दो, जिस पर कड़ी दृष्टि रखदो समाप्त कराके लापता करदो इतनी शक्ति आपके एक संकेत में है। रामेश्वरी जिले की दशा से अनभिज्ञ नहीं है। ध्यान आपको ही रखना है अपनी रामप्यारी का, रामेश्वरीदेवी का नहीं।"

"रामदयाल रामप्यारी को कभी नहीं भुला सकता। रामेश्वरीदेवी! जिस व्यक्ति पर उसने एक बार कृपा की है उसे वह कभी नहीं सता सकता। उसका अनिष्ट वह कभी सोच ही नहीं सकता। शेष दुनियाँ जैसी चलती है उसके साथ रामदयाल ही वैसे ही चलता है। बदों की दुनियाँ में बद और नेकों की दुनियाँ में नेक रहना जानता है रामदयाल।" गम्भीरतापूर्वक पेशकार

साहब ने कहा।

"मैं आपके इस गम्भीर मत का सम्मान करती हूँ परंतु रामप्यारी के विषय में आपने जो विचार बनाया हुआ है कि वह बेवफा है, वह गलत है। रामप्यारी कभी बेवफा नहीं रही। वह मार्ग खोजरही थी उस खंदक से ऊपर निकलनेका जिसमें वह दुर्भाग्यवश ओछी छलांग लगाकर गिरपड़ी थी। जिधर भी उसे सहारा दिखाई देता था उधर ही वह लपकरही थी।" रामेश्वरी देवी ने नीची दृष्टि करके कहा।

पेशकार साहब रात्रि के दस बजे क्वार्टर पर पहुंचे। छोटे भाई ने, जो क्वार्टर के बाहर ही छोटे से बगीचे में खटिया बिछाये लेटा था, खड़ा होकर उनके चरण छुए और उन्होंने अपना कोट उतारकर उसे खूँटी पर टाँगने के लिए दिया।

"बच्चियां कहां है?"

"सो गई।" हरदयाल ने कहा।

"करीमखां ने सब सामान लादिया था?"

"जी! सब आगया था। भोजन भी शाम का बनारखा है। आप मुँह धोलें तो जल्दी सेककर गर्म लाऊं। भोजन करलीजिए।" हरदयाल बोला।

"मैं खाना नहीं खाऊंगा। क्या तुम लोगों ने अभी खाना नहीं खाया? मेरे लिए भूखेरहने की किसी को आवश्यकता नहीं है। खाना समयपर खालिया करो। यह पुलिस की नौकरी है, इसमें क्या कभी समय पर खाना प्राप्त होता है? जहां जो कुछ मिलजाता है उसी को पेट में डाल लेनापड़ता है।" पेशकार साहब खाट पर बैठेहुए बोले, अच्छा तो, एक कुल्ला और थोड़ा नाश लेना। एक ग्लास भी लाकर [illegible] और [illegible] मिर्च। मुझे तो [illegible] [illegible]। वह [illegible]।"

छोटे भाई और वह का मन रखने के लिए पेशकार साहब ने एक कुल्ला [illegible] लिया [illegible] सब लोगों ने खाना खाया। हरदयाल और [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible]

स्टूल पर रखदिया और फिर पास जमीन बैठताहुआ बोला, "सुना है कोतवाल हातिमसिंह के लड़के की शादी है पेशकार साहब !"

"अरे हाँ !" सँवरकर बैठतेहुए अण्डों की प्लेट हाथ में लेकर पेशकार साहब बोले, "तुमसे किसने कहा ? तुम्हें तो बुलाया है कोतवाल साहब ने। तुम्हें साथ लाने के लिए लिखा है। बीस तारीख की शादी हैं।"

"लिखा भी है कोतवाल साहब ने ?" प्रसन्न होकर करीमखाँ ने पूछा।

"तो क्या तुमसे झूठ बोलरहा हूँ करीमखाँ ! कोट की जेब से शादी का कार्ड निकालकर पढ़लो। उर्दू के अक्षर तो तुम उपाड़लेतेहो।" पेशकारसाहब बोले।

अंडे आज करीमखाँ की पत्नी ने विशेष रूपसे देशी घी में फ़ाई करके भेजे थे। कलेजी को दाँत के नीचे रखते ही पेशकार साहब का मन प्रसन्न होगया।

करीमखाँ की पत्नी की बनाईहुई जब कोई भी चीज़ पेशकार साहब के सामने आती थी तो, उसका चूड़ीदार काला पायजामा, मलमल का लम्बा कुर्ता, उसके गले के चाँदी के छटाँकभर के जंजीरदार चाँदी के बटन और खुला यौवन, जिसपर कभी घर से बाहर निकलते समय ही काला बुर्का पड़ता था जिसकी जालीदार आँखों से हिरनी की दो पुतलियाँ टिमटिमाया करती थी, पूरा का पूरा उनकी दृष्टि के समक्ष आजाता था।

"भाई करीमखाँ, तुम्हारी बीवी भी परमात्मा ने न जाने तुम्हारे किन नेक काम से प्रसन्न होकर तुम्हें दी है। बढ़िया-से-बढ़िया खाना खाने के बाद जब तुम्हारी बीवी के हाथ की बनी कोई चीज सामने आजाती है तो उँगलियों के पोरवे चाटता रहजाता हूँ।" पेशकार साहब बोले।

करीमखाँ अपनी पत्नी की पेशकार साहब के मुख से प्रशंसा सुनकर हरा होगया वह पत्नी तनिक लजाकर बोला, "बड़ी ही नेक बख्त औरत हैं। बेचारी बहुत अच्छी है। जिस दिन से मेरे घर में आई है, कभी कोई ख्वाहिश जाहिर नहीं की।"

"तो तुम क्या कुछ कम ध्यान रखते हो उसका, जो उसे इच्छा प्रकट करने की आवश्यकता पड़े ? जो ऐश तुमने दी है उसे वह बड़े-बड़े घराने वालियों को नसीब नहीं होसकतीं।" पेशकार रामदयाल बोले।

"यह सब आपकी ही कृपा है पेशकार साहब !" सम्मान पूर्वक करीम खाँ बोला।

"इसमें क्या रखा है करीमखाँ! परमात्मा की कृपा है सब। उसी के करने से सब कुछ होता है। इन्सान लाख करे तो क्या होता है ?" पेशकार साहब एक अंदाज के साथ बोले।

करीमखाँ दोनों खाली प्लेटों को लेकर चलागया और पेशकार साहब अपने क्वार्टर के बाहरवाले बरांडे में अपनी खटिया पर लेटगए।

पेशकार साहब का बिस्तर साधारण दरी, चादर और तकिए के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। खाट भी बांस की पट्टियों की थी जिसके उठाने-बिछाने में उन्हें दूसरे की ओर न देखना पड़े। पैसा चाहे जितना ही उनके पास आया परन्तु अपना रहन-सहन उन्होंने कभी नहीं बदला। उन्होंने पैसा जोड़ने का भी कभी प्रयत्न नहीं किया। रुपया पानी की तरह उनके पास आया और पानी की तरह ही उन्होंने बहादिया।

उनकी दृष्टि आकाश पर छिटके तारों की ओर गई तो उन्हें वे सभी तारे गोल रुपयों की तरह फैलपड़े दिखाईदिए। पेशकार साहब का मन हुआ कि उन्हें वह अपनी गोद में भरकर बिखराते चले जाएँ। प्रकृति ने भी तो उन्हें एकत्रित करके नहीं रखाहुआ है।

पेशकार रामदयाल बहुत देर तक अपनी खटिया पर पड़े करवटें बदलते रहे। उनकी दृष्टि के समक्ष उस समय गुलाब, रामेश्वरीदेवी, मेमसाहब और शीला खड़ी थीं। कितना अकेला था उनका जीवन। उनका अपना जीवन भी अकेला ही था। शीला उन्हें अकेला छोड़कर चली गई। धीरे-धीरे सब स्मृतियाँ आँखों के सामने से ओझल होगईं परन्तु शीला अभी भी खड़ी मुस्करा रही थी। वह बोली नहीं एक शब्द भी परन्तु उसकी मुस्कराहट से उनका मानस स्निग्ध होउठा था। उनके होंठ फड़-फड़ाए। वह धीरे से कहउठे,' शीला तेरा स्थान तेरा ही रहेगा ? उस पवित्र स्थान को और कोई नहीं भर सकता।" इन शब्दों के साथ उनके नेत्र बन्द होगए और नींद की झपकी आगई।

: १८ :

पेशकार रामदयाल के अधिकारों पर हिन्दुस्तानी एस. पी. आते ही कुठारा घात हुआ। वह दारोगाई के सीढ़ी चढ़कर एस. पी. बने थे। वह महकमे के प्रत्येक रहस्य से परिचित थे। विशेष रूपसे वह ऊपरी आय की सभी घाटियों का पानी पीचुके थे।

उनकी पेशकार साहब से आते ही झड़प होगई। नए एस. पी. हामिद-अली खाँ अपने पेशकार या दारोगाई के समय के दीवान से सर्वदा एक अर्दली के रूप में काम लेते आये थे। प्रारम्भ से ही आप एक दबदबे के अफ़सर रहे थे और अपने मातहतों को सर्वदा अपने चंगुल में दबाकर चले थे। उन्होंने अपने मातहतों को कभी नही उभरनेदिया।

जब वह थानेदार थे तो थाने के स्वामी वह स्वयं थे। थाने के अन्य लोगों, यहां तक कि छोटे दारोगा को भी वह अपना नौकर समझते थे। थाने की कुल आमदनी में मे पिछत्तर प्रतिशत उनका अपना होता था। शेष पच्चीस प्रतिशत में से दसप्रतिशत छोटे दारोगा का, पाँच प्रतिशत दीवान का और शेष दस प्रतिशत सिपाहियों में बांटदियाजाता था।

यही प्रणाली वह वहां एस. पी. बनकर भी चलानाचाहते थे।

पेशकार रामदयाल को उन्होंने रविवार की छुट्टी में अपनी कोठी पर बुलवाया। वह कोठी पर गए। कोठी के अर्दली ने उनका जो सम्मान किया वह कनखियों से हामिदअलीखाँ ने देखा। उनके दिल में पेशकार रामदयाल के प्रति गहरी जलन पैदा होगई परन्तु मन के भाव उन्होंने ऊपर नहीं आने दिए।

पेशकार रामदयाल कमरे से बाहर प्रतीक्षा में खड़े थे, कि कब एस. पी. साहब उन्हें अन्दर बुलाएँ। वैसे इसबात के वह आदि नहीं थे। अंग्रेज अफ़सरों के पास उन्हें कभी आज्ञा लेने की प्रतीक्षा करनी पड़ी थी।

वह मे कुढ़कर अपने से बोले, "तभी तो कहते हैं, प्यादे से फ़रजी भयो

टेढ़ी-टेढ़ी जाय ।' उनके चेहरेपर मुस्कराहट खेलउठी । सोचलिया देखाजाएगा । अभी जरा भूल में हैं साहब बहादुर ।' मन-ही-मन पेशकार साहब ने कहा ।

एक घण्टे के पश्चात् पेशकार साहब को अन्दर आने की आज्ञा मिली और फिर भी आधे घंटे उन्हें एस. पी. साहब की मेज़ के सामने खड़ारहना पड़ा । वह अपने नए एस. पी. की चाल-ढ़ाल को पहचानरहे थे, उनका अध्ययन कररहे थे ।

आधे घण्टे पश्चात् पेशकारसाहब से एस. पी. साहब बोले, "पेशकारराम दयाल, सुना है मेरठ जिले के पुलिस-आफ़ीसर पब्लिक से बड़ा रुपया ऐंठते हैं । क्या यह सच है ?"

"ऐंठते होंगे हुजूर ! मुझे सूचितकरके तो कोई ऐसा नहीं करता । मैं इन बातों से अपना कोई सम्बन्ध नहींरखता ।" पेशकार रामदयाल बड़े अदब के साथ बोले ।

पेशकार साहब की बात सुनकर एस. पी. साहब अवाक रहगए । उनके चेहरे पर उन्होंने आँखें गड़ाकर पूछा, "तो क्या आप इन सब बातों का कोई ध्यान नहीं रखते ?"

"मेरा खर्चा ही क्या है हुजूर ! छड़ा आदमी हूँ, न औरत, न बच्चा । पान खाने तकका मुझे शौक नहीं है । सरकार से जो वेतन पाता हूँ, महीने के बाद उसमें से भी दस-पाँच बचजाते हैं । फिर क्यों इन व्यर्थ बातों में पड़ूँ ?" गम्भीरतापूर्वक पेशकार साहब ने उत्तर दिया ।

पेशकार साहब के विषय में जो बातें उन्होंने सुनी थीं, पेशकार साहब ने उन सबका खंडन करदिया । वह आज जिले की ऊपरी आय के बँटवारे की बात मस्तिष्क में लेकर बैठे थे । वह चाहते थे कि पेशकार रामदयाल के द्वारा ही वह उसके बँटवारे की योजना जिले के थानों में प्रसारित करें, परन्तु पेशकार रामदयाल ने घूस न लेने की बात कहकर अपने को उससे मुक्त करलिया ।

एस. पी. साहब के मन की बात मन में ही घुमड़कर रहगई । ऊपर से, वह एक भी शब्द न बोले, परन्तु उनके दिल में जलन की ज्वाला भड़क उठी । वह तिलमिलाउठे । आज उन्होंने पेशकार रामदयाल को अ... बड़ा शत्रु मानलिया ।

उन्होंने घृणापूर्ण दृष्टि से पेशकार रामदयाल को देखा, परन्तु ऊपर मीठे व्यंग्य से कहा, "तो कलयुगी हरिश्चन्द्र पेशकार रामदयाल साहब आप छुट्टी मनाएँ और मुझे काम करनेदें।"

"जो आज्ञा हुजूर की!" कहकर पेशकार रामदयाल वहाँ से चलेआए।

दूसरे दिन एस. पी. साहब ने पेशकार रामदयाल को आज्ञा दी कि जि के सब दारोग़ाओं को तलब कियाजाए और वे एक-एक करके उनसे मिलें वे सब अपने थानों की पूरी कारगुज़ारियाँ लेकरआएँ।

"बहुत अच्छा हुज़ूर!" कहकर पेशकार रामदयाल ने एस. पी. साहब के हुक्म की नकलें ज़िले के सब थानों में उनके हस्ताक्षर कराकर भिजवादीं। उनके मिलने की तिथियाँ निश्चित करदीं।

अब नित्य ज़िले के थानों के इंचार्ज एस. पी साहब से मिलने के लिए मेरठ आनेलगे।

थानों के इंचार्ज एस. पी. साहब से मिलने से पूर्व पेशकार रामदयाल से पूछते थे, "पेशकार साहब! कैसा दिमाग है हमारे नए साहबबहादुर का?"

पेशकार साहब एक अदा के साथ मुस्कराकरकहते थे, "मुझसे क्या पूछते हो दोस्तो! मैं तो तुम्हारा अपना पुराना मित्र हूँ। परन्तु एक बात का ध्यान रखना। लेने-देने के बारे में बहुत कडा उत्तर देना। जो कुछ पहले खाया-पीया जाचुका, उसके विषय में चाहे ज़बानी कोई कुछ भी क्यों न बकता रहे, कोई सबूत पेश नहीं करसकता। अब भी तुम अपने-अपने इलाकों में ...र से चाहे जो कुछ भी खाते-पीते रहना। यह क्या तुम्हारे पीछे-पीछे जाते ...रेंगे और फिर दफ्तर में कागज़ों का पेट भरने के लिए मैं बैठा ही हूँ यहाँ। ...र इनके ऊपर भी तो कलक्टरसाहब हैं।"

... अंतिम वाक्य पेशकार साहब वह कहदेते थे कि जिससे पहली सब ... पर मोहर लगजाती थी। "मेरे विषय में कोई बात हो तो स्पष्ट कह ... कि वह घूस के मामले में बड़ा सख्त आदमी है। न तो स्वयं घूस लेता है ... जहाँ तक उसका वश चलता है, किसी को लेने देता है।"

...ज़िले के सब थानों के इंचार्जों से पूरे महीने भर एस. पी. साहब ने भेंट ...न्तु उनका कार्य सिद्ध न होसका। एक मास पूर्व पेशकार रामदयाल ने ...य कहा था, वही वाक्य नित्य जिले के सबथानों के इंचार्जों ने दोहराया।

एस. पी. साहब ने अब पेशकार रामदयाल की शक्ति का अनुभव किया। उन्होंने महसूस किया कि यदि वह व्यक्ति किसी प्रकार हाथ में आजाए तो वह मालामाल होकर रिटायर होसकते हैं। परन्तु उनके दिल में उसके प्रति भयंकर जलन की भावना उभरचुकी थी। उनके पदकी असीमित शक्ति पेशकार रामदयाल के बीच से निकलने का मार्ग न पाकर फैल नहीं पारही थी। उनका श्वाँस घुटनेसालगा था। उनकी इस घुटन को देखकर जब उनके बराबर में बैठे पेशकार साहब मुस्कराते थे तो उनके घावपर नमक सा मला जाता था, उनका क़लम रुकजाता था और मस्तिष्क में झुंझलाहट पैदा हो जाती थी।

वह झुँझलाकर अपनी फाइल इधर-उधर पटकनेलगते थे। तब पेशकारसाहब बड़े अदब और नर्मी से कहते थे, "हुजूर ! इन फ़ाइलों से क्यों झगड़रहे हैं ? खादिम बैठा है इन्हें ठीक से आपके सामने पेश करने के लिए। हुजूर के दफ्तर में जितने भी केस हैं, जितने फ़ाइल हैं, उनके नाम, तारीखें मय पुराने फेसलों के मुझे जबानी याद हैं। दफ्तर के काम में आपको कोई कठिनाई न होगी।"

एस. पी. साहब पेशकार रामदाल के काम में कोई गलती नहीं निकालसकते थे। पेशकार रामदयाल का मस्तिष्क चाहे पढ़ाई में अधिक नहीं चलाथा, परन्तु स्मरण-शक्ति उनकी गजब की थी। अपने काम की बात को भूलजाना पेशकार रामदयाल के लिए असम्भव था।

एस.पी.साहब को मेरठ आए दो महीने होगए थे। इस बीच में न तो उन्हें कोई डाली दीगई और न ही उनके सम्मान में कोई जलसा हुआ।

इन चीज़ों से हामिदअलीखाँ को घृणा भी थी। वह नमाज़ी आदमी थे। गाना, बजाना, नाँचना, शराब इत्यादि से उन्हें घृणा थी। इन चीज़ों को उन्होंने कभी बढ़ावा नहीं दिया।

हामिदअली साहब बहुत कंजूस व्यक्ति थे। उनकी पत्नी भी एक देहातकी अशिक्षित स्त्री थी। उसे प्रसन्न करने के लिए उन्हें कुछ विशेष खर्च नहीं करनाहोता था। उस बेचारी को तो उतनी माँगें भी नहीं होती थीं, जितनी भेटें उनके पास आजाती थीं। वेतन से घर-खर्च आराम से चलजाता था और ऊपरी आमदनी का रुपया साफ़ बचजाता था। उसी रुपए में से हामिदअली साहब ने अपने क़स्बे में एक मस्जिद बनवाई थी और उसमें कुरानशरीफ़

पढ़ाने के लिए एक मौलवी को रखाहुआ था।

इसी बीच मेरठ के कलक्टर साहब का तबादला होगया। कलक्टरसाहब के तबादले का समाचार प्राप्तकर पेशकार साहब को बहुत दुःख हुआ। उनके पैरों के नीचे से जमीन निकलगई।

पेशकार साहब की यह दशा देखकर हामिदअली साहब मुस्कराकर बोले, "पेशकार रामदयाल! आज चेहरे पर उदासी क्यों है? तबियत तो ठीक है तुम्हारी? तबियत ठीक न हो तो तुम छुट्टी करसकतेहो। काम फिर होजाएगा।"

पेशकार रामदयाल ने एस. पी. साहब की बात सुनकर अपने को सँभाला और स्वप्न से जागतेहुए से आँखें मलकर बोले, "कामके समय आराम करना पेशकार रामदयाल ने नहीं सीखा हुजूर! बीमार भी रामदयाल अपनी पूरी नौकरी के ज़माने में आजतक कभी नहीं हुआ। मैंने कभी एक दिन की भी छुट्टी नहीं ली सरकार!" यह कहकर पेशकार साहब ने हस्ताक्षर होनेवाले फाइल उठाकर एस. पी. साहब के सामने रखदिए।

फ़ाइलों पर दृष्टि गड़ाने से पूर्व एस. पी. साहब बोले, "सुना हैं कलक्टर साहब का तबादला होगया है।"

"यह तो चलता ही रहता हैं हुजूर! एक आता है, एक जाता है। जमाना इसी तरह चलता है, वरना रुककर सड़ न जाए।" गम्भीरतापूर्वक पेशकार साहब बोले।

हामिदअली साहब आलिम आदमी थे। कुरानशरीफ़ के हाफ़िज थे। पेशकाररामदयाल ने उन्हें भी यह उपदेश देडाला। वह यह सहन न करसके। तनिक चिढ़कर बोले, "यह फ़िलासफ़ी हमेशा नहीं छाँटीजाती है पेशकार रामदयाल!"

एस. पी. साहब की इस तीखी बात के होठों पर आए उत्तर को पेशकार साहब मुस्कराकर पीगए और नर्म लहजे में बोले, "हुजूर! हम पेशकार बेचारे भला क्या फ़िलासफ़र बनेंगे? अपनी दाल-रोटी से ही फ़ुर्सत नहीं है हमें। फ़िलासफ़ी के लिए तो आला दिमाग़ चाहिए।

यह सुनकर एस० पी० साहब तिलमिलाकर रहेगए।

कलक्टर साहब के तबादले की बात सुनकर वह बहुत प्रसन्न थे। पेशकार साहब को कलक्टर साहब की कोठी पर जाते-आते वह कई बार देखचुके थे।

इसीलिए कलक्टरसाहब से उनके विरुद्ध कभी कुछ कहने का उनमें साहस नहीं हुआ था। नए कलक्टर को एस०पी० साहब ने प्रारम्भ से ही अपने चंगुल में फँसालेने का निश्चय करलिया था।

अभी तक पेशकार साहब ने अपनी पुलिस की राजनीति में कोतवाल और दारोगाओं को ही पछाड़ा था। इस बार उनकी टक्कर एस० पी० साहब से थी। कलक्टर साहब का खूँटा उनके पास पर्याप्त सशक्त था। उसके उखड़ जाने पर उनकी नौका समुद्र की लहरों और तूफानों में जागिरी थी।

पुलिस के साधारण दारोगाओं और दीवानों को एस० पी० साहब की साधारण घुड़की मार्ग पर लासकती थी, जरा प्यार का हाथ उनकी कमर पर रखकर उन्हें तोड़ा जासकता था।

शहर-कोतवाल उन दिनों भी कासिममिरज़ा ही थे। कासिममिरज़ा को पेशकार साहब से पर्याप्त आय थी और वह कट्टर मुसलमान भी नहीं थे। वह विद्वान् व्यक्ति थे और धर्म को अपने कामों के बीचमें नहीं आनेदेते थे। परन्तु इधर हामिदअली साहब को प्रसन्न करनेकेलिए उन्होंने भी नित्य मस्जिद जाना प्रारम्भ करदिया था। यह देखकर जिले भर के मुसलमान दारोगा, दीवान और सिपाहियों ने नित्य नमाज़ पढ़नी प्रारम्भ करदी थी और जब कभी भी एस०पी० साहब टूर पर जाते थे तो वे उन्हें उजू करते, नमाज पढ़ते या चटाई समेटते दिखाईदेते थे।

जिले का यह बदलताहुआ रंग पेशकार साहब की दृष्टि से छिपा न रहा। यह सब होने पर भी उन्हें शेख अब्दुलबेग और करीमखाँ जैसे मुसलमान मित्रों पर गर्व था। वे सच्चे नामाज़ी होने पर भी पेशकार साहब के घनिष्ट मित्र थे। कोतवाल कासिममिरज़ा को भी वह बुरा आदमी नहीं समझते थे।

आज पेशकार साहब सेठ दामोदरप्रसाद की कोठी पर गए। सेठजी ने आपका सम्मान के साथ स्वागत किया। वह बोले, "आज तो बड़े चिन्तित दिखाईदेरहे हो पेशकारसाहब। सुना है कलक्टरसाहब का तबादला होगया है। इससमय यह बहुत बुरा हुआ।"

"इसीनेतो मस्तिष्क खराब करदिया है सेठजी! अब मेरठ के हिंदुओं का कोई सहारा नहीं रहा। शहर-कोतवाल मुसलमान है और एस० पी० भी। कोतवाल तास्सुबी नहीं है, परन्तु देखरहा हूँ कि एस० पी० साहब का रंग

पर भी चढ़ता जारहा है। पुलिस की चौकियों को अच्छीखासी मस्जिदें ादियागया है।" पेशकारसाहब बोले।

"आर्यसमाज के मंत्री भी अभी-अभी आए थे। वह भी यही कहरहे थे। ई चिन्तित थे बेचारे। सुना है कि शहर के कसाइयों ने बाज़ारों में बड़ा ना उभारकर चलना प्रारम्भ करदिया है। यह सब बड़े संकट की बात है ौर फिर ऊपरसे बक़रीद आरही है। मुझे भय है कि कहीं झगड़ा न होजाए। ब तो ज़िलेभर को केवल आपका ही सहारा रहगया है पेशकारसाहब!" ठजी चिंता के साथ बोले।

"सहारा तो भगवान् का रखनाचाहिए सेठजी! परन्तु रामदयाल जी- ान से हिन्दू-धर्म की रक्षा करेगा।" मूँछों पर ताव देकर पेशकार साहब म्भीरतापूर्वक बोले।

"मंत्रीजी को भी आपसे यही आशा है। वैसे प्रबन्ध हमलोग भी पूरा-पूरा कररहे हैं। शहर के हर मन्दिर में हमने अखाड़े खुलवादिए हैं। उनमें एक-से-एक जीदार पट्ठा पलरहा है। आपके एक ही संकेत पर हज़ारों लठबंद पहलवान मेरठ की सड़कों पर दिखाईदेंगे। मंत्री जी कहरहे थे कि उनकी एक ही ललकार में कस्साबखाने का एक-एक जन-बच्चा अन्दर न घुसागया तो उनका नाम पंडित रामखिलावन नहीं।" सेठजी अपने मलमल के कुरते की आस्तीनें चढ़ातेहुएबोले।

"यह बहुत अच्छा किया आप लोगों ने। जब सरकार पर भरोसा न रहे तो अपने हाथों में ही अपनी रक्षा का भार सँभाललेनाचाहिए।" पेशकार ...ब त्योरी चढ़ाकर बोले।

वहाँ से पेशकार साहब सीधे अपने क्वार्टर पर चलेगए। उनके छोटे भाई ने उनके चरण छुए और उनका कोट लेकर अन्दर खूँटी पर टाँगा। उनके हाथ-मुँह धोने को एक बाल्टी पानी, लोटा, साबुन, तौलिया लाकर रखा, परन्तु आज पेशकारसाहब को उस सब का अवकाश नहीं था। वह गम्भीर मुद्रा में मूढ़े पर बैठतेहुए छोटे भाई से बोले, "हरदयाल, ज़रा क़रीम-ख़ाँ कोतो बुलाकरला। और देखना, निहायत अदब के साथ पेश आना उनके साथ।"

करीमख़ाँ चन्द मिनटों में ही वहाँ आपहुँचा। उसने पेशकार साहबसे पूछा,

"क्या आपने याद फरमाया था मुझे ?"

"भाई करीमखाँ, ज़रा जाकर लीले पहलवान कोतो बुलालाओ। इस बातका, किसी को कानोंकान भी पता न चले। बुलाकर यहाँ मेरे पास न लाना। वह गुलाव के यहाँ रात के नौ वजे पहुँचजाए। मैं वहीं आजाऊँगा। तुम भी उसके साथ रहना।" पेशकार साहव ने कहा।

"बहुत अच्छा।" कहकर करीमखाँ चलागया। करीमखाँ ने पेशकार साहव की मुख-मुद्रा को देखकर समझलिया था कि आज अवश्य कोई गम्भीर बात है। ऐसे समय वह कभी भी पेशकार साहब से कोई नहीं करता था। उस जो आज्ञा मिलती थी उसे सर-आँखों पर रखकर चलदेता था।

करीमखाँ के चलेजानेपर हरदयाल ने पूछा, "खाना लेआऊँ आपका ?"

"नहीं।"पेशकारसाहब ने कहा और आज बहुत ही थोड़ी देर पश्चात वह वहाँ से चल दिए। चिंतित थे पेशकार रामदयाल।

अभी केवल साढ़े सात वजे थे। उन्हें गुलाव के कमरे पर नौ वजे पहुँचना था। वीच के डेढ़ घंटे में उन्होंने सोचा कि कोतवाल कासिममिरज़ा के पास जाकर उनकी नव्ज़ देखीजाए। वह सीधे कोतवाली की ओर चलदिए।

कोतवाल साहव ऊपर छत पर अपने छोटे निजी दफ्तर के सामने टहल रहे थे। कासिमसाहव ज़रा शौकीन आदमी थे, परन्तु जबसे हामिदअली मेरठ आए थे, तव से वह भी सादा रहने का प्रयत्न करनेलगे थे। यह पहला कुर्त्ता और पायजामा था जो उन्होंने पहना था, वरना पेंट पहनकर ही सोने की उनकी वान थी।

नए वस्त्रों में कोतवालसाहब को देखकर पेशकार साहव मुस्कराते‌हुए बोले, "मुवारिकहो आपको आपका यह नया रूप।"

कासिमसाहव मन में कुछ लज्जित, परन्तु ऊपर से मुस्कराकर वोले, "आइए पेशकारसाहव ! यह लिवास क्या है, एस० पी० साहव अप्रसन्न न हों, इसलिए सिलालिया है। वरना सच जानिए बड़ा भद्दा मालूम देता है। वालिद साहव और अम्मीजान ने भी मुझे कभी कुर्त्ता-पायजामा नहीं पहनया।"

"वह वैरिस्टर थे हाईकोर्ट के, मस्जिद के नामाज़ी नहीं थे।" मुस्करा कर पेशकारसाहव वोले।

"यही [illegible] है [illegible]साहव ! परन्तु इन हा[illegible]ीसाहव को तो

नमाज़, तेहमद, कुर्त्ता, पायजामा, उजू और इसी तरह की न जाने कितनी नामाकूल बातों का जनून है। यह समझते हैं कि जिस मुसलमान में ये चीजें नहीं हैं वह मुसलमान ही नहीं है।" कोतवालसाहब बोले।

उन्होंने कुछ ठहरकर पूछा, "तुम्हारे साथ कैसी पटरही है साहब की? सुना है बड़ी खींचा-तानी चलरही है।"

"कोई विशेष खींचा-तानी तो नहीं है कोतवालसाहब!" मन की बातों को दबातेहुए पेशकारसाहब बोले। "हम लोग तो अफ़सरों के गुलाम ठहरे। कोई अफ़सर अपने गुलाम से जितना काम लेगा, वह उतना ही करेगा। गुलाम अपनी इच्छा से तो कोई काम करता नहीं।"

"ये बनने की बातें छोड़ो पेशकारसाहब! मालूमात मैं भी पूरी-पूरी कर चुका हूँ। यह महाशय जहाँ भीरहे हैं वहाँ इन्होंने मलाई खुदखाई है और मट्ठे को अमले में तकसीम किया है। वही यह यहाँ भी करनाचाहते हैं और मट्ठा पीने की आपको भी आदत नहीं है।" इतना कहकर कोतवालसहब ने मुस्कराकर पेशकारसाहब का हाथ पकड़ा।

"मेरा मट्ठा पीना ही क्या है कोतवालसाहब! मैंने कभी कोई काम अकेले अपने लिए यदि कियाहो तो क़सम लेलीजिए......।"

पेशकार साहब को बीच में ही रोककर कासिममिरज़ा बोले, "ज्यादा कहने की ज़रूरत वहाँ होती है जहाँ कोई जानता न हो। मेरठ ज़िले की पुलिस का एक भी आदमी ऐसा नहीं है जिसे तुम्हारी सचाई और ईमानदारी पर यकीन न हो। पूरा-का-पूरा अमला दिल से तुम्हारे साथ है। तुम्हारे हाथों से हिस्सा बँटने का हक लेकर एस०पी० साहब जैसी खूँखार बिल्ली के हाथों में सौंपना भी पसंद नही करेगा। तुम इससे बिल्कुल निश्चिन्त रहो।

शहर की पुलिस की पूरी शक्ति का भरोसा दिलाकर तुम्हें यह बात कह रहा है कासिममिरजा। यार क्या चीज होती है इसका पता तुम्हें अब चलेगा पेशकार साहब!"

कासिममिरज़ा की बात सुनकर पेशकार साहब के चेहरे पर थोड़ी-सी रौनक आई। उनके मस्तिष्क में जो गहरी चिंता भरी थी, उसका भार तनिक हल्का हुआ और वह मीठी दृष्टि से कोतवालसाहब के चेहरे पर देखते हुए बोले, "तो मैं विश्वास के साथ कदम बढ़ाऊँगा कासिममिरजा?"

"एकदम !" कोतवालसाहव बोले। "कलक्टर साहव के तबादले पर एस. पी. साहव जरा उछलरहे हैं। वह समझते हैं कि तुम कलक्टर के दम पर ही कूदते हो, परन्तु यह उनकी खामख़याली है। कलक्टर भी एक बड़ी शक्ति थी, परन्तु शक्ति का प्रयोग करनेवाले जो हथियार हैं वे सब तुम्हारे ही संकेत पर चलेंगे।"

"तो टक्कर भयंकर होगी। मैं पूरे अमले के अविकारों के लिए लड़रहा हूँ, यह आपको भूल नहीं जाना है।" पेशकार साहव वात को और दृढ़ करते हुए बोले।

"एक वार कहचुका पेशकारसाहव ! आप विलकुल बेफ़िक रहें। पूरा अमला आपका साथ देगा।" कोतवाल साहव बोले।

ठीक साढ़े आठ बजे पेशकार साहव कोतवाली से चलपड़े। उस समय उनका मस्तिष्क तनिकहल्का था और चिंता भी पर्याप्त कम थी, परन्तु कलक्टर साहव के तवादले का भयंकर आघात अभी अपने भारी प्रभाव को लिए ज्यों-का-त्यों उनके मस्तिष्क पर जमा बैठा था।

जिन कलक्टर साहव का तवादला होरहा था उनसे पेशकार साहव के सम्बन्ध अवश्य थे, परन्तु इतने नहीं थे कि वह चलतेसमय नए कलक्टर से उनकी सिफ़ारिश करजाते।

चाहिए। मैं तो अपने को आपका खादिम समझता हूँ।" लीले पहलवान बोला।

"उस्ताद हो अखाड़े के, खलीफ़ा ठहरे। अब तो तुम्हारा लँगोट घूमचुका है होगा मेरठ शहर में।" पेशकार साहब ने कहा।

"आपकी इनायत से अब उस्ताद लीले की मार को ओटनेवाला मेरठ में नहीं है। आज शाम को नौचन्दी के मैदान में एक जबरदस्त दंगल होनेवाला है। कुछ बनियों के नए लौंडों को भी पहलवानी का शौक चर्राया है।। मोटे पेटवाले सेठों ने उनके खाने-पीने का इन्तजाम कर दिया है। वे कुछ सिर उभारकर चलनेलगे हैं।" लीले पहलवान बोला।

पेशकार रामदयाल समझगए कि लीले पहलवान का मतलब पंडित रामखिलावन द्वारा संचालित अखाड़ों के पहलवानों से था।

इधर कुछ दिन से पेशकार रामदयाल देखरहे थे कि लीले पहलवान उनके पास रुपए की सहायता के लिए नहीं आया था। उसमें उन्हें कुछ रहस्य दिखाई देरहा था। उसी की जाँच-पड़ताल के लिए उन्होंने उसे बुलवाया था।

पेशकारसाहब ने सोचा कि लीले पहलवान यों ही शायद मन की बात न उगले। इसलिए मित्र-भाव से बोले, "तुम्हारा सामना ये लाले क्या खाकर करेंगे लीले पहलवान ? मूँग की दाल का पानी और चपातियाँ क्या जर्दा, पुलाव, क़ीमा, कबाब और जिगर की बोटियों का सामना करसकेंगे ?"

इतना कहकर पेशकार साहब ने गुलाब को शराब की बोतल लाने का संकेत किया। देखते-ही-देखते दो जाम लबालब भरगए।

"पीओ लीलेपहलवान ! तुमने आज तक हमारे साथ बैठकर कभी शराब नहीं पी। सुना है तुम पीने में कमाल रखतेहो। आखिर खलीफा ठहरे अखाड़े ..।" अपना जाम उठातेहुए पेशकार साहब बोले।

आज पेशकारसाहब की यह शराब की दावत प्राप्तकर लीलेपहलवान के दिल की पंखुड़ियाँ खुलगईं। उसे इतना सम्मान आज उसकी पहलवानी के कारणप्राप्तहुआ था। उसकी आत्मा खिलउठी। उसने कुछ झिझकते-झिझकते जाम हाथ में सँभाला और पेशकारसाहब ने अपना जाम उसके जामसे टकराकर मुस्कराकरकहा, "पीओ लीलेपहलवान, परन्तु यादरखना कि पेशकार रामदयाल के सामने बैठकर अगर पीरहेहो तो जीवन में मुझसे कभी बेईमान मतहोना।"

लीले पहलवान के दिल में मित्रता का उभार आगया और वह भी इतने

बड़े अफ़सर से मित्रता का; जिसके संकेत पर उसने मेरठ जिले को नाँचते देखा था।

"लीले पहलवान कल्लू नहीं है पेशकार साहब! यह जिसका नमक खाता है उसे हलालकरता हैं। लीलेपहलवान कभी दो जवान नहीं बोलता और फिर आपके तो क़दमों की खाक से लीले क़साई, लीले पहलवान, और लीले खलीफा बना है।" वह खाकसारी से बोला।

एक, दो, तीन, चार, पाँच, छै, सात, आठ, नौ, दस•••"बस।" लीले पहलवान ने झेंपतेहुए कहा, "और ताकत नहीं है पेशकार साहब! जवान लड़खड़ानेलगी।"

पेशकारसाहब मुस्कराकरबोले, "कमाल करदिया तुमने लीलेपहलवान! दस पेग तो वह मरा सा हमारा अंग्रेज एस. पी. ही लेलेता था। इतने में ही लड़खड़ाउठे। चलो खैर, एक पेग तो और लो।" पेशकार साहब ने अपने हाथ से पेग भरदिया।

गुलाब पास में बैठी मुस्करारही थी। वह पेशकार साहब के पास को सिमटतीहुई बोली, "पेशकारसाहब! आप भी बस कमाल ही करते हैं। बेचारे लीलेपहलवान को क्या आप चाहते हैं कि वह गुलाब के जीने पर ही लुढ़कता फिरे?"

गुलाब की बात सुनकर लीलेपहलवान को तनिक कुछ जोश सा आगया। वह अपनी साफ मूंछों पर झूँठा हाथ फेरतेहुए बोला, "हुस्नोअदा की मलका गुलाब! अभी लीले पहलवान मदंहोश नहीं हूआ है। तुम्हारे जीने पर तो वह बिना लड़खड़ाए जितनीबार हुक्म करो चढ़ और उतरसकता है।"

"इसमें क्या शक है।"पेशकारसाहब बोले। "लीलेपहलवान, हमने सुना है तुम्हारी हमारे जिले के नए एस० पी० साहब से भी भेट होचुकी है। बड़े ही रहमदिल अफसर हैं। हमारे जिले का भाग्य है कि उन जैसा अफ़सर हमारे जिले को मिला है।"

पेशकाररामदयाल के बात कहने के लहजे को न समझतेहुए शराब के नशे में हल्के दिमाग़ से लीलेपहलवान बोला, "आपने बिलकुल सच फ़रमाया पेशकार साहब! पिछले जुम्मे की नमाज़ में मस्जिद के मौलवी ने मुझे बुलाया था। खुदा की क़सम वह दूसरा या तीसरा मौक़ा था मस्जिद में जाने

का। बड़ी मुश्किल से इधर-उधर देखते-देखते नमाज़ का वक्त काटा। लेकिन नमाज़ के बाद जब मौलाना ने साहबबहादुर से मेरी मुलाकात कराई, तो बस मजाआगया।"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं," पेशकार साहब बोले। "साहब बहादुर से मिलकर तो मजा आना ही चाहिए था। ऐसा आला इन्सान आज तक मेरी नजर के सामनेनहीं आया।" पेशकारसाहब बोले।

"आप बिलकुल बजा फरमाते हैं पेशकारसाहब! साहब को जब यह बतायागया कि मेरी खलीफ़ाई में मेरठ के कब्रिस्तानों के अन्दर पन्द्रह अखाड़े चलरहे हैं और दो-ढाई सौ पट्ठे तय्यार हैं,तो उन्होंने बड़ी मीठी नज़र से मेरी तरफ़ देखा और वायदा किया कि वह मेरे अखाड़ों की पूरी इमदाद करेंगे।"

"बहुत खूब, बहुत खूब! अफ़सरों के ये ही तो काम होते हैं।" कहकर पेशकारसाहब के चेहरे का रंग बदलगया। परन्तु उसे भाँपलेना लीलेपहलवान और गुलाब के लिए असम्भव था।

करीमखाँ को पेशकार साहब ने यहाँ आते ही अपने क्वार्टर पर किसी काम से भेजदिया था। जब वह लौटा, तो लीले पहलवान नशे में चूर हो चुका था। जितनी शराब उसने आज पीथी उतनी पीने की उसमें शक्ति नहीं थी। पहले कभी पी भी नहीं थी, उसने इतनी शराब।

करीमखाँ को देखकर पेशकार साहब बोले, "करीमखाँ! लीले पहलवान को ज़रा इसके अखाड़े पर डालआओ और फिर वहाँ से सीधे हमारे घर चलेजाना। छोटे भाई से कहदेना कि हम आज रात को नहीं आएँगे।"

लीले पहलवान को बड़ी कठिनाई से नीचे उतरकर ताँगे पर डालागया। खाड़े में पहुँचने पर करीमखाँ को अधिक कठिनाई नहीं हुई। दस-पाँच पट्ठों ने उसे ताँगे से उतारकर अखाड़े की नरम मिट्टी पर डालदिया।

पेशकार साहब का मस्तिष्क अब काफ़ी हल्का होगया था। उन्हें अपने एस० पी० साहब की पूरी कारगुजारियों का चिट्ठा मिलचुका था। साहब के राज़ का हर पत्ता अब पेशकाररामदयाल के सामने खुलापड़ा था। पेशकार साहब अब इस फ़िराक में थे कि इन ताशों में किस पर कौनसी तुरुप लगाई जाए। तुरुपें उनके पास पर्याप्त थीं और बाजी भी उनकी कुछ कम मजबूत नहीं थी, परन्तु फिरभी बादशाह एस० पी० साहब के हाथ में था। कलक्टरसाहब

का यवका अभी तक़सीम होना शेष था। उसकी दोनों प्रतीक्षा कररहे थे।

पेशकार रामदयाल अपने को एस० पी० साहब से अधिक गहरे पानी में समझते थे। इसीलिए उनका मस्तिष्क अब और भी हल्का होचुका था।

वह एक मीठी दृष्टि से गुलाब को देखतेहुए बोले, "भर क्यों नहीं देती गुलाब! अब किस का इन्तजार है? तू और मैं, बस ये ही तो दोनों रहगए हैं अब! एक बीमार औरत हम दोनों के बीच में थी बेचारी, उसे भगवान् ने उठा लिया।"

गुलाब ने पेशकार साहब का गिलास भरदिया और उनके पास सटकर बैठतीहुईबोली, "आप दिल को दुखाने की बातें न कियाकरें पेशकार साहब! गुलाब के रास्ते में कोई भी क्यों न आए, गुलाब एक खानदानी पेशेवर है। वह किसी का बुरा नहीं मानती वह तुम्हारी व्याहता औरत थी। उसका तुम पर पूरा-पूरा हक़ था मैं उसकी इज्जत करती हूँ।"

"तू बड़ी नेकदिल औरत है गुलाब!" प्यार से गुलाब के चेहरे पर दृष्टि डालकर पेशकारसाहब बोले। "औरत नाम की मेरे दिल, दिमाग और जीवन में अब यदि कोई चीज़ शेष है तो वह गुलाब ही है, गुलाब!" गुलाब की आँखों में झाँकतेहुए पेशकारसाहब बोले।

"यह आपकी कृपा है पेशकार साहब!"

"पेशकार रामदयाल के जीवन में अब रखाही क्या है गुलाब? सूखी पड़ी बंजड़ भूमि है। कोई पौदा नहीं उगा उसमें। कोई रस की धार नहीं वही उसमें जो उसे सींचकर उपजाऊ बनादेती। एक तू ही तो ऐसा सरोवर है जिसके किनारे बैठकर मैं अपने सूखे हलक़ को तर करलेता हूँ।"

"मेहरवानी समझती हूँ मैं तो यह आपकी। अपना कहने को मेरे पास भी तो कोई औरनहीं है। यह हवेली बनवादी है आपने। इसीके किराए से खर्चा चलरहा है। कुछ पुराने मिलनेवाले, जो हुनर की दाद देते हैं, चलेआते हैं वरना बाज़ार तो एकदम ठप्प होगया है नाँचने-गाने का।" दिल में दर्द लेकर गुलाब ने कहा।

"आखिर ऐसा क्यों हुआ?" पेशकार साहब ने पूछा।

"सुना है पुलिस के नए साहब ने इस बाजार को उजाड़देने का बीड़ा उठायाहुआ है। वह कहते हैं कि हम लोग हूरें नहीं हैं, हूरें जन्नत में रहती

हैं।" गुलाब बोली।

"जन्नत की हूरें ख्वाब की हूरें हैं गुलाब! असल हूर तो तुम ही हो। तुम्हारा काम चलताहीजाएगा। अभी पिछले महीने हमने सेठ दामोमर-प्रसाद से तुम्हें अच्छी-खासी भेंट दिला दी थी कोतवाल हातमसिंह के लड़के की शादी में और आगे भी इसी प्रकार कुछ-न-कुछ कराते ही रहेंगे।"

पेशकारसाहब का आश्वासन पाकर गुलाब के गुलाबी चहरे पर रौनक आगई। वह मुस्कराकर अन्दाज़ से बोली, "आपके सहारे से तो मेरठ में बैठी ही है गुलाब! उसका यहाँ है ही कौन हैं आपके अलावा।"

"ऐश किएजाओ गुलाब! पेशकार रामदयाल का साया तुम्हारे सर पर है। किसी की क्या मजाल जो आँख भरकर भी इधर देखसके।"

उस रात्रि को पेशकार साहब गुलाब के हीं कमरे पर रहे। गुलाब के मकान पर पेशकारसाहब अक्सर रहजाते थे। यों रह तो वह तबभी जाते थे जब उनकी पत्नी बीमार थी, या मेरठ में आईही नहीं थीं, परन्तु उनका देहान्त होने के पश्चात् तो वह अवसर वहाँ ठहरजाते थे।

गुलाब ने एक कमरा पेशकार साहब के लिए सजाकर रखछोड़ा था। कमरेमें एक निवाड़का तकियेदार पलंग पड़ारहा था और उसपर मखमल के दो तकिए। कमरे की दीवारों पर कुछ साबुन, तेल, क्रीम, पाउडर इत्यादि के नंगे कलेण्डर टंगे थे और कुछ फ्रेम कीहुई नंगी मेमों के तस्वीरें। एक छोटा-सा भाड़ फ़ानूस भी गुलाब ने उसके बीचों-बीच टँगवादिया था। कमरे में इत्र की खुशबू हर समय भरीरहती थी। पलंग के तकियों और चादरों में तो मानो [illegible]रमहीगई थी।

पलंग के दोनों ओर दो पीकदान रखेरहते थे और एक छोटी-सी तिपाई पर चाँदी का पानदान। एक लखनऊ की फ़रशीथीजिसकी पेचदार लम्बी नै खूंटी पर टंगीरहती थी। जिस दिन पेशकार साहब वहाँ सोते थे उसदिन गुलाब कमरे का मुजरा बन्द करदेती थी और पेशकार साहब के शौक की सब चीजें स्वयं पेश करती थी। यहाँ तक कि उनकी फ़रशी को ताजा करने और उसपर चिलम भरकर रखने का काम भी वह नौकरानी से नहीं कराती थी।

इधर-उधर के कामों का भार वह बूढ़ी नौकरानी को सौंपकर कहती थी, "अम्मीजान! ज़रा बाजार से जाकर बढ़िया किस्म का तम्बाकू और

पान तो लेआओ। और हाँ, उस लखनऊवाली तम्बाकू की दूकान से बढ़िया वाला ज़र्दा भी लेतीआना। इत्र की शीशी का इत्र खत्म होगया हो तो आधा तोला वह भी लेतीआना और खाने के लिए कुछ बढ़िया नमकीन लाला के बाजार से लाना।"

बूढ़ी अम्मी जिस-जिस दुकान पर भी सौदा खरीदनेजाती थी उसीका मालिक मुस्कराकर पूछता था, "क्या आज शायद पेशकारसाहब गुलाब बाई के मेहमान हैं ?"

अम्मीजान भी मुस्कराकर उत्तर देती थीं, "खुदा का करम हैं। इक़बाल है गुलाब का और आप सब की दुआ है।"

"बनीरहे गुलाब, अम्मी जान ! हम तो यही मानते हैं। गुलाब के दम पर हमारी दुकानों की रौनक है। खुदा उसके हुसन को बनाएरखे।" लखनवी तम्बाकूवाले ने कहा।

"गुलाब की बदौलत शौक की चीजें मँगालेते हैं अम्मीजान ! वरना इतना कीमती इत्र खरीदने का किसका कलेजा है मेरठ शहर में ?" इत्र-फ़रोश ने कहा।

"यह बढ़िया देसीपानों की ढोली गुलाब के लिए ही लाता हूँ अम्मीजान! वरना ये पान खाने का किसका मुँह है मेरठ में ?" पान की दूकान वाले ने जरा अंदाज के साथ कहा।

हलवाई तराजू सँभालताहुआ कहता, "अम्मीजान, आज वह नमकीन बनाया है कि पेशकारसाहब को भी खाकर मजा आजाएगा। थोड़ा और लेतीजाओ -वरना इस बुढ़ापे में तुम्हें फिर आनापड़ेगा।"

"बस इतना ही तौलदो लाला ! मुझे गुलाब की खातिर अगर दस बार भी आना होगा तो आने में मुझे खुशी ही होगी।" मुस्करातेहुए अम्मीजान ने कहा।

पेशकार साहब ने कमरे में प्रवेशकर गुलाब की साड़ी खूंटी से उतारी और उसीका तेहमद मारकर सब कपड़े उतारदिए और फिर ठाठ से पलंग पर बैठकर पलंग पर रखेहुए दोनों मखमली तकियों को अपनी गोद में रखतेहुए ज़रा कमरे में इधर उधर देखा। नंगी तस्वीरों पर उनकी दृष्टि पड़ी तो आनंद आगया शराब की खुमारी में।

उन्हें देखकर पेशकार साहव ने गुलाव की ओर देखा तो कपड़ों की रुकावट ने उनके मस्तिष्क में हल्की-सी झुँझलाहट पैदाकरदी।

उन्होंने मेज पर रखी शराव की वोतल उठाई और उसे अपने गिलास में उड़ेलकर घूँट भरकर गुलाव से कहा, "गुलाव ! सच वताओ तुम मेरे दिल की राहत हो यह शराव।"

फ़रशी पर चिलम टिकातेहुए मुस्कराकर गुलाव ने उत्तर दिया, "दिल की वात को ज़वान पर न लाइए पेशकार साहव ! दिल की वात का जवाव दिल को ही देनेदीजिए।"

"खूब कहा तुमने गुलाव !" गुलाव की नाजुक क़लाई पकड़कर उसकी ठोड़ी से चेहरे को ऊपर उठातेहुए पेशकारसाहव वोले, "कमाल करदिया तुमने। क्या वात कहती हो तुम भी ? अपना जवाव नहीं रखतीं तुम।"

पेशकारसाहव की दृष्टि फिर शराव की वोतल, कमरे की दीवारों पर टँगी हुस्न की परियों के चित्रों और गुलाव पर गई। दृष्टि टिकीरही तीनों पर कुछ-कुछ देरतक।

गुलाव मुस्करारही थी पेशकार साहव की दृष्टि में अपनी दृष्टि डालकर फिर जोर से खिलखिलाकर हँसपड़ी और वड़े आदर के साथ वोली, "पेशकार साहव ! यह पुलिस की नौकरी नहीं है, यह दिल की गुलामी है। यह गुलामी गुलामी है, जिसमें मन आजाद परिन्दों की तरह उड़ानें भरता है परन्तु यह चलता जिन्दगी की हरकतों पर ही है। शराव और इन नंगी तस्वीरों का हुस्न खामोश है, वेजान है, और गुलाव का हुस्न वोलता है, मुस्कराता है, नाचता, गाता और इठलाता है।"

गुलाव ने मुस्कराकर शरीर पर पहनाहुआ कपड़ा उतारकर फेंकदिया। वह फिर अन्दाज के साथ पेशकार साहव की ओर वढ़ी और ज्यों-ही पेशकार साहव ने अपना हाथ गुलाव की ओर वढ़ाया वह पीछे हटगई। उसने वहुत धीरे से फुसफुसाया, "अम्मीजान आरही हैं।" इतना कहकर दूध के उफान पर पानी का छींटा मारदिया गुलाव ने और झट चोली पहनली।

पेशकार साहव भी जरा सँवरकर वैठगए।

"क्या-क्या लेआईं अम्मीजान ! मेरे आनेसे आपको वड़ा कष्ट करना पड़जाता है।" पेशकार साहव वोले।

"ऐसी तकलीफ खुदा रोज़ दे मुझे बेटा ! तुम्हारी और गुलाब की खुशी ही मेरे दिल की राहत छिपी है।"

अम्मीजान सब चीजें देकर अपने कमरे में चलीगईं । उसके बाद फिर राब का दौर चला और दोनों ने जीभरकर शराब पी ।

कौन जाने कब, कैसे और कितनी मदहोशी में दोनों को नींद आई ।

: २० :

एस.पी. हामिदअलीसाहब की आज्ञा का पालन करने में पेशकाररामदयाल भी एक मिनट नहीं लगाते थे । इधर उनकी ज़बान से कोई बात निकली और उधर उन्होंने उसे पूरा किया । किसी बात में भी उन्हें पेशकाररामदयाल कोई शिकायत का अवसर नहीं देते थे ।

ज़िले के नए कलक्टरसाहब से जब हामिदअलीसाहब की पहली भेंट हुई तो उसी में उनकी नाक-भों चढ़गईं । उनके मस्तिष्क में अंग्रेजित की बू थी । आदमी के मुँह पर मूँछ दाढ़ी का जमघट उन्हें क़तन पसंद नहीं था । हिन्दुस्तानी अफसर को भी वह सहन नहीं करसकते थे । हिन्दुस्तानी का दर्जा उनकी दृष्टि में कोतवाल से ऊपर नहीं था ।

हामिदअलीसाहब की गुप्फेदार दाढ़ी को देखकर उनके माँथे पर सिलवटें पड़गईं । उन्होंने उनसे सीधे माथे बातें करना भी पसन्द नहीं किया ।

हामिदअलीसाहब कोरा सलाम झुकाकर अपने बँगले को लौटआए । उन्हें इसमें शंका दिखाईदेनेलगी कि वह कलक्टरसाहब को अपने हाथोंकी कठपुतली बना सकेंगे । आज उनका चेहरा जरा उतरा हुआ देखकर पेशकार रामदयाल बोले, "आज कुछ तबीयत नासाज मालूम देती है सरकार की । मिजाज़ तो नाखुश नहीं है आपके दुश्मनों ।"

"कोई खास बात नहीं है ।" माथा चढ़ाकर हामिदअलीसाहब बोले । "आज हम ज्यादा देर तक दफ्तर में नहीं ठहरेंगे । जरूरी कागज़ों पर

दस्तखत करालो ।"

पेशकार साहब ने ज़रूरी फ़ाइलें उनके सामने रखतेहुए पूछा, कलक्टर साहब से मुलाक़ात हुई हुज़ूर ! नए साहब कैसे दिमाग के मालूम दिए आपको ?"

"मुझे अभी उधर जाने की फ़ुर्सत ही नहीं मिली ।" दस्तखत कर हामिदअली साहब बोले ।

पेशकार रामदयाल को कलक्टर साहब के बँगले पर उनके जाने की सू करीमखाँ ने लादी थी । उनका दिल अन्दर-ही-अन्दर मुस्कराउठा और समझगए कि अवश्य कोई विशेष बात थी । शायद कलक्टरसाहब से एस. साहब का याराना पटने की बात नहीं बनसकी ।

दो चार दिन में कलक्टर साहब और एस. पी. साहब की एक दो झड़ भी सुनने में आई । कलक्टर साहब की कोठी के अर्दली पेशकार रामदयाल के अपने आदमी थे । वहाँ यदि पत्ता भी हिलता था तो उसकी भी सूचना उनके पास आजाती थी ।

. हामिदअली साहब को अपनी अफ़सरी पर धीरे-धीरे क्रोध आनेलगा । वेतन में थोड़ी उन्नति अवश्यहुई थी, परन्तु ऊपर की आमदनी एकदम समाप्त होगई थी । सादा-से-सादा रहने पर भी एस. पी. की शान तो उन्हें निभानी ही होती थी ।

कलक्टरसाहब के इस रुख ने उनका साहसपस्त करदिया था । उनके मन मे जो उत्साह था कि कलक्टर साहब को हाथों में लेकर एक बार ज़िले की पूरी पुलिस में परिवर्तन करडालेंगे, वह बात काफ़ूर होगई ।

नए कलक्टर साहब की मेमसाहब की मेरठ के उन पुराने एस. पी. साहब की मेमसाहब से मित्रता थी जिनकी विशेष कृपा-दृष्टि से दीवान रामदया पेशकार बने थे । उन एस.पी. साहब की उन रंगीन मेमसाहब ने इन कलक्ट साहब की मेमसाहब को एक बार नौचन्दी के मेले पर बरेली से बुलाया भी । वह यहाँ कई दिन ठहरी थीं ।

कलक्टर साहब, एस. पी. साहब और दोनों की मेम साहबों को पेशकार रामदयाल ने बहुत बढ़िया शराब पिलाई थी । वह बात नए कलक्टर साहब की मेमसाहब को याद थी । उन्होंने कोठी के बैरे को बुलाकर पूछा

"वैलवेरा ! टुम जानटा ऐ, एक पेशकार रामडेयाल ओटा टा मेरट में । ओ ऐ या कहीं वाहर चेलागेया ?"

"पेशकारसाहव अभी यहीं हैं मेमसाहव !" वैरे ने कहा । "आपकी आज्ञा हो तो उन्हें बुलाआऊँ ।"

"वेल, टुम इशी वक्ट जाकर बुलालाओ पेशकार रामडेयाल को । अम उश आडमी को वोट पेशंड करटा ऐ । ओ वरा काम का आडमी ऐ ।" मेम साहव बोलीं ।

कलक्टरसाहव का वेरा सीधा कचहरी में पेशकार रामदयाल के पास पहुँचा तो वहाँ के अर्दलियों ने उसका शानदार स्वागत किया और उसे अन्दर पेशकारसाहव के पास लेगए ।

हामिदअली साहव आवश्यक फ़ाइलों पर हस्ताक्षर करके अपने फ़ाउन्टेन-पेन की टोपी लगारहे थे । उसीसमय उनकी दृष्टि कलक्टरसाहव के वैरे पर पड़ी उन्होंने उसकी ओर देखतेहुए पूछा, "तुम यहाँ कैसे आए हो ? क्या कलक्टर साहव का कोई हुक्म है ?"

"जी नहीं हुजूर !" सम्मान प्रदर्शित करतेहुए वैरे ने कहा, "कलक्टर साहव की मेमसाहव ने पेशकारसाहव को याद फ़रमाया है ।"

कलक्टर के वैरे के ये शब्द हामिदअलीसाहव के दिल पर तीर की तरह लगे, परन्तु ऊपर से मुस्कराहट उनके होठों पर नाँचउठी ।

"वड़े रसूख वनाएहुए हैं तुमने भी पेशकार रामदयाल !" हामिदअली साहव बोले ।

"वनाए क्या हुए हैं सरकार ! मैं तो सेवा करता हूँ अफ़सरों की । इसलिए याद करते हैं वे । अव आपकी ही मातहती में आपकी जो सेवा कररहा हूँ इसे क्या आप कभी भूलजाएंगे ? वड़े लोग अपने सेवकों की सेवा को कभी नहीं भूलते ।"

पेशकार रामदयाल के कटु-व्यंग्य ने हामिद अली साहव के दिल को मसोसकर रखदिया । वह तुरन्त वहाँ से उठकर चलेगए ।

कलक्टर साहव के वैरे के लिए पेशकार साहव ने वरावर के होटल से चाय और विस्कुट मँगवाए और फिर प्यार से पूछा, "मुझे मेम साहव ने किसलिए वुलाया है?"

"यह तो पता नहीं सरकार ! परन्तु वह आपका नाम जानती हैं।"

"नाम जानती हैं तो..............।" पेशकारसाहव ने अपने मस्तिष्क पर ज़ोर देतेहुए कहा, 'हों-न-हों यह वहीं मेमसाहब हैं, जिन्हें छै वर्ष पूर्व नौचंदी के मेले पर मैंने शराब पिलाई थीं।'

पेशकार रामदयाल का मन नाँचउठा और उन्होंने उसी समय मुंशी को बुलाकर आवश्यक कागज़ उन्हें सौंपतेहुए कहा, "मैं कलक्टर साहव की कोठी पर जारहा हूँ। मुझसे वाद में किसी को कोई फ़ाइल दिखाने की आवश्यकता नहीं है। ध्यान रखना इस बात का।"

वहाँ से पेशकार रामदयाल ! अपने क्वार्टरपर पहुँचे और हरदयाल से बोले, "हमारे ट्रंक में से धुलाहुआ कोट, पायजामा, कमीज़ और भागलपुरी साफ़ा निकालआओ। जूते पर दो हाथ पालिश के मारदो और हाँ, इससे पहले ज़रा भाई करीमखाँ को बुलालाओ।"

करीमखाँ वर्दी पहिने ड्यूटी पर जाने को तय्यार खड़ा था, परन्तु पेशकार रामदयाल का संदेश पाकर ड्यूटी रखीरहगई। उनकी चौकी का दीवान करीमखाँ को कभी एक शब्द नहीं कहता था, वल्कि उल्टी उसकी खुशामद ही करता था।

"करीमखाँ ! ज़रा कम्बोगेट से जाकर एक दस रुपए के बढ़िया से फल तो लेआओ और एक बोतल शराव की भी लेतेआना। फल ज़रा उम्दा क़िस्म के लाना। कलक्टरसाहव की मेमसाहव को पेश करने हैं।" पेशका रामदयाल ने कहा।

करीमखाँ उछलपड़ा पेशकाररामदयाल की बात सुनकर। वह रुपए हा में लेताहुआ बोला, "तो यह वर्दी उतारडालूं ना ? डाली लेकर भी त चलना होगा मुझे ?"

"उतारडालो करीमखाँ ! और ऐसे लौटो जैसे गए ही नहीं थे।"

"बस गया और आया।" करीमखाँ बोला।

पेशकार रामदयाल ने स्नान करके ज़रा क़रीने से नए क़लफ़ किएहु कपड़े पहने और सिरपर भागलपुरी रेशम का साफा बाँधा। पैरों में पालिश कियाहुआ बूट पहनकर वहज्यों ही तय्यारहुए कि करीमखाँ सब सामान लेक सामने खड़ा था।

वह मुस्कराकर बोला, "देर तो नहीं हुई पेशकारसाहब !"

"ठीक समय पर आगए। मैं अभी-अभी तय्यार होकर खड़ाहीहुआ हूँ।"

सड़क पर जातेहुए एक ताँगेवाले को आवाज देकर करीमखाँ बोला, "अबे, जरा इधर तो आ। कलक्टर साहब की कोठीपर जाना है।"

ताँगेवाला रुकतोगया परन्तु बड़ा भयभीत था वह।

ताँगेवाले का बिगड़ा हुआ हुलिया देखकर पेशकार रामदयाल उसके मन की तलावेली को समझगए। उन्होंने फौरन जेब से एक रुपए का करारा नोट निकालकर उसके हाथपर रखतेहुए कहा, "किराया पहले ले कम्बख्त के बच्चे ! तू नहीं जानता कि पेशकार रामदयाल कभी किसी ताँगेवाले से बेगार नहीं लेते। वह कभी किसी गरीब मजदूर को नहीं सताते।"

ताँगेवाला काँपगया एक रुपए के नोट को देखकर। आठ आने की जगह एक रुपया कोई पुलिसवाला देसकता है, यह उसके जीवन में पहली घटना थी। वह गिड़गिड़ाकर बोला, "हजूर मेरी खता क्षमाकरदें। एक रुपया मैं नहीं लूँगा। मेरा आठ आने का रेट है।"

पेशकार साहब को उसकी दशा देखकर हँसीआगई। करीमखाँ ताँगेवाले की कमर थपथपातेहुए बोला, "अबे सरकार से भला कब-कब इनाम मिलता है ? आठआने तेरी मेहनत के और आठआने तेरे इनाम के। सलाम करले पेशकार साहब को।"

ताँगेवाले ने अदब के साथ एक लम्बा सलामझुकाया और एकरुपए के नोट को चुचकारकर मरोड़ीदेतेहुए 'तेहमद की आँटी में उनसलिया।

ताँगा मेरठ का छँटाहुआ था। पेशकार साहब के बैठतेही कोचवान ने घोड़े को टिटकारी दी और घोड़ा हवासे बातेकरनेलगा।

पेशकार रामदयाल कलक्टरसाहब की कोठीपर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि एस. पी. हामिदअली साहब बाहर आरामकुर्सी पर बैठे कलक्टर साहब की अन्दर से आनेवाली बुलाव की प्रतीक्षा कररहे थे।

पेशकार रामदाल ने हामिदअली साहब को सलाम किया और अर्दली को अपने आने की सूचना देकर मेमसाहब के पास भेजा।

हामिदअलीसाहब वहीं आरामकुर्सी पर बैठरहे और पेशकार रामदयाल कोठी में चलेगए।

मेमसाहब को देखते ही पेशकार साहब ने पहचानलिया। उन्हें वह बात भी यादआगई कि किस तरह उन्हें शराब के नशे में चित्त देखकर उन्होंने अपने दोनों हाथों में उठालिया था और फिर नौचन्दी के कैम्प में पड़े स्ट्रेचर पर लिटाया था। पेशकार रामदयाल को याद आया कि मेम साहब का बदन कैसा फूल-जैसा हल्का और मुलायम था। उसमें आज भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। वह उतना ही आकर्षक था।

मेम साहब दीवान रामदयाल को देखकर मुस्करातीहुई बोलीं, "वेल पेशकार रामडेयाल, तुम अब टक मेरट में ई बेना ऐ। हम शमजटा टा कि टुमारा टेवाडला ओगेया ओगा।"

"तबादले तो हुजूर बड़े अफ़सरों के होते हैं। मेरे जैसे सेवकों का तबादला करने से सरकार को क्या लाभ ? जो सेवा सरकार और सरकारी अफसरों की मैं यहाँ रहकर करसकता हूँ वह बाहर जाकर नहीं करसकता। यहाँ की सब चीज़ें मैं जानता हूँ। नए साहब को यहाँ आने पर कोई कष्ट मैं नहीं होने देता।" पेशकार रामदयाल ने अदब के साथ कहा।

"टुमारा टारीफ़ अमको अमारा एस. पी. शाब का मेमशाब ने बोला टा। बरा तारीफ़ करटा टा टुमारा।" मेमसाहब ने कहा।

"हुजुर जीवन व्यतीत करदिया साहब लोगों की सेवा में। आप लोगों की ज़रूरतें मैं सब जानता हूँ। नए आदमी से आप हिल-मिल भी तो नहीं सकतीं।"पेशकारसाहब बोले।"

"टुम बिलकुल टीक केटा ऐ पेशकार रामडेयाल। अम बोट कम आडमी शे बोलटा ऐ। अम अपना शब काम टुमरा शुपर्ड करेगा।"

"सेवक उसे बजालाने के लिए चौबीसों घंटे तय्यार रहेगा। आप अपनी हर आवश्यकता के लिए सेवक को याद फरमाएँ।" पेशकार साहब ने कहा।

कोठी के बरांडे में बैठे-बैठे एस० पी० हादिमअली साहब उकतातेजारहे थे और कलक्टर साहब बाथ-रूम में स्नान कररहे थे।

कलक्टरसाहब को नहाने का बहुत शौक था। वह बाथ-रूम से एक घंटे से कम में नहीं निकलते थे। एस० पी० साहब के आने से दो मिनट पूर्व ही वह बाथ-रूम में गए थे।

पेशकार रामदयाल मेमसाहब को डाली पेश करतेहुए बोले, "यह कुछ

ख़ादिम की सौग़ात है मेमसाहब के लिए।"

"वेल-वेरा, पेशकार रामडेयाल का शौगाट लेलो। अम इशे वोट कुशी शे कबूल करटा ऐ। टुम अमशे रोज़ाना मिलटेरहा करो पेशकार रामडेयाल!"

"जो आज्ञा सरकार की।" कहकर पेशकार साहब ने विदाली।

कोठी से वाहर निकलकर पेशकार साहब ने एक वार एस० पी० हामिद अलीसाहब को दुवारा सलाम किया और फिर वाहरखड़े ताँगे में जाकर वैठ गए। पेशकारसाहब के वैठते ही घोड़ा हवा होगया।

पेशकार रामदयाल की प्रसन्नता का अब कोई पारावार नहीं था। मार्गमें उन्होंने करीमखाँ को पाँच रुपए का नोट देकर ताँगे से उतारतेहुए कहा, "लो करीमखाँ! दो रुपए की मिठाई हमारी भाभी के लिए और तीन रुपए की मिठाई हरदयाल को देदेना, हमारे क्वार्टर पर। मैं गुलाव के पास जारहा हूँ इससमय।"

करीमखाँ ताँगे से उतरगया और पेशकार साहब ने ताँगेवाले को कन्ट्रो-गेंट के अन्दर जाकर वैली वाज़ार के ठीक वीचों-वीच ताँगा रोकने की आज्ञा दी। वह गुलाव के मकान के नीचे ताँगे से उतरे।

ताँगे से उतरकर पेशकार साहब ने ताँगेवाले को एक रुपया और दिया। ताँगेवाला यह देखकर दंग रहगया। पुलिस का यह पहला व्यक्ति उसकी दृष्टि में आया था जिसने उसे किराया दिया था।

गुलाव पेशकार साहब का चेहरा देखकर वोली, "आज तो जरूर कोई वड़ा काम करकेआए हैं पेशकार साहब।"

"वड़ा नहीं गुलाव! जीवन में आजतक जितने भी कमाल किए हैं, उन सब से आज का काम वाजीलेगया। परन्तु सच वात यह है कि इसमें मेरा कमाल कुछ नहीं है। मेरी सचाई और ईमानदारी को देखकर परमात्मा स्वयं मेरी सहायता के लिए किसी-न-किसी रूप में आखड़ा होता है।"

"सच्चे इन्सान की खुदा जरूर मदद करता है पेशकार साहब!" गुलाव पेशकारसाहब के सामने मूढ़े पर वैठतीहुई वोली और अम्मीजान से कहा, "अम्मीजान! जरा चाय तो वनालो और वाहर से थोड़ा नमकीन भी ले आओ और हाँ! ताजे पान भी लेतीआना।"

अम्मीजान के कमरे से वाहर निकलते ही पेशकारसाहब

पकड़तेहुए बोले, "नमकीन क्या तुम कुछ कम हो जो बाजार से मँगारही हो गुलाब ! मुझे तो तुमसे नमकीन ज़माने में और कुछ नहीं लगता ।"

"मेरा नमक अब फीका पड़ताजारहा है पेशकार साहब !"

"पड़ताजारहा होगा किसी के लिए । पेशकार रामदयाल के लिए तो जो नमक गुलाब में हैं वह और किसी चीज में नहीं है ।"

"तो आज कौनसा क़िला फ़तहकरके आरहे हैं, ज़रा गुलाब भी तो जान ले ।" गुलाब ने एम अदा के साथ पूछा ।

पेशकार रामदयाल अपने दिल की बात किसी पर व्यक्त करना अपनी दुर्बलता समझते थे । वह बात की दिशा बदलतेहुए बोले,"जरा यह तो बताओ कि कोई आया तो नहीं था यहाँ मुझे पूछने के लिए ?"

"आज तो कोई नहीं आया ।"

"तब फिर मुझे ही जानाहोगा ।" पगड़ी सँभालतेहुए पेशकार साहब गम्भीरतापूर्वक बोले ।

"ज़रा ठहरिए, ऐसी भी । क्या जल्दी है ?कोई मेल-ट्रेन तो छूटी नहीं जा रही है । अम्मीजान चाय का पानी रखकरगई हैं । आती ही होंगी ।"

पेशकार साहब ने यूंही बात को रिला-मिला दिया और गुलाब की भी उसे जानने की उत्कंठा जातीरही । चाय पीकर पेशकार साहब सीधे कोतवाली पहुँचे और कासिम मिरज़ा से मिले तो उन्होंने जाते ही पेशकार साहब, को [illegible] में भरलिया । फिर हँसतेहुए बोले, "पेशकार साहब ! कमाल कर [illegible] आपने । चारोंख़ाने चित्त मारा बेचारे एस० पी० साहब को । सुना है कलक्टरसाहब के बँगले पर बेचारे पूरे पचपन मिनट बैठकर चलेआए और साहब बाथ-रूम से ही नहीं निकले ।"

"क्या सच है यह बात ?" आश्चर्य प्रगटकरतेहुए पेशकार साहब बोले ।

"हमसे बनने की कोशिश मत करो पेशकार साहब ! यह सब तुम्हारी ही करामात है । आख़िर तुमने ऐसी क्या पट्टी पढ़ादी मेमसाहब को?"कासिम मिरज़ा ने कुर्सी पर बैठतेहुए पूछा ।

पेशकार साहब भी सामने पड़ी कुर्सी पर बैठगए और बैठकर बोले "पहले यह बताओकि क्या पिलवाओगे,तब गाड़ी आगेबढ़ेगी । गुलाब से मैं कह आया हूँ कि आज कासिममिरज़ा आनेवाले हैं । वह आम मुजरा बन्दरखे । आज

के चमत्कार की प्रसन्नता में मुजरा मेरी ओर से और शराब आपकी ओर से चलेगी; बोलिए है मन्जूर ?"

"मंजूर है भाई, मंजूर है। तुम्हारी बात नामंजूर करके क्या हमें मेरठ से अपना टिकट कटाना है ?"

"ऐसी बात कहोगे कोतवाल सहाब ?" आँखें तरेरकर पेशकार रामदयाल बोले, "छोटा भाई हूँ आपका ! बड़ा बनने का दावा भी कभी नहीं करूँगा। आपकी शहर-कोतवाली में मैं अपने को मेरठ शहर का मालिक समझता हूँ।"

'समझते क्या हो पेशकारसाहब, आप हैं भी मेरठ शहर के मालिक। शहर के ही नहीं आप तो जिलेभर के मालिक हैं बाबा! आपके इशारे के बिना तो जिले में पत्ता भी नहीं हिलसकता। एस० पी० हामिदअलीसाहब ने आपसे बिगाड़खाता करके अपने पैरों में खुद कुल्हाड़ी मारली।"

"आदमी की हाविस की भी कोई हद होनीचाहिए कोतवाल साहब ! वरना तो फिर दुनियाँ से टक्कर-ही-टक्कर लेने की बात है। एस० पी० होने का यह मतलब नहीं कि पूरा पुलिस-विभाग इनके बाप का नौकर होगया है। पुलिस का हर आदमी इन्हें अपना अफ़सर समझसकता है, बाप नहीं मान सकता। हमें यदि गुलामी ही करनीहोती तो किसी लाले की नौकरी करते।" मूँछों पर ताव देकर पेशकार रामदयाल ने कहा।

कासिम मिरज़ा पेशकार रामदयाल का पहले से ही लोहा मानेहुए थे। उन्होंने उनके प्रति ईमानदार रहने का भी वचन दिया था, परन्तु आज की बात ने पिछली सब बातों पर मोहर लगादी।

रात्रि को गुलाब के कमरे पर कासिम मिरज़ा और पेशकार साहब की मैफ़िल जमी और जब कोतवाल साहब पूरे सरूर में आए तो पेशकार साहब बोले, "कोतवाल साहब, यदि तनिक साहस से काम लो तो आपको दो-तीन दिन में ही जिले का नक्शा बदलाहुआ दिखाऊँ।"

"हिम्मत में कासिम मिरज़ा किसी से कम नहीं है पेशकार साहब और जब तुम कहरहेहो तो सोचने-समझने की बात ही क्या है? हामिदअली को मैं भला आदमी नहीं समझता। घर से सभी लोग अपने-अपने बाल-बच्चों ... के लिए चार पैसे कमाने को निकले हैं। हिस्साकशी मिलनाचाहिए। इस बारे में पूरा ग्रमला आपका ...

भी क़दम उठाएँगे कासिममिरजा आपका साथ देगा।"

पेशकार रामदयाल ने कासिममिरजा को पूरी तरह अपने चंगुल में ले लिया। ज़िले के थानेदारों की नकेलें उनके हाथों में रहती ही थीं। कलक्टर साहब की मेमसाहब की कृपा के पात्र वह बन ही चुके थे। अब शेष था अपने एस० पी० साहब का तमाशा देखना, उनका झुँझलाना, उनकी दाढ़ी के बालों को नोंचना, फ़ाइलें इधर-उधर पटकना और पेशकार साहब के मुस्कराते चेहरे को देखकर दिल में भक्क-भक्क जलना और आग को सीने से बाहर न निकलनेदेना।

: २१ :

जमाना तेजी से आगे बढ़रहा था। पेशकार रामदयाल समय की चाल को समझते ही नहीं थे, यह बात नहीं थी,परन्तु खयाली पुलाव पकाना पेशकार रामदयाल ने नहीं सीखा था। जमाना जितना आगेबढ़जाता था, वह उतना ही उसे स्वीकार करते थे।

उन्होंने अपने जीवन के जो नियमबनालिए थे उनमें कोई परिवर्तन करना उन्हें रुचिकर नहीं था। वह मस्ती के साथ अपनी राह पर बढ़ते चलेजा रहे थे। उनकी बला से दुनियाँ में किसी के घर पर जवान मरे या बूढ़ा, उनकी ऐश में कोई अन्तर आनेवाला नहीं था।

पेशकाररामदयाल का ऐश का जीवन चलरहा था। छोटे भाई को उन्होंने अपने गाँव में खेती पर लगादिया था। लीले पहलवान के अखाड़े के दो पट्ठे उसकी सहायता के लिए गाँव में भेजदिए थे और इलाके के थानेदार और दीवान को बोलदिया था, "छोटा भाई है मेरा। जरा ध्यान रखना।"

उनके भाई हरदयाल ने गाँव में, पेशकार रामदयाल के दम पर, बेनाथ के पादिए की तरह घूमना प्रारम्भ करदिया था। लीले पहलवान के दो पट्ठे उसकी मालिश करते थे और फिर तीनों जंगल के अखाड़े में जोर आजमाते थे।

हरदयाल के इस रंग-ढंग ने उसके परिवार के लोगों का नाक में दम कर

दिया था। आधी जमीन में सारा परिवार था और आधी उसने अपने हलके नीचे दवाली थी। कोई कुछ कहता था तो वह काले साँप की तरह फुंकारकर कहता था, "अदालत का रास्ता देखो। जो जमीन मेरे हलके नीचे आचुकी है, उसे परमात्मा भी मुझसे नहीं छुड़ासकता।"

"हाँ-हाँ भाई, इनसे झगड़ा क्यों करते हो? सरकारी अदालतें खुलीपड़ी हैं तुम्हारे लिए।" लीले पहलवान के पट्ठे खुम ठोंकतेहुए मुस्कराकर कहते थे।

हरदयाल के ताऊजी के लड़के अपने-से मुँह लेकर लौटजाते थे।

"अब आए हैं ज़मीन माँगने। पिताजी के मरतेही सारी ज़मीन के मालिक बनबैठे थे ये लोग। यह तो भाईसाहब का दम था जो इन्हें गाजर-मूली की तरह उखाड़कर फेंकदिया।" मूछें पैनातेहुए लीले पहलवान के पट्ठों से हरदयाल ने कहा।

"ऐश किएजाओ भय्या हरदयाल! खुदा ने तुम्हें भाई भी वह दिया है कि जिसके बूतेपर तुम सारेगाँव पर राज करसकते हो।" एक पट्ठा बोला।

"जीवन में यह ऐश भी बड़े भाग्य से मिलती है हरदयाल भय्या! पुलिस तुम्हारे साथ है। तुम गाँव में वेडर होकर स्याह-सुफैद कुछ भी करसकते हो। पेशकार साहब के भाई के पुलिस में हजार खून माफ़ हैं।" दूसरा बोला।

"मेरी राय मानो तो गाँव के दस नंबरियों को अपना गुलाम बनाकर रखो। सबको यही भबका दो कि तुम भाईसाहब के आनेपर उनसबके नाम दस नंबरियों में से कटवादोगे।" पहला पट्ठा बोला।

"यह शानदार बात कही तुमने? सचमुच कमाल करदिया।" हरदयाल मस्ती में झूमताहुआ बोला।

"दसनंबरी बदमाशों के गुलाम बनजाने पर तुम्हें हमारी भी जरूरत नहीं रहेगी।" दूसरा पट्ठा बोला।

हरदयाल उसकी यह बात सुनकर काँपउठा और घबराकर बोला, "भय्या! ऐसी बातें मतकरो। तुम्हारे बिना तो मैं गाँव में एक दिन भी नहीं रहसकता। ताऊज़ी के लड़के मुझे कच्चा ही चबाजाएंगे।"

पेशकार रामदयाल के भाई हरदयाल ने भी उसी कोख में पैर फैलाए थे जिसमें पेशकार रामदयाल ने, परन्तु दोनों की जीदारी में आकाश-पाताल का अन्तर था। पेशकार रामदयाल जहाँ स्पाती साँचे में ढला था

हुत कायर था। चालाकी और बुद्धिमत्ता में भी दोनों में कोई सम्बन्ध नहीं था। पेशकार रामदयाल जितना वीर और साहसी था, हरदयाल उतना ही कम हिम्मती था। पेशकार रामदयाल जितनी मुसीवत सहन करसकते थें, हरदयाल उतना ही मुलायम था। हाँ शराव पीना और हुस्नपरस्ती दोनों की समान थी परन्तु आय और उपलब्धता के आधार पर अन्तर आकाश-पाताल का था।

धीरे-धीरे हरदयाल के पास गाँव के दसनंवरियों का अड्डा बनगया। गाँव के सब लुच्चे लफ़ंगों ने आकर उसकी शरणली और उसकी चिलवरदारी करनीप्रारम्भ करदी।

एक बार पेशकारसाहव अपने गाँव में पधारे और उन्होंने हरदयाल के हाल-चाल देखे तो उसके दिल पर गहरी ठेस लगी।

उन्होंने हरदयाल से पूछा, "इलाके के थानेदार और दीवानजी को तो खुश रखतेहो ना ?"

"जी !" गर्दन झुकाकर हरदयाल ने कहा। वैसे उसमें उनसे मिलने का साहस नहीं था। वह वेचारा तो केवल गश्तपर आनेवाले सिपाहियों से ही मित्रता करके खुश होजाता था। उसके लिए वे ही पुलिस के उच्चपदाधिकारी थे। वह उन्हीं को सव कुछ मानता था।

"गश्त पर आनेवाले सिपाहियों की भी कुछ आवभगत करता है या अपनी ही ऐश में पड़ारहता है ?" पेशकार साहव ने दूसरा प्रश्न किया।

"खूब करते हैं पेशकार साहव ! आवभगत में आपके छोटे भाई को खुदा ने आप जैसा ही कलेजा दिया है।" लीले पहलवान का एक पट्ठा बोला।

पेशकाररामदयाल मुस्कराकर वैठे ही थे कि थाने के दो सिपाही आगए। पेशकार साहव को देखकर दोनों ने राम राम की। पेशकार साहव मुस्कराकर वड़े प्यार से वोले, "आओ वैठो, दामोदर पंडित ! इन तुम्हारे साथी का क्या नाम है ? अभी-अभी आए हैं यह शायद थाने में ?"

"इसी सप्ताह इलाहावाद से वदलकर आए हैं।" दामोदर पण्डित बहुत ही अदव के साथ वोले।

"तो भय्यन हैं। कहो भय्यन तुम्हार जिया लागत है कि नाहीं हमार दिसवा में ? इलाहावाद का चना-चवैना कछु मिलत है कि नाहीं !" पेशकार

साहव ने मुस्कराकर पूछा।

"जव तुम्हार मेहर है सरकार! तौ काहे नाहीं मिलत ! हमार दिसवा के दो और भय्यन हैं हमार थनवा में।" नया सिपाही वोला।

"हरदयाल इन लोगों के लिए दो गिलास दूध लाओ और दो-दो परांठे वनवाकर लाना। जरा खातिर किया करो इनकी। ये तुम्हारे इलाके के अफसर हैं।" पेशकार साहव हरदयाल से वोले।

"अभी लाया।" कहकर हरदयाल फुर्ती से गाँव की ओर चलपड़ा।

फिर थाने के विषय में पेशकारसाहव ने सिपाहियों से वातें कीं और प्यार से पूछा, "कैसी कुछ आमदनी होजाती है पंडित ?"

"सव आपकी मेहरवानी है पेशकार साहव ! इधर लोग-वाग कुछ वदमाश होतेजारहे हैं। पैसा किसी की गाँठ से निकालने में वड़ी कठिनाई होती है। साले दसनंवरी वदमाश भी मारखाना तो पसन्द करते हैं, जेलखाने जाने से भी नहीं हिचकते परन्तु पैसा नहीं निकालते। इननामाकूल कांग्रेसियों ने इनके दिलों से जेल का भय तो एकदम निकाल ही दिया है।"

'इनके घरों की कैसी दशा है ?" पेशकार साहव ने पूछा।

"दशा क्या वताएं सरकार ! इनकी औरतों के पास जेवर हैं। वैसे ऊपर से फटेहाल ही रहती हैं।"

"वड़े हरामखोर हैं तव तो। रामदयाल ने ऐसे वदमाशों की औरतों को घरों से वाहर घसीटवाकर सरेआम उनके जेवर उतरवालिए हैं अपनी कांस्टे-विली के जमाने में। परन्तु आज जमाना वदलगया है दामोदर पण्डित ! फूंक-फूंककर क़दम रखने की आवश्यकता है।"

"आप ठीक फरमाते हैं पेशकार साहव ! जरा-जरा सी वातें अखवारों में छपजाती हैं। ये अखवारवाले भी वदमाश पता नहीं कहाँ-कहाँ फैलेहुए हैं। मेरा तो खयाल है सरकार कि ये सव इनपाजी काँग्रेसियों की ही वदमाशी है। इन्होंने यह जाल फैलायाहुआ है।"

"तुम्हारा विचार वहुत हद तक ठीक है दामोदर पण्डित ! तुम लोग इन वदमाशों पर जरा सख्ती कम करदो। इन्हें अपने हाथों में लो और इनसे कहो, "हिम्मत से काम लो। इनसे कहो कि ये भी कमाएँ और तुम्हें भी कमाकर दें। समझे !"

दामोदर पण्डित पेशकारसाहब की ओर गम्भीर दृष्टि से देखकर बोले, "पेशकार साहब ! बात तो आपने लाख रुपए की कही। आखिर क्यों हम लोग इन दसनंबरी बदमशों से शत्रुता मोललें? क्यों अपनी जान संकट में डालें? रात-बिरात में हमें गश्त लगानीपड़ती है। अगर कहीं, परमात्मा बुरा समय न लाए, हमें कल-कलाँ को ये बदमाश मारडालें, तो हमारे बच्चों का क्या बनेगा ? उन्हें कौन खाने-पीने को देगा ?"

"मेरा मतलब यही है दामोदर पण्डित ! आदमी को पहले अपनी रक्षा, अपनी आय, अपने रौब-दाब और अपनी बात का ध्यान रखनाचाहिए। शेष सब दुनियाँ के झंझट हैं, चलते ही जाते हैं और चलते ही जाएँगे। दुनियाँ की रक्षा का तुमने ठेका तो नहीं लिया है।"

दामोदर पण्डित को पेशकार रामदयाल की बातों में आज वह गूढ़ ज्ञान मिला जो उन्हें रामायण में भी नहींमिला था। दामोदरपण्डित ने सबके सामने उठकर पेशकारसाहब के पैर छूतेहुए कहा, "पेशकार साहब ! अफ़सर बहुत देखे हैं, परन्तु आपसे सब नीचे हैं। सब अपने-अपने मतलब की बातें करते हैं, परन्तु आपने जो बात कही है वह हम ग़रीब सिपाहियों के मतलब की बात है, हमारी रक्षा की बात है, हमारी आय बढ़ाने की बात है।" वह बहुत कृतज्ञ होउठा पेशकारसाहब का।

तब तक हरदयाल बाल्टी में पाँच-छै सेर दूध लेकर आगया। उसने दो लम्बे-लम्बे गिलास भरकर दोनों सिपाहियों को दिए। नतने से आठ परांठे खोले और उनमें से चार-चार पर आम के अचार की दो-दो लम्बी मोटी फाँकें रखकर उन्हें खाने को दिए।

दोनों सिपाहियों ने छिककर मूँछों पर ताव दिया और फिर पेशकार साहब को पाँवलागन करके अपनी राइफ़लें संभालीं।

"आज गश्त लम्बा मालूम देता है।" पेशकाररामदयाल ने पूछा।

"सरकार कल पास के गाँव में एक डकैती पड़गई; इसीलिए जरा सरगर्मी दिखाईजारही है।" दामोदर पण्डित ने कहा।

"डकैती किसके यहाँ पड़गई ? ऐसा नाँवा दबाए इस देहात में कौन बैठा है दामोदर पण्डित ?"

"एक सुनार के घर पर डाका पड़ा है सरकार ! सुनार ने लिखाया है कि

दो धड़ी सोना डकैती में गया है ।"

"दो धड़ी सोना !" आश्चर्यचकित होकर पेशकार साहब ने सुना और भँवें चढ़ातेहुए बोले, "हमतो समझरहे थे कि नांवा शहरों में ही है परन्तु दामोदर पण्डित ! तुम्हारे कहने के अनुसार तो आजकल नाँवा देहात में सिमट आया है।"

"सिमटता कैसे नहीं सरकार ! दो-दो डेढ़-डेढ़ सेर का गेहूँ बेचा है गाँववालों ने । देखते नहीं हो चमारियाँ भी झमाझम करती फिरती हैं। सिल्लों-ही-सिल्लों के अनाज में सोने की चीजें गढ़वाली हैं और फिर सुनार राजा के तो गहरे ही हैं । जिस सुनार के घर डाका पड़ा है, इसके बाप को कभी दो टेम रोटी भी नसीब नहीं होती थी ।" दामोदर पंडित बोले ।

"तो यों कहो कि हरामज़ादे ने लोगों की चीजों में खोट मिला-मिलाकर पैसा पैदाकिया था । अच्छा हुआ जो डाकेवालों ने उसका छटी तक का खाया-पिया निकाललिया ।" पेशकार साहब बोले ।

"निकाल सब लिया भय्या !"एक दम नम्बरी जो रिश्ते में पेशकारसाहब का भय्या था, पास के खेत के डौले पर सुधरकर बैठतेहुए बोला,"और सुनारिन की भी वह दुरगति की कि याद रखेगी साली ! बड़ी ठुमक-ठुमक कर चलती थी खमखाम का लेंहगा पहनकर, कूल्हों पर सोने की तगड़ी लटकाकर, गले में तिमींहरा, पंचमीहरा, सतमीहरा और जाने कैसे-कैसे हार लटकाकर । गाँव की बहू-बेटियों को कुछ बदती ही नहीं थी अपने सामने । जब डाकेवालों ने उसकी छाती पर बन्दूक की नाल रखी तो घिघिया-घिघिया कर सब चीजें अपने यारों को देदी ।"

दीना दस नम्बरी की बातें सुनकर दामोदर पण्डित बोले, "ठीक कहरहा है दीना । उसकी चाल देखकर सारे गाँव को डाह होनेलगी थी पेशकार साहब ! थोड़ ही दिनों में बहुत सोना एकत्रित होगया था उसके पास ।"

"फिर होजाएगा, एकत्रित होने में देर नहीं लगेगी दामोदर पण्डित ! परन्तु यह बताओ कि कुछ तुम लोगों के पैर तुड़ाने का भी कुछ नतीजा निकला या यूँहीं जूतियाँ तोड़रहे हो ।" पेशकार साहब ने पूछा ।

दीना ठहाका मारकर जोर से हँसदिया और फिर पेशकार साहब की ओर विचित्र दृष्टि से देखकर बोला, "भय्या ! दा

हम जैसे गरीबों का ही गला दबोचनाआता है। जहाँ मोटी रकमें कटती हैं वहाँ बेचारे दामोदर पण्डित को कौन पूछता है ?"

पेशकार रामदयाल मुस्कराकर बोले, "क्या वाकई बड़ी-बड़ी आय में से सिपाहियों को कुछ नहीं मिलता दामोदर पण्डित ?"

दामोदर पण्डित सहमगए कि आखिर अपने अफ़सरों की बुराई वह कैसे करें पेशकार साहब से। परन्तु फिर भी दबी ज़बान से बोले, "सरकार ! हम उसी में खुश रहते हैं जो हमें अफ़सर लोग कमवादेते हैं। यह ठीक है कि हमारे अफसर बड़ी रकमें खुद चट्टालजाते हैं, परन्तु छोटी रकमों से वे अपना सम्बन्ध नहीं रखते।"

पेशकार रामदयाल अपने गाँव में आज ठीक तीन वर्ष पश्चात् आए थे और वह भी एक रात के लिए। उन्हीं दो-चार घण्टों में गाँव के सब दस नम्बरी बदमाशों ने पेशकारसाहब को आकर सलाम झुकाया। सभीको उन्होंने आश्वासन दिया कि वह उनके लिए इलाके के दारोगा को बोल जाएँगे। वह उनके नाम कटवादेंगे।

सिपाही अपनी-अपनी राइफलें कंधों पर रखकर उस गाँव की बाट पर लगलिए, जिसमें डकैती पड़ी थी और पेशकार रामदयाल ने अपने सफ़र के कपड़े उतारडाले।

हरदयाल ने लपककर कपड़े सँभालतेहुएकहा, "एक गिलास दूध आप भी पीलीजिए।"

"हाँ-हाँ पेशकार साहब ! एक गिलास दूध पीलीजिए।" लीले पहलवान का एक पठ्ठा बोला।

"पीलूँगा मैंभी, परन्तु पहले तुम लोग बताओ, कुछ खातिरदारी भी हुई तुम लोगों की गाँव में या नहीं। कुछ खाने-पीने को भी मिला या सूखे ही डंड पेलरहे हो ?"

"सूखे डंड आपके राज्य में कभी पेले हैं क्या पेशकार साहब, जो यहाँ पेलने पड़ते ? हम तो खुले जंगल में चररहे हैं ? कोई आँख मिलानेवाला नहीं है। हमारे सब शौक पूरे किए हैं आपके भाई हरदयालसिंहजी ने।" एक पट्ठा बोला। "बड़ा रौब है इनका गाँव में।"

पेशकार रामदयाल ज़रा मुस्कराए बोले, "हरदयालसिंह का रौब

है या तुम लोगों का ? हरदयाल तो हमारी माँ की कोख से जाने कैसे एक लाला पैदा होगया है।" और फिर हरदयाल से बोले, "क्यों हरदयाल ! अब कुछ हिम्मत बँधनेलगी है गाँव में ? अब तो डर नहीं लगता तुझे ताऊजी के लड़कों से ? कुछ तो उनका भी मस्तिष्क ठीक हुआहोगा ?"

"कुछ नहीं सरकार ! बिल्कुल ठीक होगया !" तेज से चमकतीहुई अपनी रान पर खुम ठोकतेहुए एक पट्ठा बोला, "इन्हें देखकर भीजी बिल्ली की तरह सिकुड़जाते हैं और जब मैं सीना उभारकर चलता हूँ तो सारा गाँव दहलउठता है। आपकी दुआ से अब तो गाँव के जितने भी अपने को बद-माश कहनेवाले हैं, सब सुबह-शाम आकर यहाँ सलाम झुकाते हैं।"

हरदयाल जंगल से ढोरों को लेकर गाँव की ओर चलागया। वहाँ लौले पहलवान के दो पट्ठे और पेशकार साहब ही रहगए। पेशकार राम-दयाल ने तब एक गिलास दूध पिया और मूढ़े पर बैठकर एक पट्ठे से बोले "ज़रा पैरों की मालिश तो करदे।" यह सुनकर एक के बजाय दोनों पट्ठे पेशकार साहब के दोनों पैरों की मालिश करने पर जुटगए।

पेशकार रामदयाल मुस्कराकर उन दोनों की घुटीहुई खोपड़ियों पर हाथ फेरतेहुए बोले, "और सब कुछ तो तुम लोगों को यहाँ गाँव में मिलगया होगा, परन्तु एक चीज शायद न मिलीहो।"

गर्दन नीची ही किएहुए एक पट्ठा, जो ज़रा मसखरा भी था, बोला, "पेशकारसाहब ! और चीजों की चाहे कमी भी रही हो, परन्तु उस चीज की कमी नहीं रही आपके गाँव में, बहुत सस्ती और उम्दा मिलती है।"

"तुम लोग बड़े बदमाश हो। कुछ-न-कुछ साँठ-गाँठ करहीलेते हो तुम।" पेशकारसाहब बोले।

"हुज़ूर साँठ-गाँठ हम करते क्या हैं, वह तो आप-से-आप गाँठ लगजातीहै। खुदा जाने जो एकबार भी हमने किसी को बद नज़र से देखा हो। हम सब को माँ-बहन मानते हैं। परन्तु मेहरबान औरतों को भी खुदा ने दुनियाँ से नापैद नहीं करदिया है। खुदा सब की खबर लेता है। दुनियाँ में उसने ब्याहे-बरे पैदा किए हैं तो हमें भी सहारा भेजता ही है वह।"

"क्या यहाँ के जीवन भी कुछ आनन्द है ? वाजिद सा[illegible] में लोग-बाग कहते तो हैं कि वह बड़े रंगीन तबियत आदमी थे

रामदुलारी बातों की दिशा बदलतीहुई बोली, "अब तो देवरजी कू खावन पकावन की भी दिक्कत हैगई होयगी।"

"घरवाली के बिना खाने की दिक्कत कौन दूर करसकता है भाभी ? आज यहां आगए हैं तो भाभी ने आकर खबरलेली। जब देवर बेचारा शहर में भूखा बैठारहता है तो भाभी कभी नहीं सोचती।"

रामदुलारी को पता नहीं था कि पेशकार रामदयाल इतने शीघ्र सकरुण वातावरण को पाकर ऐसे सरस होउठेंगे।

दोनों का मुस्कराताहुआ चेहरा आमने-सामने होगया।

लीले पहलवान के पट्ठे और छोटा भाई हरदयाल वहाँ से गाँव चलेगए।

गाँव से दो फर्लांग की दूरी पर पेशकार रामदयाल का यह पक्का कुआ था। इसके पूर्व में उनका जंगल फैलाहुआ था, एकदम हरा-भरा। सरसों के पीले फूलों की चादर पर सुफ़ैद तरे के फूलों की पट्टियाँ बनीहुई आँखों के सामने लहरारही थीं।

सूर्य की अन्तिम किरणें भी विलीन होचुकी थीं। दिन का प्रकाश रात्रि के अन्धकार में सिमटता जारहा था। पेड़ों पर पक्षी दिनभर की उड़ानों के पश्चात अपने बाल-बच्चों के बीच लौटरहे थे।

उसी संध्या की धुँधली चादर पर रामदुलारी और पेशकार साहब की दृष्टिगई, दोनों ने एक दूसरे को जी भरकर देखा, मुस्कराते चाँद की चाँदनी में देखा और दोनों ही एक दूसरे के निकट आते प्रतीतहुए।

पेशकार रामदयाल बोले, "भाभी, बता, गाँव में आनेपर रोटी कौन पका करदेगा ? हरदयाल पर तो मुझे इतना भी विश्वास नहीं कि वह एक दिन के लिए भी मुझे बिठाकर खिलासके।"

"रोटी की कहा बात है देवरजी ! कहा भाभी या लायक भी नाँय है थारी ?" मर्दाना स्वर में रामदुलारी ने कहा।

पेशकार रामदयाल ने अपने मन में कहा, "करारी औरत है। काम आ सकती है। फिर बोले, "तो फिर भाभी, तेरे देवर को गाँव में आने में और क्या कठिनाई है ?"

रामदुलारी के मन का मिठास बहकर उसके हलक से होताहुआ हृदय तक पहुँचगया। वह चाँद की चाँदनी में मंत्र-मुग्ध सी बैठीरही और पेशकार

रामदयाल इधर-उधर की बातें करतेरहे ।

पेशकार रामदयाल ने आज पतंग को इससे अधिक ढीलदेना उचित नहीं समझा । वह एकदम पैंतरा काटकर पाँच रुपए का नोट उसकी ओर बढ़ातेहुए बोले, "अच्छा भाभी लो यह बच्चों की मिठाई के लिए है । इसबार जब आऊँगा तो भाभी के लिए मेरठ के कुछ और चीज़ेंलाऊँगा ।"

रामदुलारी चुपचाप खड़ी होगई । उसने पाँच रुपए का नोट सँभालकर अपने माथे से लगाया और देवर को लाख बार आशीश देकर परमात्मा से उसकी बड़ी उम्र के लिए प्रार्थना की ।

पाँच रुपए, एक रक़म थी रामदुलारी के लिए । उसका दामाद उसकी लड़की को लेने आयाहुआ था । दूसरे दिन प्रातःकाल वह लड़की को लेजाने की जिद कररहा था और उसका टीका करने के लिए घर में दो रुपए नहीं थे । एक रुपया था परन्तु एक रुपया से अबतक कभी रामदुलारी ने अपने दामाद का टीका नहीं किया था । वह बेहद प्रसन्न हुई इस समय ।

पेशकार रामदयाल रात को एकांत जंगल में अपनी खटिया डालकर लेट गए । उनके ऊपर आसमान में तारों की चाँदनी बिछी थी । वे तारे सभी टिमटिमा-टिमटिमाकर अपनी भाषा लिखते और मिटादेते थे ।

उसी लिखने और मिटाने को देखकर पेशकार रामदयाल ने सोचा, "यह परमात्मा का रोज़नामचा लिखाजारहा है । हम जो कुछ करते हैं वह इसमें उतरआता है ।"

रामदुलारी चलनेलगी तो पेशकार रामदयाल मुस्कराकरबोले, "संजीदगी चेहरे पर नहीं आनीचाहिए रामदुलारी ! उसी मस्ती के साथ आया करो और उसी मस्ती के साथ जायाकरो, जिस मस्ती के साथ आई थीं ।"

पेशकार रामदयाल ने अन्त में चलते-चलते एक तीर और मारा, "[illegible] के बारे में भी मैं थाने के दीवान को बोलताजाऊंगा ।"

"थारा बच्चा है अभी । बड़े काम का लौंडा है देवर जी ! [illegible] आयपड़ेगा तो कुछ सुधर जायगा ।" रामदुलारी बोली ।

पेशकार रामदयाल को अपनी ग्राम-यात्रा बहुत सफल [illegible] में रहने पर जीवन की आवश्यकता गांव के मिलनेवाले [illegible] सकती है, यह पेशकार रामदयाल ने समझा ।

जीवन की तीसरी ढलान पर पहुँचकर रामदयाल को इसी गाँव की ओर बढ़ना होगा। उसी की रूपरेखा इस समय उनके मस्तिष्क में चक्कर लगा रही थी। रामदुलारी ने उनकी बहुत कुछ चिंता दूर करदी थी। उन्हें अपने एकांत जीवन का कुछ सहारा मिलगया था, जिसके साथ वह अपने सूखे जीवन में हरियाली का स्वप्न देखसकते थे।

पेशकार रामदयाल खटिया पर उठकर बैठगए और तभी लीले पहलवान के दोनों पट्ठे खाना खाकर वहाँ आगए। उनके साथ हरदयाल भी अपने भाई साहब का खाना लेकर आगया।

आज पेशकार साहब ने वहीं जंगल में मंगल मनाया।

: २२ :

पेशकाररामदयाल गाँव से दूसरे दिन मेरठ आगए। दफ्तर में उन्होंने देखा कि हामिदअली साहब का चेहरा कुछ उतराहुआ था। वह पेशकार साहब की ओर ऐसे देखरहे थे जैसे कोई ख़ूँखार भेड़िया लोहे के सींखचों में बन्द अपने शिकार को देखता है।

आवश्यक काग़ज़ों पर हस्ताक्षर करके हामिदअलीसाहब खड़ेहोगए और बोले,"आज हमारी तबियत कुछ खराब है। हम कोठीजारहे हैं। कोई आवश्यक बात हो तो कोठी पर इत्तला देना।"

"आज़ तबियत कैसे खराब होगई हुजूर की? मौसम बदलरहा है। मेरठ के मच्छर भी बड़े नालायक हैं। ऐसा डंक मारते हैं कि अच्छी-अच्छी तबियतें खराब होजाती हैं।"

पेशकार साहब के व्यंग्य को समझकर भी नासमझ बनतेहुए हामिदअली साहब बोले, "मच्छरों की बात नहीं है, यूँही जरामचली सी आरही है आज। सिर दुखा-दुखा होरहा है।"

"हुजूर सर से अधिक काम लेते हैं। इसीलिए बेचारा दुखने लगता है। अपराध ही क्या सिर बेचारे का? सेवक से काम लियाकीजिए! सरकार

ने सेवन किया है आपको । सिर की सब दुखन जातीरहेगी ।"

हामिदअलीसाहब ने मन में सोचा, "कैसा मक्कार क़िस्म का बदमाश है । खुदा ने किसपाजी से पाला डालदिया । सोचा था कि तरक्की पर जाकर आमदनी बढ़ेगी और परेशानी कम होगी, परन्तु इस पाजी ने ऐसा नाक में दम किया है कि गाड़ी को एक इंच भी नहीं सरकने देता ।

यह चाहता है कि मैं मूर्ख बनकर अपने को इसकी अक़्ल के हवालेकरदूँ । बड़ा ही चालबाज़ आदमी है ? हरफ़न मौला है । साहब नहीं तो साहब की मेमसाहब पर ही इसने अपना रंग जमालिया है ।" यही सोचतेहुए वह दफ़्तर से कोठी चलेगए ।

एस० पी० साहब के दफ़्तर से बाहर निकलते ही पेशकार साहब अंदाज़ के साथ मुस्कराए । उनकी मुस्कराहट का आनंद वहाँ के सभी अर्दलियों ने लिया । दो चार थानों के दारोग़ा और दीवान जो पेशी में हाज़िर आए थे-उन्होंने भी एस० पी० साहब के उतरेहुए चेहरे को देखा था ।

अनवर पेशकार साहब के रौब का प्रभाव उस समय और भी ज़्यादा पड़ा । वहाँ उपस्थित ऐसा कोई नहीं था जो उनसे प्रभावित न हुआ हो ।

एस० पी० साहब के जाते ही कोतवालसाहब आपहुँचे । पेशकार साहब दयाल से खड़े होकर तपाक के साथ उनका स्वागत किया । वहां से दोनों रेस्टोरेन्ट में चलेगए । पेशकार साहब कुर्सी पर बैठते ही हाथ मिलाकर बोले, "हवाइयां उड़रही हैं खाँसाहब के चेहरे पर । आज हामिदअली साहब की सूरत देखने की चीज़ थी कोतवालसाहब !"

"यह तो मैं पहलेही देखचुका था । सुबह कोतवाली में आए थे । कुछकहना चाहते थे मुझसे, परन्तु न जाने क्यों वापस चलेगए । एक शब्द भी ज़बान पर न आया ।"

"होसकता है कलक्टरसाहब को दीदानेवाली ख़बर भी उनके कानों में पड़गई हो ।"

"यह भी मुमकिन होसकता है और यह भी सम्भव है कि कलक्टर साहब से जो आपने कहदिया है कि एस० पी० साहब [illegible] [illegible] सुनकर कलक्टर साहब ने कुछ डाट-फटकार [illegible] [illegible] मुस्कराकर बोले ।

"जो होगा सो देखाजाएगा। जब टक्कर ही है तो भयभीत होने की क्या बात है ?" पेशकारसाहब बोले ?

"क़ासिममिरज़ा घबरानेवाला इन्सान नहीं है पेशकारसाहब ! उसने जो एक बार कहदिया सो कहदिया। अब हामिदअली तो क्या, खुदा से भी मुकाबिला हो तो कासिममिरज़ा पेशकार रामदयाल का ही साथ देगा।" सीना उभारकर कासिममिरज़ा बोले।

पेशकार रामदयाल की आँखें कासिम मिरजा के चेहरे पर जमकर रह गईं। उनकी आँखों से दो बूँद आँसू बाहर निकल आए। वह पीछे कुर्सी का तकिया लगातेहुए बोले, "कोतवाल साहब ! पेशकार रामदयाल आपकी मित्रता का आदर करता है। आप जैसा मित्र पाकर मैं अपने को धन्य मानता हूँ। मित्रता में बड़ी भारी शक्ति है। हामिदअली बेचारा क्या खाकर हमारे सामने ठहरेगा ? पेशकार रामदयाल को गर्व है कि वह इसका विरोध अपने व्यक्तिगत लाभ केलिए नहीं कररहा है। वह पूरे अमले की पुलिस के अफ़सरों, दारोगाओं, दीवानों और सिपाहियों के अधिकारों की रक्षा के लिए यह सब कुछ कररहा है।"

"आपका कहना बजा है पेशकार साहब ! यह मरदूद पूरे जिले की आमदनी को अकेला हीं डकारजाना चाहता है। ऐसे खुदगर्ज अफसर का डटकर ला। करनाचाहिए। मैं जीजान से आपके साथ हूँ। मैंने इस पाजी श करने के लिए जो मस्जिद में जाना शुरू किया था, वह बन्द कर ।द है और जो कुर्त्ते पायजामें सिलवाए थे, वे सब अपने अर्दली को दे दिए हैं।"

"आपसे मुझे यही आशा थी। मैं हामिअली साहब के दाँत खट्टे ही करके दमलूंगा।"

"यही होगा। अभी तो कलक्टर साहब ने आपके कारनामे देखे नहीं हैं। जब उनके सामने आपके पुराने कारनामे आएंगे तो वह आप-से-आप आपकी ओर झुकजाएंगे।"

कलक्टर साहब के स्वागत में पुलिस ने एक शानदार जशन किया। यह जशन हामिदअलीसाहब की सलाह के बिनाही आयोजित कियागया था। उन्हें उसका निमंत्रण-पत्र उसी दिन मिला जिस दिन वह था।

हामिदअली साहब उसे पढ़कर आगबबूला होउठे। उनके तन-बदन से मान-हानि की चिंगारियाँ निकलनेलगीं। उन्हें बैठे-बैठे पसीना आगया। यह उनका बहुत बड़ा अपमान कियागया था।

हामिदअली साहब ने निमंत्रण-पत्र को एकबार फिर से पढ़ा और देखाकि उसमें नीचे कई लोगों के नाम छपे थे। उनमें कासिममिरज़ा और पेशकार रामदयाल के नाम भी थे। ये दोनों नाम उनके दिल की जलन के विशेष कारण बने। उनकी आँखों के सामने अँधकार छागया, परन्तु जशन क्योंकि कलक्टर साहब के स्वागत में था, इसलिए उनमें ऊपर से अप्रसन्नता प्रकट करने का साहस न हुआ।

जशन शानदार रहा। ठाट का मुजरा हुआ। देखनेवालों से यही कहते बना, "भाई कमाल करदिया पेशकार साहब ने। हुस्न का बाजार-का-बाजार लाकर जशन में पेश करदिया।"

"बोट बरिया जेशन का इन्टजाम किया ऐ टुमने पेशकार रामडेयाल!" कलक्टर साहब बोले और मेमसाहब तो लट्टू होगई जशन को देखकर। यों तो हर जिले में, जहाँ भी कलक्टर साहब जाते थे जशन मनायाजाता था, परन्तु पेशकार रामदयाल का यह जशन एक अजीब ही चीज़ थी। इसमें और उनमें आकाश-पाताल का अन्तर था।

हामिदअली से कलक्टर साहब ने पूछा "वेल एश. पी. शाब टुमको जेशन कैशा लगा? अमारा खयाल ऐ टुमको बोट पशन्ड आया ओगा। बराबर खूबशूरट नाचनेवाली आर्टिस्ट लाया ऐ पेशकार रामडेयाल! पेशकार रामडेयाल आर्ट-लवर मालूम डेटा ऐ।"

पेशकाररामदयाल की इस प्रकार कलक्टर साहब के मुख से प्रशंसा सुनकर हामिदअलीसाहब का कलेजा जलभुनकर कबाब बनगया परन्तु उनके चेहरेपर दिल की व्यथा अपना प्रभाव नहीं डालसकी। वह अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरतेहुए बोले, "शहर की तवाइफें इकट्ठी करली हैं साहब बहादुर!" बस इतना कहकर वह मौन होगए।

"बोट बरिया इकट्ठा किया ऐ! तुमारा ये मटलब ऐ ना।" कलक्टर साहब मन में हामिदअली साहब के दिल की बात समझतेहुए बोले।

कलक्टरसाहब को पेशकार रामदयाल के वे शब्द याद... उन्होंने हाथ

जोड़कर उनसे कहे थे, "सरकार ! हम क्या जशन मनाएं ? हमारे एस. पी. साहब किसी जशन से खुश ही नहीं होते।"

उसपर कलक्टर साहब ने कहा था, "टुमारा मटलब ए कि एस. पी. शाब अमारा जेशन शे कुश नई ओगा।"

"मतलब तो यही है हुजूर ! परन्तु यदि आपका संकेत पाजाऊँ तो वह जशन करूँ कि जैसा सरकार ने आज तक न देखा हो।"

"ऐशा बाट ऐ पेशकार रामडेयाल ! टब टुम जरूर डेकाओ ! एस. पी. आमिडअली का कोई परवा टुम मेट केरो। अम ऐसा एश. पी. नेई माँगटा जो जेशन जैशी बरिया बाटों को मेना करटा ऐ।"

"बहुत अच्छा हुजूर! परन्तु मेरी नौकरी के आप मालिक हैं। वैसे मैं नौकरी की चिंता तनिक भी नहीं करता। साहब बहादुर के के लिमें यदि एस. पी. साहब मेरी हिस्ट्री-शीट पर कोई ब्लैक रिमार्क भी देदेंगे जशन करने पर तो तब भी मुझे कोई चिंता न होगी।"

"इश बाट का टुम परवा मेट करो। कूब जोर-शोर का जेशन मेनाओ और उसमें एश.पी. शावको भी बुलाओ। हम शब डेक लेगा उस डरियल को।"

हामिदअली साहब वेश्याओं से बहुत दूर रहते थे। उनके बाजार में जाना वह अपना अपमान समझते थे और जहाँ-जहाँ जाते थे वेश्याओं के बाजार को बढ़ावा नहीं देते थे। आजके इस जशन को देखकर उनके दिल में जलन पैदा हो रही थी। तभी पेशकार रामदयाल अवसर देखकर साहब से बोले, "सरकार ज़रा अब एस. पी. साहब की सूरत देखिए, देखने के काबिल है। इन्हें जलन होरही है कि कलक्टर साहब के लिए इतना सुन्दर जशन पेशकार रामदयाल ने क्यों किया।"

इतना शोशा छोड़कर पेशकार साहब कोतवाल कासिममिरज़ा के पास कुर्सी पर जाबैठे।

हामिदअलीसाहब ज़रा बाहर पेशाब करनेचलेगए थे। वह वहाँ से लौटकर फ़िर कलक्टर साहब के पास जाकर बैठ गए। इसी बीच पेशकार साहब अपना तीर छोड़चुके थे।

कलक्टर साहब मुस्कराकर बोले, "वेल एश. पी. शाब' आपको मुजरा पशंड नेई आटा ! आप घर का जोरू शेई बंडा रेना माँगटा ऐ ? टुम आर्टिस्ट

का कडर नई करटा।"

हामिदअली साहब कलक्टरसाहब की इस बात पर कुछ लजासे गए। उनसे कोई जवाब देते न बनां।

कलक्टर साहब की मेमसाहब मज़ाक को पूरी तरह समझरही थीं। वह भी मुस्कराकर बोलीं, "वेल ऐश. पी. शाव अम आड़मी का ऐशा पुरानापन नई माँगटा। आपको आजाड ओना माँगटा ऐ। अपना जोरू को गुलाम बनना नेई माँगटा। ऐ वोट बुरा वाट ए।"

कासिम मिरज़ा और पेशकार साहब की कुर्सियाँ इनसे तनिक हटकर थीं परन्तु उनके कान वहीं लगे थे और वे दोनों ही उन बातों का आनंद लेरहे थे। वे बीच-बीच में एक-दूसरे की ओर देखकर मुस्करा भी देते थे।

कासिम साहब पेशकारसाहब के कान में बोले, "पेशकार साहब ! आज तो हामिदअली साहब को आपने बुरा फँसादिया। कलक्टर साहब की मेम साहब तो साहब के भी कान काटरही हैं मज़ाक में।"

'यह मेमसाहब वाक़ई बड़ी मजेदार हैं। हमारे पुराने एस. पी. साहब की मेम साहब भी ऐसी ही थीं।" कहते-कहते पेशकार साहब को अपनी पुरानी मेमसाहब की स्मृति होआई। वह तुरन्त स्वप्न से जागृत से होतेहुए बोले. "कोतवालसाहब ! मेम तो वह मुटल्ली बड़ी खातरनाक थी। उसके साथ जो मैंने एक वर्ष काटा, बस मेरा ही जी जानता है।"

"उसकी तो शक्ल भी खतरनाक थी पेशकार साहब ! शराब के नशे की बुलन्दी पर पहुँचकर तो तुम्हे आँखें बन्द करलेनी होतीहोंगी।"

'आपने बिलकुल ठीक फ़रमाया कोतवाल साहब ! मुझे यही करना होता था, परन्तु गाती खूब थी कम्बख्त।"

गुलाब का मुजरा झमा-झम ठुमा-ठुम चलारहा था। गुलाब के इत्र से मैफ़िल मेंहेंकरही थी। कभी-कभी खस की खुशबू उड़ाने का काम करीमखाँ करता था। सारा पंडाल मेंहकरहा था।

हामिदअली को अब अपना पलड़ा इतना हलका मालूमपड़ा कि उन्होंने मन में पेशकार रामदयाल के भारीपन को स्वीकार करलिया। "अफसर को अफ़सर रहना चाहिए।' पेशकार रामदयाल के ये शब्द उनके कानों में गूँज उठे। उनके अपने बरताव पर उन्हें स्वयं लज्जा का अनुभव होनेलगा।

आज का मुजरा क्या रहा, पेशकार रामदयाल का एस. पी. हामिदअली साहब पर विजय का डंका बजगया। एस. पी. साहब का सिर नीचा होगया, परन्तु उन्होंने कहा किसी से एक शब्द नहीं।

दूसरे दिन उन्होंने पेशकार रामदयाल को अपनी कोठीपर बुलाया। आज पेशकार साहब को बाहर खड़े रहकर प्रतीक्षा नहीं करनीपड़ी। चपरासी को साहब की आज्ञा थी कि पेशकारसाहब को आते ही अन्दर लिवालाया जाए।

यह परिवर्तन देखकर पेशकार साहब तनिक सहमे, परन्तु फिर दृढ़तापूर्वक अन्दर घुसतेचलेगए और सीधे जाकर एस. पी. साहब की मेज के सामने खड़े होगए। उन्हें देखकर हामिदअली साहब बोले, "बैठो पेशकार रामदयाल!"

"जी बैठगया।" कहकर पेशकार साहब मेज के सामने पड़ी कुर्सी खिसका कर उसपर बैठगए।

"कल का जशन तो तुम्हारा खूब रहा।"

"मेरा क्या था उसमें हुजूर! वह सब तो आपका ही था। आपकी अफसरी में यह शानदार जशन मनाया गया। सब लोग यही कहरहे थे अमले के। आपकी सब बहुत प्रसंसा कररहे थे।" गम्भीरता पूर्वक पेशकार रामदाल बोले।

हामिदअली साहब ने पेशकार रामदयाल की आँखों की गहराई में झाँक-देखा तो उन्हें उनकी तह नजर न आई। उन्हें अपनी ही आँखों का प्रकाश कम होता दिखाईदिया।

आज अचानक उनके चेहरे पर मुस्कराहट आगई। वह हँसकर बोले, "पेशकार रामदयाल! तुम वाकई एक ही आदमी हो पूरे जिले में। मैंने आज तक अपने अमले के हर आदमी को अपने संकेतपर नचाया है, परन्तु तुम पहले आदमी मिले हो जिसने मेरे सब रास्ते बन्द करके मुझे नाँच नचादिया।"

"आप हाकिम हैं हुजूर! जो चाहें कहसकते हैं। पेशकार बेचारा साठ रपूली का सेवक, भला आपके क्या रास्ते बन्द करसकता है? आपने अपने रास्ते स्वयँ बन्द किए हैं सरकार! आपको स्वयँ व्यर्थ नाँचने में आनंद आ रहा है।"

"इसमें कोई शक नहीं पेशकार रामदयाल ! थोड़ी जिद मेरी ही रही। इतने बड़े ओहदे पर पहुँचकर सब काम खुद नहीं किएजासकते। परन्तु जिसके हाथों में काम सौंपाजाए उसको पहचान भी तो लेनाचाहिए कि क्या वह उस काम को कर भी सकेगा या नहीं। ऐसा न हो कि काम फँसकर ही रह जाएँ।" बात की दिशा बदलतेहुए हामिदअली साहब बोले।

पेशकार रामदयाल ने हामिदअलीसाहब की इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप सुनते और समझतेरहे कि आखिर उनका मतलब क्या था यह कहने से।

"किसी का विश्वास करने से पहले उसे ठोक-बजा लेना बुरी बात नहीं है पेशकार रामदयाल ! आदमी चार पैसे का कच्ची मिट्टी का बर्तन लेता है, उसे भीठोकबजाकर देखता है। फिर यहाँ तो पूरी इज्जत,पूरीताकत और पूरी जिम्मेदारी को सौंपने की बात है।" हामिदअली साहब ने कहा।

पेशकार रामदयाल ने यह वाक्य भी गम्भीरतापूर्वक ठंडे दिल से सुना। परन्तु उनका मन कहता रहा, 'देखो तो सही, यह बूढ़ा खुर्रांट मुझपर क्या फब्तियाँ कसनेचला है ? यह हारकर भी स्वीकार नहीं करना चाहता कि हारगया। यह मेरी परीक्षा करनेवाला मास्टर बनना चाहता है। मास्टर भी कहीं ऐसे बनाजाता है। मेरा मास्टर था मेरा पुराना एस. पी. और मेरी मास्टरनी थीं उनकी मेम साहब। उनके बाद सब चपरकनाती आए हैं।"

हामिदअली साहब धीरे-धीरे मुलायम पड़तेजारहे थे। क्रोध की इतनी ऊँचाईसे एकदम खन्दक में कूदपड़ना कोई साधारण बात नहीं थी। वहतनिक सँभलकर बोले, "पेशकार रामदयाल, तुम वाकई एक होशियार और बुद्धिमान आदमी हो, परन्तु अभी तुम्हें पुराने आदमियों से काफी कुछ सीखना बाकी होगा।"

सीखने की बात सुनकर पेशकार रामदयाल के चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ गई और उन्होंने अपने मन में कहा, 'सीखना नहीं है बेटे ! अभी बहुत कुछ सीखना है तुम्हें। अभी तक तुम्हारी जबान से पेशकार साहब शब्द भी नहीं निकला है। तुम अभीतक अपने उसी अफसराना रौबसे बातें फटकार रहेहो। यह रौब पेशकार रामदयाल पर चलनेवाला नहीं है। पेशकार रामदयाल से बातें करने के लिए तुम्हें उसी जमीनपर आना होगा जिसपर पेशकाररामदयाल

खड़े हैं।'

पेशकार रामदयाल ने सीधे हाथ की उँगलियों से अपने माथे को इस प्रकार दवाया कि मानों उनका सर-दर्द कररहाहो।

"क्या सर दर्द कररहा है पेशकार रामदयाल ?"

"जी हाँ ! आज ज़रा जी मिचला सा रहा है। रात वहुत देर तक जागनापड़ा था। जशन के वाद भी काफ़ी देरतक महफ़िल जमी रही। नींद पूरी भरकर न आने से सर-दर्द करनेलगता है।"

हामिदअलीसाहव ने खड़ेहोकर एक आलमारी खोली और उसके अन्दर से वाम की डिबिया निकालकर पेशकार साहव को देतेहुएबोले, "इसे माथे पर लगालो, अभी आराम मालूम देगा।"

"दवा की आवश्यकता नहीं है सरकार ! मैंने जीवन में कभी दवा का प्रयोग नहीं किया। आज छुट्टी का दिन है। सोजाऊँगा तो अपने आप आराम होजाएगा।"

हामिदअली साहव ने वह वाम की डिविया ज़िद करके पेशकार साहव को देदी और कहा, "जाओ, जाकर आराम करो। संध्या को तवियत ठीक हो तो आधे-पौने घंटे के लिए मिलजाना।"

"वहुत अच्छा सरकार !" कहकर पेशकार साहव वहाँ से चलेआए।

: २३ :

हामिदअली साहव और पेशकार रामदयाल की रस्साकशी में पेशकार रामदयाल वाजी मारगए। इससे पूरे जिले की पुलिस प्रसन्न थी। जिले भर के दारोगा, दीवान और कुछ विशेप सिपाही उनसे मिलने के लिए आए और सब ने हर्ष प्रकट किया।

सबनें पेशकार रामदयाल के साहस और चतुराई की प्रसंशा की और अपने पूरे सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने अपने विचार प्रकट किए "हमें तो पहलेही यह आशा थी आप से कि आप एस. पी. साहव से वाजी मार

जाएंगे।" एक थाने का दारोगा बोला।

"अरे पेशकार साहब को बेचारे एस. पी. साहब कहाँ पहुँचेंगे ?" दूसरे थाने के इंचार्ज महोदय ने कहा।

"वैसे तो एस. पी. साहब भी घिसे-पिटे हैं, परन्तु जो रग-पट्ठे हमारे पेशकार साहब को याद हैं उनके कमाल को पहुँचना हामिदअली साहब के बस की बात नहीं है।" दीवान से थानेदार बने शेख अब्दुलबेग बोले। उनसे भी रुका नहीं गया पेशकार साहब के गुणों का वर्णन करने से। वह कोट के बटन खोलकर आराम से बैठे हुए बोले, "यार हो तो पेशकार रामदयाल जैसा हो। जो कहे, उसे करके दिखाए। आखिरी दिनों में हमें तो सच्ची दारोगाई दिलाना पेशकार रामदयाल का ही काम था।"

"क्या कहने हैं पेशकार साहब के ? सेन्ट्रल-पुलिस का एक भी आदमी ऐसा न होगा जो पेशकार साहब के एहसानात से दबा न हो। मौका पड़ने पर किसका काम पेशकार रामदयाल ने नहीं किया, यह कहो।" तीसरे दारोगाजी बोले।

पुलिस-क्लब में ये शानदार बातें चल रही थीं। कचहरी से चलते समय कुछ थानेदार लोग अपने साथ पेशकार साहब को पुलिस-क्लब में घसीट लाए थे।

पेशकार साहब की वहाँपर दावत रही। दावत खाकर वह संध्या के सात बजे कासिममिरज़ा के पास कोतवाली पहुँचे।

कासिम मिरज़ा अपने दफ्तर के सामने टहल रहे थे। दोनों आपस में प्रेम पूर्वक हाथ मिलाकर अन्दर चले गए।

"मैं इस समय आपका ही इंतज़ार कर रहा था।" कोतवालसाहब बोले।

"कचहरी से विचार था कि सीधा आपके यहाँ ही आकर कपड़े बदलूँगा। यहीं स्नान करूँगा और यहीं भोजन करूँगा।" पेशकारसाहब बोले।

"तो फिर आए क्यों नहीं ? घर है तुम्हारा।" कोतवालसाहब बोले।

"घर न मानता तो यहाँ आने की सोचता ही नहीं कोतवाल साहब !" परन्तु दफ्तर से निकलते ही बाहर इलाकों के आगन्तुक दारोगाओं और सिपाहियों ने घेर लिया। बेचारे बड़े प्रेम-भाव से मिलते हैं।"

"सुना है कि उन लोगों के कानों तक भी हामिदअली साहब की पेशकारी

का हाल पहुँचचुका है।" वह मुस्कराकर बोले।

पेशकार साहब धीरे से मुस्कराए और तनिक सँवरकर बैठतेहुए एक बाम की डिबिया सामने बढ़ातेहुए बोले, "साहब ने यह सौगात दी है हमें। कोठी पर याद किएगए थे हुजूर की। सरकार ने फ़रमाया है कि उन्होंने हमारी परीक्षा लेने के लिए अभीतक हमारा विश्वास नहीं किया था। अब हम परीक्षा में पास होगए हैं। इसलिए अब हमारा यकीन वह करसकते हैं।" इतना कहकर वह खिलखिलाकर हँसपड़े।

"बहुत खूब, बहुत खूब!" कहकर कोतवालसाहब बैठे-बैठे उछलपड़े। "देर आयद, दुरुस्त आयद।"

"मेरे सिर में उनके उपदेश सुनकर दर्द होनेलगा था। उसके लिए उन्होंने स्वयं अपनी खिड़की से निकालकर यह बाम की डिबिया दीहै मुझे।"

"यह उनकी परवरदिगारी का सबूत है पेशकार साहब!"

पेशकार रामदयाल परवरदिगार केवल परमात्मा को मानता थे। उसके अतिरिक्त वह हर व्यक्ति से बराबर की स्थिति से मिलना पसंद करते हैं। ओहदा ओहदे की जगह है, मित्रता मित्रता के स्थान पर। मित्रता के पश्चात् सब सौदे-पट्टी की बात हैं।"

"कमाल करदिया आपने पेशकार साहब! आपकी जिन्दगी की फ़िलास्फ़ी भी बड़ी ही सीधी और सच्ची है।" पेशकार साहब की ओर देखकर कोतवालसाहब बोले।

कोतवाल कासिममिरज़ा एक फ़िलास्फ़र टाइप के व्यक्ति थे। वह बहुत कम आदमियों से अपना सम्बन्ध रखते थे, परन्तु जिनसे रखते थे उनके जीवन को पूरीतरह पढ़लेने का प्रयत्न करते थे।

पेशकाररामदयाल उनके अभिन्न मित्र थे,इसीलिए वह अपना अधिक समय पेशकार साहब को पढ़ने में लगाते थे। आज संध्या होते ही कासिम साहब ने दो पेग बरांडी के लिए थे। उन्हीं के नशे में वह पेशकार साहब से बातें कररहे थे वह मुस्कराकर बोले, "याराना आपकी नज़र में सबसे बड़ी चीज है। यार के लिए आप सब कुछ करसकते हैं, यह मैं देखचुका हूँ। झूठ, चालाकी, मक्कारी, रौब, गुण्डई, चोरी डकैती इत्यादि सब चीजों का इस्तेमाल आप अपने यार के लिए करसकते हैं।"

"ये सच है इनका सम्बन्ध केवल [illegible] दूसरी दुनियाँ से भी है, इस जीवन में [illegible] आनेवाले जीवन से भी है। इसी [illegible] करता है। कुछ [illegible] केवल यही नहीं [illegible] को कल [illegible] बोले।

"तो अब क्या [illegible] सीधे रास्ते पर आने की [illegible] का विषय [illegible]

"दोनों बातें [illegible] अफसर किसी भी [illegible] हर समय [illegible] हमारे ऊपर यह [illegible] से तो [illegible]

"आप [illegible] पर बेकार का बोझ है। [illegible]

"बड़ी [illegible] इसीलिए [illegible] नहीं होजाती [illegible]

सच बात तो यह है कि [illegible] यह हिन्दुस्तानी [illegible] ासिमसिटा [illegible]

वह पेशकार [illegible] र बोले, "कुछ भी है [illegible] टे जिलों में [illegible] र रखा है। [illegible] र हँसतेहुए [illegible] कहा।

पेशकार रामदयाल वहाँ से [illegible]

पेशकार साहब को उनके विशेष कमरे में लेगई। उसने विजली की बत्ती जला कर पंखा खोलदिया। कमरे में हिनाँ की सुगंधि फैलीहुई थी।

पेशकार साहब पलंग पर बैठकर मुस्कारतेहुए बोले, "गुलाव, आज तुम्हें बेग़म कहने को मन कररहा है। कोई ऐतराज तो नहीं है तुम्हें ?"

गुलाब एक अन्दाज के साथ आँखें तरेरतीहुई उनके पास बैठकर बोली, "पेशकारसाहब की नजरेइनायत पर मुझ जैसी हजार बेगमें न्यौछावर हैं।" कहकर गुलाव ने पेचवानी ताजा करने के लिए उठाली। वह कमरे से वाहर होनाहीचाहती थी कि पेशकार साहब ने उसकी क़लाई धीरे से पकड़कर कहा, "कहाँ चलीं बेगम ! जरा यहाँ आओ मेरे पास।"

"आपका हुक्का ताजा करनेजारही हूँ।" गुलाव मुस्कराकर बोली।

"आज हुक्का नहीं पिएँगे हम।" पेशकार साहब बोले।

"तब फिर क्या पीने का इरादा है ?" उसी अन्दाज के साथ मुस्कराकर गुलाव ने पूछा और वह उनसे सटकर खड़ीहोगई।

"हुस्न की शराब।" पेशकारसाहब की जवान से निकला। उन्होंने गुलाव को अपने पास बिठातेहुए उसकी जुल्फों में उँगलियाँ डालकर सहलातेहुएकहा, "क्या ऐतराज है कुछ बेग़म को ?"

"जरूर ऐतराज है।" जरा तनकर बैठतेहुए गुलाव ने कहा।

"ऐतराज तुम्हें नहीं होसकता गुलाव ! पेशकार रामदयाल जानता है। मैं यह जानता कि तुम्हें ऐतराज होसकता है तो मेरी जवान से बेग़म शब्द ही न निकलाहोता।"

गुलाव धीरे से पेशकारसाहब का सहारा लेकर बैठगई। पेशकार साहब धीरे-धीरे गुलाव की सुडौल और चिकनी कमर को सहलातेहुए बोले, 'गुलाव! आज शीला होती तो न जाने कितनी खुश होती ? आज उसके पेशकार राम-दयाल ने एस. पी. हामिदअली के दाँत खट्टे किए हैं। उसे उसने घुटनों पर गिरादिया है। यह सब उसी देवी के वरदान से हुआ है।"

"वाक़ई शीला देवी थीं पेशकार साहब ! मैं तो उनके चरणों की धूल के बराबर भी अपने को नहीं मानती। मैं तो आपकी एक खादिमा हूँ। मुझे बेग़म कहकर आपने मुझे जो इज्जत बख्शी है गुलाव उसकी क़द्र करती है।"

पेशकार साहब को यों सीधे तरीके से देखने पर कोई काम नहीं था, परंतु

पेशकार साहब को उनके विशेष कमरे में लेगई। उसने बिजली की बत्ती जला कर पंखा खोलदिया। कमरे में हिनाँ की सुगंधि फैलीहुई थी।

पेशकार साहब पलंग पर बैठकर मुस्कारतेहुए बोले, "गुलाब, आज तुम्हें बेग़म कहने को मन कररहा है। कोई ऐतराज तो नहीं है तुम्हें ?"

गुलाब एक अन्दाज के साथ आँखें तरेरतीहुई उनके पास बैठकर बोली, "पेशकारसाहब की नज़रेइनायत पर मुझ जैसी हज़ार बेगमें न्यौछावर हैं।" कहकर गुलाब ने पेचवानी ताज़ा करने के लिए उठाली। वह कमरे से बाहर होनाहीचाहती थी कि पेशकार साहब ने उसकी क़लाई धीरे से पकड़कर कहा, "कहाँ चलीं बेगम ! जरा यहाँ आओ मेरे पास।"

"आपका हुक्का ताजा करनेजारही हूँ।" गुलाब मुस्कराकर बोली।

"आज हुक्का नहीं पिएँगे हम।" पेशकार साहब बोले।

"तब फिर क्या पीने का इरादा है ?" उसी अन्दाज के साथ मुस्कराकर गुलाब ने पूछा और वह उनसे सटकर खड़ीहोगई।

"हुस्न की शराब।" पेशकारसाहब की जबान से निकला। उन्होंने गुलाब को अपने पास बिठातेहुए उसकी जुल्फों में उँगलियाँ डालकर सहलातेहुएकहा, "क्या ऐतराज है कुछ बेग़म को ?"

"जरूर ऐतराज है।" जरा तनकर बैठतेहुए गुलाब ने कहा।

"ऐतराज तुम्हें नहीं होसकता गुलाब ! पेशकार रामदयाल जानता है। ...र मैं यह जानता कि तुम्हें ऐतराज होसकता है तो मेरी जबान से बेग़म शब्द ही न निकलाहोता।"

गुलाब धीरे से पेशकारसाहब का सहारा लेकर बैठगई। पेशकार साहब धीरे-धीरे गुलाब की सुडौल और चिकनी कमर को सहलातेहुए बोले, "गुलाब! आज शीला होती तो न जाने कितनी खुश होती ? आज उसके पेशकार राम-दयाल ने एस. पी. हामिदअली के दाँत खट्टे किए हैं। उसे उसने घुटनों पर गिरादिया है। यह सब उसी देवी के वरदान से हुआ है।"

"वाक़ई शीला देवी थीं पेशकार साहब ! मैं तो उनके चरणों की धूल के बराबर भी अपने को नहीं मानती। मैं तो आपकी एक खादिमा हूँ। मुझे बेग़म कहकर आपने मुझे जो इज्जत बख्शी है गुलाब उसकी क़द्र करती है।"

पेशकार साहब को यों सीधे तरीके से देखने पर कोई काम नहीं था, परंतु

नीला नोट पाजाते।" मुस्कराकर पेशकार साहव वोले।

फलवाले ने फलों के लिफ़ाफे उठा-उठाकर ताँगे में लगादिए और पेश-साहब दूकानदार को पैसे देकर ताँगे में जाबैठे।

कलक्टर की कोठी पर पेशकारसाहब ताँगे से उतरकर एक ओर खड़ेहोगए वैरों से कहा, "देखो भय्या! ताँगे का सामान उतारकर कोठी में लेचलो और प्लेटों में सजाकर कमरे की मेज़ पर क़रीने से लगादो।"

पेशकार रामदयाल कभी ताँगेवाले का पैसा देना नहीं भूलते थे। उसे एक अठन्नी थमातेहुए वोले, "ठीक साढ़े दस वजे कोठी के वाहर मिलना। देर न हो।"

"वहुत अच्छा हुजूर!" कहकर ताँगेवाला चलागया।

पेशकार साहव को कलक्टर साहव की कोठी पर अन्दर सूचना देकर जाने की आवश्यकता नहीं थी। साहव और मेमसाहव दोनों की ही उनपर कृपा-दृष्टि थी। दोनों उन्हें पसन्द करते थे।

पेशकार रामदयाल ने जव अपने पिछले कारनामे उनके सामने पेश किए थे तो उन्होंने अनुभव किया था कि वास्तव में वह अंग्रेजी सरकार का सच्चा शुभचिंतक था और ऐसे व्यक्ति को अपने साथ लिएविना हिन्दुस्तान में शासन करना कठिन था।

नया कलक्टर एक वुद्धिमान व्यक्ति था। उसके अन्दर अंग्रेजियत की बू थी। वह अफ़सर के रूप में जिस हिन्दुस्तानी को भी देखता था, उससे उसे कुढ़न होती थी। वह अधिक-से-अधिक शहर कोतवाली तक हिन्दुस्तानी अफ़सर को पसन्द करते थे।

एस. पी. हामिदअली जैसा पुराने किस्म का आदमी उन्हें एकदम नापसंद था। एस. पी. साहव का रहन-सहन चाल-ढाल, तौर-तरीके, सव पुराने किस्म थे और कलक्टर साहव आधुनिकतम विचारों के बीच में पले थे। शराव, नाच,गाना इत्यादि उनकी दिनचर्या के महत्वपूर्ण अंग थे। एस.पी. साहव जैसा उन सव चीजों से घृणा करनेवाला व्यक्ति उन्हें फूटी आँखों भी नहीं भाता था। उनकी लम्वी दाढ़ी पर दृष्टि जाते ही उन्हें वह विलकुल वेहूदा से जान पड़ते थे। वह यह भी नहीं चाहते थे कि उनकी मनहूस सूरत उनके सामने आए।

मीठा नोट गाजाते।" मुस्कराकर पेशकार साहब बोले।

फलवाले ने फलों के लिफ़ाफे उठा-उठाकर तांगे में लगादिए और पेश साहब दुकानदार को पैसे देकर तांगे में जाबैठे।

कलक्टर की कोठी पर पेशकारसाहब तांगे से उतरकर एक ओर खड़ेहोगए, बैरों से कहा, "देखो भय्या! तांगे का सामान उतारकर कोठी में लेचलो और प्लेटों में सजाकर कमरे की मेज़ पर क़रीने से लगादो।"

पेशकार रामदयाल कभी तांगेवाले का पैसा देना नहीं भूलते थे। उसे एक अठन्नी थमातेहुए बोले, "ठीक साढ़े दस बजे कोठी के बाहर मिलना। देर न हो।"

"बहुत अच्छा हुजूर!" कहकर तांगेवाला चलागया।

पेशकार साहब को कलक्टर साहब की कोठी पर अन्दर सूचना देक जाने की आवश्यकता नहीं थी। साहब और मेमसाहब दोनों की ही उनप कृपा-दृष्टि थी। दोनों उन्हें पसन्द करते थे।

पेशकार रामदयाल ने जब अपने पिछले कारनामे उनके सामने पेश कि थे तो उन्होंने अनुभव किया था कि वास्तव में वह अंग्रेजी सरकार का सच्च शुभचिन्तक था और ऐसे व्यक्ति को अपने साथ लिएबिना हिन्दुस्तान में शास करना कठिन था।

नया कलक्टर एक बुद्धिमान व्यक्ति था। उसके अन्दर अंग्रेजियत न थी। वह अफ़सर के रूप में जिस हिन्दुस्तानी को भी देखता था, उ उसे कुढ़न होती थी। वह अधिक-से-अधिक शहर कोतवाली तक हिन्दुस्ता अफ़सर को पसन्द करते थे।

एस. पी. हामिदअली जैसा पुराने क़िस्म का आदमी उन्हें एकदम नाप था। एस. पी. साहब का रहन-सहन चाल-ढाल, तौर-तरीके, सब पुराने कि थे और कलक्टर साहब आधुनिकतम विचारों के बीच में पले थे। शर नाच,गाना इत्यादि उनकी दिनचर्या के महत्वपूर्ण अंग थे। एस.पी. साहब उन सब चीज़ों से घृणा करनेवाला व्यक्ति उन्हें फूटी आँखों भी नहीं भ था। उनकी लम्बी दाढ़ी पर दृष्टि जाते ही उन्हें वह बिलकुल बेहूदा से पड़ते थे। वह यह भी नहीं चाहते थे कि उनकी मनहूस सूरत उनके स

नीला नोट पाजाते।" मुस्कराकर पेशकार साहब बोले।

फलवाले ने फलों के लिफ़ाफे उठा-उठाकर ताँगे में लगादिए और पेश-साहब दूकानदार को पैसे देकर ताँगे में जाबैठे।

कलक्टर की कोठी पर पेशकारसाहब ताँगे से उतरकर एक ओर खड़ेहोगए बैरों से कहा, "देखो भय्या! ताँगे का सामान उतारकर कोठी में लेचलो और प्लेटों में सजाकर कमरे की मेज़ पर क़रीने से लगादो।"

पेशकार रामदयाल कभी ताँगेवाले का पैसा देना नहीं भूलते थे। उसे एक अठन्नी थमातेहुए बोले, "ठीक साढ़े दस बजे कोठी के बाहर मिलना। देर न हो।"

"बहुत अच्छा हुजूर!" कहकर ताँगेवाला चलागया।

पेशकार साहब को कलक्टर साहब की कोठी पर अन्दर सूचना देकर जाने की आवश्यकता नहीं थी। साहब और मेमसाहब दोनों की ही उनपर -दृष्टि थी। दोनों उन्हें पसन्द करते थे।

पेशकार रामदयाल ने जब अपने पिछले कारनामे उनके सामने पेश किए तो उन्होंने अनुभव किया था कि वास्तव में वह अंग्रेजी सरकार का सच्चा शुभचिंतक था और ऐसे व्यक्ति को अपने साथ लिएबिना हिन्दुस्तान में शासन करना कठिन था।

नया कलक्टर एक बुद्धिमान व्यक्ति था। उसके अन्दर अंग्रेजियत की बू थी। वह अफ़सर के रूप में जिस हिन्दुस्तानी को भी देखता था, उससे उसे कुढ़न होती थी। वह अधिक-से-अधिक शहर कोतवाली तक हिन्दुस्तानी अफ़सर को पसन्द करते थे।

एस. पी. हामिदअली जैसा पुराने किस्म का आदमी उन्हें एकदम नापसंद था। एस. पी. साहब का रहन-सहन चाल-ढाल, तौर-तरीके, सब पुराने किस्म थे और कलक्टर साहब आधुनिकतम विचारों के बीच में पले थे। शराब, नाच,गाना इत्यादि उनकी दिनचर्या के महत्वपूर्ण अंग थे। एस.पी. साहब जैसा उन सब चीजों से घृणा करनेवाला व्यक्ति उन्हें फूटी आँखों भी नहीं भाता था। उनकी लम्बी दाढ़ी पर दृष्टि जाते ही उन्हें वह बिलकुल बेहूदा से जान पड़ते थे। वह यह भी नहीं चाहते थे कि उनकी मनहूस सूरत उनके सामने आए।

जिले के वातावरण में दो विचार-धाराएँ नहीं चलसकतीं। कलक्टर साहब की विचारधारा पेशकार रामदयाल की विचारधारा थी। उन दोनों के बीच में आकर बेचारे हामिदअली साहब इस तरह पिसरहे थे, जैसे चक्की के दो पाटों के बीच घुन पिसजाता है।

कलक्टर साहब एस० पी० साहब की इस दशा से भली भाँति परिचित थे। पेशकार साहब को आते देखकर उल्टा हाथ पेंट की जेब में और सीधे हाथ में सिगार लिए कलक्टर साहब मुस्कराकर सामने बढ़तेहुएबोले, "ओ! पेशकार रामडेयाल! टुम वोट वरिया वक्ट पर आया। अम टुमारा इन्जार में टा।"

"हुजूर ज़रा देर होगई पुलिस-क्लब में। जिले के दारोगा लोग पकड़कर लेगए थे अपने साथ।"

'जेरूर-जेरूर। शेव का काम रेटा है टुम शे।"

"सभी का काम भुगतना पड़ता है सरकार! ये लोग ही तो हमारी सरकार के पाए हैं हुजूर! इनको मजबूत बनाना आपका काम है। इन्हें खुश रखना भी आपका काम है। उस दिन आपके जशन की जिले भर में वह प्रशंसा हुई कि आनन्द आगया। लोग कहते हैं कि जैसा जशन इन कलक्टर साहब का मनायागया वैसा पहले कभी किसी कलक्टर का नहीं मनाया गया। आपकी सभी लोग प्रशंसा करते हैं। कहते हैं कि आप जैसा नेक और रहमदिल कलक्टर उन्होंने पहले कभी नहीं देखा।"

"ऐशा वाट है पेशकार रामडेयाल!"

"बिल्कुल यही बात है साहबबहादुर!"

साहब और फिर बहादुर कहने से कलक्टर साहब के दिल, दिमाग और बदन में एक ताज़गी-सी आजाती थी। जब इस शब्द को कई बार दोहराया जाता था तो उनका जोश पूरे वेग से बहनेलगता था।

आज वही जोश कलक्टर साहब में भरकर पेशकार साहब बोले, "आपके आने से जिले से जान आगई साहब बहादुर! वरना तो एस० पी० साहब ने जिले में ऐसा मातम फैलादिया था कि लोगों की जिन्दादिली समाप्त हो गई थी। साहस ही नहीं रहा था हमारे सिपाहियों में। सब मुर्दा से हो गए थे।"

"कोटवाल काशिममिर्ज़ा वी ऐशाई बोलना माँगटा टा। काशिममिर्ज़ा काबिल आदमी मालूमडेटा ऐ। असको वौट पशंड आया।"

"वहुत काबिल सरकार, बहुत काबिल! फिलासफ़र हैं वह तो। पर-मात्मा जाने कैसे पुलिस की नौकरी में चलेआए, वरना प्रोफेसरी के काबिल थे। किसी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर होते।"

"वेरा नेक ड़िल आडमी मालूम डेटा ऐ। टुमारा वोट टोरीफ़ बोलटा टा। केटा ऐ कि टुमारा जैसा वाट का पक्का आडमी और नईं डेका। जिला भर में तुमसे जाडा सरकार का कोई खेरखा आदमी नेई है।"

उसी समय मेम साहब भी आगईं और मुस्कराकर बोलीं, "केशा हाल-चाल ऐ टुमारा एस० पी० शाव का?"

मेमसाहब एस० पी० साहब के मज़ाक में ज़रा अधिक रस लेती थीं। उन्हें हामिदअली साहब का गम्भीर चेहरा अपने उपहास के वेग को बढ़ाता -आ प्रतीतहोता था। "हम क्लाउन बोलटा ऐ तुमारा आमिद अली शाब।"

हामिदअली साहब की खिज़ावलगी दाढ़ी पर हाथ फेरनेवाली सूरत को -द करके मेमसाहब ने कहा, "केशा चेरा वेनाटा ऐ ये बूरा आडमी? अम को वी अपना रोब में लेना माँगता ऐ। वेडमाश मालूम डेटा ऐ अमको। अम ऐशा आदमी को एक डम पशंड नेई करटा।"

"विल्कुल वेडमाश। एक डम हेरामकोर। अम ऐशा आडमी को अपना इलाका में विल्कुल नेई माँगटा।" कलक्टर साहब बोले।

पेशकार रामदयाल ने ऐसी सूरत बनाली कि मानो उन्होंने एक शब्द भी नहीं सुना। वह धीरेसे खिसककर हाल कमरे की ओर देखतेहुएबोले, "कुछ फल लेतालाया हूँ सरकार के लिए। ये फल हमारी मेमसाहब को बहुत पसन्द आते हैं।"

"वोट वरिया फल लाया ऐ पेशकार शाव! टुमारा लाया उआ का केमाल का ओटा ऐ। वोट वरिया काजू लाटा ऐ टुम।"

"हुज़ूर रामदयाल चाहे एकआना महंगा माल खरीदता है परन्तु बढ़िया खरीदता है फिर आपके लिए क्या कोई चीज मन-दो-मन खरीदनी होती है। अफ़सरों को चीज चाहे थोड़ी दे, परन्तु वढ़िया देनीचाहिए।"

"वेलकुल टीक केटा ए टुम ।"

इसके पश्चात शराब का दौर चला । पेशकार रामदयाल ने भी उसमें भाग लिया । इस दौड़ में वही तीनों में आगे निकले । अन्त में कलक्टर साहब और मेमसाहब एक स्वर में बोले, "वेल पेशकार रामडेयाल टुम केमाल करटा ऐ पीने में । टुमारा मुकाबिला में हम हार मानटा ऐ । हमारा शाब वी हारमान गेया टुमशे । हम टुमारा तारीफ़ करटा ऐ । टुम वीट वरिया आदमी ऐ ।"

: २४ :

हामिदअली साहब का रौब मेरठ में न जमसका । पेशकार रामदयाल से आते ही उन्होंने जो बिगाड़खाता करलिया, उसका फल उन्हें भोगनापड़ा । आज उनके साथ खड़ाहोने वाला एक भी महकमे का आदमी न मिला ।

जब हामिदअली साहब ने अपनी आय के सब मार्ग बन्द होते देखे तो पेशकारसाहब से समझौता करने का निश्चय किया । पेशकार साहब को उन्होंने अपनी कोठी पर बुलाया ।

अब उन्हें पेशकार रामदयाल' न कहकर 'पेशकार साहब' शब्द से सम्बोधित किया गया । अब बोल-चाल के ढंग में भी काफ़ी अन्तर था ।

हामिदअली साहब आज और तनिक खुलकर सामने आए । उन्होंने आज अपने हिन्दुस्तानी अफ़सर होने की भी दुहाई दी । वह यहाँ तक आगेबढ़े कि कांग्रेसी विचार-धारा उनके शब्दों में से झलकउठी । हालांकि वह काँग्रेस के कट्टर शत्रु थे । वह जहां-जहां भी रहे, वहाँ-वहां उन्होंने कांग्रेस-आन्दोलन को अपने जूते के नीचे कुचला था । वह बोले, "पेशकार साहब ! हम लोग हिन्दुस्तानी अफ़सर हैं । हम हिन्दुस्तानी लोगों का जितना ख्याल रखसकते हैं उतना अंग्रेज नहीं रख सकते ।"

पेशकार रामदयाल हामिदअली साहब की यह बात सुनकर दिल में कुढ़ गए और गम्भीरतापूर्वक बोले, "इसमें क्या सन्देह है हुजूर ! हम और आप तो एक ही मिट्टी-पानी के बने हैं । घर का मारेगा भी तो कम-से-कम साए में

तो डालेगा।"

"फिर भी मैं देखता हूँ कि आप हमसे दूर-दूर रहते हैं।"

"यह बात आप अपने दिल से पूछिए हुजूर! हमलोग तो सेवक हैं आपके। काम निकालने की मशीनें हैं अफ़सरों की। हमें तो चलानेवाला चाहिए। जब तक ये मशीनें जाम हैं तबतक तो कारखाना बन्द हीरहेगा और जब कारखाना बन्द है तो आमदनी कहाँ से होगी ?" पेशकारसाहब तनिक खुलकर स्पष्टवादिता के साथ बोले।

"परन्तु आपने तो पहले ही दिन की गुफ्तगू में मशीन को ब्रेक लगाकर खड़ा कर दिया था।" हामिदअली साहब बोले।

"जाम मशीनें शक्ति से नहीं चलाईजातीं सरकार! उन्हें चलाने के लिए उनका जंग छुड़ाने और उनमें ग्रीस लगाने की आवश्यकता होती है। शक्ति का प्रयोग करनेसे मशीनें टूटजाती हैं।

आज जब आप इतने खुलकर बातें कर ही रहे हैं सरकार! तो मैं भी कह दूँ कि आपने अपनी अफ़सरी के गर्व में उस मशीन को चलाने का असफल प्रयत्न किया जिसे शक्ति से चलाना असम्भव था। वह प्यार और मित्रता से चल सकती थी। शक्ति से वह टूट भले ही जाए, चल नहीं सकती।

पेशकार रामदयाल किसी भी अफ़सर से उलझना मूर्खता समझता है। किसी का हक मारना उसके लिए गऊ-माँस के बराबर रहा है। परन्तु जब उसके मान और शान का प्रश्न सामने आजाता है तो वह अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े कराके भी अपनी इज्जत की रक्षा करता है। उस समय नौकरी की उसे चिंता नहीं रहती। पेट पालने के लिए उसके पास बाप-दादों की अच्छी खासी जमींदारी पड़ी है।

पेशकार रामदयाल कुछ रुपलियों की नौकरी के लिए घर से नहीं निकला था। सौ-दो-सौ रुपए माहवार तो उसकी जमीदारी में पड़ेरहनेवाले पहलवान खा-पीजाते हैं। अपने शहर के लोले पहलवान से पूछिए कि उसके पट्ठे कितने दिन से पेशकार रामदयाल के दम पर पलरहे हैं।"

हामिदअली साहब पेशकार साहब की बातें सुनकर समझगए कि वह मशीन शक्ति से नहीं चलाई जानीचाहिए थी। शक्ति से चलाईजाने वाली पुलिस के थाने की छोटी-छोटी मशीनें थीं, जिन्हें वह अपनी इच्छा के

अनुसार उल्टी-सीधी घुमा-फिरालेते थे। यह जिलेभर की जंगी मशीन थी। इसमें छोटी-छोटी कितनी ही मशीनें जुड़ीहुई थी। इसे तरकीव से कायदे के साथ चलायाजासकता था। यदि इसके किसी भी पुर्जे को सूखा रहनेदिया गया तो वह सारी मशीन को जाम करदेगा।

"तो अब क्या करनाचाहिए। पेशकारसाहब ! आप कुछ सलाह भी तो नहीं देते।" हामिदअली साहब बोले।

"सलाह उसे दीजाती है हुजूर ! जो कोई वात जानता न हो। आपको सलाह देने की योग्यता सेवक में ही नहीं है। आज्ञापालन करने की शक्ति मुझ में अवश्य है। सो उसकी आपने कभी आवश्यकता नहीं समझी।"

हामिदअली की जवान वन्द करदी पेशकार साहब ने। वह सर खुजलाते हुए अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरकर बोले, "साल-दो साल और रहगए हैं रिटायर होने के। चाहता था कि ये आखिरी दिन यहीं कटजाते। खुदा ने आज तक तो हर काम में साथ दिया है......।"

"आगे भी खुदा हाफ़िज रहेगा।" पेशकार साहब वीच ही में बोलउठे। पेशकार साहब को हामिदअली साहब के बुढ़ापे पर दया आगई। उनके गिड़गिड़ाते शब्दों को सुनकर, जिनमें रिटायर होने की दुहाई दीगई थी, उनका मन भरआया। आज प्रथम बार रिटायर होने की बात पेशकार साहब के मस्तिष्क से टकराई और वह न जाने क्या सोचनेलगे।

"क्या सोचनेलगे पेशकारसाहब ?"

"कुछ नहीं सरकार !" स्वप्न से जागतेहुए से पेशकारसाहब बोले, "मैं सोचने लगा था कि रिटायर होना भी वैसा ही है नौकरी-पेशा के लिए जैसे शरीर के लिए मृत्यु का आजाना।"

"इसमें क्या शक है पेशकार साहब ! रिटायर होने के मायने हैं नौकरी का खात्मा और नौकरी का खात्मा मायने है हकूमत का खात्मा। हकूमत का खात्मा मायने है आमदनी का खात्मा और आमदनी का खात्मा मायने है एक तरह जिन्दगी का खात्मा। हमारी ज़िन्दगी के तो अब ये ही एक दो वर्ष हैं। इनमें हम नहीं चाहते कि किसी का दिल दुखाएँ। हम अब खुदा की खिद-मत की तरफ़ मन लगारहे हैं।"

"बड़ा शुभ विचार है आपका हुजूर ! यदि यही

रहे

ग्रौर ग्राप व्यर्थ परेशानी में न पडनाचाहें तो गिनेगिनाए चार हजार रुपए हर महीने लेलिया करें। शेष ग्राय पुलिस के ग्रमले को मिले। ग्रफ़सर को छोटों की ग्रोर देखकर चलनाचाहिए।" रौबीले ग्रन्दाज़ के साथ पेशकार रामदयाल मूँछों पर सफ़ाई के साथ हाथ फेरतेहुए बोले।

यों ग्रायु में पेशकार साहब हामिदग्रलीसाहब से काफी छोटे थे ग्रौर ग्रोहदे में तो दोनों की तुलना का कोई प्रश्न ही नहीं था, परन्तु उनका व्यक्तित्व हामिदग्रली साहब पर बुरीतरह छागया।

हामिदग्रली साहब ने पेशकार साहब के मुँह की ग्रोर ललचाई दृष्टि से देखा। उनके मन में विचार ग्राया कि ज़िले की लाखों की ग्राय में से, जहाँ मैं पिछत्तर फ़ीसदी हड़प करजाना चाहता था, वहाँ यह मुझे चार हज़ार दे कर ही टलखानाचाहता है। बाकी ग्रामदनी पर यह गुण्डा पेशकार सबका नेता बनकर हाथ साफ़ करेगा।

परन्तु पेशकार रामदयाल की ईमानदारी की दृढ़ता भी वह पिछले दो महीनों में देखचुके हैं। वह दृढ़ता पत्थर की दृढ़ता थी। ग्रब उससे व्यर्थ टकराना वह ग्रपनी मूर्खता समझते थे।

मन में थोड़ी संतोष की भावना लाकर हामिदग्रली साहब बोले, "चलो जो तुम्हें मंजूर है वही सही पेशकार साहब, लेकिन कम-से-कम घर-खर्च के गल्ले ग्रौर ईंधन का तो इन्तजाम तुम करा ही दियाकरो!"

'यह होजाएगा।" मुस्करातेहुए पेशकार साहब बोले, "ग्राप जैसे नेक दिल ग्रफ़सर के लिए रामदयाल क्या नहीं करसकता? यह सर के बल ग्रापका हर काम करेगा।"

ग्राज पेशकार रामदयाल एस० पी० हामिदग्रली साहब के पास से नहीं लौटे, बल्कि मित्र हामिदग्रली के पास से लौटरहे थे। उनके मस्तिष्क में वह भारीपन नहीं था जो उनकी कोठी से लौटते समय रहाकरता था।

पेशकार साहब का दिल बढगया था। ग्रब ज़िले के शासन की बागडोर उनके हाथों में ग्रागई थी। कलक्टर एस०पी०ग्रौर शहरकोतवाल जिसके हाथों में हों, वह क्या नहीं करसकता था ज़िले में?

शक्ति चारों ग्रोर से सिमटकर पेशकार रामदयाल के चरणों पर ग्रा गिरी थी। ग्रब पेशकार साहब का ध्यान ग्रपने भाग्य पर गया। जब-जब उन्हें

ाग्य से कोई चीज़ मिलती थी तो उन्हें शीला की स्मृति होआती थी। वह कांत में बैठकर कहते थे, "शीला! यह सब तेरे ही पुण्य का प्रताप है, वरना तो जैसा भी कुछ हूँ, हूँ ही वस। जो बुरी आदतें इस जीवन ने पकड़ ली वे तो अब चिता की लपटों में हीजाएँगी। तेरे प्रताप से ही आदर के साथ यह सम्मान पारहा हूँ।"

पेशकार साहब हामिदअली साहब की कोठी से ताँगा किराएपर लेकर ीधे कोतवाली पहुँचे। कासिम मिरज़ा अपने दफ्तर के सामने मूढ़े पर बैठे थे। न्होंने पेशकारसाहब से खड़ेहोकर हाथ मिलाया और उन्हें आदरपूर्वक बिठाते हुए बोले, "कहाँ से तशरीफ़आवरी होरही है जनाब की? आज तो मालूम ता है कि सुबह से ही गश्त पर निकलेहुए हैं।"

"सरकार हामिदअलीसाहब की कोठी से आरहा हूँ। मुझेयाद फ़रमाया था ज़ूर ने। आज सब मामला साफ़ करदिया। चार हज़ार रुपए, खाना, कड़ी उनको हमने देना मंजूर करलिया है। इसके अतिरिक्त उनका और कसी चीज से कोई सम्बन्ध नहीं होगा। शेष सब आय अमले में बाँटदी जाएगी।

"भाई कमाल करदिया पेशकार साहब!" उछलकर कासिम मिरज़ा पेशकार साहब से लिपट गए और खुशी में भरकर बोले, "पेशकार साहब! इसे आपने मात, दी है वरना अपनी आज तक की नौकरी में यह शेर की तरह दहाड़तारहा है। अपने मातहतों को इसने हमेशा बुरी तरह पीसकर रखा है। मूज़ी कहीं का, सारे अमले की आमदनी को अकेला ही डकारजाना चाहता था।"

"मेरा कमाल कुछ नहीं है कासिम साहब! यह सब तो आपकी बुद्धिमत्ता पूर्ण राय और पुलिस के अफ़सरों तथा सिपाहियों के दिएहुए हौसले का फल है। मैंने सबके लाभ बात कही, इसलिए सबने मेरा साथ दिया।" इतना कहकर पेशकारसाहब ने ज़रा कासिममिरज़ा का हाथ अपने हाथ में लेकर दबातेहुए कहा, "बड़ा दिल कसमसारहा था यह बात स्वीकार करतेहुए।"

"जरूर कसमसारहा होगा। बड़े मोटे-मोटे माल मुँह लगेहुए हैं इसके। वे ही आप यहाँ भी लगानाचाहते थे। आपने इनकी इच्छा को शुरू में ही दबादिया। यह बहुत खूब किया; वरना यह ज़िले भर पर छाजाते और

में आकर काश्तकारों के पंजों में चलीजानेवाली है। लाला पकौड़ीमल उसी गाँव की पंचायत के सरपन्च और इलाके के मशहूर पहलवान विरमापरशाद की सहायता से अपनी जमीन को काश्तकारों से छीनलेनाचाहते हैं।

वह पुराने काश्तकारों को पहलवान विरमापरशाद का झटका देने से पहले इलाके की पुलिस को अपने हाथ में लेलेनाचाहते हैं। इसीलिए पहलवान विरमा परशाद को अपने साथ लेकर यह मुझसे वात पक्की करने आए हैं। बात तिरछी है। मामला तूल पकड़सकता है। एक दो लाशें भी हो सकती हैं।"

पेशकार रामदयाल बोले, "ज़मीन पर कब्ज़ा करलो। सब देखाजाएगा। ज़मीन पर कब्ज़ा करके उसे वेचडालो।"

"यही सोचरहा हूँ सरकार !" लाला पकौड़ीमल बोले।

"यही सोचरहे हो तो वताओ कितने की है तुम्हारी जायदाद ! लगभग चालीस हज़ार की तो होगी ?"

"इससे ज्यादा की ही होगी सरकार !" पहलवान विरमापरशाद ने सीना उभार कर कहा।

"पचास हज़ार की होगी ?"

"जी बस इतनी ही।" ज़रा डरतेहुए लाला पकौड़ीमल बोले।

"घबराइए मत लालाजी ! दारोग़ा अब्दुलवेग साहब बहुत पुराने और तजुरबेकार दारोग़ा हैं। इनके रहते आपको किसी प्रकार की परेशानी नहीं होगी। परन्तु मामला वहुतसंगीन है। इसमें जान का खतरा है। इस तमाम भय से तुम्हें साफ़ बचालेजाने की ज़िम्मेदारी पन्द्रह हज़ार रुपए से कम में नहीं ली जासकती। वरना खाने-पीने दीजिए उन वेचारे काश्तकारों को। क्यों व्यर्थ उनके पीछे पड़ेहो ? जब क़ानून ने ज़मीन उनकी मारुसी करदी है तो छोड़वैठो वेचारों को। तुम्हें तो भगवान् ने सबकुछ दिया ही है।"

पन्द्रह हज़ार की वात सुनकर सेठ पकौड़ीमल घवराउठे। पांच हज़ार रुपए का वायदा वह पहलवान विरमापरशाद से करचुके थे।

"क्या सोचरहेहो सेठजी ! आप इस जायदाद को अस्सी हजार से कम में नहीं वेचेंगे और आपको यह जायदाद हमारी मदद के विना नहीं मिल सकती।" पेशकार साहब ने साफ़-साफ़ कहा।

सौदा फ़ायदे का था और लाला पकौड़ीमल उसे छोड़नेवाले नहीं थे पन्द्रह हजार में सौदा निश्चित हुआ। पेशकार रामदयाल ने सात हज़ार रुपए लेकर शेष दारोग़ा अब्दुलबेग के हवालेकरदिए।

"अपने थाने में हिस्सेवार सबको देदेना दारोग़ा अब्दुलबेग !"

बेचारे अब्दुलबेग तो अपने मतिष्क से इस केसको पाँच हज़ार का समझ कर आये थे, परन्तु पेशलार रामदयाल ने उसे पन्द्रह हज़ार का बनादिया।

संध्या को पेशकार साहब कासिममिरजा से मिले और सात हज़ार रुपए उनके सामने रखकर बोले, "आज की कारगुजारी है सरकार !"

सात हजार के नोट देखकर कासिममिरजा का चेहरा खिल उठा। "पेश-कार साहब अगर सच पूछो तो हामिदअली साहब ने यहाँ आकर हमारा कारोबार ही चौपटकरदिया था। ये दो महीने कितनी तंगी में कटे, मैं बयान नहीं करसकता। आप भी तंगी में चलरहे थे, इसलिए आपको भी तकलीफ़ नहीं दी। लाओ पहले इनमें से एक हज़ार रुपए इधर सरकादो, तब बातें करने में मज़ाआएगा।"

"केवल एक हजार कासिमसाहब ! मैं तो आपको दो हजार देनेआया हूँ।"

"पेशकार साहब ! दो हजार देदो तो बस संकट ही कटजाए।" कहकर उन्होंने पेशकार साहब की ओर मित्र-भाव से देखा।

"कासिम भाई ! आपका आशीरवादरहा तो आप देखना कि कुछ ही दिनों में सब संकट काटदूँगा।"

पेशकारसाहब दो हजार रुपए कोतवाल साहब को देनाचाहते थे, परन्तु उन्होंने केवल पन्द्रहसौ ही लेकर कहा, "पन्द्रहसौ आप अपने पास रखें पेशकार साहब ! और चार हज़ार हामिदअली साहब को देदें।"

पेशकार साहब ने कासिम साहब का सुझाव मानलिया और आज चार हज़ार रुपए लेकर हामिदअली साहब की कोठी पर पहुँचे।

"तशरीफ़ रखिए पेशकार साहब ! मैं अभी पायजामा पहनकर आरहा हूँ।" हामिदअली साहब बोले।

कुर्त्ता-पायजामा पहनकर एस. पी. साहब बैठक में आए। पेशकार साहब ने उनके अदब में खड़ेहोकर सलाम किया और चारहजार रुपए की भेंट देतेहुए बोले, "परमात्मा ने पहला ही दिन अच्छी लग्न का भेजा हुज़ूर। कुर्सी पर बैठते

ो दारोगा अब्दुलवेग एक लाला पकौड़ीमल को लेआए। अपनी जमीन को ाश्तकारों से साफ करके वह वेचना चाहते थे। गुण्डा पार्टी की मदद न्होंने पैसे देकर खरीदली थी। वह पुलिस से केवल यही चाहते थे कि हम ारा उनके साथ नरमी वरतें।"

"वहुत ठीक किया आपने पेशकार साहव! यह नरमी गरमी के वे शोले ाधकाएगी कि यही लाला पकौड़ीमल अपना सव कुछ वेचकर तुम्हारे क़दमों र रखजाएँगे।"

हामिदअली साहव को वात की तह तक पहुँचतेहुए देखकर पेशकार ाहव मुस्कराकर वोले, "आप वात की तह तक पहुँचगए। इसीलिए सही ात आपको वताने में मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई।"

तीसरे महीने हामिदअलीसाहव को ये चार हजार रुपए मिले थे। उनका ुटा हुआ श्वाँस कुछ उभरकर नाक के नथनों से निकला। वह दाढ़ी पर हाथ ़रतेहुए वोले, "खुदा आपको कामयाव करे और आपके इरादों में मजवूती ाए। मैं आपकी पूरी मदद करूँगा।"

पेशकार साहव डेढ हजार रुपए लेकर अपने घर पहुँचे।

उन्होंने कपड़े उतारकर करीमखाँ को वुलाया और एक सौ रुपए का नोट ुसे देतेहुए वोले, "लो हमारी भाभीजान के लिए मिठाई लादेना। दो-ो रसगुल्ले तुम और तुम्हारी वीवी हमारा नाम लेकरखाना।"

"आपके लिए वेगम ने चाय वनारखी है। हुक्म हो तो एक प्याली ेआऊँ।" करीमखाँ ने पूछा।

"लेआओ करीमखाँ, तुम्हारी वेगम की चाय को अस्वीकार करना पेशकार ामदयाल के लिए वड़ा ही कठिन है।" पेशकार साहव मुस्कराकर वोले।

वह चाय भी क्या होती थी, अच्छा-खासा जुशाँदा होता था। वड़ी इला-ची, दारचीनी और न जाने क्या-क्या काढ़े की तरह औंटाकर उसमें वरावर ा दूध डालकर तेज मीठे की वनाईजाती थी।

"दूध जरासा और।" चाय ओठों से लगाते ही पेशकारसाहव वोले।

"दूध जितना चाहें।" करीमखाँ की वीवी दौड़कर गिलास से दूध देतीहुई ़रीमखाँ से वोली।

आज पेशकारसाहव की सूरत देखकर करीमखाँ वोला, "पेशकार

आज चेहरे पर रौनक मालूम देती है।"

इधर दो महीने से, जब से हामिदअलीसाहब तशरीफ़ लाए थे, पेशकार साहब की परेशानी को करीमखाँ गम्भीरता केसाथ देखरहा था। परेशानी की दशा में वह पेशकार साहब से कभी कोई प्रश्न नहीं करता था। उनकी परेशानी में कोई सुझाव देने के योग्य वह अपने को नहीं समझता था। आज उनका खिलाहुआ चेहरा देखकर वह समझगया कि उन्हें आज उनके मक़सद में सफलता मिली थी। करीमखाँ को बहुत प्रसन्नता हुई इस बात से।

वह पेशकार साहब के मूढ़े के पास स्टूल डालकर उसपर बैठतेहुए बोला, "दो-ढाई महीने में आज आपके चेहरे पर रौनक दिखाई दी है।" बड़ा प्यार था उसके शब्दों में।

पेशकार रामदयाल प्रसन्नतापूर्वक बोले, "करीमखाँ! आज दो महीने के संघर्ष के पश्चात् हामिदअली साहब को सही मार्ग पर लासका हूँ। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि एक अफ़सर से विरोध होकर फिर ऐसी बनी है कि शायद ऐसी किसी से पहले न बनी हो।"

"खुदा आपको आपके इरादों में कामयाबी दे! मैं और मेरी बेगम तो हमेशा परवरदिगार से यही मनाते हैं पेशकारसाहब!"

पेशकार रामदयाल का छोटा भाई हरदयाल लीले पहलवान के दो पट्ठों के साथ गाँव में ऐश कररहा था। वह आनन्दपूर्वक ऐश की छानरहा था। उसे खेती-क्यारी की कोई चिंता नहीं थी। उसे अपने भाई से पर्याप्त सहायता मिलजाती थी और जबकभी आवश्यकता पड़ती थी तो वह नाना से भी कुछ छीन-झपटलाता था। उसकी ऐश में कोई कमी नहीं आती थी।

पिछले दो महीने में पेशकार रामदयाल ने उसे एक कौड़ी भी नहीं भेजी थी, इसलिए वह कुछ परेशान सा था। रामदुलारी से पेशकार रामदयाल के शहर लौटजाने पर हरदयाल ने और भी मेल-मोहब्बत बढ़ाली थी। रामदुलारी को अपनी लड़की के गौने में कुछ रुपए की आवश्यकता थी। हरदयाल ने वायदा भी करलिया था सहायता करने का, परन्तु भाई के पास से इधर दो महीने में जब एक भी रुपया नहीं आया तो उसके लिए लज्जित होने की स्थिति पैदा होगई।

पेशकार रामदयाल मूढ़े पर बैठे करीमखाँ से बातें कररहे थे कि सामने

उन्हें छोटा भाई हरदयाल आता दिखाईदिया। हरदयाल ने आते ही उनके चरण छुए और पेशकार साहब ने भी उसे आशीर्वाद दिया।

"गाँव में सब ठीक हैं?" पेशकार साहब ने पूछा।

"सब कृपा है परमात्मा की।"

"लीले पहलवान के पट्ठे तो खुश हैं?"

"ऐश की छानरहे हैं।"

"रामदुलारी भी आती है तुम्हारी ओर?"

"आती तो है बेचारी भाई साहब! परन्तु उसकी लड़की का गोना है और बेचारी को पचास रुपए की आवश्यकता है।"

"हमारे भाई-बिरादरों के क्या हाल-चाल हैं?"

"सबके मस्तिष्क ठीक करदिए लीले पहलवान के पट्ठों ने। एक दिन ताईजी पर तो एक पट्ठा गँडासा लेकर चढ़गया था। बड़ी कठिनाई से उसे रोका। परन्तु वह दिन है और आज का दिन है कि फिर किसी ने चूँ-चरा नहीं की और ताईजी ने तो कुए की ओर आना ही बन्द करदिया।" हरदयाल ने बताया।

पेशकाररामदयाल के दिल में उभार आगया। उन्होंने मूछों पर तावदेकर मन में कहा, "नाचीज कीड़े-मकौड़े मेरा सामना करना चाहते हैं। जिसके सामने एस. पी. हामिदअली पानी माँग गया, उसके सामने ये बेचारे उल्लू पिल्लू क्या खाकर आएँगे?"

फिर हरदयाल से जरा मुस्करातेहुए कहा, "अब तो गाँव में दबदबा बैठ गया होगा तेरा। वे पाजी दस नम्बरी भी चिलमबरदारी करते हैं या नहीं। उन हरामजादों से खूब काम लिया करो।"

"सब कायदे में आगए हैं भाई साहब!"

"करीमखाँ हरदयाल को बाजार में खाना खिलालाओ। मैं [illegible] से आऊँगा। होसकता है सुबह ही लौटूँ।" पेशकार साहब ने [illegible] एक दस रुपए का नोट जेब से निकालकर हरदयाल को दिया और वह करीमखाँ के साथ बाजार चलागया।

उनके चलेजाने के पश्चात् पेशकार सा[illegible]

चलकर सड़क पर आए और एक खाली त[illegible]

ताँगे वाले ! ज़रा ठहरो।"

"आइए पेशकार साहब !" ताँगेवाला बोला।

"वेलीबाजार चलो।"

"जो हुक्म सरकार !"

ताँगा वैलीबाजार में गुलाब के मकान के नीचे जाकर रुका और पेशकार साहब ने आज खुशी में चार आने के बजाय उसे एक रुपया दिया।

ताँगेवाला पेशकार साहब की तरक्की के लिए खुदा से दुआ माँगता हुआ चलागया और पेशकार साहब ज़ीने पर चढ़कर गुलाब के कमरे पर पहुँच गए।

: २५ :

पेशकार रामदयाल का दबदबा ज़िले भर पर छाया हुआ था। उनके भाव से ज़िला मेरठ का कोई भी बड़ा व्यक्ति अपरिचित नहीं था हिन्दू महा-सभा, काँग्रेस, आर्य समाज तथा मुस्लिम लीग के मंत्री और प्रधान और उनके अतिरिक्त भी शहर के सभी इज्ज़तदार लोग उनसे मेल रखना अपनी सुरक्षा के लिए आवश्यक समझते हैं।

पेशकार रामदयाल ने अब काँग्रेसियों की ओर से अपना कड़ा रुख कुछ कुछ बदल दिया था। आजकल तो काँग्रेस के विशेष कार्यकर्त्ताओं से उनकी मित्रता भी रहती थी। जिला-काँग्रेस के प्रधान सेठ दामोदरप्रसाद उनके घनिष्ट मित्र थे। जिला-काँग्रेस में बिजली की तरह चमकदार और शक्ति-शालिनी रामेश्वरी देवी ज़िला-काँग्रेस की मंत्राणी भी पेशकार साहब का बड़ा आदर करती थीं।

समय जाते देर नहीं लगती। जमाना तीव्र गति से बदलता पेशकार रामदयाल ने देखा। संयुक्तप्रान्त के शासन को उन्हीं जेल काटनेवाले काँग्रेसियों के हाथों में जातेहुए पेशकार साहब ने देखा; जिन्हें वह किसी दिन चपरकनाती कहकर पुकारते थे।

कांग्रेसी मंत्री-मंडल देश के कई प्रान्तों में बनगए और उनके शासन सफलतापूर्वक चलनेलगे।

पेशकार साहब इन बातों में अधिक मस्तिष्क ख़राब नहीं करते थे। इन मामलों में कोतवाल कासिम मिरजा की विचारशील राय उन्हें मान्य होती थी। इनके कहने के अनुसार मक्खी-पर-मक्खी मारना वह अपना कार्य समझते थे। उन्होंने देखा भी था कि उनकी राय कभी ग़लत नहीं होती थी।

अभी हुक्के पर चिलम लाकर करीमखाँ ने रखी ही थी कि एक ताँगा आकर सड़क पर रुकता दिखाई दिया। ताँगे से शहर कोतवाल साहब उतर कर पेशकार साहब की ड्योढ़ी की ओर चलेआए।

पेशकार साहब हुक्के की नै को एक ओर करके तहमद सँभालतेहुए नंगे ही बदन कोतवाल साहब की अगवानी के लिए बढ़गए।

"हुक्का पिया जारहा है पेशकार साहब का। आज आपको वह मज़ेदार बात सुनाऊँ कि आप भी खुशी के मारे लोट-पोट होजाएँ।" कोतवाल साहब हँसकर बोले।

"क्या नई सूचना लाए हैं कोतवाल साहब? शायद सेठ दामोदर प्रसाद को रामेश्वरी देवी ने चुनाव में हरादिया। यही बात है न!"

"आपकी सी० आई० डी० हमसे पहले ही आपको सूचना देजाती है।" कोतवाल साहब मुस्करातेहुए बोले।

"मुझे इस बात का कल ही पता चलगया था। सेठ दामोदरप्रसाद तो बड़े तिलमिलारहे होंगे। परन्तु कोतवाल साहब! आपको रामेश्वरी देवी के साहस और उसकी योग्यता की दाद देनी होगी।" पेशकार साहब बोले।

"इसमें क्या शक है? आप देखेंगे कि एक दिन यह अपने सूबे की मंत्री बन बैठेगी। बेचारे सेठ दामोदरप्रसाद को किसी दिन इनकी दौलत के जाल में फँसा छोड़कर यह चिड़िया आकाश पर उड़ती दिखाईदेगी।"

"तो क्या आप समझरहे हैं कि इस समय चिड़िया सेठजी के जाल में फँसी है। वे जमाने तो कभी के हवा हो चुके कोतवाल साहब! आपने रामेश्वरी देवी का आजकल का रूप नहीं देखा है शायद। अब वह मुजरों में नाचनेवाली वेश्या नहीं रही है। बड़ी ही तेज तर्रार औरत

"मैं सब जानता हूँ पेशकार ाहवस! तभी तो यह

देवी में एक बात तो अवश्य मैंने देखी है कि वह पैसे की गुलाम नहीं" कासिम मिरज़ा बोले ।

"आपका अनुमान सही है। मैं पहले उसे लालची समझता था, पैसे की स मानता था। जब प्रारम्भ में इसने अपना मुँह मेरी ओर से फेरकर सेठ दामोदर प्रसाद की ओर किया था तो मैंने अपने मन में यही कहा था कि यह पैसे की दास औरत है। परन्तु अब जब इसने सेठ दामोदर प्रसाद को भी अपनी स्वतन्त्रता के लिए लात मारदी तो मेरे उस पुराने विचार की जड़ें स्वयं खोखली होगई।" गम्भीरता के साथ पेशकार रामदयाल ने कहा।

"सेठ दामोदर प्रसाद बेचारे काँग्रेस के प्रधान-पद से पृथक होगए। उनके स्थान पर जो महाशय आए हैं, सुना है कि वह रामेश्वरी देवी की ही सहायता से ही आए हैं।" कोतवाल साहब बोले।

"केवल रामेश्वरी देवी की ही सहायता से नहीं, वह स्वयं भी प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। अंग्रेज-सरकार के विरुद्ध क्राँति करनेवाले गर्म दल के वह रहचुके हैं। उनकी इसी गर्मी ने तो रामेश्वरी देवी को अपनी ओर ...लिया है।"

"यह आपका फरमाना बिल्कुल बजा है। मैं इसे मानता हूँ। गर्मी चाहे जैसी भी क्यों न हो, आखिर ताकत होती है।"

इन्हीं दिनों योरोप में महायुद्ध के बादल मँडरानेलगे। योरोप का वायु मंडल युद्ध के प्रकम्पित वातावरण से भरगया। अंग्रेज सरकार ने देश क... अपनी नीति पर चलाने का प्रयास किया और युद्ध में काँग्रेस से सहयोग माँ... काँग्रेस ने सरकार से उनकी युद्ध-नीति का विवरण चाहा। इससे अंग्रे... सरकार और काँग्रेस में मतभेद पैदा हो गया और प्रदेशों में चलने... काँग्रेसी सरकारों को समाप्त होजाना पड़ा।

अंग्रेजी सरकार ने देश की इस दशा को गम्भीर दृष्टि से देखा... काँग्रेस से समझौता करने का प्रयत्न किया। अंग्रेज-मजदूर-दल के नेता... आए, परन्तु किसी समझौते पर न पहुँचसके।

देश की दशा में गम्भीर परिवर्तन होता जारहा था। पेशकार र... ने भी इस दशा को ध्यान से देखा। वह उस समय जिले की ...नीति के प्रधान व्यक्ति थे।

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में समस्त देश एक विशाल आन्दोलन की आँधी लेकर अंग्रेजी दमन की शक्तियों के विरुद्ध खड़ा होगया। उन्होंने भारत छोड़ो का तूफ़ानी नारा लगाया। भारत की जनता ने उसे गुरु-मंत्र के रूप में ग्रहण किया।

देश-व्यापी आन्दोलन प्रारम्भ करने का अधिकार बम्बई के काँग्रेस अधिवेशन ने महात्मा गाँधी को दिया। परन्तु आन्दोलन प्रारम्भ होने से पूर्व ही गाँधी जी तथा देश के अन्य प्रमुख नेताओं को सरकार ने वन्दी बनाकर कारा-ग्रहों में डालदिया।

देश में भयंकर तूफ़ान आगया। देश के कोने-कोने से असंचालित आन्दोलन स्वयँ पैदा होनेवाले वन-वृक्षों की भाँति फूटपड़ा। आन्दोलन ने क्रांतिकारी रूप धारण कर लिया। भारतीय जनता ने अपने सामने आनेवाली हर रुकावट को ध्वंस करने का बीड़ा उठालिया।"

मेरठ जिला भी इस आन्दोलन से वंचित न रहा। मेरठ सन् सत्तावन की महान् क्रांति की पण्य-भूमि रहा था। स्वतन्त्रता का वह संग्राम यहीं से प्रारम्भ हुआ था। उस संग्राम में दिएगए बलिदानों की ज्वाला अभी तक ठंडी नहीं होपाई थी। जनता के दिलों में वह ज्वाला भरीहुई थी।

विद्रोह की ज्वाला मेरठ जिले के गाँव-गाँव और क़स्बे-क़स्बे में फैली। मुट्ठी भर सरकारी पुलिस दूर-दूर के थानों में रहकर इस विद्रोह को नहीं दबा सकती थी। जनता के जोश का पारावार नहीं था। वह अपने नेताओं के बन्दी बनाए जानेपर क्रुद्ध होउठी। उसने अंग्रेज सरकार का सब काम चौपट कर दिया।

जोशीले नौजवानों ने पुलिस के कई थानों को जलाकर राख करदिया। पुलिस ने अपनी जान बचाने को गोलियाँ चलाई और जनता के भी बहुत से आदमी अपने प्राणों से हाथ धो बैठे। परन्तु विद्रोह की ज्वाला बराबर बढ़ती ही गई।

पेशकार रामदयाल ने इस आन्दोलन को बहुत गम्भीर दृष्टि से देखा। वह हामिदअली साहब की पेशी में जिले भर के झगड़ों की मिसलें सँभालने वाले थे। उनका कार्य झगड़ा होने के पश्चात् प्रारम्भ होता था। झगड़ा होने से पूर्व या झगड़े के बीच वह मौन रहते थे।

गुलाब के कमरे पर रात्रि को उन्होंने कोतवालसाहब को दावत दी। दोनों आमने-सामने बैठे और एक दूसरे से दृष्टि मिलाई। दोनों की दृष्टि ने एक-दूसरे से कहा, "मेल में देखा, कितनी शक्ति है। पूरा जिला अपनी मुट्ठी में है।"

"सुना है जिले के कई थाने बदमाशों ने जलाकर रखकर दिए!"

"यही सूचना तो मैं भी तुम्हें देनेवाला था। बेचारे अब्दुलबेग की सुनते हैं बहुत बहुत बुरी गत बनाईगई।" कोतवालसाहब बोले।

"क्या मारडाला बेचारे को?"

"बोटी-बोटी काटकर कुत्ते-बिल्लियों के सामने फेंकदीं। थाने का एक भी सिपाही जिन्दा नहीं बचता। उस मूर्ख ने भीड़ पर गोली चलवादी थी। उनके भी कई आदमी मरगए।"

यह सुनकर पेशकार रामदयाल को क्रोध आगया। देहात के बदमाशों की इतनी जुरत कि सरकारी दारोग़ा की बोटी-बोटी काटकर फेंकदें। परन्तु वह खून का घूंट पीकर रहगए। उनकी जबान पर कोई शब्द न आया।

उनके चेहरे पर आनेवाले भावों को कासिममिरजा भाँपतेहुए बोले, "... वे. के मरने से आपको बहुत सदमा हुआ।"

"इसमें कोई शक नहीं। मैं उसे एक नेक तबियत मित्र समझता रहा हूँ। उसने मुझे कभी धोखा नहीं दिया। वह आधी रात मेरे काम के लिए हाज़िर रहता था।"

"यह ठीक है।" कासिम मिरजा ने कहा।

"सुना है रामेश्वरी फरार है। क्या यह सच है।"

"बिल्कुल सच है और सेठ दामोदरप्रसाद ने कलक्टरसाहब को वारफंड में बीस हज़ार रुपया दिया है। यह उससे भी बड़ा सच है?"

"बीस हज़ार! परन्तु यह उसके लिए क्या बड़ी बात है?"

"बात तो कुछ बड़ी नहीं है पेशकार साहब! परन्तु बहुत बड़ी बात है यह। कल तक जो काँग्रेसी बना फिरता था, आज वह कलक्टर साहब के पीछे पीछे दुम हिलाता फिररहा है। सुना है पण्डित रामखिलावन ने उन्हें हिन्दू-महासभा का प्रधान भी बनादिया है। पंडित रामखिलावन अब हिन्दू-महासभा के मन्त्री बनगए हैं।"

"दुनियाँ इसी तरह चलती है कोतवाल साहब !" दो गिलासों में शराब डालतेहुए पेशकारसाहब बोले ।

"धीरे-धीरे दोनों ने शराब पीनी प्रारम्भ करदी और अनुभव किया कि उनके मस्तिक पर लदीहुई व्यर्थ की बातें न जाने कैसे आप-से-आप काफूर होतीचलीगई ।

"आज गुलाब दिखाई नहीं देरही पेशकार साहब !"

"आपके लिए मुर्ग़मुसल्लम तय्यार कररही है । बड़ा लज़ीज़ बनाती है गुलाब ! आपने गुलाब का अभी नाच ही देखा है, वह औरत क्या है, यह समझने का प्रयत्न नहीं किया ।" पेशकारसाहब बोले ।

"इन सब बातों में उलझने की फ़ुर्सत ही कहाँ मिलती है पेशकारसाहब ! मेरा तो अपनी बेग़म साहिबाँ की फरमाइशें पूरी करते-करते ही नाक में दम रहता है । इस ज़िन्दगी में उन्हीं की फरमाइशें पूरी करसकूँ, यही काफी है ।"

"गुलाब एक देवी है कोतवाल साहब ! मेरे दिल ने उसे सर्वदा से अपनी कहकर स्वीकार किया है और यही कारण है कि आज अकेला होने पर भी मैं अकेलेपन का अनुभव नहीं करता । अकेलेपन का मुझे कभी अनुभव ही नहीं करने दिया गुलाब ने ।"

शराब का दौर पूरे जोर पर था । तभी मुर्ग़मुसल्लम की प्लेट लेकर गुलाब को नौकरानी अम्मीजान सामने आगई । उन्हें देखकर कोतवाल साहब बोले, "गुलाब बाई को कहो कि हमें उनकी जरूरत इस मुर्ग़मुसल्लम से ज्यादा है । हम ज्यादा खानेवाले आदमी नहीं हैं ।"

"अभी तशरीफ लारही हैं गुलाब बाई !" अम्मीजान ने अदब के साथ कहा ।

गुलाबाई ने चन्द मिनटों के पश्चात कमरे में प्रवेश किया तो देखा कि आज उसका रूप ही निराला था । उसे देखकर कोतवालसाहब दंग रहगए । पहले गुलाब को जब कभी भी उन्होंने देखा था, तो मुजरे में बनी-ठनी गुड़िया के रूप में देखा था । आज वह एक सादा घरेलू स्त्री के रूप में थी और बनाव शृंगार एक दम नहीं था ।

परन्तु रूप का जो निखार इस सादगी में था वह बनावट में कभी कोतवाल साहब को नहीं दिखाईदिया ।

"आओ गुलाब, तुमने तो आज सादगी में भी कमाल करदिया। ये दो-दो तरह के रूप दिखाकर ही तुमने हमारे पेशकारसाहब को ठगा है। हमें तो आज असलियत मालूम हुई है।" कोतवाल साहब बोले।

"आप अपने को बचाएरखिए कोतवाल साहब! कहीं बेगम साहिबाँ का दामन छोड़कर इस ठगोरी डालनेवाली जादूगिरनी का दामन आपके अनजान हाथों में न आजाएँ।" मुस्कराकर पास बैठतीहुई गुलाब बोली।

"बात तो पते की कही तुमने गुलाब!" पेशकार साहब अपनी लम्बी काली मूँछों को अंदाज के साथ मरोड़ी देतेहुए बोले।

कोतवाल साहब ने गुलाब की ओर देखकर मुस्करातेहुए कहा, "हमारी बेग़म साहिबाँ की बात न पूछो गुलाब! उनका नखरा सँभालना तो बस मेरा ही काम है। सच पूछो तो मैं भी शायद उसे न सँभाल पाता, यदि यहाँ आने पर मुझे पेशकारसाहब जैसा दोस्त न मिलजाता। कोतवाल हातमसिंह की मेहरबानी से यह सब चलरहा है।" नशे की झमक में भावुकता भरे स्वर से कोतवाल साहब कहते चले गए।

यह सब कुछ चल ही रहा था कि तभी कोतवाली से एक सिपाही वहाँ आया। उसका साँस फूलाहुआ था। वह बड़ी तेज साइकिल चलाकर आया था। उसे हाँपनी चढ़रही थी। करीमखाँ भी उसके साथ था

करीमखाँ बोला, "हुजूर शहर में बलबा होगया। बेग़म के पुल पर जाते हुए एक अंग्रेज और उनकी मेमसाहब को मारडाला गया। उनकी लाशों को उठाकर नाले में फेंकदिया। बाजार बन्द होगया।"

"हुजूर, केसरगंज की रेलवे-लाइन उखाड़कर फेंकदी। उसपर आनेवाला एक ऐंजिन पटरी से उतरकर जमीन में धँसगया।" दूसरा सिपाही बोला।

"कचहरी की इमारत में आग लगादी।" करीमखाँ बोला।

"हुजूर सदर का पोस्ट आफ़िस जलाकर राख होगया।"

कोतवाल कासिममिरजा यह सब सुनकर सन्न-से रहगए। वह उसी समय खाने की मेज से खड़ेहोतेहुए बोले, "अच्छा पेशकार साहब! मैं अब जाता हूँ। बलवाइयों की आग अब जिले के थानों से बढ़कर शहर में आपहुँची है।"

"जरा ध्यान से काम करना। सरकार रहे या जाए,हमने ठेका नहीं लिया है इसका। अपनी जान सलामत रहेगी तो नौकरियों का घाटा नहीं है।"

"खाती क्यों नहीं गुलाब ! तेरा हुस्न परवरदिगार हमेशा क़ायम रखे। तूने इस बूढ़ी को वह आराम दिया है कि जो अपनी कोख से जायी भी नहीं देसकती।"

"अच्छा तो अब सोजाओ और एक लोटा पानी लाकर पेशकार साहब के पलंग के पास वाले स्टूल पर रखदो। उन्हें रात में प्यास लगती है।"

"अभी रखदेती हूँ बेटी !" अम्मीजान बोलीं।

घर का सब प्रबन्ध ठीक करके गुलाब फिर पेशकार साहब के कमरे में आगई। अम्मीजान एक लोटा पानी स्टूल पर रखकर अपने कमरे में सोने चली गई और गुलाब धीरे से पेशकार साहब की रज़ाई का पल्ला उभार का उसमें लेटगई।

: २६ :

रामेश्वरी देवी ने मेरठ में तहलका मचादिया था। उसका नाम सुनकर पुलिस के अफ़सरों के रोंगटे खड़े होजाते थे। कलक्टर साहब ने हामिदअली साहब और शहर-कोतवाल कासिम मिरज़ा को अपनी कोठी पर बुलाकर डाँटा, "टुम लोग का कारगुजारी अम लोग को बिल्कुल पेशंड नेई आटा। एक मामूली औरट को टुम लोग गिरफ़ाटार नेई कर शेकटा ऐ। अम टुमशे बौट नाराज ऐं।"

हामिदअली साहब शहर कोतवाल कासिम मिरज़ा के रामेश्वरी देवी से पहले सम्बन्धों से अपरचित थे। पेशकार रामदयाल के बीच में आजाने से बात और भी गम्भीर बन गई।

पेशकार रामदयाल रामेश्वरी देवी को आश्वासन देचुके थे कि वह उनके संरक्षण में जो चाहे करती चलीजाए। कासिम मिरज़ा से यह बात छिपी नहीं थी। कासिम मिरज़ा पर पेशकार साहब के पिछले उपकार इतने थे कि वह उनकी राय के बिना कोई क़दम नहीं उठासकते थे।

"साधारण गड़बड़ी की मैं चिंता नहीं करता पेशकार साहब ! उससे

आमदनी भी हम लोगों को काफ़ी हुई। यह बात भी सच है।" कलक्टरसाहब से फटकार खाकर कासिम मिरज़ा पेशकार साहब के पास आकर बोले, "परंतु रामेश्वरी ने जो कल बेगम-पुल पर एक अंग्रेज और उसकी मेम को सरे-आम मरवा दिया, इससे ज़बरदस्त सनसनी फैलगई है। जिले के तीन थाने फुंके जाने पर भी वह जलन कलक्टर साहब के दिल में पैदा नहीं हुई जो इस घटना से पैदाहुई है।"

"इसी को कहते हैं खून का असर मिरज़ा साहब !" पेशकार साहब बोले। "अँग्रेज़ लोग अपनी क़ौम के लिए जानदेते हैं।"

"तो अब आप ही सलाह दें कि ऐसी हालत में क्या किया जाए ?"

"मैं कल रात से इसी बात को सोचरहा हूँ ! रामेश्वरी के प्रति मेरे दिल में जलन भी है और प्यार भी। मैं उसका अहित होतेहुए इन आँखों से नहीं देखसकता। उसके अहित की सलाह भी नहीं देसकता। उसके विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकता। अगर मौका आए तो उसे सहायतता ही करूँगा। जिस औरत की मैं एक बार मदद कर चुका हूँ, उसे फँसाने वाला मैं नहीं बनसकता। उसने चाहे जो कुछ भी कियाहो मेरे साथ।" गम्भीरतापूर्वक पेशकारसाहब बोले।

"तो फिर उस नेक-बख्त से यही कहो कि वह मेरठ छोड़कर कहीं बाहर चलीजाए। यहाँ रहकर वह हमारा सिर-दर्द बनीरहे और हम उसे रोज़ की परेशानी के रूप में सँभाले बेठेरहें, यह भला कैसे चलेगा ?" कासिम मिरज़ा बोले।

"आपकी कठिनाई को मैं अनुभव न कररहा हूँ, यह बात नहीं है मिरज़ा साहब ! आपकी ज़िम्मेदारी से भी मैं पूरी तरह परिचित हूँ। मैं कल से इसी उधेड़बुन में लगा हूँ कि जिससे साँप भी मरजाए और लाटी भी न टूटे।"

संध्या को पेशकार रामदयाल ने अपनी कठिनाई रामेश्वरी देवी के समक्ष स्पष्ट करके रखी और नरमी के साथ कहा, "रामेश्वरी, मैं नहीं चाहता कि मेरे रहते तुम्हें किसी प्रकार भी पुलिस के हाथों कष्ट पहुँचे। यदि तुम उचित समझो तो मेरठ से कहीं बाहर चलीजाओ। तुम जानती ही हो कि आज दीवारों के भी कान लगे हैं। सभी के मित्र और शत्रु दुनियाँ में हैं। कलक्टर साहब उस अंग्रेज और उसकी मेम के कत्ल में तुम्हें फँसानाचाहते हैं। शहर-

कोतवाल और एस० पी० साहब से वह स्पष्ट कहचुके हैं।"

"आपकी हमदर्दी का मैं सम्मान करती हूँ पेशकार साहब ! परन्तु मेरठ का काम छोड़कर मैं बाहर कहाँ चलीजाउँ ? मेरठ मेरा कार्य-क्षेत्र है। यहाँ की जनता में मैंने काम किया है और यहाँ की जनता मेरे संकेत पर चलरही है। उसे आधार-विहीन छोड़कर मैं अपनी जान बचाने के लिए या यों समझिए कि पुलिस की परेशानी कम करने के लिए यहाँ से बाहर चलीजाऊँ; यह असंभव है। हाँ, आप चाहें तो मुझे यहीं पर गिरफ़तार करसकते हैं।" गंभीरतापूर्वक रामेश्वरी देवी ने कहा।

पेशकार रामदयाल की गर्दन नीचे झुकगई। उनकी समझ में कुछ न आया कि उन्हें उस दशा में क्या करना चाहिए। रामेश्वरी एक विचित्र स्त्री के रूप में उनके सामने आई।

रामेश्वरी मुस्कराकर बोली, "किस चिंता में पड़गए पेशकारसाहब ! पाँच हज़ार का इनाम मुझे पकड़नेवाले को सरकार ने बोला है। एक दिन आपने चन्द गुण्डों से मेरी जान बचाई थी और उस समय मेरे लिए जो कुछ भी जीवित रहने का मार्ग आप सुझासकते थे, आपने सुझाया। आपमे सहायता भी की थी मेरी। उससबके लिये मैं आपकी कृतज्ञ हूँ। उस ऋण को उतारकर, अपने को सर्वदा के लिये मुक्त करने के लिए मैं अपनेआपको आपके सुपुर्द करती हूँ।

आज आपको खुले दिल से कहती हूँ कि मुझे गिरफ्तार करके आप पाँच हज़ार रुपए का इनाम प्राप्त कीजिए और ऊँचा ओहदा प्राप्त कीजिए। आपकी प्रशंसा होगी और इज्जत भी बढ़ेगी।"

"तुम्हें गिरफ़तार करके मैं नाम, ओहदा और रुपया नहीं चाहता रामेश्वरी ! मेरी दृष्टि में तुम्हारा वहीं रूप बसा है जो उस दिन था, जिस दिन, तुम्हें उन बदमाशों के चंगुल से निकलकर मैंने बैलीबाज़ार के मकान पर रखा था। एक साधारण पुलिस का सिपाही ही तो था मैं उस समय। उस दशा में भी मैंने सौ रुपए क़र्ज लेकर वह कमरा किराए पर लिया था तुम्हारे लिए। और तुमने एक दिन अपने ज़ीने के नीचे खड़े रामदयाल से दो बातें करना भी पसन्द नहीं की थीं। सेठ दामोदरप्रसाद की चाहिता थीं तुम उस समय। वह घाव इस दिल पर से इस जिन्दगी में नहीं मिटसकता। परन्तु यह रामदयाल

ना दिल है रामेश्वरी, जिसपर एक बार कोई तस्वीर उतर आने पर फिर मिटाई नहीं जासकती ।"

रामेश्वरीदेवी ने पेशकार रामदयाल की ओर देखकर दृष्टि नीची करली और धीरे-धीरे बोली, "पेशकार साहब ! एहसान से अधिक न लादिए मुझे। मेरी ज़िन्दगी बदलगई है। माँ-बाप ने पढ़ाई की छूट दी। बुद्धि, विचार संपर्क और परिस्थितियों ने मेरा ध्यान संगीत और नृत्य की तरफ़ करदिया। सफलता भी मिली उसमें; परन्तु आज़ादी के परों पर उड़कर घर-बार और माँ-बाप से संबन्ध टूटगया। वह ऐसा टूटा कि उन पाजी लोगों के चंगुल में मुझे फँसजानापड़ा। आपने उनसे मुक्ति दिलाई, उसके लिए कृतज्ञ हूँ, परन्तु मुक्ति दिलाकर आपने मुझे एक बाज़ारू औरत बनादिया। बाज़ारू औरत बनने के मैं अयोग्य थी। इसीलिए वहाँ न ठहरसकी।

मेरे पास, सच पूछिए तो, वह दिल ही नहीं है, जो प्रेम करता है और यारबाशी में खुश होता है। मैंने इस क़िस्म का जो कुछ भी अभिनय किया, वह सब मजबूरियों में किया था। आज फिर समय आगया है, जब मैं दुबारा उसी किस्म का अभिनय करके अपना काम निकालसकती हूँ।"

पेशकार रामदयाल रामेश्वरी देवी के मुँह की ओर एक बच्चे की तरह देखतेरहे। एक भी शब्द उनकी ज़बान पर नहीं आया।

"तो ठीक है रामेश्वरी, तुम जो चाहो सो करो। रामदयाल से तुम्हारा कभी कोई आहत नहीं होगा। तुम सरकार से जूझरही हो, सरकार की ताक़तों के बीच कहीं पिसकर न रहजाओ, इसी बात का मुझे डर है।" पेशकार साहब बोले।

'उसकी आप चिंता न करें। पिसने में मुझे खुशी होगी और यह मैं खूब जानती हूँ कि ज़िला मेरठ में पेशकार रामदयाल की मदद के बिना मेरा कोई बाल भी बाँका नहीं करसकता। मैं यह भी जानती हूँ कि पेशकार रामदयाल मेरे लाख रुष्ट करने पर भी कभी मुझसे रुष्ट होनेवाले नहीं हैं।"

पेशकार रामदयाल रामेश्वरी देवी को कोई हानि नहीं पहुँचाना चाहते थे, वह सहायता ही करनाचाहते थे उसकी। [illegible] लौटआए।

शहर में पुलिस ने [illegible]

दंगाहुआ था,वहां के शरीफ़ आदमियों को कोतवाली में बुलवाकर डराया और धमकाया गया था। इसके फलस्वरूप पेशकार रामदयाल के पास शहर के व्यक्तियों का सुबह से शाम तक ताँता बँध गया। किसी का भाई किसी का भतीजा, किसी का बेटा और किसी का अन्य कोई सम्बन्धी हवालात की हवा खारहा था।

पेशकार रामदयाल ने काफ़ी लोगों पर मेहरबानियाँ कीं, परन्तु वे मेहरबानियाँ सूखी नहीं थीं अफ़सरों की नजर के लिए सभी को कुछ-न-कुछ भेंट देनी आवश्यक थी। पेशकार साहब चाहे मित्रता में कुछ भी न लें, परन्तु अफ़सरों का मुँह तो वह बिना पैसे के बन्द नहीं करसकते थे।

देने वाले स्वयं कहते थे, "आपकी तो कोई बात नहीं है पेशकार साहब, परन्तु सब काम आपके ही तो हाथों का नहीं है। आपके ऊपर भी तो अफ़सर हैं। वे भला बिना खाए-पिए क्यों किसी का काम करने लगे हैं?"

"आप सब कुछ समझते ही हैं।" पेशकार साहब कहते "बिना दिए कौन किसके काम आता है? यह दुनियाँ का पहिया तो देने-लेने से ही चलता है भाई साहब।"

सीधी-सच्ची पेशकारसाहब की बात आवश्यकता वालेके दिल और दिमाग़ में घुसती चलीजातीं थी और जिसका कोई काम उलझा होता था वह व्यर्थ के क़ानूनी चक्करों में पड़ने के बजाय पेशकार साहब के नज़राने को उचित समझता था।

पेशकार रामदयाल रामेश्वरी देवी की हर बात को छिपाने के लिए उद्यत थे, परन्तु उसका यह रूप सामने आएगा, इतना पता उन्हें भी नहीं था।

पेशकार रामदयाल एक बार कांग्रेस का शासन देखचुके थे। इसलिए अब पहलेवाला दृष्टिकोण उनका नहीं था, कांग्रेसियों के विषय में। उन्हें कोरे चपरकनाती समझना पेशकार साहब ने बन्द करदिया था।

रामेश्वरी का आतंक जिले भर पर छाया हुआ था। रामेश्वरी देवी का नाम कलक्टरसाहब के कानों में पड़ता था तो मालूम होता था कि मानों कोई उनके कानों में तेजाब डालरहा था।

संध्या को कासिम मिरज़ा पेशकार साहब से आकर मिले, तो उनके चेहरे पर हवाइयाँ उड़रहीं थीं। परेशानी की दशा में वह पेशकार साहब से बोले,

आज तबियत बहुत परेशान है पेशकार साहब !"

"अवश्य होगी कासिममिरज़ा ! शहर में गड़बड़ी क्या कुछ कम है ? चौबीस घण्टे की ड्यूटी है आपकी और फिर जब कलक्टर साहब को ही चैन नहीं है तो आप भला कैसे चैन से बैठसकते हैं ?" गम्भीरतापूर्वक पेशकारसाहब बोले ।

कासिममिरजा ने टोप पास की कुर्सी पर रखदिया और आँखें मिचमिचाते हुए बोले, "क्या इस क्वार्टर पर पड़ेरहने की क़सम खाली है आपने ? कभी तफ़री के लिए भी समय निकाललिया करो । ऐसी भी क्या कमाई के पीछे पड़ेहो कि जो इस थली को छोड़ते ही नहीं ।"

"थली वाकई जबरदस्त बनी हैं कासिम साहब ! कितना रुपया बरसता है इस थली पर, जरा अनुमान तो लगाइए कितने लोग पलते हैं इस थली की बदौलत ? शहर में बीसियों पहलवानों के अखाड़े चलरहे हैं । मैं इसे भगवान् की थली मानता हूँ कासिममिरज़ा !"

कासिम मिर्जा ने पेशकार साहब को खड़ा करतेहुए कहा, "बात तो तुम्हारी बिलकुल सच है पेशकारसाहब ! आपके याराने में जितने साल निकल गए आराम से निकलगए, बिना चिंता से निकलगए ।"

पेशकार साहब ने पायजामा पहनकर कमीज गले में डाली और ऊपर से कोट पहन लिया । पैरों में काला पंप-शू पहना और हाथ में हरिद्वार से खरीदकर लाईहुई बेंत लेकर कासिम साहब के साथ चलदिए ।

करीमखाँ बाहर बरांडे में खटिया डाले लेटरहा था । क्वार्टर का ताला लगाकर करीमखाँ से बोले, "तुम यहीं रहना करीमखाँ ! मैं ज़रा बजार जा रहा हूँ । कोई आए तो उसका नाम, काम और पता लिख लेना । उससे कहना कल मिलें हमसे ।"

"कोई जरूरी काम आजाए तो आप कहाँ मिलेंगे ?" करीमखाँ ने पूछा ।

"मिलेंगे कहाँ ? ऐसी क्या दस-बीस जगह हैं पेशकार साहब के जाने की ?" कासिम मिरजा बोले । "पेशकार साहब के ठिकानों से तो तुम पूरी तरह वाकिफ़ हो । गुलाब के कमरे पर देखलेना ।"

"बहुत अच्छा हुजूर !" सलाम झुकातेहुए करीमखाँ बोला ।

कासिम मिरजा और पेशकार साहब खरामा-खरामा सड़क पर पहुँच गए ।

शाम का झुट-पुटा होता जारहा था। नगरपालिका की बत्तियाँ सड़कों पर खड़े खम्बों पर मुस्करारही थीं। तभी एक ताँगा आता दिखाईदिया। पेशकार साहब की कड़ाकेदार आवाज निकली, "ऐ ताँगे वाले!"

"जी हुजूर!" पहिचानकर ताँगेवाले ने ताँगा रोककर उत्तर दिया, "आइ-हुजूर! किधर चलना है सरकार को? बेलीबाजार लेचलूँ क्या?"

ताँगेवाले की बात सुनकर कासिम मिरज़ा और पेशकार साहब एक दूसरे की ओर देखकर मुस्करा दिए। दोनों ताँगे पर सवार होगए। कासिम साहब बोले, "कम्बोगेट की चौकी पर चलो।"

बहुत अच्छा हुजूर!" ज़रा सँभलकर ताँगेवाले ने कहा।

कम्बोगेट पर ताँगा रुकवाकर दोनों उतरपड़े और वहाँ से पैदल ही बेली बाजार तक घुमते चलेगए। गुलाब के मकान पर पहुँचे तो गुलाब मुस्कराक सामने आती हुई बोली, "आज कोतवाल साहब कैसे रास्ता भूलगए?"

"हम रास्ता नहीं भूले गुलाब! पेशकार साहब से पूछो, आज हम ही इ यहाँ लाए हैं। लेकिन आज तबियत बड़ी परेशान है। बराँडी की बोतल में मौजूद है या नहीं, पहले यह बताओ। न हो तो अम्मीजान को भे मँगालो।'

"यह गुलाब का कमरा है कोतवाल साहब! किसी दखियारी क है। आपकी दुआ से यहाँ क्या मौजूद नहीं रहता?" इठलाकर गुलाब बो

"हमने सुना है गुलाब! कल यहाँ सेठ दामोदर प्रसाद तशरीफला पेशकार साहब बोले।

"दामोदर प्रसाद!" आश्चर्य में पड़कर कासिम मिर्जा ने कहा।

"आए तो थे, परन्तु उन्हें यहाँ आकर जिस नाउम्मीदी का साम पड़ा, वह शायद उनकी जिन्दगी की पहली नाउम्मीदी थी। शराब मैंने कहदिया, "मैखाने में मिलती है। यह मैखाना नहीं है। यह हुनर की जगह है। इसमें आपको दिलचस्पी हो तो पेश किया ज

"फिर क्या कहा सेठ दामोदरप्रसाद ने?" पेशकार साहब हुए पूछा।

"कहते क्या? मैं तो समझ ही नहीं पाई कि आखिर व देखना और गाना सुनने से तो शायद उन

थोड़ी देर में सिर पर हाथ फेरतेहुए कासिम मिरजा बोले, "यार पेशकार ाहब ! शराब भी खुदा की नियामतों में एक बहुत आला चीज है। अभी-भी शरीर टूटाजारहा था, पैर लड़खड़ारहे थे और और अब मालूम होता है कि न जाने कहाँ से ताक़त और ताजगी मेरे शरीर में आगई।"

"शराब की प्रशंसा नहीं की जासकती कासिम साहब ! इसी की कृपा से आप और हम मित्र बने यहाँ बैठे हैं और इतने दिन से ज़िले पर हकूमत करते चलेआरहे हैं। इसी की कृपा से सारे ज़िले के दारोगा और दीवान हमारे मित्र बनेहुए हैं और इसी की शक्ति से हार मानकर हामिदअली साहब चार चार हज़ार की पेंशन पर हमारे हाथों की कठपुतली बने बैठे हैं।"

"लेकिन यह बात माननीहोगी पेशकार साहब कि शराब का इस्तेमाल करना भी मज़ाक नहीं है। जहाँ इसकी बदौलत हम लोगों को ज़िन्दगी में इतनी कामयाबी मिली है, वहाँ इसी के बर्बाद किए हुए लोगों की भी दुनियाँ में कमी नहीं है।"

"न होगी कासिम साहब !" शराब का एक हल्का-सा घूँट हलक़ से नीचे उतारतेहुए पेशकारसाहब बोले। "हमारा ऐसे बेहूदा लोगों से क्या सम्बन्ध ? हमें तो अपने काम-से-काम है।"

शराब पीकर दोनों गुलाब के कमरे से चलकर ताँगा-स्टैंड पर आए। पेशकारसाहब ने कासिममिरज़ा को कोतवाली के लिए ताँगे पर बिठादिया और स्वयँ कलक्टरसाहब की कोठी की ओर चलपड़े।

उनके मस्तिष्क में उस समय सेठ दामोदरप्रसाद घूमरहा था। उन्हें उसका नोटों की गड्डियाँ लेकर गुलाब के कमरे पर आना बुरी तरह खटकरहा था। परन्तु फिर उन्होंने मन-ही-मन कहा, "वाह री गुलाब ! तू सचमुच में गुलाब हो। तेरी खुशबू को वह पाजी कभी नहीं प्राप्त करसकेगा। तेरे अन्दर रामदयाल की बास बसचुकी है।

: २७ :

रामेश्वरीदेवी का नाम मेरठ ज़िले की सीमाओं को पार करके अब देश-व्यापी बनचुका था। उनकी दैनिक कार्यवाहियों की ओर भारत के सभी

दैनिक-पत्रों का ध्यान आकर्षित होचुका था। देशभर के पत्रों के पाठकों का ध्यान उसकी वीरता और निर्भीकता के ऊपर नित्य सुबह-ही-सुबह अखबार हाथ में आते ही जाता था।

रामेश्वरी देवी आज जबसे पेशकार रामदयाल से बातें करके लौटी थीं, तो उनके चरित्र पर विचार कररही थी।

वह एक पक्के शराबी हैं।

हुस्नपसंद नवाबाना तबियत के व्यक्ति हैं।

अपनी शान के नीचे दुनियाँ को दबाकर चलनाचाहते हैं।

मित्रता निभाने में बहुत दृढ़ है; परन्तु·······

बस यहीं आकर रामेश्वरीदेवी का मस्तिष्क ठहरगया।

पेशकार रामदयाल मित्र किसका है ?

पेशकार रामदयाल की मित्रता किस लिए है ?

इन्हीं दो बातों को लेकर रामेश्वरी देवी बहुत देर तक सोचती रहीं।

पेशकार रामदयाल के जीवन का लक्ष्य क्या है ? ऐश करना, रिश्वतें लेना और उन्हें पुलिस के महकमे में ईमानदारी से बाँटदेना। वह पुलिस और जनता के बीच के दलाल हैं। दोनों का सम्पर्क स्थापित कराने की उनकी ज़िम्मेदारी है।

परन्तु इस उत्तरदायित्व को सँभालने का भी कोई मक़सद होता है और वह मक़सद भी स्पष्ट है।

कौन आदमी है जो अधिक रुपया नहीं कमाना चहता, अधिक ऐश करना नहीं चाहता ? ऐश किसे बुरी लगती है ? बढ़िया होटलों में टिफ़न उड़ाना और काफ़ी-हाउसों में गुलछर्रें मारने में किसे आनंद नहीं आता और हर नई पिक्चर को बोक्स में बैठकर देखने के लिए किसका दिल नहीं फड़फड़ाता ? परन्तु·····बात परन्तु की सामने आजाती है।

दूसरी चीज़ है इज्ज़त, ओहदा और नामवरी, जो पैसा पास होने पर दौड़ी चलीआती है। पैसे के दरबार में इज्ज़त, ओहदे और नामवरी की मिस्लें आप-से-आप खुलतीचलीजाती हैं।

तो पेशकार रामदयाल की मित्रता का अर्थ भी ओहदे, नामवरी व रुपए से ऊपर नहीं कुछ होसकता।

रामेश्वरी देवी को पेशकार रामदयाल का विश्वास नहीं था । परन्तु एक स्तपस्ती की बात थी, जिसपर पेशकार रामदयाल आकर टिकजाते थे । शकार साहब दिलदार आदमी थे । एक बार वह रामेश्वरी देवी को अपना दिल देचुके थे, तो फिर बेवफ़ाई उनकी ओर से नहीं होसकती थी ।

रामेश्वरीदेवी को इसका दृढ़ विश्वास था । इसका यह अर्थ नहीं कि वह भी पेशकार साहब से प्रेम करती थी; परन्तु पेशकार साहब की दुर्बलता को पहचानने की बुद्धि उसमें थी ।

हामिदअली साहब ने पेशकार रामदयाल से चार हजार रुपए महावार और अन्न तथा लकड़ी पर फ़ैसला तो करलिया था और उसे निभाते भी जा रहे हैं, परन्तु दिल में जो जलन एक बार पैदा होचुकी थी उसकी चिंगारी अभी तक बुझने नहीं पाई थी ।

कभी-कभी वह इतनी तेजी से भड़कती थी कि उनका मन चाहता था कि वह पेशकार रामदयाल से किए गए समझौते पर लात मारदें । जिस आदमी ने जिन्दगीभर दूसरों के हाथों पर रखा था, दूसरों पर कृपा की थी, वह अपने हाथ पर इस अदना-से दीवान से चार हज़ार रपूलियाँ रखाए और उसकी कृपा की ओर ताकता रहे, यह बात उन्हें अन्दर-ही-अन्दर कचोटती रहती थी ।

पेशकार रामदयाल को कोई अवसर आने पर नीचा दिखाने की बात उनके मस्तिष्क में ज्यों-की-त्यों बनीहुई थी ।

इन दिनों सेठ दामोदरप्रसाद का हामिदअली साहब के पास आना-जाना प्रारम्भ होगया था । सेठजी ने अपने यहाँ बुलाकर हामिदअली साहब की जो खातिर की उसने उन्हें उनके और भी निकट लादिया था ।

एक दिन बातों में रामेश्वरी देवी का नाम आगया । हामिदअली साह बोले, "अदना-सी औरत ने तूफ़ान मचायाहुआ है जिले भर में । पुलिस नाक में दम है और वह है कि हाथ ही नहीं आती किसी के ।"

"अजी ! साहब ! इसमें भी कुछ राज है एस० पी० साहब ! व तो क्या यह औरत पकड़ी न जाती अब तक ?" पेट पर हाथ फेरतेहुए दामोदरप्रसाद बोले ।

सेठ दामोदरप्रसाद को कांग्रेस के प्रधान-पद से उतरवाना रामेश्वर ही काम था । उनके दिल में रामेश्वरी के प्रति जो जलन थी वह उसे द

न रखसके ।

हामिदअलीसाहब को सेठ दामोदरप्रसाद की बातों में कुछ रहस्य मालूम दिया। उन्होंने बात को और कुरेदते हुए पूछा, "तो क्या आप वह राज बतासकते हैं जिसकी वजह से रामेश्वरी गिरफ्तार नहीं होरही है ?"

"क्यों नहीं बता सकता एस. पी. साहब ! परन्तु कोई सबूत नहीं है मेरे पास। बात सोलह आने यदि सच्ची न निकले तो आप जो चाहें जुरमाना करसकते हैं मुझपर।"

"तब फिर कह डालिए क्या बात है ? सबूत बनालेना पुलिस के लिए कौन मुश्किल है ? मजिस्ट्रेट लोग सब अपने गुलाम हैं। क्या मजाल जो पुलिस-केस को सजा न करें !" हामिदअलीसाहब बोले।

"तो सुनिए, और कान खोलकर सुनिए कि उसकी पीठ पर पेशकार रामदयाल का हाथ है।" गम्भीरतापूर्वक सेठ दामोदर प्रसाद बोले।

"पेशकार रामदयाल का !" आश्चर्य-चकित होकर हामिदअली साहब बोले। "तो क्या तुम यह बात कलक्टर साहब के सामने भी कहसकते हो ?"

"अवश्य कहसकता हूँ। यदि आप मेरा साथ दें तो मैं पेशकार रामदयाल को मेरठ जिले से खोदेना चाहता हूँ। इसने मुझे एक दिन इसी रामेश्वरी के कोठे पर, जो किसी दिन हमारे शहर के वैली बाजार की वेश्या रामप्यारी थी, हथकड़ियाँ लगाई थीं। उस समय मैंने पाँचसौ रुपए देकर इससे मित्रता करली थी। उस दिन के अपने अपमान की ज्वाला आज भी मेरे दिल में उसीतरह जल रही है। इस पाजी का चेहरा सामने आते ही मेरी आँखों में खून उतर आया।"

हामिदअलीसाहब पुलिस के पुराने छटेहुए छाकटे थे। वह समझ गए कि यह सेठ अपने अपमान का बदला लेना चाहता है। दशा उनकी अपनी भी वही थी। दोनों एक ही राह के राही बनकर, मित्र बनगए।

"तो यों कहिए कि आपकी और पेशकारसाहब की आपस में पुरानी लगती और बनती चलीआरही है।" हामिदअलीसाहब बोले।

"जो बात है, वह आपके सामने स्पष्ट कर चुका हूँ। जिसे मैं एक बार मित्र मानलेता हूँ, उससे कोई बात छिपाता नहीं।" सेठजी बोले।

"होना भी यही चाहिए सेठजी !" हामिदअली साहब ने कहा, "म

...हब मेरे अज़ीज़ हैं, परन्तु जब आप बताते है कि वह रामे...
...र हैं तो मैं यह सूचना प्राप्तकर सरकार के साथ गद्दारी नहीं कर
...यह सूचना तुम पहले जाकर कलक्टर साहब को दो और मैं तुम्हारे
...छे आता हूँ। दोनों के मुँह से एकसी बात सुनते ही कलक्टर साहब का
...ज़ होजाएगा और होसकता है कि पेशकार रामदयाल इस मामले
... फँसजाए कि जेलखाने की हवा न खाजाए।"

"ऐसा होजाए तो आनन्द आजाए एस० पी० साहब! लोगों की
...ों में नकेलें डालीहुई हैं इस बदमाश ने। जिले भर पर रौब जमाय
...ा है इसने। इतना भयंकर व्यक्ति मेरी दृष्टि में आज तक नहीं आय
...न्तु यह सब करने से पूर्व सोच लीजिए कि कहीं हाथ हलका न पड़जाए।
...दि वार खालीगया तो यह समझलीजिए कि वह मेरी आफ़त करदेगा
...बदमाश।"

"क्या बात करते हो सेठ? यह हामिदअली का हाथ होगा, मज़ाक नहीं
...हैं इसे सँभालना। एक ही वार में यदि पत्ता साफ़ न करादिया तो हमारा
...म हामिदअली नहीं।"

सेठजी को कलक्टर साहब की कोठी पर भेजकर हामिदअलीसाहब चलने
की तय्यारी करनेलगे।

सेठ दामोदरप्रशाद ने कलक्टर साहब से कहा, "सरकार! पेशकार
साहब यदि चाहें तो रामेश्वरी को एक मिनट में गिरफ़तार किया जासकता
...है। उनके आपस में पुराने संबंध है।"

"टुम केशा बोलटा ऐ! पेशकार रामडेयाल अंग्रेजी शरकार का खेरखा
आडमी ऐ! तुम उशको बुराई डेना माँगटा ऐ शेट! टुम को शबूत डेना
ओगा।"

"बिल्कुल सरकार! मैं सबूत देने के लिए तय्यार हूँ।"

उसी समय एस० पी० हामिदअली साहब वहाँ पहुँचगए। वह बो...
"सरकार! रामेश्वरी को पकड़ना आसान नहीं है। पेशकार रामदयाल ...
की पीठ पर हैं।"

"वेको मट! टुम केशा बोलटा ऐ।"

सेठ दामोदरप्रसाद और हामिदअली साहब ने मिलकर यह क...

ज छै महीने होगए हामिदअली साहब को और रामेश्वरी को, जो
सों की इसी मेरठ के वैली बाज़ार की एक वेश्या थी, गिरफ़तार नहीं
ते।

वह कुछ कर भी नहीं सकते सरकार ! वह उसे गिरफ़तार करना ही
चाहते।"

कलक्टर साहब ने दोनों ओर की बातें सुनीं, तो दंग रहगए।

पेशकार साहब ने कलक्टर साहब के सामने सेठ दामोदर प्रसाद का पूरा
च्चा चिट्ठा खोलकर रखदिया और अन्त में जब बताया कि वह सेठजी
रखैल रहचुकी है और वह जो उसकी कोठी है वह सेठ दामोदरप्रसाद की
ी खरीदकर दीहुई है तो यह सुनकर कलक्टरसाहब का सिर चकरागया
उनका माथा गर्म हो गया।

कलक्टर साहब बड़ी बुद्धिमत्ता से स्थित का अध्ययन कररहे थे।
सेठ दामोदरप्रसाद के चरित्र पर उनकी दृष्टि गई तो उन्होंने उसे एक
सर्प के रूप में पाया और सर्प समझकर ही उसे उन्होंने अपने पहलू में लिया
था। वह सेठ से सशंकित होउठे।

पेशकार रामदयाल बोले, "अब रही हामिदअली साहब की बात। सारे
जिले की पुलिस इनके हवाले करदीजिए। जिधर-जिधर को रामेश्वरी जाएगी
मैं सूचनादूँगा। मेरी सूचना गलत हो तो मैं जिम्मेदार और यह न पकड़
पाएँ तो इनकी नाकाबलियत।"

पेशकार साहब की बातें सुनकर कलक्टर साहब ने तुरन्त फ़ोन उठाया
और हामिदअली साहब को बुलाकर हुक्म देतेहुए बोले, "पूरी टायनाटी का
शाट टुम को पेशकार शाब के इशारे पर काम करना ओगा ! तुम को रामे-
श्वरी किडर-किडर जाटा ऐ ऐशा खबर टुमको ड़िया जाएगा और गिरफ़टार
करना टुमारा काम ओगा।"

"बहुत खूब सरकार !" कहकर हामिदअली साहब वहाँ से चलेगए।

पेशकार साहब का किराए का ताँगा सड़क पर खड़ा था वह सीधे जाकर
उसमें जाकर बैठगए। वह मन में सोचनेलगे कि यह दुनियाँ भी क्या है
यह सेठ दामोदर प्रसाद, जिसके मैं चन्द मिनटों में नाखते बन्द कर सकता
... देखकर कैसा रंग बदलता है और इस बूढ़े हामिदअली को तो अ...

पेंशन पर भी रहम नहीं आया। अगर इसे खो नहीं दूँ तो मेरा नाम पेशकार रामदयाल नहीं।

पेशकार साहब वहाँ से सीधे रामेश्वरी देवी के पास पहुँचे और उन्हें जाकर पूरी स्थिति बताई।

"आपने बिलकुल सही कदम उठाया पेशकार साहब! मैं आपको अपने काम करने का प्रोग्राम देती जाऊँगी और आप दो-दो घण्टे बाद का समय हामिदअली साहब को देतेजाएँ। मैं उनके हाथ आनेवाली नहीं हूँ। छब्बीस जनवरी का स्वतन्त्रता-दिवस मनाना है मुझे। जिले के गाँव-गाँव में उसकी लौ जलनी चाहिए। मैं पूरा प्रबन्ध करचुकी हूँ, आपको चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है।"

पेशकार रामदयाल के लिए अब सोचने को कुछ भी नहीं रहगया था। उन्हें रामेश्वरीदेवी से प्रोग्राम का सही ब्योरा मिलता रहेगा और वह उसे कलक्टरसाहब को देतेरहेंगे।

बड़ी सरगर्मी के साथ रामेश्वरीदेवी को गिरफ्तार करने की बात जिले भर के वातावरण में फैलगई। रामेश्वरीदेवी छब्बीस जनवरी का स्वतन्त्रता-दिवस घर-घर में मनाने के लिए जिले के ग्राम-ग्राम का दौरा कररही थीं।

जहाँ-जहाँ भी वह जाती थीं वहाँ-वहाँ उनका भव्य स्वागत होता था और भेंट भी दी जाती थी। देश को स्वतंत्र कराने के लिए सरकार के सब क़ानूनों को तोड़तीहुई वह सिर को हथेली पर लिए दौरा कररही थीं।

हामिदअली साहब अपनी पुलिस की टुकड़ी को लिए गाँव-गाँव में तबाही मचाते फिर रहे थे। एक पागल कुत्ते की सी दशा होगई थी उनकी। जहाँ भी पहुँचते थे वहाँ से यही सूचना मिलती थी, "आई थीं यहाँ, अभी-अभी चली गईं।" और वह सर पटक कर रहजाते थे।

हामिदअली साहब तीन बार अपनी टुकड़ी को बदलकर देखचुके थे कि कहीं वह टुकड़ी ही तो उन्हें धोखा नहीं दे रही थी परन्तु सफलता न मिल सकी। लाख सिर पटकने पर भी वह रामेश्वरीदेवी को न पकड़सके।

जिले की पुलिस का हर व्यक्ति पेशकार रामदयाल के साथ था। क्या मजाल जो भी कोई इधर-से-उधर खिसकसके। शहर की चौकियों के दीवानों को कोतवाल कासिममिरजा ने ऐसा कसदिया था कि हामिदअली साहब

के कानों तक किसी बात की हवा भी नहीं पहुँचसकती थी।

पेशकार रामदयाल ने कासिममिरजा की सिरदर्दी बचाने के लिए रामेश्वरी देवी का ध्यान गाँवों की ओर फेरदिया था।

देहात के थानेदारों को हिदायत थी कि वे हामिदअलीसाहब को क़तन किसी काम में सहयोग न दें। यही होता भी रहा। जहाँ-जहाँ भी हामिदअली साहब जाते थे, कोई यह तक नहीं समझता कि एस. पी. साहब दौरे पर आएहुए थे। सब खानापुरी करते थे। खाने-पीने की भी उनकी बात कहीं पर नहीं पूछी जाती थी।

अजीब गत बनगई हामिदअली साहब की। पुराना मोटा शरीर इतनी कठिन दौड़-भाग सहन करने योग्य नहीं था? वह तो बेचारे वैसे ही साल भर में रिटायर होने जारहे थे। वह सोचरहे थे कि व्यर्थ इस सेठ के बच्चे ने जवाँमर्दों का जोश दिलादिया। अच्छे-खासे चार हज़ार रुपएमहावार मिलजाते थे, तो क्या बुरे थे? इस सेठ ने मुझे मुसीबत में डालदिया। वह परेशान होउठे।

पेशकार के बच्चे की सब बातें ठीक होती जारही हैं और मैं रामेश्वरी को नहीं पकड़पारहा। व्यर्थ मुसीबत फँसला दी मैंने अपनी जान को।"

एस. पी. साहब इसी परेशानी में बैठे थे कि उनकी कोठी की बगल में एक ताँगा रुकता प्रतीतहुआ। उन्होंने आश्चर्य-चकित होकर होकर देखा कि पेशकार रामदयाल उनके सामने खड़े थे।

हामिदअली साहब खड़ेहोगए कुर्सी से और कौली भरकर मिले पेशकार साहब से, परन्तु पेशकार साहब के दिल में न तो कोई उभार ही आया और न कोई प्रसन्नता ही हुई। मानो कोई काठ का मोटा टुकड़ा आकर उनके सीने से लगगयाहो।

हामिदअलीसाहब बोले, "भय्या पेशकार साहब, ग़लती माफ़ करदो। इस हरामखोर सेठ के चकमे में आकर मैंने कलक्टर साहब से तुम्हारी बुराई करदी।"

"चलिए कोई बात नहीं वह तो। कलक्टर साहब हमें पहचानते हैं। आपके बुराई या भलाई करने से कुछ बनना-बिगड़ना नहीं है।"

"इतना बुरा न मानो भय्या पेशकार साहब! ग़लती भी तो आखिर इन्सान से ही होती है और अपनों के सामने ही ग़लती तस्लीम की जाती है।

वरना तो ग़लती मानने की जरूरत ही क्या थी ?" गम्भीरतापूर्वक हामिदअली साहब ने कहा।

पेशकार रामदयाल अब उनकी बातों में आनेवाले नहीं थे। एक आदमी को जीवन में एक ही अवसर देते थे वह। वह अवसर हामिदअली साहब ने अपनेआप ठुकरादिया था। उन्होंने विश्वासघात किया था पेशकार रामदयाल के साथ, जिसका दण्ड उन्हें भुगताना ही होगा।

"रामेश्वरी का स्वतन्त्रता-आन्दोलन जमीन के नीचे-ही-नीचे पनपरहा है और आप उसे गिरफ्तार नहीं करपारहे हैं। अजीब दशा है जिले की। कलक्टर साहब के हाथ में यदि आज आपको बर्खास्त करने का अधिकार हो तो एक मिनट में बर्खास्त करा सकता हूँ। अवनत होकर तबादला कराना चाहो तो कल अवसर है आपके लिए। वरना तो पिसकर रहजाओगे। मियाँ हामिदअली साहब !

पेशकार रामदयाल दो बार नहीं परखता किसी आदमी को।"

हामिदअली साहब सहमगए पेशकार साहब की यह बात सुनकर। उनके घर के अन्दर खड़ाहुआ एक अदना सा पेशकार हामिदअली साहब को कितना बड़ा चेलेंज देरहा था। उनका बदन अचेतन सी दशा में एक ओर को ढुलक गया। उन्हें पसीना आगया और आँखों के आगे अन्धेरा छागया।

"तुम जोकुछ करनाचाहो, मुझे मंजूर है पेशकार रामदयाल ! तुम्हारे साथ मैंने विश्वासघात किया है।" हामिदअलीसाहब की जबान से निकला।

इन शब्दों को सुनकर पेशकार रामदयाल के दिल की जलन तो कुछ कम अवश्य हुई, परन्तु वह हामिदअली साहब से अब कोई समझौता नहीं कर सकते थे। हामिदअली साहब ने अपना विश्वास स्वयं खोदिया था।

रामेश्वरीदेवी छब्बीस जनवरी को जिले को [illegible] देकर किसी कार्यक्रम मेरठ से बाहर चलीगईं।

मेरठ जिले की पुलिस के सर से एक जबरदस्त [illegible] और [illegible] के दिमाग को जरा आराम मिला।

पेशकार साहब आज कलक्टर साहब के [illegible] [illegible] पर [illegible] [illegible] बोले, "सरकार देखी आपने हामिदअली साहब की [illegible] ? उसके साथ मैंने हमेशा [illegible] बर्ताव किया, परन्तु न मालूम क्यों [illegible] [illegible] ऊपर

पुलिस-लाइन में करने और उधर की गलत बातें आपके कानों तक पहुँचाने में क्या आनन्द आता था ? मैं इस तरह के आदमी को बात करने के योग्य नहीं समझता सरकार बहादुर !"

"टुम टीक केटा ऐ पेशकार रामडेयाल ! उश रोज टुमने डेका अमने केशा-केशा डाट-फटकार बेटलाया टा उसको। ये टुमारा ई डेम ऐ कि रामेश्वरी ऐमारा ज़िला शे भागगेया।"

"सब आपकी मेहरबानी से हो रहा है सरकार ! पेशकार रामदयाल के इशारे पर आपका जिला नाचता है, यहाँ की हकूमत नाचती है। आपकी शक्ति मेरी शक्ति है ! वरना रामदयाल का अपना क्या है ? अपना तो सीने का उभार-ही-उभार है।"

"टुम शेरकार का बौट खेरखा आडमी ऐ। अम टुमको बोट पेशंड करटा ऐ। टुम जानटा ऐ कि अम अंग्रेज किशी का शाट शेराब नेई पीटा। टुमारा शाट पीटा ऐ। टेमाम जिला में एक टुमारा शाट शेराब पीटा ऐ।"

"यह मैं जानता हूँ हुजूर कि हुजूर का मुझपर कितना बड़ा विश्वास है। जब तक इस जिस्म में प्राण हैं अंग्रेज़-सरकार का ईमानदार नौकर रहने की कसम खाता हूँ सरकार बहादुर से।

सरकार आदमी बड़ी कठिनाई से मिलते हैं और फिर जो मिलते भी हैं उनमें अपने कहने के योग्य कितने हैं ? हामिदअली साहब जैसे एस. पियों पर आपकी इतनी बड़ी अंग्रेजी सरकार नहीं चलरही है हुजूर ! वह तो हम जैसे अदना लोगों के दम पर ही चलरही है हुजूर ! हम सभी लोग अंग्रेज सरकार के दिल से सेवक हैं।"

"शेरकार टुम लोगों का बोट खेयाल रकटी ऐ। टुम लोगों की बोटसी बाटें अम लोग जानटा ऐ लेकिन अमने टुम लोगों को पूरा छूट डिया उआ ऐ। टुम लोग ऐश कर शेकटा ऐ बिला पेशा, अपना टेनका को शारा-का-शारा बेचा शेकटा ऐ।" आँखों-में-आँखें डालकर कलक्टर साहब ने कहा।

पेशकार रामदयाल को आज पताचला कि कलक्टर साहब जो उन्हें अपनी दृष्टि में बच्चे जानपड़ते थे, बच्चे नहीं थे।

पेशकारसाहब जरा सँभलकर बोले, "ये ही तो सब सरकार की मेहरबानियाँ हैं। सरकार क्या अपने फ़र्ज को नहीं समझती हैं ? सरकार अपने लोगों के लिए

सब कुछ करने को तय्यार रहती हैं।"

आम लोग भी सरकार की तारीफ़ करते हैं।"

"ऐ! टुम केशा वोलटा ऐ पेशकार रामडेयाल! आम लोग का मेटलब ऐ पब्लिक।"

"जी सरकार! कौन खुश नहीं है अंग्रेजी सरकार से? अँग्रेजी सरकार ने हमें तालीम दी, हमें रेलगाड़ियाँ दीं, मोटरें दीं, हवाई जहाज दिए, नौकरियाँ दीं, सरकार क्या नहीं दिया हमें अंग्रेजी सरकार ने?" पेशकार साहब बोले।

"तो क्या एमारा राज क़ायम रहेगा इन्डुस्टान में?"

"अवश्य रहेगा कलक्टर साहब! उसे कोई नहीं हटासकता। हम लोगों के रहते अंग्रेजी-राज जानेवाला नहीं है। हमने अपने खून से सींचा है इसे सरकार बहादुर!"

कलक्टर साहब की दृष्टि में आज जितने अन्दर पेशकार रामदयाल घुस गए, उतने आज के पूर्व पहले कभी नहीं घुसपाए थे।

भाग २

: २८ :

मैं अपने कार्यालय में कुर्सी पर जाकर बैठा ही था कि एक अपरिचित व्यक्ति कार्यालय के अन्दर आया और कड़ाकेदार आवाज से बोला, "यज्ञदत्त शर्मा कौन है ?"

"विराजिए", मैंने कहा ।

"क्या तुम्हारा ही नाम यज्ञदत्त शर्मा है ?" आगन्तुक ने पूछा ।

"लोग इसी नाम से पुकारते हैं मुझे ।" मैंने सरल स्वभाव से कहा ।

आगन्तुक ने अपने हाथ का थैया मेरी मेज पर रखकर उसके अन्दर से एक किताब निकली और उसे मेरे सामने मेज पर पटकता हुआ बोला, "मैं पूछता हूँ कि तुम कौन होते हो मेरी कहानी लिखनेवाले ? तुम्हें किसने यह अधिकार दिया कि तुम मेरी कहानी इस प्रकार पुस्तक में प्रकाशित करदो ?"

इतना कहकर वह आराम से मेरी मेज के सामने पड़ी कुर्सी पर बैठ गया । मैंने उसके चेहरे पर देखा । आगन्तुक की सूरत हू-बहू वही थी जो मेरे विचार में दीवान रामदयाल की सूरत थी । उसके चेहरे की बनावट भी नपी-तुली वैसी ही थी जो मैं अपने विचार से सही करचुका था । मैंने उसकी सूरत एक बार फिर गम्भीरतापूर्वक देखी और आदरपूर्वक पूछा, "क्या आपका नाम भी रामदयाल है ?"

"रामदयाल नहीं, पेशकार रामदयाल कहो ।" मुँह बनाकर क्रोधपूर्ण दृष्टि से मेरी ओर देखतेहुए आगन्तुक बोला, "यह वही पेशकार रामदयाल बैठा है यहाँ जिसकी दृष्टि सम्मुख जिले भर की जबानें हिलती-हिलती बन्द होजाती थीं । उसी के सामने तुम इस तरह बोलरहे हो कि मानो बड़ों से बातें करने का तुम्हें सलीका ही नहीं ।"

आगन्तुक की बात सुनकर मुझे लगा कि मानो उसने मेरे गाल पर एक तमाचा लगादिया । उसके अपमान की तो मैंने कोई बात नहीं पूछी थी । जो कुछ पूछा था वह यही जानने के लिए पूछा था कि क्या वह वास्तवमें दीवानराम-

दयाल ही थे। आखिर बिना पूछ-ताछ किए विना पूरी तसल्ली किए, मैं कैसे उन्हें अपने अपने उपन्यास का नायक मानलेता ?"

मैंने कहा, "वात करने की तमीज कोई छोटा हो या वड़ा सभी को आनी-चहिए। आपका नाम लेकर आपको पुकारा, यह मुझसे भूल हुई। तो आपका यह नाम दिखावटी ही है। पुकारने का नाम केवल 'पेशकार साहब' ही है।"

"यही बात है!" आगन्तुक मुस्कराकर तनिक लापरवाही से बोला। "क्या आप सिग्रेट का शौक नहीं करते? एस्ट्रे तो रखी है मेज पर।"

"जी नहीं।" मैंने कहा' "यहाँ कुछ लोग ऐसे भी आते हैं जो सिग्रेट पेश न करने पर समझते हैं कि उनकी आव-भगत में कुछ कमी कीगई।"

"क्षमा कीजिए शर्माजी! मेरा भी ऐसा ही विचार है। पान-बीड़ी की बात न पूछनेवाले को मैं भला आदमी नहीं समझता?"

अब वह मुस्करारहा था। उसका क्रोध काफ़ूर होचुका था।

मैंने एक सिग्रेट पेश की और आगन्तुक ने उसे होठों पर लगाकर सिलगाया, ठीक उसी प्रकार सिलगाया जैसे पहले पेग की गुलाबी रमक पर सवार होकर शराबी सिग्रेट सिलगाता है।

मैंने समझा आदमी शौकीन है। ठीक पेशकार रामदयाल का अन्तिम स्वरूप है। दीवान रामदयाल के बुढ़ापे का खंडहर है।

मैंने पुस्तक पर दृष्टि डाली। पुस्तक थी मेरा उपन्यास 'दीवान रामदयाल' और फिर उस व्यक्ति की ओर देखा। दोनों में कोई अन्तर नहीं था। मैं बोला, "तो यह आपकी ही कहानी है मेरे इस उपन्यास में ?"

"हू-ब-हू मेरी शर्मा जी!" वह मुझे आदर प्रदान करतेहुए बोला। "परन्तु तुम्हें यह कहानी सुनाई किसने ?"

मैंने कहा, "पुलिस के एक अफ़सर मिले थे मथुरा से देहली आतेहुए रेल के डिब्बे में। उन्होंने यह कहानी सुनाई मुझे थी। मुझे कहानी दिलचस्प लगी, मैंने नोट करली।"

इसपर आगंतुक वहुत इतमीनान के साथ बोला, "हो-न-हो तुम्हारी कासिम मिरज़ा से भेंट होगई। इतनी सही कहानी और कोई नहीं सुनासकता। वह हमारा मित्र रहा है शरमाजी!"

"बहुत खूब!" मैंने कहा। फिर मैं बहुत देर तक उस व्यक्ति के विषय

हूँ कि आपकी मुझसे कभी भेंट नहीं होसकती।"

अस्थाना साहब ने गम्भीरतापूर्वक आगन्तुक के चेहरे पर देखा। उसकी लम्बी-लम्बी मरोड़ीदार मूंछें देखीं। मूंछें काली नहीं थीं, सफेद थीं, परन्तु उनमें करारापन था। आँखें हू-ब-हू दीवान रामदयाल की थीं। चेहरा-मोहरा भी दीवान रामदयाल का था। वह भयभीत से होकर बोले, "यह सब क्या है शर्मा जी ? क्या किताब के पन्नों से दीवान रामदयाल निकलपड़े ?"

"बात यही है।" आगन्तुक ने कहा।"इसके पश्चात् कासिममिरजा ने नौकरी से स्तीफा देदिया। आज तक की नौकरी में ही उन्हें परमात्मा ने अच्छी-खासी पैदा करादी थी। दो-चार लाख के आसामी बनगए थे। फिर क्यों पुलिस का खतरनाक जीवन व्यतीत करते ? अलीगढ़ में एक शानदार कोठी बनाकर उसमें रहना प्रारम्भ करदिया।

परन्तु क्या कहूँ शर्माजी,जब से स्तीफा देकरगए हैं, कभी एक पत्र भी नहीं लिखा। उनके दिल की सलेट से रामदयाल का नाम इस प्रकार मिटगया कि कभी लिखा ही नहीं गया था।" दर्दभरे स्वर में आगन्तुक ने कहा।

मैंने चपरासी को बाजार भेजकर चाय मँगाई और फिर हम तीनों ने पीनी प्रारम्भ की।

चाय की प्याली होठों से लगातेहुए आगन्तुक बोला, "आज बहुत दिन बाद इस अन्दाज के साथ चाय पीरहा हूँ शर्मा जी ! जीवन के कैसे-कैसे चित्र इस जीवन में देखलिए, उनका दुहराना व्यर्थ है। फिर भी मैं आपको अपनी पूरी कहानी अवश्य सुनाऊँगा। मैं नहीं चाहता कि आपके उपन्यास के पाठक आपको यह कहकर चिढ़ाएँ कि उपन्यास अधूरा ही रहगया।" कहकर आगन्तुक मुस्करादिया।

आतन्तुक से, 'दीवान रामदयाल' की शेष कहानी सुनने की उत्कण्ठा मेरे मन में भी कम नहीं थी। मैंने कहा, "तो ठीक है, आज से ही आप अपनी कहनी प्रारम्भ करदें और मैं साथ-साथ अपना उपन्यास लिखताजाऊँ। आपके दिल का भार भी कम होजाएगा और मेरा अधूरा उपन्यास भी पूरा होजाएगा।"

बात निश्चित होने में देर लगी, परन्तु दीवान रामदयाल को अपनी कहानी सुनानी प्रारम्भ करने में देर नहीं लगी।

चाय की प्याली में चुस्की लेतेहुए होठों पर जीभ फेरकर दाहिने हाथ से मूँछें मेंठी। फिर जरा करीने से बैठकर बोले, "रामेश्वरीदेवी के जिला मेरठ से चलीजाने पर मैंने देखा कि जो आग अंग्रेजी सरकार को जला डालने के लिए भड़की थी, वह धीरे-धीरे शांत होगई। उसमें झुलसीहुई मेरठ की जनता कराह रही थी। जिन लोगों ने विद्रोहियों का साथ दिया था, उन्हें खोज-खोजकर दण्डित कियागया। पुलिस की सरगर्मी प्रारम्भ हुई।

वह समय दमन का था। उस द मन की मशीन का मैं एक विशेप पुर्जा था। पेशकार की कुर्सी पर बैठे-बैठे मेरी मशीनगन जिले भर के विद्रोहियों को कुचलडालने के लिए दनादन गोलियाँ दाग रही थी। उस समय मैं कलक्टर साहब और एस० पी० साहब की नाक का बाल था।

हामिदअली साहब का पत्ता साफ कियाजाचुका था। उनका तबादला पदच्युत करके कियागया था। वह एस.पी. से फिर शहर कोतवाली पर बुलन्दशहर चले गए।

हामिदअली साहब को मैंने किस सफ़ाई से साफ़ किया यह कहानी पूरे पुलिस के अमले को ज्ञात थी। अब मेरी दृष्टि में खटकनेवाला व्यक्ति केवल दामोदरप्रसाद था। मित्र भी मैं उसे मानता था। हामिदअली साहब की तरह केवल लेन-देन का ही व्यवहार उससे नहीं रहा था। उसने दिल-से-दिल मिलाकर कईबार बातें की थीं। एक मेजपर बैठकर भोजनकिया था और एक बोतल से शराब पी थी। क्या वह सब स्वप्न था? क्या उसमें कोई सचाई नहीं था? यह मैं मान नहीं सकता। मेरा दिल गवाही नहीं देता।

सेठ दामोदर प्रसाद मोटी बुद्धि का इन्सान था। वह किसी के भी फुसलाने में आजाता था। वह हामिदअली की चालों में फँसकर मूर्ख बनगया था। उसकी वह मूर्खता मेरा सर्वनाश भी करासकती थी। मुझे जेल भी भिजवा सकती थी। इसपर मैंने कई बार विचार किया।

कई बार सेठ दामोदरप्रसाद पर मुझे क्रोध आया और फिर उतनी ही बार दया ने क्रोध को दबा दिया। समय लम्बा पड़तागया और क्रोध ठण्डा होतागया। अन्त में एक दिन वह क्रोध साधारण उपहास में बदलगया।

मैं कलक्टर साहब के साथ महीने में चार बार शराब पीता था। शराब के नशे में कलक्टरसाहब अपने मतलब की बातें मुझसे पूछते थे और मैं अपने

लव की बातें उनसे करता था।

रात्रि के साढ़े सात बजे मैं उनकी कोठी पर पहुँचा। काफ़ी फल और
कीन मैं अपने साथ लेगया था। मिठाइयाँ भी काफी थीं। करीमखाँ उनके
थ था।

मैंने मेम साहब को जाकर सलाम किया। मुझे देखकर मेम साहब के
हरे पर मुस्कराहट आगई। बड़ी रंगीन मिजाज थीं यह मेमसाहब भी। मुफ्त
शराब के शौक पर चढ़ीहुई थीं। खाने को मेवे, फल, मक्खन, बिस्कुट;
हने को हवादार बँगला, जिसमें घूमने को लॉन और बागीचा भी था; पहनने
बढ़िया-से-बढ़िया वस्त्र; सैर के लिए मोटरगाड़ी; काम करने को नौकर-
ाकर, ऐसी ऐश जो कभी रानियों और बेगमों को भी उपलब्ध न हुई हो;
मसाहब को प्राप्त थी।

वैसे मेम साहब जिन्दादिल स्त्री थीं। मेरा सलाम लेकर बोलीं, "वेल
शकार शाब! जब अम टुमको अपना कोटी में गुशता डेकटा ऐ तो अमारा
्तियत कुश ओजाटा ऐ। जब अम अपना डेश में चेला जाएगा टब वी अम
...े याड रकेगा।"

मेमसाहब की यह बात सुनकर मुझे अपनी पुरानी मेमसाहब की स्मृति
होआई। उनकी सूरत मेरी आँखों के समक्ष नाचने लगी। मैंने उन्हें प्यार
किया था। वह मेरे पर्याप्त निकट रही थीं। जब तक वह हमारे जिले में रहीं,
मेरे ऊपर उनकी कृपा भी कम नहीं रही। मैं जो कुछ भी बना उन्हीं की कृपा
से बना था। परन्तु जब से गईं, तब से आजतक न कोई पत्र नहीं आया और न
कोई सूचना ही मिली। जीवन का वह पाठ वहीं पर समाप्त होगया। कार की
खिड़की से बाहर मुँह निकालकर जब मेरी ओर अन्तिम बार उन्होंने देखा था
तो मेरी आँखों की पुतलियों में उनका चित्र खिचगया था। वह चित्र आज
भी ज्यों-का-त्यों बनाहुआ है शर्माजी! ऐसा मालूम देता है कि मानो कल की
बात है।

कलक्टर साहब की इन मेमसाहब के साथ एक मेज पर बैठकर शराब
पीने के अतिरिक्त मेरा और कोई इनसे अन्य सम्बन्ध नहीं रहा। औरत से
सम्बन्ध बनाने के बारे में मैंने जीवन में बहुत गम्भीरता से कामलिया है। मैंने
अपनी ओर से कभी पहल नहीं की। यदि स्त्री ने कुछ करना चाहा, तो उसे

करने की मैंने उसे पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की। मैं सर्वदा उसकी ही इच्छा में अपनी इच्छा मिलाकर जीवन में चला हूँ।

हमारी यह मेमसाहब शराब पीती थीं, हँसती थीं और मजाक भी खूब करती थीं। मीठी-मीठी चुटकियाँ लेती थीं। मुझसे गुलाब के विषय में कुछ-न-कुछ अवश्य पूछती थीं, और मेरी कृपा को मानती थीं। मैं उनका दो हजार रुपए मासिक का शराब का बिल पेमेंट करता था और दो हजार की और फरमाइशें पूरी करता था। यह सबकुछ करने पर भी हामिदअलीसाहब से मुझे यह कलक्टरसाहब की मेमसाहब सस्ती पड़ती थीं। इस वर्ष का यह सौदा मुझे गत जीवन के सौदों से अधिक लाभदायक रहा।

मेमसाहब के साथ मैं कलक्टरसाहब की बैठक में जाकर बैठा। कलक्टर साहब संध्या के भोजन के लिए हाथ-मुँह धोने बाथ-रूम में गए थे। उनकी ड्राइंग-रूम में आने पर मुझसे भेंट हुई। वह एक मित्र की तरह मुझसे मिले। बोले, "अमारा जिला में अमन-चैन ऐ पेशकारशाब !"

"बिल्कुल अमन-चैन है साहब बहादुर !" मैंने नपा-तुला उत्तर दिया।

"अमारा जिला में कोई शेरकार के केलाफ तो बेडमाशी नेई ओना माँगता ऐ।" उन्होंने प्रश्न किया।

"बिल्कुल नहीं साहब बहादुर !" मैंने उत्तर दिया।

इसके पश्चात् इधर-उधर की बातें होने लगीं। शराब की मेज पर बैठे-बैठे मैंने सोचा कि सेठ दामोदरप्रसाद के साथ कोई मजाक करना चाहिए। ऐसा मजाक कि जिससे उसे हानि भी कुछ न हो और मजाक भी करारा होजाए।

मैं शराब का गिलास मेज पर टिकाकर कलक्टर साहब से बोला, "साहब बहादुर ! हामिदअली साहब को आपने जो सजा दी, उसको मैं मानता हूँ। उससे आपने अपनी न्यायप्रियता का प्रमाण दिया। हमारे ज़िले के सम्मानित व्यक्तियों ने उसकी बहुत प्रशंसा की। हामिदअली साहब को उनके झूठ पर आपने पदच्युत कराकर शहर कोतवाली पर भिजवादिया, परन्तु सेठ दामोदर प्रसाद का आप कुछ न करसके। साहब बहादुर से गलत बातें करके उन्होंने जो मक्कारी की, उनका कुछ-न-कुछ दण्ड उन्हें अवश्य मिलनाचाहिए।"

"अम टुमारा बाट शेमजटा ऐ पेशकार शाब ! अमको केशा करना

ाइए ?" कलक्टर साहब ने मुस्कराकर पूछा।

"मैंने भी मुस्कराकर ही कहा, "सेठ दामोदरप्रसाद के साथ आपका एक सा मज़ाक करनाचाहिए कि जिससे वह समझजाए कि वह आपके और मेरे ोच नाचाकी पैदा करने में असफलरहे। वह मूर्ख निकले और उन्हें ऐसा ाहीं करना चाहिए था।

कल शाम को मैं दामोदरप्रसाद को गुलाब आर्टिस्ट के मकान पर ेजाऊँगा। उसी समय आप भी वहाँ आजाएँ। एस. पी. साहब और शहर कोतवाल कासिममिरजा साहब को भी आप पाँच सात सिपाहियों के साथ ाते आएँ और सेठ जी को गिरफ़तार करलें। फिर देखिए उनकी क्या दशा ोती है। सच कहता हूँ कि इस मज़ाक में आनन्द आजाएगा। तभी मैं आप को एक दिलचस्प किस्सा उनकी जवानी का सुनाऊँगा। उनके भाग्य में ही परमात्मा ने आर्टिस्ट के कमरे पर गिरफ़तार होना लिखा है।"

"टुम किशमट परना वी जानटा ऐ पेशकार शाव, तो वेटाओ अमारा किशमट में क्या लिका ऐ ?"

"आपकी किस्मत में क्या कमी हैं साहब वहादुर ! ऐश का जीवन व्यतीत ... जाइए। आपके भाग्य में भगवान् ने ऐश लिखकर भेजी है।" मैंने यों ही साहब के हाथ को अपने हाथ में लेकर कहा।

दूसरे दिन गुलाव के कमरे पर सेठ दामोदर प्रसाद को लाने की बात निश्चित होगई। कलक्टर साहब बोले, "टुमने बोट वरिया मेजाक वटलाया ऐ पेशकार शाव ! अम टुमारा आर्टिस्ट को डेकना माँगता ऐ। तुमारा आर्टिश्ट के कमरे पर टेमाशवीन वनकर जाना माँगता ऐ।"

"वहुत खूव, साहब वहादुर ! वहुत खूव ! आपने भी रंगीन तवियत पाई है। हमारे वजुर्गों की ऐसी ही तबियतें होती थी ! शासन करनेवाले रंगीन मिजाज ही होने चाहिएँ क्योंकि यदि वह प्रसन्न चित्त न हों तो अपने जिले की जनता को प्रसन्न नहीं बनासकते।"

"टुम टीक केटा ऐ पेशकार रामडेयाल ! अम कुशडिल आदमी ऐ मुंह बेनाना वाला आदमी को विलकुल नेई माँगटा। अम हँशटा-केलटा आडमी माँगटा ए। आमिदअली जेशा मनहूश आदमी से अम न फ़ाट करटा ऐ।"

"मैं जानता हूँ ! हुजूर ! क्या इतना भी नहीं समझसका मैं आपको ?

"ठीक ये ही शब्द हामिदअली साहब के भी थे। वह भी कहते थे कि उन्होंने जो कुछ भूल की वह आपके बहकाने-फुसलाने में आकर की। ये सब इन्सान की दुर्बलताएँ हैं। मैं मित्रता को इससे ऊपर की वस्तु मानता हूँ सेठ दामोदरप्रसाद ! इसीलिए इन छोटी-मोटी बातों पर कभी ध्यान नहीं देता।"

सेठ दामोदरप्रसाद मित्रता की भावना को ठेस पहुँचाचुके थे। इसलिए लज्जा से उनकी गर्दन नीची होगई थी। उनकी जबान पर एक शब्द भी न आया। वह प्रस्तर के समान मौन खड़े थे।

मैं फिर बात बदलकर बोला, "कैसी उदासीनता छागई थी जिले में हामिदअली के आजाने से ? बैली बाजार का चमन ही उजड़गया था। जिधर भी दृष्टि जाती थी, वीराना नजर आता था। सब कोठों पर शोक सा छा गया था।"

"यह सब उसी मनहूस हामिदअली ने ही किया था पेशकारसाहब ! मेरी तो उसका नाम लेने की भी अब इच्छा नहीं होती। उसने हमारे और आपके सम्बन्धों को खराब करदिया। लम्बी दाढ़ीवाला कैसामनहूस चेहरा था उसका। परन्तु मित्र रामदयाल कुचला खूब तुमने उसको। यह बात तुम्हारी हम मानते हैं।" सेठ के दिल ने तनिक फुरबाली ली।

"परन्तु यह कहते हुए तुम्हें लज्जा नहीं आरही सेठ दामोदरप्रसाद ?" सेठ की आँखों में आँखें डालकर मैंने गम्भीरता के साथ पूछा। सेठ के दिल में मेरी प्रारम्भ की मुलायम बातोंको सुनकर जो उभार आनेलगा था उसे मैंने वहींपर दबादिया। मेरी आँखों ने सेठ दामोदरप्रसाद की आँखों के अन्दर घुसकर देखा कि वह आवश्यकता से अधिक भयभीत और लज्जित था।

वह लजाकर बोले, "लज्जा तो अवश्य आती है पेशकार साहब, परन्तु यह भी सच है कि जो कुछ मैंने किया वह अपनी दुर्बलता से हारकर किया। हारना पाप नहीं है, एक दुर्बलता है। उसे दूर किया जासकता है।" गम्भीरता के साथ सेठ दामोदरप्रसाद ने कहा। सेठ की बात सुनकर मेरे दिल में सेठ की ओर से जो गाँठ पड़गई थी वह आपसे-आप खुलगई, परन्तु ऊपर से मैंने अपना रूप नहीं बदला। मैं कठोर ही बना रहा।

मैं बोला, "तो चलो अब यहाँ बैठे-बैठे क्या पान चीररहेहो ?"

"कर तो कुछ नहीं रहा और फिर आपके साथ चलने के लिए तो हजार म भी क्यों न पड़े हों, सबको छोड़कर चलसकता हूँ। अपनी भूल से ाएहुए अपने मित्र के साथ भी नहीं चलूंगा तो फिर किसके साथ चलूंगा ?"

संध्या का झुटपुटा होरहा था। मैंने गुलाब के कमरे पर रात के आठ जे का कलक्टर साहब को समय दिया था आने का।

ठीक साढ़े सात बजे मैं सेठ दामोदरप्रसाद को लेकर वहाँ पहुँचगया। ठजी आज बहुत इधर-उधर को देखकर कोठे पर चढ़े। उनका दिल धुकड़-कड़ कररहा था। इस बाजार को ओर आए उन्हें पर्याप्त समय होगया था।

वह भयभीत से होकरबोले, "आज तुम आबरू मिट्टी कर कर रहो पेशकार ाहब ! कोई देखेगा तो भला क्या कहेगा ? मैं जिले की काँगरेस का प्रधान हचुकाहूँ। जिला हिन्दू-महासभा का प्रधान हूँ। ऐसे स्थान पर मेरा आना ीक नहीं है। और सच बात तो यह है कि जबसे रामेश्वरी ने मुझे धोखा दिया है तब से औरत-जात से मुझे घृणासी होगई है पेशकार साहब !"

"मेरे साथ रहकर भी क्या आपकी आबरू को भय होसकता है ? और ही औरत-जात से घृणा की बात सो यह तुम्हारी मूर्खता की बात है। फूलों ा भी कहीं घृणा की जाती है ? रूप पूजा की वस्तु है।"

गुलाब के खास कमरे में मैं और सेठ दामोदर प्रसाद जाकर बैठ गए। बैठते ही सेठजी बोले, "जीने के द्वार बन्द करादीजिए। जिसे बुलाना हो, पीछे के जीने से बुलाइए।"

"यही होगा मैंने कहा।" और सामने के जीने पर अस्मीजान को भेजकर चटखनी चढ़वादी।

सेठजी आराम से मुस्करा कर बैठगए। गुलाब भी मुस्कराती और सेठजी के नरम दिल में गुदगुदी उठातीहुई सामने आकर खड़ी होगई। वह तिरछी दृष्टि करके बोली, "अब तो सेठजी का आना-जाना भी मेरे भाग्य से उठगया। पेशा मैं वही करती हूँ जो पहले करती थी और आप भी वही करते हैं जो पहले करते थे, परन्तु कितने दूर होगए हम एक दूसरे से ?"

दामोदरप्रसाद का दम आज न जाने क्यों कुछ घुटा-घुटा सा होरहा था। उन्हें गुलाब का इठलाना पसन्द नहीं आया। उन्होंने अपने सीधे हाथ से मस्तक को दबातेहुए अपने मन में कहा, 'अवश्य आज कोई गोलमाल किया

हैं पेशकार के बच्चे ने ।"

उसी समय पुलिस के चार सिपाही हाथों में हथकड़ियाँ लिए और उनके पीछे शहर कोतवाल कासिम मिर्जा, एस० पी० और स्वयं कलक्टर साहब ने अन्दर प्रवेश किया ।

मैं और सेठ दामोदरप्रसाद दोनों खड़े होगए । मैंने कलक्टर साहब को सलाम किया और मुस्कराकर बोला, "हुज़ूर के सामने ग़लत बयानी करने वाला व्यक्ति उपस्थित है ! रामेश्वरी आपकी ही रखैल थी । आपने ही उसे कोठी खरीदकर दी थी और आपही उसे कांग्रेस के प्लेटफार्म परलाए थे । मेरे विचार से यह आपके ही पैसे की करामात थी कि वह जिले की पुलिस को नाकोंचने चबाकर यहाँ से भागगई ।" गम्भीरतापूर्वक मैंने कहा ।

सेठ दामोदरप्रसाद के बदन को काटो तो रक्त नहीं था । वह पत्थर के पुतले के समान खड़े रहगए । भला ही हुआ कि उस स्थिर दशा में भी उनका दिल काम करता रहा । उनके दिल ने उभारा लेकर उनसे कहा, 'यह सब पेशकार रामदयाल का मजाक है । इसमें वास्तविकता कुछ नहीं होसकती ।' परन्तु कलक्टर साहब, एस० पी० और कासिममिरज़ा के चेहरों की गम्भीरता को देखकर उनका दिल बैठाजारहा था । उनका बदन थर-थर काँप रहा था ।

कलक्टर साहब शहर कोतवाल कासिम मिरज़ा से बोले, "वेल कोटवाल शाब, शेट डामोडर प्रशाड को हेटकेरी (हतकड़ी) देकर हेमारा शामने पेश करो ।"

"जो हुक्म सरकार बहादुर का !" कहकर कासिम मिरजा ने सिपाहियों की ओर देखा ।

सेठ दामोदरप्रसाद मेरे पैरों पर गिरपड़े । उनकी आँखों से अश्रु बह निकले । मैंने उठाकर उन्हें अपनी छाती से लगालिया और उनकी आँखों में आँखें डालकर कहा, 'तुम्हें मित्र कहदिया है एक बार, तुम्हारे हज़ार ख़ून भी क्षमा किएजाएँगे सेठ ! तुम चिन्ता न करो ।'

गुलाब के कमरे पर उसदिन की महफ़िल मेरठ बैलीबाजार के इतिहास में सुनहरी मैफिल थी । कलक्टर साहब, एस० पी० साहब, शहर-कोतवाल और पेशकार रामदयाल, मेरठ के सब अफसर थे वहाँ । जमकर मुजरा हुआ गुलाब

के п   प । सारे बाजार का हुस्न सिमटकर गुलाब के यहाँ आगया। एक से एक बढ़िया आर्टिस्ट से कलक्टर साहब और एस० पी० साहब के समक्ष अपनी कला प्रदर्शित की।

सेठ दामोदरप्रसाद वहाँ आज बैठे अवश्य थे, परन्तु उनका बदन टूटा जारहा था, उन्हें असीम मानसिक ग्लानि थी और उन्हें दिखाई देरहा था कि उनका सार्वजनिक सम्मान मिट्टी में मिलचुका था। वह अब कहीं पर भी मुँह दिखाने योग्य नहीं रहगए थे।

गजलें गाईं, कव्वालियाँ हुईं गुलाब का नृत्य हुआ, परन्तु उन्होंने किसी में भी रुचि न ली। कलक्टर साहब को गुलाब का नृत्य बहुत पसन्द आया। वह मेरी ओर को मुस्कराकर बोले, "वेल पेशकार शाब टुमारा आर्टिश्ट वोट वरिया ऐ। वोट वरिया डाँश करटा ऐ। अमारा कंट्री में ऐशा डांश नेई ओटा।"

रात के एक बजे महफ़िल समाप्त हुई।"

चाय की प्याली में अन्तिक चुस्की लगाताहुआ आगन्तुक बोला, "आज की चाय की प्याली का मूल्य आपको देचला शर्माजी! अब जाता हूँ। यदि आगे की कहानी सुननी होतो कल के लिए चाय पर निमंत्रित कीजिए।"

"आपने बहुत रोचक कहानी सुनाई।" मैंने कहा, "आपको मेरा चाय का स्थायी निमंत्रण उस समय तक का है जब तक आप यह कहानी सुनाते रहेंगे और उसके पश्चात भी जब कभी आप मेरी कुटिया पर पधारेंगे।"

आगन्तुक प्रेमपूर्वक मुझसे कौली भरकर मिला और एक सिग्रेट पीकर विदाहुआ।

: २९ :

दूसरे दिन आगन्तुक चाय के समय से ठीक पाँच मिनट पूर्व पहुँचा। मैंने खड़े होकर उनका स्वागत करतेहुए कहा, "विराजिए।"

"कहिए, क्या देर है आपकी चाय में?" आगन्तुक ने पूछा।

"कोई देर नहीं है।" मैंने कहा, "हमारे कल वाले मित्र अस्थानासाहब अभी

नहीं आए हैं। उनकी प्रतीक्षा में हूँ। वह भी बहुत प्रसिद्ध लेखक हैं। इस प्रकार की सच्ची कहानियाँ सुनने का उन्हें भी बड़ा शौक है।"

बातें चल ही रही थीं कि तभी आस्थाना साहब भी सामने से आगए।

"मुझे देर तो नहीं हुई!" वह घड़ी देखतेहुए बोले।

"जी नहीं,अभ्र मैं हनपाँच मिनट पहले ही आया हूँ।" आगन्तुक ने मेरी ओर से उत्तर दिया।

हम लोग बैठक में चलेगए। थोड़ी ही देर में चाय भी आगई। आज चाय सूखी नहीं थी, उसके साथ कुछ नमकीन और मिठाई भी थी। उसे देखकर आगन्तुक मुस्कराया और मज़ाकिया ढंग से बोला, "तो शर्मा जी की आज की चाय नमकीन और मीठी दोनों प्रकार की है।"

"मेरे विचार से आजकी आपकी कहानी भी कुछ नमकीन और मीठी ही होगी।" मैंने कहा।

मेरा इतना कहना था कि आगन्तुक खिलखिलाकर हँसपड़ा। बोला, "क्या खूब बात कहदी आपने शर्मा जी! मेरा तो सारा जीवन ही मीठी और नमकीन रहा है। क्रोध तो मैं कभी-कभी बनावटी कियाकरता हूँ। आपने कल नहीं देखा कि मैं कितना तड़कता-भड़कता तमतमाता हुआ आपके कमरे में आया था। आपने मुझे सहन करलिया तो मैं मोम सा पिघलगया। अब एक प्याली चाय पर अपने जीवन की पूरी कहानी आपको सुनाने के लिए दौड़ा चला आरहा हूँ। यदि आप मेरे कड़कने-तड़कने पर रुष्ट होजाते, तो मैं आपका भयंकर शत्रु बनजाता।"

"बहुत खूब!" मेरे मित्र ने कहा। कमाल करदिया पेशकारसाहब! आपने सही बयानी में। इतनी स्पष्टवादिता मैंने बहुत कम लोगों में पाई है।"

चाय की प्याली के कुन्दे को पकड़कर उठातेहुए आगन्तुक एक बार फिर मुस्कराया और बोला, "शर्मा जी! चाय से अपना शौक पूरा नहीं होता। वास्तव में यह शौक कोई शौक नहीं है।"

"मैं जानता हूँ," मैंने कहा, "परन्तु आपका दूसरा शौक पूरा करने के मैं अपने को अयोग्य पाता हूँ। परमात्मा ने मुझे वैसी रंगीन तबियत कहाँ प्रदान की है जैसी उसने आपको दी है?"

"सरकार ने शराब पीना कानून बन्द करदिया है।" मेरे मित्र ने उनकी

[illegible] सर्वदा [illegible] था। थाने का दारोगा भी गांव में आकर मेरे घर पर बैठता था और वहीं पर गांव के अपराधियों को बुलाकर पूछता [illegible] था। उस छानबीन में मेरी राय प्रधान होती थी। जिले का को[illegible] मेरी राय के विरुद्ध नहीं जासकता था।

"तब तो गांव पर खूब रौब जमगया होगा आपका?" अस्थाना साहब बोले।

"गांव पर रौब? क्या बातें करते हैं आप? वह समय मेरा जिले भर पर रौब का समय था। मुझसे कोई अप्रसन्न भी नहीं था। सभी सभा-सोसा-यटी वालों की मैं सहायता करता था। सभी को उनकी उन्नति का मार्ग दिखाता था। बड़े-बड़े अखाड़ों के पहलवानों का प्रबन्ध करता था। हिन्दू और मुसलमान दोनों की सम्मिलित शक्ति रखता था। मेरठ जिले के शहर और गांवों के सब बदमाशों की सूची मेरे पास रहती थी। वहां के खाते-पीते लोगों की भी सूची भी मेरेपास थी। जिले भर की पुलिस मेरे संकेत पर नाचती थी। स्वयं कलक्टर साहब और एस० पी० साहब मेरे कान पकड़े चेले थे। परन्तु मैंने इस शक्ति का प्रयोग व्यक्तिगत लाभ के लिए केवल इतना ही किया कि मैं अपने घर की सारी जमीन का मालिक बनगया। मैंने अपने ताऊ के लड़कों को कुचलकर रखदिया। उन्होंने भी मुझे बहुत सताया था।"

"क्या मैं बीच में आपसे यह पूछ सकता हूं कि वह जमीन कितनी होगी जो अपने भाइयों से आपने छीनी?" मैंने पूछा।

मेरे इस प्रश्न को सुनकर आगन्तुक खूब हंसा, खूब हंसा और बोला, "यह बात तुमने खूब पूछी शर्माजी! यह भी वास्तव में मजेदार बात है। सिपाही बनते ही ज्यों मेरी आय प्रारम्भ हुई तो क्या बताऊं आपको कि मैं भूल ही गया उस समय को जब मुझे नम्बरदार से खर्च करने के लिए एक पैसा भी नित्य नहीं मिलता था। आज भी ठीक [illegible] है मेरी।" कहता-कहता आगन्तुक गम्भीर होगया। उसकी आंखें डबडबा आईं और वह कहानी सुनाता-सुनाता मौन होगया।

मैंने अनुभव किया कि मेरे प्रश्न ने आगन्तुक को उसके जीवन की किसी भयंकर घटना की सुधि दिला दी। इसीलिए वह भावुक व्यक्ति व्याकुल हो गया। उसके नेत्रों में [illegible]

यह अनुभव करके मैंने कोई अन्य प्रश्न नहीं किया।

आगन्तुक अपने भावों को बदलताहुआ बोला, "कोई विशेष बात नहीं है शर्माजी ! बीती बातें कभी-कभी याद आकर मस्तिष्क में बड़ी बेचैनी सी पैदा करदेती हैं। बहुत सोचता हूं कि उनसे बेचैन होना व्यर्थ है, परन्तु जब उनकी स्मृति होआती है तो दिल आप-से-आप डूबने-सा लगता है, आंखें भरआती हैं और पुराने विचार मस्तिष्क को घेरलेते हैं।"

"ऐसा ही होता है।" मैंने कहा।

"हां तो जमीन कुछ अधिक नहीं थी। जब पूरी कब्जे में आगई तब पता चला कि वह लगभग तीन सौ बीघा थी।"

"इसीके लिए आपने अपनी इतनी बड़ी शक्ति का प्रयोग किया ?" मैंने गम्भीरतापूर्वक कहा।

"अरे शर्मा जी ! जिन्दगी की इसी मूर्खता पर तो मैंने अपने हाथ पैर तुड़वालिए।" इतना कहकर आगन्तुक ने दिखाया कि उनके दोनों हाथ बेकार थे। दाहिना तनिक कुछ काम देता था।

"यह सब कैसे हुआ ?" मैंने पूछा।

"शीघ्रता न कीजिए शर्मा जी, वरना कहानी का आनंद जाता रहेगा। कहानी को तोड़मरोड़कर कहना मुझे अच्छा नहीं लगता। सीधी साफ-सुथरी कहानी चलने दीजिए।" आगन्तुक बोला और कहानी आगे बढ़ातेहुए कहा, "वह समय वह था शर्माजी ! कि मैं गांव में आताथा तो मिलनेवालों का ठट्ट जमा होजाता था मेरे सामने। थाने का दारोगा और दीवान, तहसील का तहसीलदार और छोटे-मोटे अफ़सर मुझसे मिलने मेरे गरीबखाने पर आते थे। हर आदमी मेरा अदब करता था।

मैंने सोचा कि क्यों न उस रौब के समय में ही अपने गांव का सिलसिला दृढ़ करलूं, जिससे बुढ़ापे में कष्ट न उठाना पड़े।"

"बहुत ठीक सोचा आपने ?" मैंने कहा।

"बहुत ठीक ही तो नहीं सोचा शर्माजी ! सुनते जाइए आप। मेरे निवा गांव के असल में चौधरी थे। कद नाटा ही था उनका और पाव भर हड्डियों ऊंचा था, परन्तु इलाका-का-इलाका दहलता था उनकी आवाज से। आस-पास के चोर-डकैत नाक रगड़ने आते थे उनकी चौखट पर। पुलिस

गाँव का चौधरी मानती थी। उसी पिता का पुत्र है दीवान रामदयाल।"

"तो आपके पिताजी के एक सगे भाई और थे ?" मैंने पूछा।

"एक नहीं शर्मा जी ! दो सगे भाई और थे। उनमें से एक तो गाँव में आए ही नहीं। नौकरी पर चलेगए तो बस चलेगए। उन्होंने फिर मुड़कर भी नहीं देखा गाँव की ओर। कहीं ऐश का जीवन व्यतीतकररहे होंगे।" आगन्तुक ने कहा।

"ऐश का जीवन व्यतीतकररहे होंगे यह आपने कैसे कहा ?" मैंने उनसे पूछा।

"बात स्पष्ट है शर्मा जी ! यदि ऐश की न काटरहेहोते तो अब तक गाँव में लौटआएहोते।" आगन्तुक बोला।

"आपने उन्हें गाँव में लौटने ही न दिया हो, यह भी तो सम्भव है।" ने कहा।

मेरी इस बात पर आगन्तुक ने लज्जा का अनुभव किया। वह दर्दभरे स्वर बोला, "बात तो शरमाजी आपने बिल्कुल सच कहदी। परन्तु वह गाँव में ीं आए, यह अच्छा ही हुआ। गाँव में आने का आनंद जो मैंने लिया, वही ायद उन्हें भी मिलता।

एक सप्ताह की छुट्टी लेकर मैं अपने गाँव में गया। गाँव के सब लोग मेरे पास आए। सबने अपने-अपने ढंग की बातें कीं। सबकी बातें सुनीं, परन्तु करता मैं अपने ही मन की रहा।

गाँव का सम्मान मुझे मिला, ताऊ जी को नहीं। पिता जी से यह चीज़ बपौती में मुझे मिलनी भी चाहिए थी, ताऊ जी को नहीं। अपने परिवार की पुरानी इज्ज़त को मैंने क़ायम रखा था, जमींदारी की शान को मैंने निभाया, ताऊ जी ने नहीं। ताऊजी चार अक्षर पढ़कर हेडमास्ट्री करने के कारण गाँव की इज्जत के मालिक नहीं बनसकते थे।"

वातावरण बहुत गम्भीर होता जारहा था बातों का। उसी समय आगंतुक मुस्कराकर बोला, "अब जानेदो इन शान-बान की बातों को शर्मा जी ! जो चीजें स्वप्न होगईं, उनका कहना ही क्या ?

मैं टहलरहा था। सामने से रामदुलारी आती दिखाई दी। रामदुलारी की चाल में विचित्र बाँकापन था। उसका प्रत्येक क़दम एक अदा को लेकर

उठता था, एक अंदाज़ को लेकर पड़ता था ।

वह सामने खड़ी होकर बोली, "देवर जी कू आज गाँम की कैसे याद आय गई ?"

"अब तो गांव में ही रहना है भाभी ! देखना है भाभी कहाँ तक अपने देवर को निभाती है ।" मैंने कहा ।

"वातन का ही खाया है आज तलक देवर जी ! गांम में आयके रहना लोहे के चने चबाने बराबर है । सहरों का ठाट-बाट देख चुके हो देवरजी ! अब यहाँ आयके बसन का थारा बूता नांय है ।" रामदुलारी बोली ।

"मेरा बूता नहीं है तो किसका बूता है भाभी ? मेरे सामने किसका कलेजा है जो चीं-पटाख करेगा ?" मैंने कहा ।

"चीं-पटाख की बात नांय है देवर जी ! गाम में, यहां ऊ मजा नांय मिल सकत जाकू सहर में भुगतलया । ह्वां तो बजार खोल राखा है सरकार नें । ह्वां बाजार में सरम की जरूरत ही नांय है ।"

इतनी गहरी बात रामदुलारी कहदेगी यह मैं उससे पूर्व नहीं समझ सकता था । उसकी आँखों में दृष्टि डालकर मैं गम्भीरतापूर्वक बोला, "भाभी ! सरकार ने कोई बाजार नहीं खोलाहुआ है । सरकार दूकानें नहीं खोलती, सरकार तो अच्छी साफ-सुथरी दूकानों से अपनी आवश्यकता का सौदा खरीदती है । जिसकी दूकान अच्छी होगी सरकार उसी से अपना काम चला लेगी ।"

"सरकार अपना सौदा खरीदन कू साफ-सुथरी दुकान छांटलेय है देवर जी ! यू बात तो जब होय है जब दुकान घनी होय । पर जब दुकान एक ही होय तो कहा होय ? तब तो दुकान ही यू सोचै है अब सरकार सहर में दीवाला खिसकाय कै तो नांय आई है गांव में बसन कू ।" रामदुलारी ने गम्भीर दृष्टि से मेरी ओर देखतेहुए कहा ।

मैं दो कदम पीछे हटगया और मुस्कराताहुआ बोला, "भाभी ! मैंने तो सचमुच ही अपने जीवन को चील का घोंसला बनाया है । मेरे इस घोंसले में गोश्त के टुकड़ों को नोचना मूर्खता नहीं तो और क्या है ?"

रामदुलारी मेरा उत्तर सुनकर मुस्कराई । बोली, "तू कहा की बात [illegible] है देवर जी ! पंचान रुप्या दै [illegible] की बात [illegible]

नाँय ही देवर जी ! थारी खातर तौ रामदुलारी हरदम हाजर है।" इतना कहकर वह आगे निकलगई।

मैं सोचता रहगया कि क्या औरत है वह। दोनों ओर आघात करती हुई चलती थी। कितनी तीव्र चाल थी उसकी ? वह सरिता की धारा के समान मैले-कुचैले नालों को अपने अन्दर समोती हुई और उनके गन्दे पानी को साफ बनाती हुई आगे बढ़ रही थी। कहीं मैल का नाम तक नहीं था उसके जल में।

रामदुलारी को मैंने ग्राम-देवी के रूप में देखा।"

"अस्थाना साहब आगन्तुक के मुख से रामदुलारी के लिए 'देवी' शब्द का उच्चारण सुनकर मुस्करादिए। फिर कुछ गम्भीर होकर पूछा, 'रामदुलारी को 'देवी' मानने का क्या कोई कारण आप बतासकेंगे ?"

"क्यों नहीं ?" आगन्तुक ने प्रसन्न होकर कहा। "कारण एक नहीं अनेक हैं। रामदुलारी जैसी स्त्री लाखों क्या करोड़ों में एक भी नहीं मिलसकती। वह गाँव के हर एक आदमी के दुःख-दर्द में भाग लेती है। जहाँ तक उससे बनपड़ता है सेवा करती है। उसकी इस सेवा के फलस्वरूप स्वस्थ होकर गाँव में फिरनेवाले कई व्यक्ति हैं।"

"वे लोग जब आपस में बातें करते हैं तो क्या कहते हैं रामदुलारी के विषय में ?" मैंसे प्रश्न किया।

"बहुत ही बेतुका सवाल पूछ बैठतेहो शर्मा जी ! मेरी कहानी बीच में रुकजाती है। परन्तु आज की कहानी हम यहीं पर समाप्त करनेवाले थे। चलते समय तुम्हें यह बताता जाऊँ कि वे लोग रामदुलारी के विषय में क्या कहते हैं। बल्कि यह बताता जाऊँ कि गाँव वालों का उसके विषय में क्या मत हैं ?

गाँव वाले उसे एक आवारा औरत समझते हैं। वे अपने घर की बहू-बेटियों में रिलने-मिलने के योग्य उसे नहीं समझते। परन्तु साथ ही आनंद की बात यह भी है शर्मा जी कि रामदुलारी का कोई अपने घरमें आना-जाना नहीं रोकसकता और उसकी बातों के करारे चपत भी गाँव के सब नाक वालों के गालों पर खूब जमकर पड़ते हैं। अच्छे-अच्छे तिलमिलाजाते हैं उसकी बातें सुनकर। लाजवाब स्त्री है वह और लाजवाब करदेती है अपने से

बात करनेवालों को। विशेष रूप से उस बात करनेवाले को जो उसकी टीका-टिप्पणी करता है।

जिन्दादिली कायम की हुई है उसने गांव भर में।"

"तब तो वास्तव में दिलचस्प औरत है।" मेरे मित्र ने कहा।

"दिलचस्प ही नहीं है जनाब, दिलकश भी है। पैंतालीस वर्ष की आयु है उसकी और मेरी साठ वर्ष की। फिर भी जब हम दोनों मिलते हैं तो ऐसा लगनेलगता है कि रामदुलारी सोलह वर्ष की नवेली है और मैं पच्चीस वर्ष का नौजवान। बाल काले से सफ़ेद अवश्य होगए हैं दोनों के, परन्तु काठियां ज्यों-की-त्यों बनी हुई हैं। उनमें कोई झुकाव नहीं, कोई दुर्बलता नहीं, कोई गिरावट नहीं। हमारे दिलों की गति भी वैसी ही जवान है शर्माजी!"

यह कहते-कहते आगन्तुक की दृष्टि अपने दोनों हाथों की ओर गई और उनकी जबान से निकलनेवाले शब्द रुकगए।

"आपका मन कुछ भारी होउठा।" मैंने कहा, "शायद कोई पुरानी बात याद होआई। ऐसा मेरे साथ भी होता है। बात कहीं-की-कहीं पहुंच जाती है। और मस्तिष्क तथा हृदय पर वह पुरानी स्मृति छाजाती है।"

"आपने ठीक कहा शर्मा जी! बचपन और जवानी में कमाएहुए इस शरीर की ओर जब मेरी दृष्टि जाती है और अपने टूटे हुए हाथ देखता हूं तो दिल में हूक सी उठती है। अपने हाथों पर मुझे बड़ा गर्व था। बात समाप्त करने जारहा था और बात में से एक और बात निकल आई।

शर्माजी, मेरे वे हाथ, जो ताऊजी के लड़कों ने एक दिन रात्रि में बल्लमों से छेदकर बेकार करदिए, बड़े वफ़ादार और शानदार थे। मुझे सोते को घर दबाया, उन्होंने यदि मैं जागता होता तो मेरे उन हाथों ने पास में रखी हुई दुनाली बन्दूक को उठाकर उन लड़कों से मुस्कराकर कहा होता, "दूर पीछे हटकर खड़े हो। एक कदम भी आगे बढ़ाया तो गोली सीने के पार होगी।"

मेरा मस्तिष्क वही है, दिल वही है, पैर वही हैं, चेहरा वही है, परन्तु मेरे हाथ वे नहीं हैं जिनको मैं जवानी में दो-दो बार [illegible] को और जिनके बन्धन में आकर कोई कभी निकल नहीं सका।"

पास की दराज से मैंने 'दीवान रामदयाल' का फ़ाइल निकाला और उसके

से दस टाइप किएहुए पन्ने आगन्तुक के हाथ में देताहुआ बोला, "आपकी कहानी साथ-साथ लिखता जारहा हूँ और दिल से आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने ठीक समय पर आकर मेरी सहायता की। यदि सभी उपन्यासकारों के नायक आपकी ही तरह उदार होकर अपनी कहानी सुनायाकरें तो उपन्यास-कारों का कितना काम पूरा होजाए।"

मेरी इस बात पर आगन्तुक खूब हँसा और हँसताहुआ बोला, "नाविल पढ़ने का मुझे बचपन से शौक रहा है शर्माजी! प्रारम्भ तो मैंने उर्दू के नाविलों से किया था, परन्तु अब हिन्दी के नाविल भी खूब पढ़लेता हूँ।

परन्तु देखरहा हूँ कि इधर के लेखकों का दुनियाँ के लोगों के रहन-सहन से कोई सम्बन्ध नहीं रहा है। वे दिमाग़ी घोड़े दौड़ाने का प्रयत्न करते हैं या फिर अंग्रेजी का ज्ञान बघारकर पंडताऊपन की छाप बिठाना चाहते हैं। सच पूछो तो कहने के लिए उन बेचारों पर कुछ है नहीं। अपनी बन्द दुनियाँ के हुस्न और इश्क का राग कहाँ तक अलापते रहें?"

मैं शान्त बैठा सुनतारहा। आगन्तुक आज के उपन्यास-साहित्य का इतना गम्भीर पाठक है, यह देखकर मैं आश्चर्यचकित रहगया।

"तो आपको साहित्य से भी प्रेम है?" मैंने पूछा।

"और किसी चीज़ से नहीं। दीवानेग़ालिब मुझे पसन्द है, रामायण का मैं अनन्य भक्त हूँ, राधाकृष्ण के कीर्तनों में भी मुझे आनन्द आता है और नाविल पढ़ने का मैं वैसा ही घत्ती हूँ जैसा किसी समय शराब पीने का रहा हूँ।"

"तो क्या आजकल शराब भी बन्द है?" मैंने पूछा।

"अरे शर्माजी! आज तो समय ही बदलगया। तीस रुपए मासिक पेंशन का मिलता है। वह इलाके के थानेदार की खातिर तवाज़ें में खर्च होजाता है...बस...बस...बस... कहानी का आनंद खराब नहीं करूँगा। मैं शेष कल चाय पर सुनाऊँगा।"

इसके पश्चात् आगन्तुक चलागया।

उसके थोड़ी देर पश्चात् अस्थानासाहब भी चलेगए।

: ३० :

मैं और मेरे मित्र चाय की मेज पर बैठे आगन्तुक की प्रतीक्षा करते थे। लगभग दस-पंद्रह मिनिट पश्चात् वह आगए।

वह आते ही बोले, "क्षमा कीजिए शर्माजी ! मेरा एक बहुत दिन का बिछड़ाहुआ मित्र करीमखां मिलगया था मार्ग में। लिपट गया कम्बख्त ! क्या आदमी था, क्या कहूँ आपसे ! मित्रता निभाने में इन्सान नहीं, देवता था वह। मेरी बात को वह परमात्मा की आज्ञा समझता था।"

"तो खुश तो था न आपका मित्र ?" मैंने पूछा।

"बहुत खुश शर्माजी ! देवबन्द, जिला सहारनपुर में तीन मंजिल की हवेली खड़ी है उसकी। यह सब मेरी ही दौलत है।" आगन्तुक ने कहा।

चाय की प्याली हाथ में आते ही आगन्तुक तनिक गम्भीर होकर बोला, "आज आपको मैं अपने जीवन के उस ढलान की भयंकर कहानी सुनाऊंगा जिसे मेरे दिल ने बड़े साहस के साथ सहन किया। फिर दिन-पर-दिन-ऐसी मुझपर पड़तीगई, हँसताहुआ सहन करतारहा। कठिनाइयों से घबराया नहीं, उनका सामना किया। दुर्भाग्य को पछाड़ा है मैंने। उसके धक्कों से मैं कई बार ज़मीन पर भी गिरा हूं, परन्तु सच यही है कि मैं आज भी जीवित हूं और ज़िन्दा दिल हूं। वरना मुसीबतें वह-वह आई हैं कि यदि तनिक भी कायरता दिखाता तो मेरा कहीं खोज भी न मिलता।

सात दिन की छुट्टी गांव में ऐश से बिताकर मैं नौकरी पर गया। फिर दो वर्ष तक अपने गांव और मेरठ में वही रोब का जीवन व्यतीत किया।

लड़ाई समाप्त हुई और अंग्रेज-सरकार स्वप्न की तरह चलीगई। अंग्रेज-अफ़सरों की अफ़सरी समाप्त होगई। काले आदमी अफ़सर बनकर कुर्सियों पर आबैठे। आज़ादी ने उसे ही बढ़ावा दिया। इन काले अफ़सरों ने जिले की पुलिस में पार्टीबाज़ी प्रारम्भ करदी। पुलिस के सिपाही बुद्धिमान तो होते नहीं। बेचारे इन काले अफ़सरों के चंगुल में फँसगए। ऐसी दशा में रहना

सम्भव न रहा।"

"तो आपने भी पुलिस से स्तीफ़ा देदिया।" मैंने पूछा।

"अभी से कैसे स्तीफ़ा देदेता शर्मा जी ! आप भी क्या कहने लगे ? नई सरकार बदलनेवाली थी। उसके भी तो तौर-तरीके देखने थे मुझे। उसकी चाल-ढाल देखनी थी, उसकी पैनी दृष्टि देखनी थी। मैंने प्रण कर लिया कि स्वतंत्र भारत में एक पैसा भी घूस का नहीं लूँगा।"

"खूब बुजुर्गवार, खूब? जीवन को खूस बदला आपने। बहुत अच्छा विचार किया।" मैंने उछलकर कहा। मुझे यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई।

आगन्तुक गम्भीरता पूर्वक बोला, "परन्तु शर्मा जी खेद यही रहा कि मैं अपने प्रण को निभा न सका। शराब नित्य चाहिए थी मुझे। शराब के लिए पैसेकी आवश्यकता थी और पैसा घूससे आता था। मुझे फिर घूस लेनीपड़ी। मजबूर था मैं।"

"आपका सुधरता हुआ जीवन बिगड़गया। घूस का रुपया न आने से आय घटती और घटी आय में आप शराब पीना छोड़ देते तो आपके हाथ न टूटते। अपने हाथों का रंज आपके मस्तिष्क से उस समय तक नहीं जासकता जब तक आपका एक भी श्वाँस चलतारहेगा और आप में अनुभव करने की शक्ति बनी रहेगी।"

"आपकी बात सोलह आने ठीक है शर्मा जी !" आतुन्तक बोला।

"सरकार बदली और देश में कई प्रकार के तूफान आए। देश की आबादी की अदला-बदली हुई। बंगाल, पंजाब और दिल्लीमें मानवताका संहार हुआ। तब आप किस दशा में थे।" मैंने पूछा।

"तब भी दशा कोई विशेष खराब नहीं थी। यह बदमनी जो आपने बताई, इसे दबाने के लिए अधिक पुलिस की आवश्यकता हुई और पुराने दीवानों को दारोगाई का अवसर मिला। मुझे भी दारोगा बनाकर सहारनपुर जिले के उस फाटक पर भेजदिया गया जहाँ से लाखों लोग पाकिस्तान गए और लाखों भारत में आए।

उस मोर्चे पर भी मैंने अच्छी खासी रकम काटी और काफी रुपया छोटे भाई हरदयाल को भेजा। उस समय मैं चाहता था कि वह अपना काम अच्छा जमाले, जिससे किसी भी समय यदि मुझे नौकरी छोड़कर घर आनापड़े तो पैर

कहता था कि छोटों के रहते बड़े को अंतिम पद कैसे दिया जासकता है।"

"बात तो भाई हरदयाल की ठीक थी।" मैंने कहा। "सम्पर्क का प्रभाव तो होता ही है। आजकल के परिवार में भाई से बड़ा प्रभाव अन्य किसी का नहीं होता।"

"इसीलिए उसकी इस भूल को मैं भूल नहीं मानता। हरदयाल तो क्या उसके लड़के को भी मैंने अपने सामने बिठाकर शराब पिलाई है शर्माजी!" आगन्तुक बोला।

"बहुत खूब!" मैंने कहा, "तो आपको अपनी भूलों पर भी गर्व है और बुद्धिमत्ता पर भी; हानि पर भी और लाभ पर भी।" मैंने कहा।

"हर मौसम में एक-सा रहनेवाला वृक्ष हूँ मैं शर्मा जी! बसन्त आए और जाए पतझर आए और जाए मैं एक-सा रहता हूँ। मौसम के आघातोंका मुझपर प्रभाव ही नहीं पड़ता। जो कुछ पड़ता भी है वह आम व्यक्तियों से पृथक प्रकार का होता है।

तुमपर क्रुद्ध होना होता तो तुम्हारे पास ही न आता। मेरी इस बजुर्गीको आप भूल कहो या बुद्धिमत्ता, परन्तु इस जिन्दगी में इन्सान के तजुर्बों का कोष भरा पड़ा है। उस कोष की एक-एक सोने की ईंट आप को बना देगी शर्मा जी!" कहकर आगन्तुक मुस्करादिया, मानो उसने मेरे सामने आकर्षण का पिटारा खोलदिया।

"तो मुझे मालामाल करने आए हैं आप?" मैंने गम्भीरता पूर्वक पूछा और उनके चेहरे पर तीव्र नजर डाली। उनकी आँखों के अन्दर झाँककर देखा। ठीक वही सूरत थी, जो मेरे विचार की सूरतथी। मैंने उपन्यास लिखते समय दीवान रामदयाल की जो सूरत अपने मस्तिष्कमें स्थिर की थी, ठीक वही रूप था। उनकी हर चीज वही थी जिसकी मैंने कल्पना की थी।

आगन्तुक ने भी मेरी ओर बहुत ध्यान से देखा, परन्तु उसकी आँखें मेरी सूरत से टकराकर लौटगई। फिर भी प्रश्न किया, क्या कुछ हानिहै माला माल होने में तुम्हारी!"

"बहुत बड़ी हानि है श्रीमान! बहुत बड़ी हानि है। पहली हानि तो यह है कि मालामाल होतेही मेरी कामकरनेकी शक्ति जाती रहेगी। फिर यह भी सम्भव है कि मेरी धन की इच्छा इतनी बढ़जाए कि मैं सभी का माल

अपने पेट में उतारने की योजना बनानेलगूँ।" मैंने गम्भीरतापूर्वक कहा।

आगन्तुक मेरी बात पर फिर चुप होगया। उसे अपनी गलत राह के गहरे गड्ढे दिखाई देनेलगे। उसका बदन थरथराउठा। उसके रोंगटे खड़े होगए।

मैं फिर उसे सजग करताहुआ बोला, "श्रीमान, बुरा न मानिए मेरी बात का। समझ लीजिए कि आपका कोई अपना ही आदमी तजुर्बे की एक ईंट आपके कोष से माँगरहा है।"

"एक नहीं शर्मा जी! अपने तजुर्बे की एक-एक करके सब ईंटें आपके कोष में भरदूँगा।" आगन्तुक बोला।

"तब ठीक है श्रीमान! आप अपनी सोने की ईंटें मुझे दीजिए और मैं मार्ग के चोरों से बचाकर उन ईंटों को समाज और राष्ट्र के कोष में जमा करदूँगा। आपकी कहानी को अमर करदूँगा। आपकी यह कहानी देश को राह दिखाएगी और कहेगी कि देखो करनीका फल ऐसे मिलता है। जो स्वर्ग और नर्क की बात करते हो। वे दोनों इसी दुनियाँ में हैं। स्वर्ग का ज़माना आपने देखा और नर्क का अब देखरहे हैं। जीवित इसी लिए हैं कि हँसकर चलरहे हैं, वरना कभी के अपना जीवन समाज के लिए व्यर्थ कर चुके होते।" मैंने कहा।

आगन्तुक ने मेरी बात बड़े ध्यान से सुनी और स्वीकार किया कि मैं जो कुछ उनके विषय में कहरहा था उसका एक-एक अक्षर सत्य था।

आगन्तुक ने कहानी आगे बढ़ातेहुए कहा, "सहारपुर के काँग्रेसियों से मिलने और बातें करने में मेरे सामने कम कठिनाई आई। यदि मैं मेरठ में होता और उन चपरकनातियों को अपने ऊपर रौब गाँठते देखता, जिनकी पीठ पर मैं कितनी ही बार बेंतें उड़वाचुका था तो दो दिन भी नौकरी न चल पाती।

वहाँ सब नए लोग थे। शहर के वातावरण में नेताओं की भरमार थी। अफ़सरों का सम्मान अंग्रेजी शासन के समय से खिसककर नीचे आगया था। न कलक्टर ही वह कलक्टर रहा और न एस० पी० ही वह एस० पी० रहा। दबंग अफ़सरी का समय ऐसा काफ़ूर होगया कि मानो वह कभी था ही नहीं देश में।"

लेकिन मेरा मस्तिष्क उसी दबंग अफ़सरी का बनाहुआ था। मुझे सहारनपुर की एक महीने की नौकरी पूरी करनी कठिन होगई और वहीं से स्तीफ़ा देकर मैं अपने गाँव चलागया।"

"तो सरकारी नौकरी को नमस्कार करदिया आपने ?" मैंने पूछा।

"नमस्कार क्या व्यर्थ ही कर दिया शर्मा जी! नमस्कार करदेनापड़ा। बस जान बचगई यही गनीमत समझिए, वरना जो ये तीस रुपए माहवार पेन्शन के पारहा हूँ, इनसे भी हाथ धोने पड़ते। चक्कर कुछ ऐसा ही फँसगया था कि बर्खास्त होने की स्थिति पैदा होगई थी। वह तो कलक्टर साहब की कृपा हो गई जो मेरी शानदार हिस्ट्री-शीट पर काला धब्बा न पड़सका।"

"वह हिस्ट्रीशीट आपके पास है।" मैंने पूछा।

"उसे मैं दिल से लगाकर रखता हूँ। वह हिस्ट्री-शीट और अपनी दुनाली बन्दूक मेरी सबसे प्यारी चीजें थीं। कम्बख्त ताऊजी के लड़कों ने मेरे हाथ-पैर तोड़कर मेरी बन्दूक उठाली, परन्तु परमात्मा की कृपासे हिस्ट्री-शीट वहीं पड़ी रहगई। वरना तो वे पढ़े-लिखे जाहिल उसे भी दियासलाई के भी हवाले करदेते।"

"बिल्कुल करदेते।" मैंने आगुन्तुक की बात का समर्थन करतेहुए कहा, जो लोग तुम्हारे हाथ-पैर तोड़ सकते थे वे हिस्ट्री-शीट को क्या समझते ?"

"गाँव में पहुँचकर मैंने देखा कि हरदयाल की बुरी दशा थी। कुट्टी के गँडासे पर खड़ा कुट्टी काटरहा था। गाँव के एक-दो लड़के उसके दोस्त थे। उनके दम पर ही वह जंगल को जाता था। ताऊजी के लड़कों ने आधी से अधिक ज़मीन पर अधिकार करके लहलहाती हुई खेती उगाली थी।

हरदयाल के खेत बंजर पड़े थे। मैंने जाकर जगल में ही अपना डेरा लगाया और कुए के पास वाली जो ताऊजी के लड़कों की झोंपड़ी थी उसमें अपनी खटिया डलवाई और उसी के सामने अपने झबरू कुत्ते को छोड़दिया।"

"आपके गाँव में पहुँचते ही सनसनी फैलगई होगी।" मेरे मित्र ने पूछा।

"सनसनी क्या साधारण फैली जनाब ? गाँव भर में हवा फैलगई कि कुए पर दीवान रामदयाल दुनाली बन्दूक भरे बैठे हैं। अगर ताऊजी के लड़कों में से कोई भी कुए की ओर गया तो उसकी खैर नहीं है।

रात भर ठाट की चौकड़ी जमी। हरदयाल के दोस्तों को मैंने दोस्त कहकर

पुकारा तो वे कल के छोकरे फूल कर कुप्पा होगए।

मैंने उन्हें अपने कारनामों के किस्से सुनाने प्रारम्भ किए। गाँव के दस नम्बरी बदमाशों की टोली मेरी खाट के चारों ओर जुड़ी तो मैंने उन्हें सुनाया कि कैसे मैं उन जैसे बदमाशों की जीवन भर सहायता करता आया था। किस्से इतनी दिलचस्पी के साथ उन्हें सुनाए कि मैं उनका सरदार बन गया। इसकी प्रसन्नता में उन सबने चन्दा करके मेरी शराब की दावत की। शानदार दावत रही। मेरा सब थकान [illegible] और जिन्दगी की परेशानी कुछ कम हुई।

दावत का प्रबन्ध मेरे हाथ में रहा। तीन रुपए मैंने भी मिलादिए इस चंदे में। देसी शराब की ठेके से पाँच बोतलें मँगाई गईं। [illegible]।

परन्तु यह सब होने पर भी आय तो अब कोरी तीन रुपए मासिक ही रहगई थी। खेतीबाड़ी का ढाँचा एकदम गलत था। न ढंग के बैल थे, न ढंग का सामान था। घर में पूरे वर्ष भर को खाने के दाने भी नहीं थे। [illegible] देखिए छोटे भाई का धर्म भी! यह दशा देखकर मेरे पैरों के नीचे से जमीन निकलगई। जीवनभर की कमाई के पश्चात् यह जीवन आया। ऐसा ज्ञात हुआ कि मैं कैलाश पर्वत से गिरकर पाताल में पहुँचगया।

अब तीन रुपए मासिक में क्या शौक, क्या जीवन? परन्तु मैंने तीन रुपए मासिक के जीवन को भी शानदार बनाने का प्रयास किया।

"परन्तु बना न सके।" मैंने कहा।

"आपका अनुमान ठीक है भाईजी!" आगन्तुक ने कहा।

एक घण्टा समाप्त होचुका था। आगन्तुक वहीं [illegible] खड़ा होकर बोला, "अब जाना चाहूँगा आज्ञा दीजिए। कल आपको मैं अपने तीन रुपए मासिक के जीवन की कहानी सुनाऊँगा, जिसे मैंने अपनी शक्ति और चालाकी से गाँव का राजा बनकर बिताया है।"

मैं भी नमस्कार करताहुआ बोला, "ठीक है। मैं भी [illegible] करलूँगा कि आपका जीवन कैसा रहा [illegible]। [illegible] कल की कहानी की [illegible]।"

आगन्तुक बहुत प्रसन्न था। मैं उसकी [illegible] अपना सौभाग्य माननेवाला था। [illegible]

को इस प्रकार कड़ए घूंटों की तरह पीजाता था जैसे केवल पिता और बड़ा भाई ही पीसकते हैं।

आगन्तुक के चलेजाने पर भी मैंने देखा कि मेरे मित्र किसी विचार में डूबेहुए कुर्सी पर बैठे रहे। मैंने पूछा, "तबियत तो ठोक है आपकी।"

यह सुनकर वह स्वप्न से जाग्रत होते हुए बोले, "मैं सोच रहा था शर्माजी, कि आपकी रायल्टी में से कुछ भाग आगन्तुक को भी मिलना चाहिए। इस उपन्यास की आधी कहानी पूरी कराने का श्रेय आगुन्तुक को ही है। उचित तो यह है कि पूरी रायल्टी ही आगुन्तुक को मिले और आपको केवल लिखाई का कुछ देदिया जाए।"

मैंने मुस्करातेहुए कहा, "ठीक है।" और मन में कहा, "कैसा पागल है यह मेरा मित्र भी। क्या-क्या कुलावे भिड़ातारहता है। कहाँ-कहाँ की बातें सोचता है। यह मेरी रायल्टी की आय को भी नष्ट करदेना चाहता है। आखिर मुझे जीने भी देना चाहना है या नहीं और जाने क्या-क्या मैं सोचता रहा परन्तु मेरे मित्र के मस्तिष्क पर उसका कोई प्रभाव नहीं था। वह भी अपनी योजना पर ठीक चलरहा था। उसने अपने मस्तिस्क में मेरे "ठीक है" शब्दों का अर्थ लगालिया कि मैं 'दीवन रामदयाल' उपन्यास की रायल्टी यदि पूरी नहीं तो आधी आगन्तुक को देदूंगा।

उसने पूछा, "शर्माजी? आगन्तुक कहाँ ठहरा है, आपने मालूम किया?"

"नहीं।" मैं बोला।

मेरे मित्र को आश्चर्य हुआ और उन्होंने मेरी बात का विश्वास नहीं किया। वह बोले, "क्या आपने आगन्तुक का पता मालूम ही नहीं किया?" आश्चर्य सूचक मुख-मुद्रा बनाकर कहा।

उनकी उस मुद्रा पर मुझे हँसी आगई। मैंने भी अपने मुँह को लगभग वैसा ही बनाकर कहा, "मैं किसी का पता मालूम नहीं करता। आगन्तुक को बुलाने के लिए मैं उसके पास नहीं गया था। वह स्वयँ आया था मेरे पास।"

मुझे आज अपने मित्र के विदा होने में नाराजगी दिखाई दी। मैंने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। मैंने उसे दूसरे दिन चाय पर आने के लिए निमंत्रित भी नहीं किया। मेरे इस व्यवहार ने उसके दिल को भारी ठेस पहुँचाई।

मैं भी मजबूर था। यदि उसे इस प्रकार ठेस न लगती तो वह आगन्तुक

की इतनी लगन के साथ खोज न करता और कहानी का एक भाग अंधकार में ही रहजाता। सम्भवतः आगन्तुक इस बात पर प्रकाश ही न डालता कि वह मेरठ आकर कहाँ ठहरता था, कहाँ खाना खाता था, कहाँ सोता था और कहाँ से वह मूछों पर ताव चढ़ाताहुआ निकलता था। कौन उसके टूटे हुए हाथों को नित्य पट्टी करता था और उसे कपड़े पहनाता था। वह न तो जूते पहनसकता था और न फीते बाँधसकता था।

मेरे मित्र ने खिसियाकर नमस्कार करतेहुए कहा, "अच्छा तो शर्माजी नमस्कार! कल सम्भवतः मैं आपकी चाय पर न आसकूँगा। मुझे कुछ आवश्यक कार्य करने हैं। कई पत्रों को लेख भेजने हैं, रेडियो-स्टेशन को टाक देनी है, कई प्रकाशकों के यहां कई पुस्तकें छपरही हैं।"

"बड़ा परिश्रम करते हैं आप।" मैंने कहा।

"तब भी पूरा नहीं होता।" उन्होंने उत्तर दिया।

"यह कठिनाई आजकल सभी को है मित्र!" मैंने कहा।

"यही बात है। अच्छा नमस्कार!"

वह चलागया। मैं मुस्कराताहुआ कुर्सी पर आराम से तकिए का सहारा लेकर बैठगया।

: ३१ :

आगन्तुक चौथे दिन भी ठीक समय पर उसी क़रीने के साथ आया। कपड़े ठीक-ठाक थे और जूता भी पालिसदार था। सर पर भागलपुरी साफ़ा था और हाथ में एक चाँदी की मूँठ वाली छड़ी।

चाय की मेज पर बैठे तो मेरी बिटिया चाय लेआई।

बिटिया को देखकर आगन्तुक ने पूछा, "कितने बच्चे हैं शर्मा जी?"

"केवल सात।" मैंने मुस्करातेहुए उत्तर दिया।

"बहुत कुछ दिया है परमात्मा ने। सात बच्चे दिए हैं, इससे अधिक और क्या देगा? उनके पालन-पोषण का साधन भी दिया है।" आगन्तुक बोला।

"यानि मैंने कुछ किया ही नहीं।" मैंने मुस्कराकर कहा।

"बात मेरी सोलह आने सही है शर्मा जी ? समय के बिना कभी कुछ नहीं होता।"

"समय को भी तो इन्सान ही लाता है। यदि इन्सान मेहनत न करे तो क्या अनाज आप-से-आप उगनेलगे और कपड़े आप-से-आप बुने जाएँ। क्या मकान स्वयँ चिने जाने लगें ? प्रकृति की कठोरता से कैसे अपने को बचाया जाए और प्रकृति की चीजों को कैसे अपनी उन्नति के लिए प्रयोग में लाया जाए, यह बतानेवाला तो इन्सान ही है।"

मेरी बात का आगन्तुक पर प्रभाव पड़ा। अपने जीवन की गिरावट को देखकर उसे अपनी उन्नति का ध्यान आया। वह उन्नति उसे पानी के बुलबुले की तरह दिखाई दी।

"आज आपके मित्र नहीं आए।" आगन्तुक ने पूछा।

मैं उत्तर भी न देपाया था कि आगन्तुक दुबारा बोलउठा, "आपके मित्र भी बड़े ही दिलचस्प आदमी मालूम देते हैं।

कल संध्या के छै बजे वह किसी प्रकार मेरा पता निकालकर मेरे ठिकाने पर पहुँचगए। क्या कहूँ शर्मा जी, आपसे अब छिपाना भी क्या है ? वैसे मैं बताना नहीं चाहता था आपको कि मैं यहाँ आकर कहाँ ठहरता हूँ। परन्तु अब जब सब-कुछ आपको आपके मित्र से ज्ञात ही होजाएगा तो मैंने सोचा मैं स्वयँ ही क्यों न बतादूँ। आपके मित्र शायद उतनी दिलचस्पी से उसे न सुनासकें। परन्तु हैं खूब आपके मित्र भी ?"

"आखिर ऐसी खूबी की क्या बात देखी आपने हमारे मित्र में ?" मैंने सरल स्वभाव से पूछा।

"वह कहते थे कि आपने उनका बड़ा अपमान किया है।" आगन्तुक ने कहा।

"बस यही अपमान किया हैं कि आज की चाय पर विशेष रूप से निमंत्रित नहीं किया। वैसे आने के लिए मना भी नहीं है, और वह यहाँ सर्वदा निमंत्रण पर ही नहींआते। बिन निमंत्रण ही पधारते हैं।" मैंने गम्भीरतापूर्वक कहा।

आगन्तुक ने बात यहीं समाप्त करदी और कहानी को आगे बढ़ाया। वह बोले, "तो कल हमने आपको आज अपनी तीस रुपए मासिक की ज़िंदगी की कहानी सुनने को कहा था। तुम्हारे मित्र की कल संध्या की भेंट ने कहानी

की दिशा बदलदी। आज की कहानी का पूरा ढांचा ही बदलगया।

परन्तु साहस की दाद देता हूँ मैं आपके मित्र की कि उन्होंने मुझे ढूंढ़ खूब निकाला।"

"ढूंढ निकालने की बात न कहिए श्रीमान् ? इस कार्य में वह बहुत दक्ष हैं। जिसकी कहीं खोज-खबर न हो उसकी खोज-खबर वह चौबीस घंटे में लेआते हैं। इस दिशा में उनका मस्तिष्क खूब काम करता है। लिखते भी बहुत अच्छा हैं। बाल की खाल निकालकर रखदेते हैं।" मैंने कहा।

"तीखा बहुत है, मीठा कतई नहीं।" आगन्तुक ने कहा। "परन्तु मेरे तो लाभ की ही बातें करता था वह। सुना है आपको इस कहानी से जो मैं सुना रहा हूँ काफ़ी आय होगी। क्या यह सच है शर्मा जी ?"

"बिल्कुल सच है।" मैंने कहा, "मैं जो उपन्यास लिखरहा हूँ वह आधा छपचुका है और आधा छपरहा है। उससे मुझे पैसा मिलेगा इसी पैसे से मैं अपने परिवार का खर्च चलाता हूं।"

मुझे बहुत प्रसन्नता है शर्मा जी! कि मेरी कहानी से आपको लाभपहुँचेगा मैंने किसी को हानि पहुँचाने का कभी प्रयत्न नहीं किया।" आगन्तुक ने कहा।

"तो आपने कभी किसी को कोई हानि जान-बूझकर नहीं की ?" मैंने पूछा।

"यह भी मैं नहीं कहसकता। मैं अपने से ज़िद बांधनेवाले को मिट्टी में मिलाने का इरादा लेकर आज तक जीवन में चला हूँ। मैंने अपने को और अपने परिवार को इसी ज़िद मे बर्बाद करदिया।"

"हां तो साढ़े छः बजे हमारे मित्र आपके पास पहुँचे।" मैं बात की दिशा बदलने के लिए बीच मे बोलपड़ा।

"जी शर्मा जी ! मैं तकिए से कमर लगाए कालीन पर बैठा था और गुलाब मेरे पास बैठी थी।

पहाड़ी नौकर ने आकर सूचना दी कि कोई साहब मुझसे मिलने आए हैं। मैं आश्चर्यचकित रहगया क्योंकि मैं गुलाब के कमरे पर किसी से नहीं मिलता। जिससे मिलता हूँ उससे अपने गांव के खेतों के बीच कुए के पास पड़ी झोंपड़ी पर ही मिलता हूँ। कालीन पर बैठकर नहीं मिलता। मिलता हूँ अपने मवेशियों की ओर साफ़ करताहुआ, खटपावड़ी लेकर उनके बैठने की जगह से उनकेगोबर

को हटाताहुआ, टूटेहुए जेवड़ों के वल ठीक करताहुआ, ढीले खूंटो को ठोकताहुआ।"

"यानी अपना शहरी जीवन आपने गुलाब और अपने तक ही सीमित कर दिया है। शहर से अन्य कोई सम्बन्ध नहीं रखा।" मैंने पूछा।

"जी हाँ शर्मा जी ! मैंने जीवन एकदम बदल दिया है और तो और सेठ दामोदरप्रसाद से, उस गुलाब के कोठे की मेहफ़िल के बाद, जिसमें क्लक्टर साहब भी आए थे और सेठ जी की झूठी गिरफ्तारी हुई थी, आज तक मेरी भेंट नहीं हुई।" आगन्तुक ने कहा।

"कमाल करदिया आपने।" मैंने कहा, "परन्तु सेठ दामोदर प्रसाद को तो बड़ा आराम मिलाहोगा इससे ?"

इस पर आगन्तुक खिलखिला कर हँसपड़ा और मुस्कराकर बोला, "शर्मा जी आप हैं तो मेरे से छोटे परन्तु बात बाप-दादों के समान कर जाते हैं।" कमाल मैंने कर दिया, या आप करते हैं। आपका कहना बिल्कुल ठीक है। सेठ ने मेरे लापता होने की प्रसन्नता में लाख टके का प्रशाद चढ़ाया होगा देवी देवताओं पर। उसके सिर पर दीवान रामदयाल एक भूत के समान था। यदि उसे अब कहीं यह पता चलजाए कि दीवान रामदयाल आगया, तो वह मुझे कच्चा ही खाजाने का विचार करे।"

आजकल वह बहुत बड़ी शक्ति है।

"तो आपके मित्र सेठ दामोदरप्रसाद नहीं हैं जो आजकल राष्ट्र का पथ-प्रदर्शन कररहे हैं ?" मैंने पूछा।

"बिल्कुल वही हैं शर्मा जी ! जब अंग्रेज युद्ध में इन्सानी खून बहाकर नौकरशाही की इमारत को दृढ़ बनाने में लगे थे तो सेठ दामोदरप्रसाद उस इमारत की चिनाई के ठेकेदारों में से एक थे। पर्याप्त लाभ हुआ युद्ध के समय। उसमें से दान देकर यश कमाया।

दान और अथशाशी काले बाजार से आराम से निकलगए।"

"तो क्या ये भी मोटी रक़में बनजाती हैं।" मैंने अपने को इस विषय में नितान्त अनभिज्ञ घोषित करतेहुए पूछा।

"हम से छोटे होकर हमें बनाने का प्रयत्न न करो शर्मा जी ! तुम सब कुछ जानते हो। सेठ को अच्छी तरह पहचानते हो। वह जैसा मोटा है वैसी

ही मोटी अपने काम करने की संस्था को भी बनालेता है। परन्तु इससे काम करने की चुस्ती जातीरहती है और आरामतलबी को मैं जीवन का आनन्द नहीं मानता। आरामतलब इन्सान इन्सान नहीं रहता।" आगन्तुक का चेहरा दमदमानेलगा जब उसने यह बात कही। उसकी जिन्दादिली उसके माथे पर उभर आई। उसने रौब के साथ अपनी मूँछों पर मरोड़ीदी।

इस व्यक्ति से भेंट करके मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई।

"दामोदर प्रसाद से तभी का सम्बन्ध छूटाहुआ है। शहर में आता हूँ तो गुलाब के लिए आता हूँ। कोई औलाद नहीं है उसके, कोई औलाद नहीं मेरी भी।

पचपन से वह क्या कम होगी, परन्तु आज भी सुन्दरता में पच्चीस-तीस वर्ष की छोकरियों को मात करती है शर्मा साहब! ठुकी हुई काठी, न बहुत पतली, न बहुत मोटी। उसकी मुस्कान दिल में प्रसन्नता भर देती है। उसकी नजरों में आज भी जादू है और वह एकाकी होकर रहनाजानती है, यह है उसकी विशेषता, जिसका मर्द आदर करता है।

शर्मा जी! मेरी ही बदौलत बैली बाजार के बीचोंबीच उसकी शानदार तीन मंजिल की इमारत खड़ी है। पांच सौ रुपया महिना किराया आता है। वही उसके बुढ़ापे का सहारा है।

"अम्मीजान तो दुनियाँ से कूच करचुकी होंगी?" मैंने पूछा।

"अम्मीजान की आपने खूब याद दिलाई। वह भी बड़ी ही नेक औरत थी। मुझे और गुलाब को पास-पास लाने में उसने बड़ी ईमानदारी से काम लिया। दोनों के दिलों की धड़कनों को उसने सुना और उनका सन्देश हम दोनों तक पहुँचाया। इसीसे हम दोनों को एक-दूसरे के निकट पहुँचने में देर न लगी।

आज अम्मीजान इस दुनियाँ में नहीं हैं। एक दिन बैठे-बैठे, बातें करते-करते हमने उन्हें हिला-जुलाकर देखा तो वह नहीं थीं। अम्मीजान हमें ताज्जुब-से-में छोड़कर चलीगईं।

उस दिन रात भर मुझे नींद नहीं आई। मुझे ऐसा लगा शर्मा जी! कि मेरी माँ मुझसे बिछुड़गई। कितना ध्यान रखती थीं वह मेरा?" आगन्तुक का दिल भारी होगया। उनकी आंखों में नमी आगई।

मैंने बात की दिशा बदलतेहुए कहा, "तो अब तो गुलाब भाभी को भी अकेली ही रहना पड़ताहोगा।"

"एक पहाड़ी नौकर रहता है उनके पास। वह बड़ा फ़रमाबरदार है। घर भर की सफ़ाई करता है और खाना भी बनालेता है। इधर-उधर का कोई झंझट गुलाब नहीं पालता। सप्ताह में एक दिन सिनेमा जाने का उसे शौक है, सो उसी को पूरा करने के लिए मुझे शहर आनापड़ता है और मैं अवश्य आता हूँ।

तुम से छिपाऊँगा नहीं शर्मा जी! कभी-कभी तो आने के लिए किराया भी उधार माँगकर चलनापड़ता है, परन्तु मैं आने में नागा कभी नहीं करता। बारिश हो या जाड़ा या गर्मी की लुएँ ठंकराती हों, मैं गाँव से तीन मील का कच्चा रास्ता नापकर रेल में बैठकर मेरठ आता हूँ और वहाँ से सालिम ताँगा किराए का करके गुलाब के मकान पर पहुँचता हूँ। यह खर्चा आज मैं अपनी उसी तीस रुपए मासिक की पेंशन में से कररहा हूँ, जिसके लिए छोटा भाई हरदयाल हर समय मुँह बनाए फिरतारहता है। वह चाहता है कि ये तीस रुपए भी मैं उसी के बाल-बच्चों के लिए खर्च करदूँ।" आगन्तुक ने कहा।

"खर्च तो आपको वहीं करने चाहिएँ, क्योंकि हरदयाल के पिता हैं आप। आपके कदमों पर उसने क़दम रखे हैं। आपने जमींदारी की शान को कायम रखने के लिए आपने जो रूप बनाया, उसी को उस बेचारे ने भी अपनाया। उसकी भूल कैसे मान लीजाए?" मैंने कहा।

"तो मेरा ही सारा कसूर सही शर्मा जी! जो कुछ आप कहेंगे मैं मानता जाऊँगा। सुना है कसूर मानलेने से कसूर क्षमा होजाता है।" आगन्तुक बोला।

"क्षमा भी न होता हो तो आगे बढ़ना तो बन्द होहीजाता है। बुरी बात का बढ़ना बन्द होजाना भी तो एक बड़ी बात है।" मैंने कहा। परन्तु अब इधर-उधर न बहकिए। सीधी कहानी सुनाते चलिए।"

आगन्तुक ने कहानी प्रारम्भ की, "हाँ तो मैं कालीन पर बैठा था। आपके मित्र पधारे। मैंने उनका सत्कार किया, आवभगत की। गुलाब ने बढ़िया नमकीन लाला के बाजार से मँगाकर उन्हें खिलाया और सर्राफे के कोनेवाले

हलवाई की दूकान से मिठाई मँगवाई। शानदार दावत की उनकी।

बहुत दिलचस्प बातें भी हुई इस दावत के बीच। आपके मित्रवर बोले, "मैं विश्व में क्रांति लानाचाहता हूं। संसार के हर मनुष्य को बराबर राशन मिले, बराबर कपड़ा मिले और बराबर के घर मिलें रहने के लिए, बराबर मेहनत करनी पड़े।"

"विचार तो बहुत ऊँचे हैं आपके। इन्सानियत का नक्शा ही बदल देना चाहते हैं आप। मैं तहेदिल से दाद देता हूं।" मैंने कहा।

इसपर वह बोले, "मुझे एक काम की बात करनी है आपसे।"

"इससे बेहतर और कोई जगह नहीं होसकती काम की बातें करने के लिए।" मैंने कहा, "मुझे आपने किसी योग्य समझा, यह जानकर खुशी हुई।" मैंने कहा।

आपके मित्र बोले, "पेशकार साहब! कल आपके चलेजाने पर मैंने शर्मा जी को लगते हाथों लिया। खूब डाटा-फटकारा और यह मानने पर मजबूर करदिया कि 'दीवान रामदयाल' उपन्यास के लिखने में उनकी कोई विशेषता नहीं है। वह तो एक कातिब की तरह कापी लिखते जारहे हैं। किताब की रायल्टी का रुपया आपको मिलाना चाहिए, क्योंकि कहानी आपकी है और आप ही उसे सुना भी रहे हैं।"

उनकी यह बात सुनकर मैं बैठा-ही-बैठा उछलपड़ा। गुलाब मसखरी आवाज में बोली, "लीजिए दीवानजी! शर्मा जी की कलम पर भी अब तो आपका अधिकार होगया।" और फिर मेरे मित्र की ओर मुंह करके बोली, "आपकी इस नेक सलाह की हम दिल से कद्र करते हैं।

आपके मित्र पर बड़ा गहरा प्रभाव हुआ होगा कल की मुलाकात का।"

"प्रभाव उनपर कुछ नहीं होता। व्यर्थ बातों को अधिक दिमाग में रखना वह पसन्द नहीं करता। अपनी संसार के मानव को एक लेविल पर लाने की योजना पर विचार करताहुआ जीवन चलारहा है। विक्षिप्त-सा होगया है कुछ। किसी जमाने में बड़ा प्रसिद्ध क्रांतिकारी रहचुका है। क्रान्तियों के विभिन्न मार्गों को हिन्दी-माता ने बड़े ही दया-भाव से अपनाया है।" मैंने कहा।

"ये मेरी समझ से दूर की बातें हैं शर्मा जी! मेरी कहानी जीवन के

साथ-साथ चलती है। मैं साहित्य की फ़िलासफ़ी से दूर रहता हूँ। नाविल इसलिए पढ़ता हूँ कि जरा दिल बहलजाता है।"

गुलाब को लेकर फिर काफी देर तक आगन्तुक बातें करतारहा और चलते समय बोला, "तुम्हारी भाभी ने आज शाम को तुम्हें दावत पर बुलाया है। इन्कार नहीं करसकते तुम। तुमको मैं अपना छोटा भाई मानने लगा हूँ।"

मैं चक्कर में पड़गया यह सुनकर। जाना न चाहतेहुए भी आगन्तुक को 'नाँ' न करसका। भाभी गुलाब को देखने की इच्छा भी जाने क्यों बलवती होउठी दिल में? देखें तो सही वह कौन देवी है जिसने दीवान रामदयाल को उसकी इस गरीबी में भी एक वेश्या होकर अपना साथी बनायाहुआ है।

वेश्या का यह सुनहरा स्वरूप देखने के लिए मैं लालायित था। मैंने कहा, "कभी वेश्या के कमरे पर नहीं गया। इसलिए झिझक सी होती है। दुर्बलता है यह मेरे मनकी। भाभी से कहिए कि मैं अवश्य उपस्थित होऊँगा। उनकी दावत मुझे स्वीकार है। इसे स्वीकार न करना एक बहुत बड़ा अपराध है, जो मैं कर नहीं सकता।"

मेरी बात सुनकर आगन्तुक का चेहरा दमदमाउठा। मैंने गुलाब को स्वीकार करके आगन्तुक के आज तक गुलाब के साथ खाने-पीने के पाप पुण्य में बदल दिया। धर्म का भारी पहाड़ जो उसके कलेजे और गले को दबाएखड़ा था, वह मानो एक दम समूल उखड़कर एक ओर जागिरा। वह कुछ हल्के से होकर बोले, "तो मेरा यह काम सभ्यता के दायरे से बाहर का नहीं रहा। गुलाब के साथ सम्बन्ध निभाकर मैंने अच्छा काम किया, बुरा नहीं किया। मेरे इस बुढापे में वही एक सहारा है और उसके इस बुढापे में मैं उसका सहारा हूँ।" इतना कहकर आगन्तुक जीने पर पहुँचगया और मैं अपने कमरे में टहलनेलगा।

मेरी धर्मपत्नी कमरे में प्रवेश करतीहुई बोलीं, "तो संध्या का खाना गुलाब के यहाँ होगा आपका?"

मैंने कहा, "तुम भी चलो।"

देवीजी का पारा यह सुनकर चढ़गया। वह चिढ़तीहुई बोलीं, "आप ऐसी गन्दी जगह जारहे हैं और मुझे भी साथ चलने को कहरहे हैं। कमाल करते हैं आप भी। कुछ सोच-समझकर मुँह से बात निकाला कीजिए।"

मैंने कहा, "इसमें कमाल की क्या वात है जी ? आगन्तुक एक भला आदमी है। गुलाव उसकी प्रेमिका है। उसकी प्रेमिका की दावत स्वीकार करने में भला लज्जा की क्या बातहै ?"

"कोई वात नहीं।" देवीजी विगड़कर वोलीं, "गन्दी जगह से गुजरने-वाला आदमी गन्दा न होने पर भी गन्दा कहलाता है। गन्दा दिखाई पड़ता है। हर व्यक्ति हर व्यक्ति को अन्दर से ही नहीं देखता। दुनियां ऊपरी व्यवहार पर चलती है। ऊपरी व्यवहार को वनाएरखना भी आवश्यक है।"

"वात तो तुम्हारी विल्कुल सच है।" मैंने देवीजी का हाथ धीरे से अपने हाथ में लेकर उन्हें पास वाली कुर्सी पर विठाते हुए कहा, "परन्तु अव तो वचन देचुका। उसे टाला नहीं जासकता। क्या तुम चाहोगी कि तुम्हारे पति को उनके मिलनेवाले झूठा कहें ?"

इस पर देवीजी चुप होगईं। वह समझगईं कि मैं जाना ही चाहता हूं और मेरी इच्छा के विरुद्ध मेरी पत्नी ने कभी कुछ किया तो क्या सोचा भी नहीं।

"आप जाएंगे अवश्य। यह मैं जानती हूं। परन्तु तनिक जल्दी आने की कृपा करना।" मुस्कुराकर हुस्न के वाजार में जाने की अनुमति देते हुए देवीजी वोलीं।

"क्या तुम्हारी इच्छा गुलाव को देखने की नहीं होती ? तुमने तो पूरी कहानी सुनी है।" मैंने पूछा।

"होती है।" देवीजी ने कहा, "आप आज जातेरहे है दावत में। कल आप उन्हें अपने यहां दावत पर बुलालीजिए। भेंट भी होजाएगी मेरी और आपको भी प्रसन्नता होगी।"

देवीजी के इस सुझाव पर मेरा मन खिलउठा। मैंने कहा, "वहुत [illegible] सुझाव है तुम्हारा। कल गुलाव को अपने यहां आने की दावत देकर आऊंगा।"

इन्हीं वातों के बीच हमारे मित्र आगए और देवीजी वरावर के दरवाजे से आंगन में चलीगईं। मैंने अपने मित्र से कहा, "आज वड़ी देर करदी आपने आगन्तुक वड़ा इच्छुक था आपसे मिलने के लिए। आखिर ऐसी क्या घूंट पिलादी आपने उनको जो चार वार आपसे मिलने पर उसके मनमें आ[illegible] लिए इतनी वेचैनी पैदाहोगई।"

"कोई विशेष बात नहीं है।" नाँक चढ़ाकर मेरे मित्रने कहा। "साधारण सी बात है आपके लिए शर्मा जी ! एक किताब की रायल्टी बेचारा किताब का नायक ही पाजाएगा तो आपका क्या लेजाएगा ? लिखाई के पैसे आप को अवश्य मिलेंगे। मेरे साम्यवाद में इतनी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता अवश्य रहेगी। आपका सब-कुछ नहीं छीना जाएगा।"

"आपकी इस कृपा के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँगा आपकी दुनियाँ में।" मैंने कहा, "परन्तु बसा तो लो पहले अपनी उस दुनियाँ को।"

इसपर मेरा मित्र मेरी ओर घूरकर बोला, "तो क्या तुम ही दुनियाँ बनाना जानते हो, हम नहीं जानते दुनियाँ बसाना ? हमारे विचारों में न जाने कितनी दुनियाँ नित्य बनती और बिगड़ती हैं।"

"ये सब खयालातों की दुनियाँ हैं। इनकी पायदारी भी कुछ नहीं है। आपके कहने के अनुसार ही ये नित्य बनती और बिगड़ती हैं। मैं ऐसी दुनियाँ में बसना नहीं चाहता जो स्वप्न की जमीन पर बसे। आपकी दुनियाँ यदि वास्तविक दुनियाँ की जमीन पर नहीं बसाई जाएगी तो आसमान में टँगी रहजाएगी और यह पवित्र जमीन कभी उस दुनियाँ को अपनी गोद में सँभाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं करसकेगी।" यहाँ से बात की दिशा बदलता हुआ बोला, "संध्या को सात बजे गुलाब के मकान पर हमारी दावत है। भी आमंत्रित कर गया है आगन्तुक। मेरा विचार है कि तुम संध्या को वहाँ वश्य आओगे। गुलाब से वहीं भेंट होगी आपकी।" मैं इतनी बात को दबा या कि मुझे उनके गुलाब के घर होआने की बात ज्ञात थी।

"मकान का ठीक से पता बतादो तो मैं आने का प्रयत्न करूँगा।" वह ोला।

मैंने मुस्कराते हुए बेली बाजार का पूरा नक्शा उनके सम्मुख खींचकर न्हें गुलाब की हवेली की ड्योढ़ी पर लेजाकर खड़ा करदिया।

"बस अब पहुँचजाऊँगा। मैं आपको वहीं मिलूँगा।"

: ३२ :

सन्ध्या को दावत के समय मैं गुलाब के मकान पर पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि मित्रवर वहाँ पहले से ही पहुँचेहुए थे। दीवानखाने में कालीन पर ठाट के साथ बैठे गप्पें लगारहे थे।

सुनहरी फ्रेम का उनका चश्मा चमाचम चमकरहा था। सात घोड़े की बोस्की का सुफ़ेद सिल्कन का कुर्त्ता और चूनटदार केलीको मिल्स की बारीक-से-बारीक धोती बांधी हुई थी, शायद आज ही खरीदकर लाए थे। पैरों में सुफ़ेद साबर की चप्पलें थीं।

मेरी आंखें चमकउठीं उनकी शक्ल देखकर। मैंने मुस्करातेहुए उनके कान में कहा, "ठाट तो लाजवाब बनाया है आज।"

परन्तु वह बहुत गम्भीर थे। मेरी बात का उन्होंने कोई उत्तर नहींदिया।

आगन्तुक और गुलाब ने मेरा स्वागत किया। वे अपने विशेष कमरे में मुझे लेआए। कमरा हू-ब-हू वैसा ही था जैसा मैंने लिखा था। वही पेचवानी, वही पानदान वही पीकदान, वे ही कलंडर, वही मखमली चादर, वे ही सिल्क के गिलाफ़ोंवाले तकिए और वही लिहाफ़। उनमें कोई तबदीली नहीं थी।

"इस मकान पर बड़े-बड़े अफ़सर आचुके हैं शर्मा जी! यही वह कमरा है जिसमें सेठ दामोदरप्रसाद के हाथों में हथकड़ी लगने की नौबत आगई थी। यही वह मकान है जहाँ से एक साल की खोई हुई लड़की को मैंने बरामद करके उसे उनके माता-पिता के हवाले किया था। यही वह मकान है जो कभी मेरठ के गुण्डों का हेडक्वार्टर रहा है। यदि सच पूछें तो कहने को पुलिस के कार्यालय मेरठ में थे, परन्तु वास्तविक कार्यालय यही था। क्या एस० पी० और क्या शहर-कोतवाल, दीवान रामदयाल के संकेत के बिना एक इंच भी नहीं हिलसकते थे। यहाँ पर आकर सबको टक्कर मारनी होती थी।" शौकीन अन्दाज के साथ आगन्तुक बोला।

मैंने बात बदलतेहुए पूछा, "शराब की दावतें तो इसी कमरे में उड़ती होंगी आपकी और कासिममिर्जा की?"

मेरा इतना कहना था कि आगन्तुक ने कमरे की चार आलमारियाँ खोल दीं। उनमें बोतलों का अम्बार लगा था। देसी और विलायती, बहुत सी शराबों के लेबिल वाली बोतलें थी उसमें। वह बोले, "शौक कम नहीं किया शर्मा जी! जीवन का पूरा आनन्द लिया हैं। कल मरता, आज मरजाऊँ, अब कोई खेद नहीं दिल में।"

परन्तु तुरंत ही गुलाब की ओर देखकर मुस्करातेहुए बोले, "अभी मरनेवाला नहीं हूँ गुलाब! तेरी इन फूल सी हड्डियों को ठिकाने लगाकर ही मरूँगा।"

"क्या मरने की बातें छेड़ दीं आपने? मरें आपके दुश्मन। अभी तो हम लोग नौजवान हैं। मरने की बात सोचना नासमझी है।" एक अन्दाज़ के साथ गुलाब ने कहा।

चूड़ियोंदार सुफ़ेद लट्ठे का पायजामा, मलमल का सोने के बटनों वाला कुर्त्ता, लाल मखमल की जाकट, सिर नंगा और काँधे पर बनारसी सिल्क की कामदार ओढ़नी पड़ी थी। होठोंपर पान की लाली थी। इस आयु में भी उसके चेहरे की बनावट में अन्तर नहीं आया था। गुलाब का एक भी बाल नहीं पका था।

"आयु कम नहीं है।" मेरी दृष्टि को पहिचानकर आगन्तुक बोला। "तुम्हारी भाभी गुलाब ने अपने सौंदर्य को सुरक्षित रखा है। सौंदर्य भी सँभालकर रखने की चीज़ है शर्मा जी!"

"इसमें कोई संदेह नहीं!" मैंने कहा, "प्रत्येक वस्तु पर सँभाल कर रखनेसे चमक रहती है।"

हम लोग फिर दीवानखाने में गए। हमारे मित्र वहीं पर विराजमान थे। दीवानखाने में दो झाड़-फ़नूस टँगे थे। दीवारों पर साक़ी और उमरखय्याम के चित्र बने थे। साक़ी शराब पिला रही थी और खय्याम पी रहे थे।

मैंने ध्यान से देखा कि वह साक़ी गुलाब थी और पीनेवाला आगन्तुक। यह देखकर मैंने आँखें बंद करलीं और मन में कहा, "आदमी दोनों कमाल के हैं। एक दूसरे को खूब समझते हैं। एक दूसरे का सहारा हैं और दोनों ही अपने-अपने सहारे का मूल्य पहचानते हैं।

कमरे की कानस पर अगरबत्तियाँ जलरही थीं। उनकी खुशबू से सारा कमरा महक रहा था। आगन्तुक मेरे मित्र की ओर देखकर बोला, "आप इतने गम्भीर क्यों हैं आज ?"

मैंने कहा, "आज कोई विशेष बात नहीं है। आप स्वभाव के ही गम्भीर हैं। देश की बड़ी-बड़ी क्रांतियों से आपका संबंध रहा है। बड़े-बड़े दिल दहलानेवाले काम आपने किए हैं। बड़ी बड़ी नवीन कल्पनाएँ हैं आपकी। आपने भारतवर्ष में तहलका मचा दिया है। परन्तु इतना करने पर भी यह, आप जैसे सौभाग्यशाली नहीं हैं स्त्रियों के मामले में। यानी जिस स्त्री के भी आप सम्पर्क में आए हैं उसी ने आपको धोखा दिया है। एक बार किसी स्त्री पर छापा मारलेने में तो आप सर्वदा सफल रहे, हैं परंतु उस सफलता को आपकी तरह स्थायी बनना इन्हें नहीं आया।"

"हमें नहीं आया, या उनको रहना नहीं आया पास। आप बिल्कुल व्यर्थ की बातें करते हैं शर्मा जी आप !" मेरे मित्र ने कहा।

"दोनों ही बातें हो सकती हैं महाशय !" आगन्तुक ने कहा। "इसमें बुरा मानने की बात नहीं है ? शर्मा जी ने अपनी राय दी है। इस स्वतंत्रता के समय में अपना सही मत प्रकट करने का सबको अधिकार है।" आगन्तुक ने कहा।

इस पर मेरे मित्र चश्मा उतारकर आँखें मिचमिचाते हुए तनिक नर्मी के साथ बोले, "क्षमा कीजिए पेशकार साहब ! यही बात यदि आपने कही होती तो मुझे बुरा न लगता, परंतु शर्माजी से तो मेरे जीवन की कोई बात छिपी नही है। यह जानते हैं कि किस-किस स्त्री ने मेरे साथ क्या-क्या किया है और क्यों मैंने उन्हें छोड़ा या वे मुझे छोड़कर चलीगईं।"

"जान-बूझकर ऐसी बातें करना वास्तव में उचित नहीं हैं।" मुस्कराते हुए आगन्तुक ने कहा और मैं भी तनिक गम्भीर होगया।

गुलाब भाभी मुस्करारहीं थीं।

मैंने आगन्तुक से प्रश्न किया, "कुछ स्त्रियाँ कुछ पुरुषों के पास आकर क्यों चलीजातीं हैं ? क्या कभी आपने इस प्रश्न पर विचार किया है पेशकार साहब ?"

"इसमें विचार की क्या बात हैं शर्मा जी ! कोई भी स्त्री किसी पुरुष के पास उनके पुरुषार्थ के लिए आती है, अपने जीवन की आवश्यकताओं के लिए

आती हैं, प्यार के लिए आती हैं, साथ के लिए आती है और दो इन्सानों का एक बाग़ीचा लगाने के लिए आती हैं। हर बाग़ीचे में नर और मादा वृक्ष होते हैं और चन्द पौदे उनके बीजों से पैदा होकर बाग़ीचा बनाते हैं।

परन्तु जीवन का सबसे बड़ा खेद यही रहा कि मैं यह बाग़ीचा न लगा सका। ब्याही हुई औरत से जो बच्चे पैदा हुए वे दो वर्ष से ऊपर न बढ़ सके।" आगन्तुक को पुरानी बात याद आगई और वह तुरन्त उठकर उस पहले कमरे की ओर चलागया जो उसने अपना विशेष कमरा बताया था। उसकी सफ़ाई गुलाब अपने हाथ से करती थी, उसकी पेचवानी पर गुलाब अपने हाथ से भरकर चिलम रखती थी और उसके पीकदान को गुलाब स्वयं अपने हाथ से धोकर साफ़ करती थी।

थोड़े ही देर में आगन्तुक एक चित्र हाथ में लिएहुए दीवानखाने में आया। उसे मेरे हाथ में देते हुए बोला, 'यह तुम्हारी शीला भाभी थीं शर्माजी! देवी थी, देवी। राधाकृष्ण की प्यारी। सच मानिए शर्माजी, कभी राधाकृष्ण ने इस देवी की इच्छा नहीं ठुकराई। मेरी गोद में सिर रखकर शीला ने मरना ।हा। तो वह भी इसे राधाकृष्ण ने दिया।"

शीला भाभी का चित्र मेरे हाथों में था। कितनी भोली, कितनी सीधी, कितनी जर-जर शीसूरत उनकी। अस्थियों का ढाँचा मात्र थीं। उसे देखकर मैंने कहा, "राधाकृष्ण ने शीला भाभी की यह इच्छा तो पूरी करदी कि उनका प्राणान्त आपकी गोद में सिर रखकर हुआ, परन्तु उस बेचारी की यह इच्छा पूरी नहीं की कि वह स्वस्थ होकर अपना जीवन लम्बा करपातीं।"

"इसका मतलब यह है कि तुम परमात्मा को भी नहीं मानते।" तीखे स्वर में आगन्तुक बोला, "कर्मों का फल सबको भोगनापड़ता है शर्माजी! यहाँ रोटी और कपड़े का प्रश्न नहीं था। दवाई की भी कमी नहीं थी। परन्तु जीवन के साँस ही पूरे होचुके थे तो जिन्दगी के तार को कौन जोड़सकता था? हकीम और डाक्टर बीमारी की चिकित्सा करसकते हैं, मृत्यु की चिकित्सा आज तक कोई नहीं करसका।"

शीला भाभी की स्मृति से मेरे दिल पर भी गहरा धक्का-सा लगा। क्या मरने का समय था बेचारी का? "ठीक ही है, आपका विचार।" मैंने भारी मन से कहा।

"ठीक ही नहीं बिल्कुल ठीक है शर्माजी ! मेरे पिता को तपेदिक होगई और लाख चिकित्सा कराने पर भी उन्हें न बचासका। शीला की बीमारी में कितना रुपया खर्च किया, इसकी गवाह यह गुलाब बैठी है तुम्हारे समक्ष और एक गवाह है उसकी हमारे मित्र करीमखाँ देवबन्द वाले की बीबी; जिसके हाथ से पाई-पाई खर्च हुई है।" आगन्तुक ने कहा।

मैं फिर अपनी बात पर आगया और बोला, "तो आपके विचार से कोई स्त्री अपने पति को तब तक नहीं छोड़ सकती जब तक उसके पति के पास पुरुषार्थ है, जीवन की जरूरतें हैं, प्यार है, साथ निभाने की भावना है और बाग़ीचा बनाने की इच्छा है।"

"बिला संदेह, इनमें से एक भी बात कम होने पर स्त्री साथ छोड़सकती है।" आगन्तुक ने कहा।

फिर मैं अपने मित्र की ओर देखकर बोला, "लीजिए, आपका मत भी सुनलीजिए। आप बाग़ीचा बनाना नहीं चाहते, प्यार को भी आप दिखावटी चीज़ समझते हैं, जीवन की आवश्यकताएं भी आपके पास नहीं है, वे भी आप स्त्रियों की बदौलत ही प्राप्त करने की चिन्ता में रहते हैं, तो भला कौन स्त्री आपके पास टिकसकती है ? पुर्षार्थ की बातें और होती हैं और काम और होते हैं।"

"स्त्री को मैं कोई बड़ी चीज नहीं समझता।" झल्लाकर मेरे मित्र बोले। उनका पारा एकदम सातवें आस्मान पर पहुँचगया। उन्हें लगा कि मैंने उनका एक नए व्यक्ति के सामने अपमान करदिया। उनका बदन क्रोध से काँपने लगा।

वह कड़ककर बोले, "तो क्या अंग्रेजी-शासन के समय में बिना क़ानून गोले-बारूद से लैस होकर घूमना और सरकार को परेशान करना पुरुषार्थ नहीं था हमारा ? हमने अंग्रेजी-शासन को दहलाया है। लोगों में देश के लिए मरने की आग भरी है हमने।"

"यह आपका वास्तव में पुरुषार्थ था और आपके इसी पुरुषार्थ पर लालायित होकर कुछ स्त्रियां आपके जीवन में आईं भी। परन्तु आने के बाद भी स्त्री की कुछ आवश्यताएं होतीं है। उनकी ओर आपने कभी ध्यान नहीं दिया। इसीलिए उन्हें चलाजाना पड़ा।" मैंने कहा।

मेरे मित्र मेरी राय से सहमत नहीं थे। आगन्तुक ने जो बातें स्त्री और पुरुष के सम्बन्ध बनने के विषय में कही थीं उन सभी को वह मन से स्वीकार नहीं करपारहे थे।

मेरे मित्र ने जो क्रांति की बातें कीं तो आगन्तुक ने गहरी दृष्टि से उनकी ओर देखा और फिर मेरी ओर मुंह करके बोले, "आपके मित्र से भेंट हुए चार दिन होगए परन्तु अभी तक परिचय नहीं हुआ।"

"आपका नाम ही आपका परिचय है। देश में आपको कौन नहीं जानता? आप देश के महान् क्रान्तिकारी रहें हैं और आजकल साहित्य-सेवा कररहे हैं। बड़े ऊँचे विचार हैं आपके। मानव मात्र को एक आँख से देखते हैं। आप हैं श्री जनार्दन अस्थाना।" मैंने उनकी सैद्धान्तिक दुनियाँ की, पूरी व्याख्या की, जिसमें भावना के लिए कोई स्थान नहीं था।

"तो हम तो आपकी दुनियाँ से बहुत बाहर के प्राणी हैं श्री जनार्दनजी! आप एक आदमी को एक चीज़ से अधिक मिलने का राशन नहीं देसकते और हमारा एक से काम नहीं चलता। हमें जो चीज़ भी मिलनी चाहिए कई-कई मिलनी चाहिएँ। आपके मानवतावाद में हमारी दुर्दशा होनेवाली है, हमारे विचार से?" आगन्तुक ने कहा और मुस्कराकर गुलाब की ओर देखतेहुए बोले, "कुछ समझती भी हो या नहीं जनार्दन बाबू क्या कहरहे हैं। यह कह-रहे हैं कि बेली बाजार की सब इमारतें गिराकर इस जमीन के प्लाट बनाए जाएँगे और बेली बाजार के बसने वालों में बराबर-बराबर बाँटदिए जाएंगे। तय्यार हो इसके लिए?"

"अगर हमारी बनीहुई हवेली को गिराकर प्लाट बनाने की नौबत आए तो मैं तय्यार नहीं हूँ। बनीहुई चीज़ को बिगाड़ना भी क्या कोई अक्ल की बात है?" गुलाब ने कहा।

"कितनी बड़ी बात कहदी आपने भाभी! मेरा दिल खिलउठा यह सुनकर। मेरे दिल की बात कहदी आपने।"

बात की इस हद पर आकर मेरे मित्र जनार्दन अस्थाना मुझे रूढ़िवादी मानकर मौन होजाते थे। उनका विचार दृढ़ होजाता था कि मेरा मस्तिष्क क्रान्ति के उन तत्वों को अभी पकड़ ही नहीं पाया जिन्हें वह अपनी हथेली पर लिए फिरते थे।

आगंतुक ने मेरे मित्र जनार्दन अस्थाना की सूरत को बड़े ध्यान से देखा और वह मुस्करातेहुए बोले, "भाई शर्माजी ! आपको मैं किन शब्दों में धन्यवाद दूँ ? भाई जनार्दन अस्थाना से भेंट कराकर आपने मेरे ऊपर बड़ा उपकार किया है। मेरी कहानी की टूटी हुई कड़ी जोड़दी आपने।"

"तब क्या मुझे भी आप अपनी कहानी में गूँथना चाहते हैं ?" मेरे मित्र ने मुस्कराकर पूछा।

आगंतुक मेरी ओर देखकर बोला, "शर्माजी ! आज कहानी आपको सुनानी होगी। अपने मित्र जनार्दन अस्थाना से विस्तार के साथ भेंट कराइए। मेरे जीवन के विषय में तो यह सभी कुछ जानते हैं। तनिक मैं भी तो इनके विषय में कुछ जानलूँ। मैं समझता हूँ अस्थाना साहब को इसमें कोई संकोच नहीं होगा।"

"इसमें संकोच की क्या बात है ?" अस्थाना साहब मुस्करातेहुए बोले। उन्हें यह विश्वास था कि मैं उनकी सही कहानी सुनाऊँगा।

तभी आज की दावत का थाल लगकर दस्तरखान पर आगया। चौड़ा चाँदी का थाल था। उसमें चाँदी की चाय पीने की रक़ाबियाँ थीं। दो चाँदी की प्लेटों में नमकीन और दो में मीठा लगाहुआ था। कुछ फल भी थे सूखे और गीले।

"हम लोग चाय बनाते हैं और खाने का सामान तश्तरियों में लगाते हैं। आप अपने साथी का परिचय दीजिए।" गुलाब ने मेरी ओर देखतेहुए कहा।

मैं बोला, "आपके सामने किसी की कहानी छेड़ते मुझे झेंप सी लगती है, क्योंकि कहानी कहने का जो लेहजा और जो अन्दाज आपको परमात्मा ने प्रदान किया है वह मुझे नहीं आता। फिर प्रयत्न करता हूँ।"

"क्यों बनाते हो हमें ?" मुस्कराकर आगंतुक बोला, "अपने मित्र की क्रांतियों के जो चित्र आपके मस्तिष्क पर अंकित हैं उनकी सही कहानी आप ही सुनासकते हैं। सुनाना प्रारम्भ कीजिए।" आगंतुक ने कहा।

अपने मित्र के जीवन की कहानी सुनाने से पूर्व मैंने एक बार अपने मित्र के चेहरे पर देखा, वह बहुत ही कृतज्ञतापूर्वक यह आशा लिए बैठे थे कि मैं उनके शानदार कारनामों की सूची आगंतुक के सम्मुख इस करीने के साथ रखदूँ कि वह हमारे मित्र को मान जाएँ, और उनकी विशेषताओं को

पहिचानने में उन्हें कठिनाई न हो।

मैंने प्रारम्भ की, "मेरे मित्र जनार्दन अस्थाना बचपन से ही क्रांतिकारी रहे हैं। अपने परिवार के आप सबसे बड़े लड़के थे। आपको आपके पिता ने पढ़ाया-लिखाया था और घर की आय का सबसे बड़ा भाग आपकी शिक्षा पर व्यय किया था। सोचा था कि आप किसी योग्य बनकर अपने उस परिवार को ऊपर उठाएँगे, जिसने अपनी आवश्यकताओं का बलिदान देकर इन्हें शिक्षित बनाया।"

"इनके पिता ने बहुत ठीक सोचा।" आगंतुक बोले।

"बहुत ठीक कैसे सोचा?" जनार्दन अस्थाना ने पूछा, "परिवार के और सदस्यों का पेट काटकर मुझे शिक्षित बनाने का पिताजी को क्या अधिकार था?"

प्रश्न सुनकर आगंतुक चकराए और गुलाब भाभी भी उनकी सूरत देखती रहगईं।

मैं मुस्कराते हुए बोला, "देखी आपने हमारे मित्र की क्रांति? यह इनके जीवन की प्रथम क्रांति थी। पिता की नाइन्साफी से क्रुद्ध होकर आपने घर छोड़दिया। शिक्षा छोड़ दी और दुनियाँ की सब बातों से विद्रोह करना प्रारम्भ करदिया। आप विद्रोह की ज्वाला लेकर जीवन के मैदान में आ-गए।"

"तो परिवार का उत्तरदायित्व और पिता की आशाओं के बन्धन आपने एक ही चाकू से काट दिए।" आगुतुक ने कहा।

मुझे हँसी आगई उनकी गम्भीर बात सुनकर और बोला, "बन्धन की बात एक क्रांतिकारी के सामने न करिए आप। वहाँ कोई बन्धन नहीं है। दुनियाँ भर के बन्धनों को काटडालनेवाली पैनी कटारी है वह तो। उसी कटारी की पूजा की है हमारे जनार्दनजी ने।"

अपने रौब-दाब की कहानी मेरे मुँह से सुनकर मेरे मित्र अन्दर-ही-अन्दर प्रसन्न होरहे थे। उनके कारनामों को मुझसे अधिक खूबी के साथ और कोई नहीं सुनासकता, यह वह जानते थे।

वह गुलाब भाभी से बोले, "शर्माजी चाय के बहुत आदी हैं। जब यह कोई कहानी सुनाते हैं तो इनका गला चाय से ही गर्मी और तरावट पाता है।"

आगन्तुक ने चाय की प्याली मेरे सामने रखतेहुए कहा, "यह प्याली आपको आपके मित्र श्री जनार्दन अस्थाना के आग्रह पर दीजारही है। श्री अस्थाना साहब के लिए स्वीकार करें। उनके जीवन की कोई बात रह न जाए, इस बात का ध्यान रहे। कहानी यदि सच हुई तो मुझसे भी पुरस्कार पाओगे।"

आगन्तुक की सचाई का अर्थ मैं न समझ सका और मैंने उस बात को और कुरेदना भी उचित न समझा। मैंने कहानी आगे बढ़ाई। "तो मेरे मित्र श्री जनार्दन अस्थाना ने घर छोड़ दिया, पढ़ना-लिखना छोड़ दिया। गोला बारूद इकट्ठा करने की ओर ध्यान लगाया। अपना दल बनाया और उसमें लड़के तथा लड़कियाँ, दोनों ने भाग लिया। उस दल ने मेरठ जिले में कोई भयानक कार्य किए। पुलिस और सरकार को दहलादिया।"

"बहुत खूब, बहुत खूब! कमाल करदिया आपके मित्र ने।"

परन्तु वह कमाल अधिक दिन न चलसका। आपके साथ काम करने वाली कॉमरेड लड़की लाहौर भाग गई। इससे आपके दिल टूटगया। आपका काम भी शिथिल पड़गया।

उसके पीछे-पीछे बेचारे आप भी लाहौर तक गए और वहाँ जाकर बन्दी हो गए। तीन वर्ष के लिए सरकार ने जेल में बन्द करदिए। बड़ी-बड़ी यातनाएँ सहनीपड़ीं और जब निकले तो पंजाब की सरकार ने इन्हें पंजाब में न रहने दिया। उत्तर प्रदेश ने आपको अपने अन्दर स्थान दिया। वह कॉंग्रेस की पहिली मिनिस्ट्री का समय था।

हमारे मित्र जनार्दन अस्थाना, मैंने देखा एक दिन यहाँ घण्टा घर के सामने वाले चौरस्ते की बगल में पान की दूकान पर पान खारहे थे। मैं इन्हें पहचानताहुआ बोला, "अरे जनार्दन बाबू! आप यहाँ कहाँ? पढ़ा तो था दैनिक पत्र में कि सरकार ने आपको मुक्त करदिया है, परन्तु यह पता नहीं था कि आप मेरठ आगए हैं।"

"आ तो गया हूँ।" लम्बा श्वाँस लेकर अस्थाना साहब बोले।

"मेरे घर चलिए।" मैंने कहा और यह बिना तकल्लुफ़ के साथ मेरे घर आगए।

दो चार दिन पश्चात बोले, "घर का प्रबन्ध होगया है यहीं [illegible]

मैंने पूछा, "कहाँ ?"

"संध्या को बताऊँगा।"

संध्या को फिर यह आए ही नहीं मेरे मकान पर। इनके लिए बनाया गया खाना व्यर्थ गया। मुझे देवीजी की डाट सहनी पड़ी। मेरी देवी जी किसी के लिए खाना बनाने को कभी मना नहीं करतीं, परन्तु खाना बनवाकर खाने के लिए न आने वालों पर उन्हें बहुत क्रोध आता है। उनकी अनुपस्थिति में उस क्रोध का भार मुझे सँभालना पड़ता है। इसे वह अन्न का अपमान मानती हैं।"

दूसरे दिन प्रातः-काल एक चपरासी आपका पत्र लेकर आया। पत्र को पढ़ने पर पता चला कि आप सेठ दामोदरप्रसाद को चुनाव में हराकर जिले की कांग्रेस के प्रधान बनगए।

"अब आपको बड़े-बड़े काम करने थे। वे मेरे साधारण से मकान पर होने असम्भव थे। उनके लिए बँगले की आवश्यकता थी। इसलिए आपने रामेश्वरी देवी का उनकी कोठी में रहने का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।"

"जनार्दन अस्थाना जिन्दाबाद! जनार्तन अस्थाना जिन्दाबाद! के नारों का जलूस शहर में निकला। मैंने देखा रामेश्वरी देवी और आप दोनों अगल-बगल बैठे थे कार में। मेरठ शहर ने आपका शानदार स्वागत किया।" आगन्तुक ने कहा।

गुलाब भाभी का इन बातों से कोई सम्बन्ध नहीं था, परंतु आगन्तुक बड़ी ही दिलचस्पी से सुनरहा था। वह मुस्कराकर बोला, "शर्माजी! इतने काम के आदमी निकलोगे, मुझे क्या पता था? अस्थाना साहब से भेट करके बहुत प्रसन्नता हुई। आपकी कहानी बहुत दिनचस्प है। तो अस्थाना साहब आपके मकान से अपना बिस्तर-बोरिया उठाकर रामेश्वरी देवी की कोठी पर चले गए।"

"बिस्तरा-बोरिया तो कुछ था ही नहीं। एक टूटा सा फाइल था, वह मैंने इनके नौकर को देदिया और कहदिया कि यदि समय मिले तो अस्थाना साहब से कह देना मिलजाएँ।

ठीक दो वर्ष तक इनसे भेट नहीं हुई। दो वर्ष पश्चात एक दिन क्या देखता हूँ कि आप अपने उसी पुराने फटे फ़ाइल को बगल में दबाए चप्पलें

घसीटतेहुए सामने आ खड़ेहुए।

"आज कैसे रास्ता भूल गए।" मैंने आपका स्वागत करतेहुए पूछा।

"विचारों में परिवर्तन आने के कारण मैंने रामेश्वरी देवी का साथ छोड़ दिया। कामरेड एम. एन. राय की विचारधारा मुझे पसंद है। ऐसी दशा में रामेश्वरी देवी के कांग्रेसी दड़बे में साँस लेतेहुए मेरा दम घुटनेलगा। मैंने जो कुछ वहाँ से लिया था वह सब वहीं छोड़ दिया। अपना वही पुराना कुर्ता और पायजामा पहनकर और वही फटा-टूटा फाइल लेकर वहाँ से विदा होगया।" अस्थाना साहब ने कहा।

"ये ही तो हैं मनुष्य के जीवन की क्रांतियाँ। क्या आप सोच सकते हैं किसी ऐसे आदमी के विषय में जो रामेश्वरी देवी और उनकी कोठी को एक बार पाजाने के पश्चात् इतनी सरलता से छोड़दे ?" मैंने कहा।

इस पर आगन्तुक को बहुत हँसी आई और वह हँसता-ही-हँसता बोला, "शर्माजी! बड़ी जल्लाद औरत है वह। पत्थर का कलेजा है उसका। उस औरत को पहचानना अस्थाना साहब के बूते की बात नहीं है। उसे पहचानने को बहुत बड़े दिल की आवश्यकता है ?"

मैं सन्नाटे में आगया, आगन्तुक की यह बात सुनकर। गोलमाल क्या था, यह मेरी समझ में न आया। मैंने बात को समाप्त करने की ओर ध्यान दिया क्योंकि दावत का सब सामान प्लेटों पर सजाया जा चुका था और मेरी जीभ ने पानी देना प्रारम्भ करदिया था।

मैंने अस्थाना साहब के खाने की सूचना घर में पहुँचाई तो देवीजी ने मुस्कराकर कहा, 'खाएँगे भी वह ? यदि आज भी उस दिन की तरह खाने पर न आए तो सर्वदा के लिए बेचारों का इस घर से खाना-पानी उठ जाएगा।' मैंने देवी जी का संदेश आपको देदिया। आपने तब उस दिन की भूल का अनुभव किया। अस्थाना साहब अपना भूलों का अनुभव करने और मान लेने में देवता आदमी हैं।

दूसरे दिन आप मुझसे दस रुपए उधार माँगकर दिल्ली गए और जब लौटे तो आपकी जेब में एक हज़ार रुपए के नोट थे। खद्दर का पायजामा और कुर्ता नहीं था, पूरा सूट डाटा हुआ था आपने। "रायिस्ट होगया हूँ मैं अब।' लौटने पर आपने बताया।

"अच्छा किया !" मैंने कहा, "युद्ध के समय में सरकारी सहायता भी लती रहेगी और होसकता है कि आपका लिखने-पढ़ने का शौक आपको ल इण्डिया रेडियो पर कोई अच्छा स्थान भी दिलादे।"

"लीडरों का काम नौकरी करना नहीं है।" अस्थाना साहब कड़ककर ले।

"तो युद्ध के जमाने में आप रायिस्ट रहे और आपकी विचारधारा के कुछ र लोग भी आपके साथ आगए। परंतु ज्योंही राशन मिलना बंद हुआ तो पके साथी आपको छोड़कर चलेगए।

इस बीच में भी आपने मेरे पास आना-जाना कम करदिया था। आपको जनीति से ही अवकाश नहीं मिलता था।

इसके पश्चात् मैंने आपका एक दिन वह रूप देखा जो आपके सामनेइस मय उपस्थित है। आपका यह रूप सिनेमा के गीतिकार और कहानी-लेखक । है। अभी आपको फिलमवालों ने कोई चांस नहीं दिया है, परन्तु मिल ाएगा। और जिस दिन मिल जाएगा उस दिन सिनेमा-जगत की काया लट होजाएगी।

आपका इरादा है कि आप मेरठ में ही एक फिल्ल वनाने का स्टूडियो नाएँ। गुलाव भाभी यदि अस्थाना साहव की मदद करें तो क्या ही कहने ।" मैंने अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा।

मेरे इस प्रस्ताव पर आगन्तुक मुस्कराया और वाद की सब वातों पर पानी सा फेरताहुआ वोला, "तो रामेश्वरी देवी से अस्थाना साहव का संबंध वहीं समाप्त होगया। उसके वाद इनकी रामेश्वरी देवी से भेंट नहीं हुई।"

"भेंट क्यों नहीं हुई, परन्तु मनमें से वह मिठास जातारहा। नजरें आज भी मिलती हैं परंतु वह इनको घृणा की दृष्टि से देखती हैं।

अस्थाना साहव इसे उनकी नासमझी समझते हैं और इनका यह विचार है कि किसी दिन वह सही मार्ग पर आजाएँगी।"

आगन्तुक वोले, "शर्माजी ! आज दोनों काम आपने ही किए हैं। कहानी भी आपने कही है और लिखा भी आपने ही है। इसलिए आज के अध्याय की रायल्टी हम आपसे नहीं मांगेंगे।" अस्थाना साहव के सामने नमकीन की प्लेट सरकाते हुए वोले, "ठीक हैं ना अस्थाना साहव ! आखिर न्याय भी

कोई चीज हैं दुनियाँ में।"

"आपके न्याय की मैं प्रशंसा करता हूँ।" कहकर मैं गुलाब भाभी की ओर देखकर बोला, "भाभी ने आज मेरे लिए इतना कष्ट उठाया इसके लिए आभारी हूँ। भाभी का प्यार जीवन में प्रथम बार प्राप्त कररहा हूँ। अस्थाना साहब से मुझे सबसे बड़ी शिकायत यही हैं कि इन्होंने मुझे एक दिन भी रामेश्वरी देवी के हाथ की चाय नहीं पिलवाई।"

"शर्मा जी! चाय वह पिलवा ही न सकेहोंगे बेचारे! आप व्यर्थ शिकायत करते हैं। अस्थाना साहब में मुझे शिकायत की कहीं कोई बात दिखाई नही देती। आपको शिकायत केवल इसलिए है कि आप रामेश्वरीदेवी से अपरिचित हैं।"

"यही बात है श्रीमान!" तनिक ठहरकर अस्थानासाहब बोले, "शर्माजी दूसरों की परवशता पर ध्यान ही नहीं देते दीवानजी! इन्हें तो हर बात में उपहास सूझता है। स्त्री का मामला कितना नाजुक होता है यह बात इन्हें मालूम नहीं। रामेश्वरी जैसी स्त्री के फन्दे में चार दिन भी इनकी गर्दन फँसगई होती तो छटी तक का खाया-पिया याद आजाता। वह तो अस्थाना ही था जो दो साल तक गाड़ी खींचतारहा, परन्तु जब विचारों में तबदीली आगई तो फिर उसका बोझ सँभालना कठिन होगया।"

"बहुत खूब, बहुत खूब।" आगन्तुक ने कहा। "वास्तव में शर्मा जी आप इनकी कठिनाई को नहीं समझते! आपको सीधी-सादी भाग-भरी जैसी पत्नी मिलगई है। आप रामेश्वरी जैसी कीमा कबाब स्त्री को क्या समझें? वह औरत तूफान है शर्मा जी!

परन्तु उसके हाथ की चाय हम आपको अवश्य पिलाएँगे। वैसे काफी दिन से उसकी हमसे भेंट नहीं हुई है।"

"शर्मा जी घाग आदमी हैं पेशकार साहब! इनसे जरा बचकर रहिए। आजकल रामेश्वरी देवी के तो यह 'सर्वेसर्वा' बनेहुए हैं।" अस्थाना साहब बोले।

"सर्वेसर्वा माने, मालिक?" आगन्तुक ने पूछा।

मैंने कहा, "नाप लीजिए अस्थाना साहब के विचारों की गहराई। एटम और हाइड्रोजन बम की बातें करनेवाला क्रांतिकारी स्त्री के विषय में कितना लाचार है? अर्थात् एकदम अनभिज्ञ।

परन्तु मैंने जिसे जीवन में मित्र कहदिया, उसकी अच्छाई और बुरा दोनों को निभाता हूँ। मेरे लिए रामेश्वरीदेवी भाभी के समान हैं और उस रूप में मैं उनका आदर करता हूँ। आज वताता हूँ अस्थाना साहव ! जिन दिनों आपने मेरे पास आना वन्द करदिया था तव भी रामेश्वरीदेवी मेरे पास आयाकरती थीं और तव से आज तक मेरे परिवार में उनका आना-जाना उसी प्रकार है। उसमें कोई परिवर्तन आनेवाला नहीं है।" यह कहकर मेरे होठों पर मुस्कराहट आगई।

गुलाव भाभी ने मेरी मुस्कान को ऊपर से ही लपकतेहुए कहा, "मुस्करा-रहे हो शर्मा जी ! अवश्य कोई नई वात यादआई है।"

अस्थाना साहव मुस्कराकर वोले, "शर्मा जी की मक्कारी की वात है पेशकार साहव ! यह जो कुछ कहरहे हैं, गलत है। आप इनका कतन विश्वास न करें।"

"परन्तु अस्थाना साहव ! आपकी मुस्कराहट वता रही है कि आप जिस वात को गलत कहरहे हैं, उसीको मानते हैं।" गुलाव भाभी ने कहा और मैंने उनके के मूँह पर देखा। "लाजवाव कर दिया है अस्थाना साहव को।"

कहानी अधूरी ही छोड़कर आज मुझे चलनापड़ा। प्रयत्न करने पर भी कहानी समाप्त न हुई। कहानी वढ़ती ही गई।

चलते समय मैंने देवीजी का संदेश गुलाव भाभी को दिया और उन्होंने सहर्ष मेरे मकान पर आना स्वीकार करलिया। दूसरे दिन दोपहर के ग्यारह वजे का समय निश्चित हुआ।

: ३३ :

गुलाव के मकान से मैं और अस्थाना साहव निकले तो वैली वाजार के ...नेवाले दूकानदारों ने हमारी ओर ध्यान से देखा। अस्थाना साहव की ...भूपा देखकर उन्होंने अनुमान लगाया कि वह कोई फिल्म के डाइरेक्टर या ...सर हैं। कोई नयास्टार खोजने के लिए मेरठ आए हैं।

अस्थाना साहब वहीं से विदाहोगए और मैं रामेश्वरीदेवी की कोठी से होताहुआ अपने घर आया। मैंने रामेश्वरीदेवी को भी दूसरे दिन ग्यारह बजे अपने मकान पर आने की दावत दी और उन्होंने सहर्ष उसे स्वीकार करलिया।

हमारी देवीजी ने दावत का प्रबन्ध अपने घर के रिवाज के अनुसार किया। उनका चौके का भोजन था, दीवानखाने का नहीं। हलवा, पूड़ी, रायता और दो साग, बस यही थी उनकी दावत। इससे अधिक वह अपने परिवार की आर्थिक दशा के अनुसार करना पसन्द नहीं करती थी। इतना आतिथ्य प्रदान करने में उन्हें आनन्द आता था।

भोजन का सब प्रबन्ध ठीक था। बैठक की कुर्सियाँ बाहर निकलवाकर मैंने उसमें क़ालीन बिछवादिया था। सब काम ठीक होने पर मैंने देवीजी से कहा, "ग्यारह का समय होनेवाला है और अभी तक कोई मेहमान नहीं आया।"

"न आया तो न सही। खाने-पीने का सामान सब बच्चे चटकरजाएँगे। चिन्ता की क्या बात है? बढ़िया माल उड़ाने में बच्चों को देर नहीं लगती।" देवीजी ने मुस्कराकर मुझसे चुटकी लेतेहुए कहा।

"वे लोग अवश्य आएँगे देवीजी!" मैंने कहा। "आपके बाल-बच्चों की क्या दशा है? सावित्री के बाल अवश्य बिखर रहे होंगे। पगली कहीं की, बड़ी लापरवाह है अपने शरीर के बारे में। सरला बेटी अवश्य ठीक-ठाक होगी। सुविता ने तो ठीक डेढ़ घण्टे में अपनी माँग काटी होगी। वह तुमको कहाँ है तुम्हारी छम्मो? देवपाल और इन्द्रपाल कहाँ हैं नालायक? छोटे बेटे के क्या हाल-चाल हैं।"

शीशे के सामने खड़ा बाल बनाताहुआ इन्द्र बोला, "मैं यहाँ खड़ा हूँ पिता जी! बाल काढ़ रहा हूँ। आपने ही तो कहा था कि आज हमारी दो-दो ताइयाँ आनेवाली हैं और दो-दो ताऊजी। उन्हीं की गोद में बैठने के लिए अपना चेहरा सँवाररहा हूँ।"

"देवपाल कहाँ है? सावित्री की ही तरह कपड़े-लत्ते की वह भी चिंता नहीं करता। खेल में पागल रहता है। परन्तु मस्तिष्क अच्छा है उसका।" मैंने कहा।

"छोटे का भी कम नहीं है। आपसे कम नहीं रहेगा एक भी।" देवीजी

मुस्कराकर बोलीं।

उसी समय सामने रिक्शा से रामेश्वरीदेवी उतरीं और मैंने तथा देवीजी ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। वह नमस्कार करके मुस्करातीहुई घर के अन्दर चली आईं।

हम तीनों बैठक में कालीन पर जाबैठे और बैठते ही रामेश्वरीदेवी बोलीं, "बड़े शैतान होगए हो तुम। तुम्हारा उपन्यास 'दीवान रामदयाल' कल रात मैंने आपढ़ा। परन्तु अधूरा है वह तो अभी। पेशकार साहब को बिल्कुल सही पेन्ट किया है तुमने। मेरा भी खाका खूब उड़ाया है। गुलाब को भी ठीक रखा है। हामिदअली और सेठ दामोदरप्रसाद के तो तुमने परखचे उड़ाकर रखदिए हैं। कासिममिरजा का भी चरित्र ठीक है। करीमखाँ का चरित्र खूब बना है। कलक्टरों और उनकी मेमों का भी अच्छा खाका खींचागया है।"

"आज की दावत का आयोज उसी उपन्यास को पूरा करने के लिए किया है भाभी जी! आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी।" मैंने कहा। उसी समय ... के द्वार पर आगन्तुक और गुलाब आते दिखाईदिए। गुलाब के मुख पर काला रेशमी बुर्का था और अन्दर वही कल के वस्त्र थे। गुलाब के येहीं वे वस्त्र थे जिनके अन्दर आगन्तुक को वह सब से अधिक सुन्दर दिखाईदेती थी।

रामेश्वरी आगन्तुक को देखकर तनिक सहमी, परन्तु तुरन्त ही त्योरी बदलकर गम्भीरता से मुस्करादीं और आगे बढ़कर बोलीं, 'पेशकार साहब! गुलाब बहिन! आप लोगों के तो दर्शन ही दुर्लभ होगए।"

"मैं वास्तव में एक लम्बी डुबकी लगागया था।" आगन्तुक ने कहा। "शहरी दुनिलाँ के सब सम्बन्धों से एक दिन में नाता तोड़दिया। केवल रहगए दो साथी, एक गुलाब और एक घण्टाघर का सिनेमा। महीने में चार बार आता हूँ गुलाब को सिनेमा दिखाने के लिए। तुम तो ठीक हो रामेश्वरी!"

"सब कृपा है आपकी।" रामेश्वरीदेवी ने कहा।

"कृपा का सय स्वप्न बनगया रामेश्वरीदेवी! अब तो तीस रुपए मासिक का जीवन चलरहा है। यह जो कुछ ठाटबाट तुम्हें दिखाई देता है, यह सब गुलाब की अमानत है।" आगन्तुक ने कहा।

"और गुलाब बहन आपकी अमानय हैं।" रामेश्वरीदेवी बोलीं।

"इसमें भी कभी संदेह नहीं हुआ।" आगंतुक बोला।

उसी समय श्री जनार्दन अस्थाना भी आगए। मैंने अस्थाना साहब का खड़ेहोकर स्वागत किया।

अस्थाना साहब का बाँका सुफ़ेद लिबास देखकर रामेश्वरीदेवी मुस्कराईं और मेरे कान में बोलीं, "आज तो अस्थाना साहब अच्छे-खासे कार्टून मालूम देरहे हैं। खूब बगुले जैसी सूरत बनाईहुई है।"

मैं बात को बदलकर बोला, "आज की दावात के सब महानुभाव आचुके। दावत का सामान भी तय्यार है। परन्तु दावत से पूर्व कुछ सांस्कृतिक प्रोग्राम होजाना चाहिए।"

आगंतुक बोला, "आज की कहानी आपको सुनानी है। कल यही ठहरा था न हम लोगों के बीच।"

कल की बात स्वीकार कर मैंने कहा, "कहानी आज श्रीमति रामेश्वरीदेवी की ही कहानी थी, सो मैंने कहानी को स्थान पर उन्हें ही लाकर आप लोगों के बीच बिठादिया। उचित यही है कि आपसे ही आपकी कहानी सुनें।"

आगंतुक मेरी बात सुनकर हँसपड़ा। वह रामेश्वरीदेवी से बोले, "तुम्हीं कहो रामेश्वरीजी, जब हींडन नदी के किनारे रात्रि के बारह बजे कड़ाके की सर्दी में मैं तुम्हें नाव से उतारकर लौटआया तो तुमने क्या किया, किधर गईं तुम ?"

रामेश्वरीदेवी ने मुस्कराकर अपनी कहानी कहनी प्रारम्भ की, "मैं नाव से उतरकर सीधी पक्की सड़क की ओर बढ़गई। सड़क पर मुझे एक ट्रक आता दिखाई दिया। मैंने हाथ खड़ा करके उसे रोककर कहा, "दिल्ली तक पहुँचा दोगे क्या भाई ? मेरा आदमी बीमारी में दम तोड़रहा है दिल्ली के हास्पि-टल में। तुम्हारी बड़ी कृपा होगी यदि मुझे दिल्ली पहुँचादो।"

ठेलेवाले को मुझपर दया आगई और उसने मुझे ट्रक में बिठा लिया।

मैं बोली, "भाई ! मेरी कमर में बहुत दर्द है। मुझसे बैठा नहीं जारहा। यदि तुम्हारे पास कोई कम्बल हो तो मैं उसे ओढ़कर ठेले के अन्दर लेट जाऊँ।"

आदमी नर्म दिल का था। उसने अपना बिस्तर ठेले में बिछादिया और मैं उसपर चुपके से लेटगई। उसमें लिपटकर मैं एक बिस्तर-सा ही बनगई।

खाली मोटर-ठेले की कौन तालाशी लेनेलगा था। ट्रक एक घंटे में

दिल्ली-मालगोदाम के पास पहुँचगया। वहाँ से उसे कोई सामान लेजाना था।

मैं वहीं पर ठेले से उतरगई। मैंने ठेलेवाले को धन्यवाद देकर किराया देना चाहा तो उस बेचारे ने मुझसे वह भी नहीं लिया।

क्रान्ति की ज्वाला उस समय दिल्ली में भी बुझचुकी थी। सरकारी दमन के नीचे देश पिसरहा था। कोई साथी, कोई काम, वहाँ दिखाई न दिया।

रुपया मुझे आपने काफ़ी देदिया था। ठाट से नई-दिल्ली के इम्पीरियल होटल में ठहरी और वहीं पर संध्या को एक अविवाहित आई० सी० एस० से मेरी मित्रता होगइ। वह विलायत जारहा था। मैंने कहा, "जाना तो मैं भी चाहती थी, परन्तु पासपोर्ट···।"

वह मुस्कराकर बोला, "आप मेरी पत्नी कहलाना स्वीकार करें तो मैं उसका प्रबन्धकर सकता हूँ।"

मैंने मुस्कराकर स्वीकार करलिया।

उन आई० सी० एस० साहब की पत्नी के रूप में मैंने देश छोड़दिया। आई० सी० एस० साहब ने जिस अभिप्राय के लिए मुझे अपने साथ लिया था, उनका वह अभिप्राय मैं पूरा न करसकी। एक दिन होटल में उन्हें छोड़कर मैं चुपके से उनसे विदा होगई।

वहाँ से भागकर मैं जर्मनी पहुँची और जर्मनी से मुझे जापान जाने में देर न लगी। जापान में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से मेरी भेंटहुई।

"इसका मतलब यह हुआ कि आप आज़ाद-हिन्द-फौज में प्रवेशकर गईं।" आगन्तुक ने कहा।

"आज़ाद हिन्द फौज भी रामेश्वरीदेवी के कारनामे पत्रों में प्रकाशित होचुके हैं।" मैंने कहा।

"इसके बाद की कहानी संक्षिप्त है। इम्फ़ाइल के मोर्चे से मुझे अंग्रेज सरकार ने बन्दिनी बनाकर दिल्ली के लाल क़िले में भेजदिया। वहाँ से आज़ाद हिन्द फ़ौज के अन्य व्यक्तियों के साथ मेरी मुक्ति हुई।"

रामेश्वरीदेवी की कहानी सुनकर आगन्तुक बहुत प्रसन्न हुआ। गुलाब बड़े ध्यान से रामेश्वरी देवी के चेहरे पर देखरही थी। उसके ध्यान से देखने पर रामेश्वरीदेवी ने भी देखा तो उन्हें हँसी आगई और वह गुलाब से बोलीं, "गुलाब बहन ने मुझे पहचाना नहीं क्या? अरे मैं वही तो हूँ, तुम्हारी सहेली

रामप्यारी । तुमसे दो कमरे छोड़कर ही तो मुझे एक कमरा पेशकारसाहब ने दिलाया था वैली बाजार में।"

"कितनी बदल गईहो तुम रामप्यारी ! मैं तो क़यास भी न करपाती कि तुम वही हो।" बड़े ही मिठास के साथ गुलाब ने कहा।

"जीवन ही बदल गया बहन ! अब तो एक तूफ़ान सा बनगया है यह जीवन। फाँय-फाँय चलने वाली दुनियाँ की तूफ़ानी हवाओं से टकराने की आदत सी पड़गई है। चैन से बैठने में आनंद ही नहीं आता।" मुस्कराकर रामेश्वरीदेवी ने कहा।

श्री जनार्दन अस्थाना ने देखा कि सभा में रामेश्वरी का रंग जमता जा-रहा था। वह गम्भीरतापूर्वक बोले, "आप लोगों ने रामेश्वरीदेवी की कहानी सुनी। इनकी वीरता, दिलेरी, चालाकी और जाने किस-किस चीज़ की आपने प्रशंशा की। परन्तु आपने यह नहीं समझा कि इनका यह सब प्रयास दुनियाँ को सर्वदा के लिए डिक्टेटरशिप का दास बनाने की दिशा में हुआ। मानवता को पीसडालने के लिए हुआ।"

"बिल्कुल ग़लत," मैंने कहा, "रामेश्वरीदेवी ने जो कुछ किया, भारतमाता को दासता की जंजीरों से मुक्त करने के लिए किया और उसीके लिए अपने जीवन को भयंकर संकट में डाला।"

"इसमें कोई संदेह नहीं अस्थाना साहब ! मैं राजनीति का पंडित नहीं हूँ, परन्तु क़ासिममिरज़ा का साथ छूटजाने के पश्चात मुझे भी राजनीति में दख़ल रखना पड़ा। मैं कह सकता हूँ कि रामेश्वरीदेवी ने जो कुछ किया, वह एक देवी ही कर सकती थी, साधारण स्त्री नहीं।" आगन्तुक बोला।

रामेश्वरीदेवी के लिए मेरे हृदय में अगाध श्रद्धा थी। आगन्तुक के मुंह से उनकी प्रशंसा सुनकर मैंने आगे कुछ कहना उचित न समझा। अस्थाना साहब की ओर देखकर मैंने रामेश्वरीदेवी की ओर देखा और फिर नम्रतापूर्वक बोला, "रामेश्वरीदेवी से मैं प्रार्थना करूँगा कि वह अस्थाना साहब का उन दो वर्ष का किस्सा आज सुनाने की कृपा करें जिन दिनों अस्थाना साहब मेरे यहां से विदा होकर आपकी कोठी के अतिथि बनगए थे।"

आगंतुक मेरी प्रार्थना का समर्थन करते हुए बोले

आपको। कहानी की कड़ियां जोड़ना आप खूब जानते

करने पर भी अस्थाना साहब का परिचय अभी अधूरा ही था।"

रामेश्वरीदेवी ने अस्थाना साहब की ओर देखा तो उन्हें थोड़ी सी हँसी आगई। उनकी दृष्टि अस्थाना साहब से हटकर मेरे ऊपर गई और फिर आगन्तुक के उपर। वह एक लहजे के साथ बोलीं, "अस्थाना साहब का मैं आदर करती हूँ। इनकी जवानी की दिलेरी की दाद देती हूँ। इनकी इसी दिलेरी पर रीझकर मैंने सेठ दामोदरप्रसाद के विरुद्ध इन्हें ज़िला-काँग्रेस का प्रधान बनवाया था। इन्हें रहने के लिए अपनी कोठी में दो कमरों का एक फ्लेट दिया था। परन्तु इन्होंने कुछ ऐसी बातें की कि जिन्होंने इनको मुझसे दूर कर दिया।

अयोग्यता निभाई जासकती है, परन्तु बेहूदगी नहीं निभाई जासकती। इन महाशय ने किसी से यह तो नहीं कहा कि रामेश्वरीदेवी इनकी पत्नी हैं, परन्तु यदि किसी ने इनसे उपहास में पूछा, 'अस्थाना साहब! कमाल कर दिया आपने। ज़िले के प्रधान भी बनगए और रामेश्वरीदेवी भी मिल गई को।' तो इन्होंने केवल दाँत भर खिसका दिए और मैंने देखा कि धीरे-धीरे इस तरह दाँत खिसकाने की इन्हें आदत पड़गई। मुझे इनकी मूर्खता से चिढ़ सी होनेलगी।"

"खूब रहीं तुम भी रामेश्वरी!" आगंतुक मुस्कराकर बोला, "तुमसे बेचारे अस्थाना साहब की इतनी विशेपता भी सहन न होसकी। आखिर कोई अन्याय तो नहीं किया था इन्होंने। बिना अन्याय के ही तुमने इन्हें दण्ड देडाला। इन बेचारों की दुनियाँ में तुम इनसे पीछे रहने वाली कहाँ थी?"

रामेश्वरीदेवी को हँसी आगई। वह कहानी को आगे बढ़ातीहुई बोलीं, "दण्ड की बात नहीं थी पेशकारसाहब! बदनामी की बात थी। अपने जीवन में आजतक किसी पुरुष से मैंने अपना सम्बन्ध नहीं बनाया। पुरुष कितना स्वार्थी होता है, यही पढ़ने का प्रयत्न किया है।"

"तुम स्त्री नहीं हो इस मायने में रामेश्वरी!" कड़ककर आगंतुक बोला, "स्त्री का छल हो तुम। तुम्हारे पास स्त्री का दिल नहीं है। स्त्री यह बैठी है गुलाब हमारी बगल में। इसकी ज़बान से तुम एक बार तो कहला दो कि पुरुष स्वार्थी होता है। तुम इससे कहला दो तो मैं तुम्हारा गुलाम बनजाऊँ जीवन भर के लिए।"

आगन्तुक की बात सुनकर रामेश्वरी सहम गईं। वह अपने चेहरे के भाव बदलकर मुस्कराती हुई बोलीं, "यदि मैं आपको पुरुष का धोखा कहूँ तो बात मेरी ही सही होजाएगी। मैं आम आदमी की बातें कररही हूँ पेशकार साहब! किसी विशेष पुरुष को नहीं। आपके अतिरिक्त भी न जाने कितने पुरुष गुलाब बहन के सम्पर्क में आएहोंगे•••?"

"देखो रामेश्वरी! मैं अस्थाना साहब के पक्ष को और अधिक नहीं गिरने दूँगा। तुम कहानी सुनाती चलो। स्त्री और पुरुष की फिलासफी में पड़ने की आवश्यकता नहीं है।"

"फिलासफी की बातें रामेश्वरीदेवी से न करें श्रीमान्! इनकी फिलासफ़ी आप नहीं समझ सकेंगे। आपके आपसी सम्बन्ध चाहे जो भी रहे हों, परन्तु दो वर्ष की हवालात मैंने भी इनकी काटी है। इनकी वह कहानी मैं सोचता हूँ कि मैं ही आप लोगों के सामने प्रस्तुत करूँ।" अस्थाना साहब आगन्तुक की बात से बल पाकर बोले। उन्होंने कहानी प्रारम्भ की। "कांग्रेस का प्रधान बनकर मैं इनकी कोठी के एक फ़्लैट में जाबसा। वहाँ बसने पर मेरे हँसने, मुस्कराने, गुनगुनाने और यहाँ तक कि पढ़ने-लिखने पर भी निगरानी होने लगी। सरकार द्वारा सब कुछ सेंसर होनेलगा। ऐसी हवालात की दशा में यदि कोइ मिलनेवाला किसी भी बहाने से मुझे दाँत खिसकाने का अवसर देता था तो मैं भी दाँत खिसका देता था। आखिर अपने स्वास्थ्य के लिए हँसना और मुस्कराना भी तो आवश्यक था। उस हवालात में मैंने अपने स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए दो-चार बार दाँत खिसका ही दिए तो बताइए मैंने क्या पाप किया?" गम्भीरता के साथ अस्थानासाहब बोले।

आगन्तुक बोला, "आपने कोई भूल नहीं की। यह रामेश्वरी की पुरानी बान है। अपनी बात के सामने यह दूसरे की बात को मान ही नहीं सकती। परन्तु यह अच्छा ही हुआ कि रामेश्वरी देवी ने आपको हवालात से जेल नहीं भेजा। वरना इनकी आदत तो हवालात के पश्चात् जेल भेज देने की है। आपसे तो इन्होंने अपनी कोठी की फ्लैट खाली करके कांग्रेस के प्रधान-पद से स्तीफ़ा देने के लिए ही कहा होगा।" आगन्तुक बोला।

"इससे अधिक मैंने कुछ नहीं किया पेशकार साहब! मेरी तीन साल में यह एक बालू के ढेर की तरह आकर जमगए थे। कोई हरियाली नहीं थी इनके

जीवन में, कोई विशेष ज्ञान नहीं था इनके पास, शिक्षा भी बहुत कम थी। चन्द पटाखे फोड़ देने और जेल काटलेने के कारण कुछ परिचय इनका बन गया था। उसी के रौब की गठरी और इनका एक टूटा फाइल इन्हें सौंपकर मैंने इनसे अपनी भूलों की क्षमा-याचना करली। यह कोठी से चलेगए तो मैंने अनुभव किया कि अपने सिर पर मैंने व्यर्थ जो बोझ रखलिया था, वह उतर गया।"

"और मुझे पता था कि रामेश्वरी देव के सिर के बोझ श्री अस्थाना साहब कल दो वर्ष बाद मेरे यहाँ पधारने वाले हैं," मैंने कहा।

उसी समय सावित्री ने आकर सबको नमस्कार करतेहुए कहा, "भोजन तय्यार है! गरमा गर्म खाना हैं तो खाने की पंगत लगाइए। कढ़ाई अंगीठी पर रखदी गई हैं और थालियाँ परसी जाचुकी हैं।"

मैंने अपनी देवी जी के अन्दाज की प्रशंसा करके बोला, "देखा आप लोगों ने, इसे कहते है काम का अन्दाज। इधर आपकी कहानी समाप्त हुई और उधर भोजन तय्यार है।"

भोजन के पश्चात् आगन्तुक बोला, "देवबन्द वाले हमारे मित्र करीमखाँ कल मेंरठ आनेवाले हैं। हमने उन्हें तार देकर बुलाया हैं। हमने सोचा कि अपनी तीस रुपए महावार की जिन्दगी पर प्रकाश डालने से पूर्व जीवन में आनेवाले व्यक्तियों की कहानी आप को सुनवादूँ तो ठीक ही रहेगा। मैं दिल से चाहता हूँ कि आपका उपन्यास अधूरा न रहे। इसका कोई भाग अपूर्ण न रहजाए।

"तब तो कासिम मिरज़ा और हामिद अली साहब को भी आपको बुलाना होगा।" मैंने कहा।

"यह बात आपकी गलत हैं शर्मा जी! कासिम मिरज़ा और हामिदअली साहब मेरे अफ़सर थे। उन्हें बुलाना, उनका अपमात करना हैं। करीमखाँ को मैं बुलासकता था, सो मैंने आपसे बिना पूछे ही बुलालिया। उन दोनों से भी यदि आप उनकी अधूरी कहानी सुनाना चाहते हैं तो आपको उनके पास चलना होगा।"

मैंने आगन्तुक के प्रस्ताव को स्वीकार करलिया। दूसरे दिन की बैठक वहीं पर तीन बजे दोपहर पश्चात् होनी निश्चितहुई।

विदा होने के पूर्व कुछ देर रामेश्वरी देवी गुलाब और हमारी देवी जी की भी आपसी बातचीत हुई, जिनकी कहानी मुझे रात्रि को सोते समय देवी जी ने सुनाई।

आगन्तुक वास्तव में मेरे उपन्यास का नायक था, अब इसमें मुझे कोई ही संदेह न रहा। रामेश्वरी देवी के पहचानलेने के पश्चात् गलतफहमी का कोई कारण नहीं रह गया था।

: ३४ :

दूसरे दिन दीवान रामदयाल के साथ एक और वृद्ध व्यक्ति आया। वह उसका मुझसे परिचय करातेहुए बोले, "शर्मा जी यह हैं हमारे मित्र करीम खाँ, जिनका हमने आपसे कई बार जिक्र किया हैं। ऐसा मित्र भी इस दुनियाँ में मिलना कठिन है। मित्र के संकेत पर आग में कूदने वाला व्यक्ति हैं यह।"

"विराजिए।" मैंने कहा। "आपकी तो कासिम मिरजा ने भी बहुत प्रशंसा की थी मुझसे।" मैंने कहा।

"शर्मा जी की भी तो तारीफ़ कीजिए।" करीमखाँ अदब के साथ बोला।

"आपकी तारीफ यही है करीमखाँ! कि यह मेरा, तुम्हारा, हातमसिंह, कासिम मिरजा, हामिदअली, सेठ दामोदर प्रसाद, रामप्यारी, और गुलाब जीवन के बीच में आने वाले सभी लोगों की कहानी बहुत दिलचस्प ढंग से लिख रहे हैं।" पेशकार रामदयाल बोले।

"यानी हम लोगों की कहानी भी लिखने की चीज है।" आश्चर्य में पड़ कर करीमखाँ बोला। "परन्तु इन्हें हमारी कहानी मालूम कैसे हुई। आपकी इनसे भेंट कैसे हुई?"

"बड़ी तक़लीफ उठानी पड़ी इसके लिए महाशय!" इतना कहकर पेशकार रामदयाल ने अपने थैले की पुस्तक निकालकर करीमखाँ को दिखाई। वह बोले, "देखिए हु-ब-हू मेरा चित्र छपा है न इनके ऊपर। इसी

मैंने यह किताब खरीदी और पढ़ी। कहानी भी हू-ब-हू मेरा ही निकली। इसे पढ़कर मैं मजबूर होगया लिखनेवाले का पता खोजने के लिए।

आखिर खोज ही लिया एक दिन मैंने आपको। कठिनाई तो बहुत हुई परन्तु सफलता मिलने पर मैं वह सब भूलगया।

करीमखाँ 'दीवान रामदयाल' उपन्यास को उलट-पलट कर देखरहा था। वह हिन्दी पढ़ना नहीं जानता था परन्तु जब उसे यह मालूम हुआ कि उस पुस्तक में उसकी कहानी थी तो उसे वह पुस्तक दिल के टुकड़े जैसी लगी। करीमखाँ ने पुस्तक को उतनी ही इज्जत के साथ हाथों में सँभाला जितनी इज्जत से वह कुरानशरीफ़ को उठाता था। उसमें उसके अपने इन्सान की कहानी थी, उसके अपने जीवन की सचाई थी।

"आपने हम लोगों की कहानी लिखकर हम पर बड़ा एहसान किया है।" वह चित्र देखकर बोला। "क्या जवानी का चित्र हैं यार पेशकार साहब! वही आँखों का तनाव, वही गर्दन का बाँकापन। यह चित्र कहाँ से हाथ लगा आपके शर्मा जी?"

"यह चित्र नहीं है। अपनी कल्पना से स्केच बनवाया था मैंने चित्रकार से। इतना साफ बनाया है कि हर देखनेवाले को भ्रम में डालदेता है।" मैं करीमखाँ से बोला और फिर पूछा, "तो आजकल आपका निवासस्थान देवबन्द में है?"

"जी शर्मा जी! मुझे आजकल लोगबाग करीमखाँ देवबन्दी कहकर पुकारते हैं। देवबन्द में ही मैंने अपना एक मामूली-सा मकान बना लिया है। बना क्या लिया है, यों कहिए कि बनवादिया है पेशकार साहब ने। वरना मेरी क्या औकात थी कि शहर में मकान बनवालेता। पेशकार साहब का साया सिर पर न होता तो आज से तीस वर्ष पहले मेरा गाँव का झोपड़ा भी साहूकार ने नीलाम करालिया होता।" करीमखाँ बोला।

"आपने नौकरी कब छोड़ी?" मैंने पूछा।

"छोड़ी नहीं, छोड़नी पड़ी, शर्मा जी! नौकरी-नौकरी नहीं रहीं आजकल। कुत्तेवसी रहगई हैं। नौकरी थी पेशकार साहब के समय में, जब किसी में हमारी बात को काटने की ताकत नहीं थी। जो बात हमारी जबान से निकलजाती थी, वह पत्थर की लकीर बनजाती थी। वह एस० पी०

ओर कलक्टर साहब का हुक्म बनजाती था।" पुरानी बातों की याद करके करीमखाँ ने कहा। वह पेशकार रामदयाल की ओर मुँह करके बोला, "क्या आपने शर्माजी को उन शानदार जशनों की कहानी नहीं सुनाई जिनमें शराब पानी की तरह बहती थी। पेशकार साहब की बदौलत जन्नत का मजा इसी जिंदगी में लेलिया शर्मा जी!"

"वे किस्से शर्मा जी को सब मालूम हैं करीमखां! कासिममिरजा ने बड़े शौक से पूरा किस्सा इन्हें सुनाया है और दाददेता हूँ शर्माजी आपकी स्मृति की कि साधारण-से-साधारण बात को भी आपने नहीं भुलाया।" पेशकार रामदयाल बोले।

उसी समय श्री जनार्दन अस्थाना भी आगए। पेशकार रामदयाल ने मुस्करातेहुए उनका स्वागत किया। उनके कुर्सी पर बैठनेपर वह बोले, "बात तो कुछ व्यर्थ सी है, परन्तु क्या मैं पूछसकता हूँ कि आप आजकल क्या काम कररहे हैं अस्थाना साहब?"

"हम लोग आजाद परिन्दे हैं पेशकारसाहब! हमारा कोई काम नहीं होता और सभी हमारे काम हैं। किसी चीज से, किसी काम से हमें लगाव नहीं। कोई विशेष काम भी नहीं है अपना। कोई काम नहीं था तो हमने सोचा कि लेखक ही बनजाएँ।" अस्थानासाहब बोले।

"यह आजादी आपको रामेश्वरीदेवी की हवालात से बाहर आकर ही प्राप्तहुई होगी। उस बीच में तो आप उसके पींजड़े के पंछी ही रहेहोंगे।" आगन्तुक ने पूछा।

अस्थाना साहब ने ध्यान से उनके मुखपर देखा और फिर उनके पास बैठे करीमखाँ की ओर उनकी दृष्टिगई। करीमखाँ का दाहिना पैर कटाहुआ था। उसपर लकड़ी का पैर चढ़ा था। मेरी दृष्टि अचानक उस पैर पर गई। अस्थाना साहब को आगन्तुक की बात का उत्तर देने में देर होती देखकर मैंने करीमखाँ से पूछा, "आपका यह पैर क्या बचपन से ही खराब था?"

"बिल्कुल नहीं! मेरा यह पैर ऐसा ही था जैसा दूसरा पैर है। मेरे दोनों पैर कमाल के थे। मैंने घण्टों-घण्टों मालिश करके कच्ची घानी [illegible] का तेल पिलाया था इन्हें। इन टांगों की कल्लू और [illegible] मालिश कियाकरते थे।

एक दिन मैं संध्या को चौकी पर बैठा था कि अचानक एक हाथ का बना बम मेरे पास आकर फटा और उसने मेरी इस टाँग को घायल करदिया। उसीसे यह टाँग कटादेनीपड़ी। जीवन की चाल-ढाल ही बदलगई शर्माजी ! इस टाँग के कटजाने से। सुबह को दो मील की दौड़ लगाकर दम लेता था, वह जाती रही। दो सौ बैठकें निकालता था अखाड़े में जाकर, वह भी छूटगया। कमाल की कबड्डी खेलता था, उससे भी महरूम होगया; थोड़ा बहुत पहलवानी का शौक था, वह भी जातारहा।" भारी मन से करीमखाँ ने बताया।

"और यह सब आफ़त करीमखाँ पर मेरे कारण आई शर्माजी ! सन् तीस की बात है यह। नई जवानी के जोश में काँग्रेसियों की बहुत पिटाई कराई थी मैंने। वे खार खाए बैठे थे मुझपर। मुझे समझकर बेचारे करीमखाँ पर किसी ने वह पटाखा फेंकदिया।" पेशकार रामदयाल भारी मन से बोले।

अस्थाना साहब करीमखाँ की सूरत देखरहे थे। पुरानी स्मृति को मस्तिष्क में ताज़ा कररहे थे। करीमखाँ भी अस्थाना साहब के चेहरे पर दृष्टि गढ़ाए थे। कोई रहस्य था एक दूसरे के चेहरे पर, परन्तु दोनों मौन थे, समझ नहीं थे। नजरें भी मिलीं दोनों की, परन्तु टकराकर वापिस होगईं। दोनों मौन होगए थोड़ी देर के लिए। उस मौन होजाने की दशा को पेशकार रामदयाल ने बड़े ध्यान से देखा। देख मैं भी कम ध्यान से नहीं रहा था।

उसी समय एक काला मोटा ताजा आदमी ज़ीने के सामने आकर खड़ा होगया। अजीब भयानक शक्ल थी उसकी। काली धारियों का मामूली तेहमद था, मैला-कुचैला, मलमल का कुरता था, सर साफ़ था घुटाहुआ और गले में ताँबे का तावीज बँधा था।

दीवान रामदयाल उसे देखते ही बोले, "लीले पहलवान ! आगए तुम आओ ऊपर ?"

"पेशकार साहब याद फ़रमाते और खादिम न आता, यह गुस्ताखी कभी लीले पहलवान नहीं करसकता। आपकी जूतियों के तुफ़ैल से जो ऐश लीले पहलवान मेरठ में करचुका है वह बड़े-बड़े रईस भी नहीं करसकते।" पुराना उभार कलेजे में लाकर लीले पहलवान की जबान से निकला।

मैंने ध्यान से उसकी ओर देखा, हू-ब-हू वही था। बिल्कुल वैसा ही जैसा मैंने उपन्यास में उसका चित्र खींचा था।

पेशकार रामदयाल बोले, "यही है लीले पहलवान, जिसके नाम से मेरठ शहर का बच्चा-बच्चा काँपता था। तीस-तीस अखाड़े चलवाए हैं इसके हमने।"

हमारे सामने ही लीले पहलवान ने आगे बढ़कर पेशकार साहब के पैरों को हाथ लगातेहुए कहा, "इन्हीं जूतियों के तुफ़ैल से लीले पहलवान लीले पहलवान बना है सरकार। आपका नमक खाया है मैंने !"

पेशकार साहब ने खड़े होकर उसे अपनी छाती से लगाया और स्टूल बैठने को दिया।

'लीले पहलवान की खोज में मैं कल संध्या को स्वयँ गया था केसरगंज में आबू के मकबरे पर। यह वहीं पर शान से बैठा ताश के पत्ते पटकरहा था। चौकड़ी जमी थी यारों की।" पेशकार साहब बोले।

"तो मस्ती में अभी भी कोई कमी नहीं है।" मैं बीच में ही पूछ बैठा।

"कमी आती है नमकहरामों की मस्ती में जनाब ! जिसका नमक खाया है, उसे लजाया नहीं; जान दी है उसके लिए। खुदा समझा है उसको आज तक।" एक अन्दाज के साथ लीले पहलवान बोला। "नमकहलाल आदमी की ऐश खुदा कभी नहीं छीनता।"

पेशकार रामदयाल ने लीले पहलवान के सिर पर हाथ फेरते हुएकहा, "कैसी हालत चलरही है आजकल लीले ? अखाड़े की क्या दशा है ?"

"हालत क्या है पेशकार साहब ! अखाड़े-वखाड़े सब बन्द होगए। एक यार के कहने से एक औरत डालली थी घर में, उसी जमाने में।"

"पेशकार साहब को हवा भी नहीं लगनेदी, पहलवान ! दो छुआरे भी हमारे भाग्य में नहीं थे तुम्हारे निकाह के नाम के।" पेशकार रामदयाल ने मुस्कराकर कहा।

"निकाह की तो आज तक नौबत नहीं आई, पेशकारसाहब ! पर इतनी वफ़ादार औरत निकली कि आपसे क्या बयान करूँ ? वह जमाना था जब आपकी मेहरबानी से रुपया पानी की तरह बरसता था। जिस किसी पैसेवाले पर मेरी नज़र पड़जाती थी वही मेरी भेंट-पूजा करता था। उसे मालूम था कि मेरे सिर पर पेशकार साहब का साया है।

बस उसी आमदनी के दौरान में उस औरत ने बीस-पच्चीस हज़ार रुपया जमा करलिया और एक दिन मेरे हाथ में देकर बोली "केसरगंज में ही टाउन

स्कूल के बराबर वाला मकान बिकरहा है खरीदलीजिए।" मैं ताज्जुब में रह-गया उसकी बात सुनकर। कोई जायदाद खरीदकर मुझे उसमें रहनाचाहिए, यह बात उस औरत ने सुझाई।

मैंने वह मकान चार हज़ार में खरीदलिया और उसके ऊपर पन्द्रह हज़ार रुपया और लगाकर आलीशान इमारत खड़ी करदी। वह वही इमारत है जिसमें बैठकर कल आपने चाय पी थी। वह नेकबख्त अकेली ही उसमें रहती है। नीचे का हिस्सा दोसौ रुपया महावार किराया देता है। ये दो सौ रुपए हम दोनों के खाने-पीने को काफ़ी हैं। एक लड़का भी देदिया है खुदा ने। देखिए क्या लाजवाब पट्ठा बनाता हूँ उसे।"

थोड़े में अपनी सारी कहानी लीले पहलवान ने सुनाडाली।

"औरत तो आपको अच्छी मिलगई, जिसने घर बसादिया। वरना आबू के मक़बरे में तेल की शीशियाँ लेकर मालिश करने को निकलनापड़ता।" मैंने गम्भीरतापूर्वक कहा।

मेरे चेहरे की ओर देखकर लीले पहलवान बोला, "आपको मैंने पहले कभी पेशकार साहब के साथ नहीं देखा, जनाब!"

"न देखा होगा!" मैंने उसी गम्भीरता से कहा, "परन्तु मैं तो आपको पहचानता हूँ।"

"यह हमारे नए साथी हैं लीले पहलवान! हमारी और तुम्हारी कहानी लिखरहे हैं।" दीवान रामदयाल बोले।

"तो यों कहिए कि आप कहानी लिखते हैं। हम लोगों की कहानी लिखकर क्या लेंगे आप? राजे महाराजों और परियों के किस्से लिखिए तो कुछ हासिल भी होगा। अपनी मुटल्लो दिलरुबा के किस्से में मुझे मजा आसकता है लेकिन आम नाविल पढ़नेवाले के दिल में गुदगुदी पैदा नहीं होगी।" लीले पहलवान बोला।

"तो आपको भी शौक है नाविल पढ़ने का?" मैंने पूछा।

"मुझे नहीं है सरकार, आपके बच्चों को बड़ा शौक है। क़िसी दिन आप तशरीफ़ लाएँगे तो मैं आलमारी खोलकर उसके नाविलों का खजाना दिखाऊँगा आपको। जासूसी और तिलस्मी नाविलों का ढेर लगायाहुआ है उसने और पढ़ता भी खूब है।

लेकिन आपने हम जैसे आदमियों को लेकर ही नाविल लिखमारा, यह कमाल किया आपने ।" लीले पहलवान बोला ।

करीमखाँ की दृष्टि बराबर अस्थाना साहब के चेहरे को पढ़ने में लगी थी । समझ में कुछ न आतेहुए भी, समझनाचाहती थी कुछ ।

उसी समय पेशकार रामदयाल ने गम्भीर मुख-मुद्रा बनाकर अस्थानासाहब की ओर देखा और गम्भीरता से कहा, "देख लीजिए अस्थाना साहब ! मैं तना कष्ट उठारहा हूँ शर्मा जी का उपन्यास पूरा कराने के लिए । करीमखाँ को तार देकर देवबन्द से बुलाया । लीले पहलवान को स्वयं खोजकर लाया । मेरे विचार से अब इनकी रायल्टी पर मेरा पूरा अधिकार होगया है । हाँ लिखाई के पैसे शर्माजी को देने में मुझे कोई संकोच न होगा ।"

अस्थाना साहब आँखों से चश्मा उतारकर रूमाल से पोंछतेहुए बोले, "शर्माजी मुझसे वायदा करचुके हैं । अपनी बात से लौटजाना इनके लिए असम्भव है ।"

करीमखाँ और लीले पहलवान की समझ में रायल्टी की बात कुछ नहीं आई । उन्होंने उसे अधिक समझने का प्रयास भी नहीं किया । करीमखाँ अपनी अचकन की जेब से घड़ी निकालकर देखतेहुए बोला, "गजब होगया पेशकार साहब ! बातों-ही-बातों में घण्टों निकलगए । बीबी डाक्टर चौधरी की कोठी पर बैठी इन्तजार कररही होगी ।"

"तो क्या वह भी तशरीफ़ लाई हैं । आप सीधे यहीं क्यों नहीं लेआए उन्हें ?" मैंने कहा ।

"डाक्टर चौधरी का इलाज चलरहा है । अभी चार-पाँच दिन पहले भी आया था मैं उन्हें लेकर । कल पेशकार साहब का तार पहुँचा और चलने की तय्यारी की तो वह भी तय्यार होगई ......।"

"और उसकी फ़रमाइश को न मानना करीमखाँ के वश की बात नहीं है ।" मुस्कराकर पेशकार रामदयाल बोले ।

"उस गरीब ने भी कभी आजतक करीमखाँ की बात को नहीं टाला पेशकार साहब ! जिस दिन से इस घर में आई है, मानो दुनियाँ से उसका सम्बन्ध ही समाप्त होगया ।" करीमखाँ बोला ।

"औरत तुम्हारी वास्तव में प्रशंसा के योग्य है । शर्माजी क्या प्रशंसा करूँ

उस नेकवख्त औरत की तुमसे ? कितना ध्यान रखती थी अपने पति के मित्र का ?रात के दस-दस बजे अँगीठी फूँककर मेरे लिए चाय बनाना उसी का काम था। आलस्य तो नाम को नहीं था उसके बदन में। जो औरत अपने मित्र का इतना ध्यान रखसकती है, वह अपने पति का कितना ध्यान रखती होगी ? जरा अनुमान तो लगाइए।" पेशकार रामदयाल बोले।

"यही तो भारत की नारी का चरित्र है पेशकार साहब !" मैंने कहा और फिर करीमखाँ को विदा करतेहुए दावत दी कि किसी दिन अपनी बीबी को हमारी देवी जी से भेंट कराने के लिए अवश्य लाना। करीमखाँ ने वायदा किया कि वह आगामी सप्ताह में जब डाक्टर चौधरी के यहाँ अपनी बीबी को दिखाने लाएँगे तो मेरे यहाँ अवश्य पधारेंगे। इसके पश्चात् मैंने लीले पहलवान की ओर अपना रुख किया और मुस्कराकर पूछा, "तो अखाड़ा अब एक भी नहीं चलता क्या आपका ?"

"अखाड़ा चलाना मजाक नहीं है शर्माजी! बड़ी जीदारी का काम है। कलेजा चाहिए अखाड़ा चलाने के लिए। वह तो पेशकार साहब का ही बूता था कि तीस-तीस अखाडे चलते थे और शान के साथ चलते थे। एक-से-एक जीदार पट्ठा पलता था। वह सब तो अब ख्वाब बनगया।" हँसकर लीले पहलवान बोला।

"तो पुरानी रौनक उजड़गई, यों कहिए ना।" मैंने कहा।

"बिल्कुल उजड़गई शर्माजी ! रौनक हमारी ही क्या शहर-के-शहर की उजड़गई। अखाड़े बन्द पड़े हैं। बेली बाजार के उन कोठों को देखकर रोना आता है जहाँ बेले और चमेली के गजरे लिए माली बैठेरहते थे। एक-से-एक दिलरुबा थी मेरठ के बाजार में। खुदा उठाले इन बम्बई के फिल्मवालों को जो एक-एक करके मेरठ के गुलशन की सब कलियों को तोड़कर लेगए।" भारी मन से लीले पहलवान ने कहा।

मैंने उसकी शक्ल को ध्यान से देखा। उसके स्थूल शरीर को देखा। चमकदार काले रंग को देखा। उसकी दबी नाक और पेट निकले नाटे कद को देखा। घुटी चाँद को देखा और फिर अपनी दृष्टि को जरा और पैनी करके उसके दिल का एक्सरे लिया तो कमाल होगया बस। उसके दिल में खूबसूरत चीज के लिए कितनी बड़ी जगह थी कि क्या कहूँ बस ?

मुझे कहीं मेरठ से वाहर का रहनेवाला समझकर लीले पहलवान फिर बोला, "शर्मा जी ! आपने पेशकार साहब की पेशकारी का ज़माना नहीं देखा। जो वाग़ीचा आपने लगाया था उसका सही अनुमान लगाना मुश्किल है। हमारे पहलवानी अखाड़े उन वाग़ीचों की हिफ़ाजत के लिए ही तय्यार किएगए थे।"

"कभी गुलाव से भी अव आपकी भेंट होती है या नहीं।" मैं वीच में ही वोलउठा।

गुलाव का नाम सुनते ही लीले पहलवान ने एक लम्बा साँस खींचा और गम्भीरता के साथ बोला, "गुलाव के यहाँ अव मैं नहीं जाता, शर्मा जी ! एक अर्सा हुआ वहाँ गए। उसने भी अपना कारोवार वन्द करदिया है।"

"ऐसा क्यों किया उसने ?" मैंने पूछा।

"क्या करती वेचारी ? पेशकार साहव के जिला छोड़कर जाने के वाद कोई मेहरवान अफ़सर नहीं आया। वाज़ार की रौनक वढ़ाने की ओर किसी का खयाल नहीं रहा।

नई सरकार ने ज़मीदारी खत्म करके तो मानो विजली ही गिरादी उनके कारोवार पर। पुराने ज़मीदारों की जमीनें उनके हाथों से निकलगई। उनकी आमदनी का ज़रिया जातारहा। पेट पालने मुश्किल होगए शर्मा जी ! फिर इश्क लड़ाने यहाँ कौन आता ?" लीले पहलवान वोला।

"वात विल्कुल सही है शर्मा जी ! मेरे जाते ही मेरठ के वैली वाजार का नक्शा ही वदलगया। सारा चमन उजड़गया। कम्वख्त वम्वई वाले यहाँ की सब खूवसूरत चिड़ियों को लेउड़े। वूढ़ी डोकरियाँ कोठों पर वैठीरहगईं। उनसे भला क्या कारोवार चलता ?" पेशकार रामदयाल वोले।

"मुझे हमदर्दी है आपसे और वैली वाजार की वरवादी से। परन्तु विज्ञान का युग है यह जनाव ! छोटे-छोटे उद्योगों से जनता का काम नहीं चल सकता। वम्वईवालों ने आपकी कलियों को फूल वनाकर सारी दुनियाँ में महका दिया। गुलदस्ते वना दिए उनके।" अस्थाना साहव वोले।

"ये गुलदस्ते चन्दरोज़ा हैं अस्थाना साहव ! पेड़ की डाल से टूटकर कली गुलदस्ते के पानी से कितने दिन हरी रहसकती है ? और फिर जीते-जागते इन्सानी हुस्न की फिलमी तस्वीरों से क्या तुलना ? तुम्हारे विज्ञान की वेजान चीज़ों से मुझे कोई लगाव नहीं। जिस विज्ञान ने वाजार-का-वाजार उजाड़

दिया उस विज्ञानसे मैं घृणा करता हूँ। परन्तु इसका मतलब यह न समझना कि मुझे सिनेमा का शौक नहीं है।" मुस्कराकर पेशकार रामदयाल बोले।

समय काफ़ी होगया था। मुझे अपनी डाक लिखनी थी। मेरी दृष्टि घड़ी पर गई तो पेशकार रामदयाल ने भाँपलिया। मेरे कुछ कहने से पूर्व ही वह बोले, "अच्छा शर्माजी ! अब आज्ञा चाहता हूँ आपसे। कल अलीगढ़ चलने के विषय में आपका क्या विचार है ?"

मैंने कहा, "उनके विषय में विचार की कोई बात ही नहीं है। वह तो निश्चय होहीचुका है। रविवार की छुट्टी में सुबह सात बजे की गाड़ी से चलकर खुर्जा और वहाँ से अलीगढ़ की गाड़ी पकड़लेंगे।"

"तो ठीक है। तीन दिन के लिए मैं अपने गाँव होआता हूँ। वहाँ का भी बड़ा बखेड़ा है शर्माजी ! छोटे भाई का हाथ वालिद साहब मरते समय मेरे हाथ में देगए थे। उसी को निभाना पड़रहा है।"

"छोटे भाई का संरक्षण करना आपका कर्त्तव्य है।" मैंने कहा।

"बड़ों के ही सब फ़र्ज़ होते हैं शर्माजी ! छोटों का कोई फ़र्ज़ नहीं होता। निकम्मा भाई दिया है मुझे परमात्मा ने, कभी जब मैं यह सोचता हूँ तो सच जानिए रातभर नींद नहीं आती। आज इस बुढ़ापे में भी मेरा मस्तिष्क उसके लिए परेशान रहता है। कम्बख्त कभी अपने पैरों पर भी खड़ा होसकेगा या नहीं, मुझे इसमें शक है। मेरे जरिए से शहर-कोतवाल हातमसिंह हातिमसिंह बने, कासिम मिरज़ा कासिम मिरज़ा बने, करीमखाँ करीमखाँ बना और यह लीले पहलवान भी बेफिक्री की जिन्दगी बितारहा है। परन्तु जिसके लिए मैंने सबसे अधिक किया और जिसके लिए अपनी नौकरी को भी समाप्त करदिया, वह तक किसी योग्य न बनसका।" भारी मन के साथ दीवान रामदयाल बोले।

"इसी को कहते हैं जमाने की चाल।" मैंने कहा।

"तुम्हारा कहना सच है शर्माजी ! जमाने की गर्दिश इन्सान को क्या-से-क्या बनादेती है ?" कहते-कहते वह रुकगए और चलते समय बोले, "तो फिर रविवार की सुबह का चलना निश्चित रहा।"

"बिल्कुल निश्चित," मैंने कहा।

"अस्थाना साहब भी चलेंगे क्या ?" उन्होंने पूछा।

"अवश्य चलूँगा।" अस्थाना साहब बोले।

"आपसे तो अब भेंट होतीहीरहेगी।" मैं लीले पहलवान से बोला।

"ज़रूर-ज़रूर शर्माजी! आप अगर ऐसे ही हम लोगों के क़िस्से का नाविल लिखते हैं तो मैं आपको बहुत से किस्से सुनाऊँगा, एक-से-एक लाजवाब।"

: ३५ :

शनिवार की संध्या को पाँच बजकर पेंतालीस मिनट पर अस्थाना साहब तशरीफ़ लाए। हुलिया कुछ खराबसा था उनका। बाल बिखरेहुए थे और चश्मे का फ्रेम टूटाहुआ था।

"यह कैसी मजनू-जैसी सूरत बनाहुई है आपने अपनी?" मैंने गम्भीरता-पूर्वक पूछा।

"उपहास करने का समय नहीं है शर्माजी!" अस्थाना साहब बोले। "बदमाशी की भी आखिर कोई हद होती है।"

"मैंने तो ऐसा नहीं सुना कि बदमाशी की भी कोई हद होती है।" मैं उतनी ही गम्भीरता के साथ बोला।

"तो तुम्हारा मतलब है कि बदमाशी को बढ़नेदेनाचाहिए?" क्रोधित होकर झुँझलातेहुए अस्थाना साहब बोले।

"यह भी मैंने नहीं कहा।" मैं मुस्कराकर बोला और मेरे मुस्कराने से अस्थाना साहब का कलेजा और भी जलउठा। वह तुरन्त घर से बाहर हो-जाते यदि द्वार पर अपनी लम्बी मूँछों को मरोड़ी देतेहुए पेशकार रामदयाल न आगए होते। उनके साथ करीमखाँ की सूरत देखकर अस्थाना साहब का मुँह बिचकगया।

पेशकार रामदयाल अस्थाना साहब से बोले, "किधर लपके ... महाशय! हम आए और आप खिसकनेलगे।"

करीमखाँ की दृष्टि आज फिर अस्थाना साहब ... साहब ने करीमखाँ की ओर देखा। करीमखाँ की ...

और तुरन्त उनके बदन में फ़रहरी सी आगई।

"एक आवश्यक कार्य में फँसा हूँ पेशकार साहब! आपसे कल स्टेशन पर भेंट होगी।" कहकर अस्थाना साहब बाहर निकलगए।

मेरी समझ में कुछ भी न आया, आखिर वह क्यों आए और क्यों चले गए। पेशकार रामदयाल ने पूछा, "ऐसी क्या परेशानी थी आपके मित्र को जो दो-चार मिनट भी न रुकसके?"

"मैं स्वयं नहीं समझा," मैंने कहा, "अभी आपके सामने ही तो आए थे। एक मिनट भी नहीं बैठे।"

पेशकार रामदयाल ने उधर कोई विशेष ध्यान न देकर कहा, "तो कल सुबह अलीगढ़ चलने की बात तो पक्की है ना!"

"एकदम पक्की," मैंने कहा, "मैं आपकी प्रतीक्षा में ही था। गाँव से कब आनाहुआ आपका?"

"स्टेशन से सीधा इधर ही आरहा हूँ। मैंने सोचा, पहले आपको सूचना दे-और तब गुलाब के यहाँ जाऊँ।"

"बड़ा कष्ट किया आपने। इस समय क्या सेवा कीजाए आपकी?" मैंने पूछा।

"मेरी सेवा आप क्या करेंगे शर्माजी? मेरी सेवा करनेवाली केवल एक गुलाब है इस दुनियाँ में। वही निभासकती है और निभारही है इस नाकारा इन्सान को। उसी के दमपर पेशकार रामदयाल जीवन की हारीहुई बाजी जीतरहा है। मैं हार को फटकने नहीं देता अपने पासतक।"

"पधारिए।" मैंने कहा।

"इस समय नहीं ठहरसकता। गुलाब प्रतीक्षा में होगी। रेल की सवारियाँ घण्टाघर पर उतरकर जब चौरस्ते की ओर जाएँगी और उनमें उसे मेरी सूरत दिखाई नहीं देगी तो जानते हो शर्माजी! गुलाब के दिल की क्या दशा होगी?" पेशकार रामदयाल बोले।

"खुदा क़सम शर्माजी! दीवानजी सच कहते हैं। गुलाब का चेहरा मुरझाजाएगा और वह नाउम्मीद होकर हवेली के छज्जे पर टहलना बन्द करके दीवानखाने में चलीजाएगी। उसके नाजुक दिल की क्या हालत होगी, इसका अन्दाज़ लगाना आपके लिए मुश्किल है।" करीमखाँ बोला।

"ताँगा सड़क पर खड़ा है। कल सुबह की बात पक्की रही। आप सुबह नाश्ता मेरे साथ करना। वहीं से हमलोग सीधे स्टेशन रवाना होजाएँगे।" दीवान रामदयाल बोले।

मैंने मुस्कराकर उत्तर दिया, "सुबह साढ़े सात बजे मैं श्रीमान् की सेवा में उपस्थित होजाऊँगा।"

दूसरे दिन मैंने पेशकार रामदयाल और करीमखाँ ने अलीगढ़ के लिए प्रस्थान किया। स्टेशन पहुँचे तो देखा अस्थाना साहब वहाँ पहले से ही विराजमान थे। सुनहरी फ्रेम का चश्मा लगाए प्लेटफ़ार्म के बेंच पर बैठे हिन्दुस्तानटाइम्स पढ़रहे थे।

उन्हें देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। करीमखाँ टिकट लेने चलेगए और मैं पेशकार साहब से बोला, "लीजिए, अस्थानासाहब हम लोगों से पहले ही विराजमान हैं। मैंने कहा न था आपसे एक दिन कि इन्हें इस प्रकार के सच्चे किस्से सुनने का इन्हें बड़ा शौक है।"

"आदमी काफ़ी दिलचस्प मालूम देता है।" वह बोले।

"कोरे दिलचस्प ही नहीं हैं यह, बड़े काम के भी हैं। भयंकर क्रांतिकारी रहे हैं अपने जीवन में।" तनिक करारे शब्दों में मैंने कहा। "बेकारी में कभी-कभी मस्तिष्क बहकजाता है और सच बात तो यह है कि रामेश्वरीदेवी ने इन्हें नाकारा करदिया है।"

रामेश्वरीदेवी का नाम मेरे मुँह से निकलते ही पेशकार रामदयाल की त्योरी चढ़गई। उनका श्वाँस तीव्र गति से चलनेलगा और थोड़ी देर तक एक शब्द भी उनकी ज़बान से न निकला।

मैंने उनके नथनों को फूलते और पिचकते देखा। आँखों की त्योरी को चढ़ते और उतरते देखा, सीने को उभरते और दबते देखा। उनके बदन में एक फरहरी सी आई और उन्होंने सीधा हाथ अपने माथे पर रखकर उसे धीरे दबाया। फिर तनिक सँभलकर बोले, "शर्माजी! रामेश्वरीदेवी का मैं आज दिल से आदर करता हूँ, देवी मानता हूँ उसे। एक दिन मैंने एक खिलौना समझकर उसे चन्द बदमाशों के हाथों से छीना था। फिर फूल समझकर गुलदस्ते में सजाया। प्यार भी किया और रस भी लेना चाहा। परन्तु कितनी नेक औरत निकली, मैं इसका बयान नहीं करसकता।

मेरे जैसे पत्थर-दिल इन्सान को जो औरत तड़पासकती है वह अस्थाना जैसे भावुक व्यक्ति की क्या दशा करदेगी, इसका मुझसे सही अनुमान अन्य कोई नहीं लगासकता।"

"इसका मतलब यह हुआ कि आप दोनों ही रामेश्वरीदेवी से चोट खा-चुके हैं।" मैंने मुस्कराकर पूछा और गम्भीर दृष्टि से पेशकार रामदयाल के चेहरे पर देखा।

"इसमें कोई संदेह नहीं, परन्तु फिर भी न जाने क्यों रामेश्वरीदेवी के अहित की बात आजतक कभी मेरे मस्तिष्क में नहीं आई; ज़बान पर भले ही आई हो कभी, कार्य रूप में परिणित नहीं हुई।

"यह आपका बड़प्पन है और इस बड़प्पन की अस्थाना साहब में भी कमी नहीं है। अन्तर केवल इतना ही है कि वह अहित कर नहीं सकते और आप करसकते थे और नहीं किया।"

पेशकार रामदयाल मेरी बात सुनकर मुस्करातेहुए बोले, "बात के लच्छे ...त को छिपाना आप खूब जानते हैं शर्माजी !"

तभी करीमखाँ टिकट लेकर आगए और हम तीनों स्टेशन के प्लेटफार्म की ओर चलपड़े। रामेश्वरीदेवी की बातें बीच में ही रुकगईं। प्लेटफार्म पर अस्थाना साहब अपने समाचार पत्र में लिप्त थे। पास पहुँचकर मैंने कहा, "अस्थाना साहब नमस्कार !"

"आगए आप लोग ! मैं आपकी ही प्रतीक्षा में बैठा था। आप लोगों के रिक्त स्थान की पूर्ति करने के लिए मैंने यह अखबार खरीदलिया था। मैंने सोचा कि जितनी देर तक आपकी बातें सुनने को न मिलें, उतनी देर मैं आजके पत्र का अध्ययन करलूँ। कैसी कूद-फाँद मची है शर्माजी जमाने में ? परन्तु अपना पण्डित भी खूब है। अमरीका और रूस, दोनों की टाट पर हाथ रखकर टिटकारी देकताहुआ अपने देश के छकड़े को घसीटे लिए जारहा है। विदेश-नीति में कमाल कररहा है पण्डित।"

"कमाल कररहा है, इसमें तो कोई संदेह ही नहीं।" मैंने कहा, "पण्डित जी की ईमानदारी में शक नहीं किया जासकता परन्तु खतरा यह है कि अमरीका और रूस दोनों ही जबरदस्त बैल हैं। कहीं इनकी दौड़ में पण्डितजी का छकड़ा टूटकर पीछे न रहजाए और पण्डितजी इन बैलों के गले में लटके

हुए दिखाईदें ।"

हम लोग चारों रेल के डिब्बे में जाबैठे। गाड़ी ठीक समय पर चलपड़ी। रास्ते भर कासिम मिरजा की प्रशंसा में पेशकार रामदयाल अपनी कहानी कहतेगए। गम्भीरतापूर्वक उन्होंने कहा, "सोना आदमी है, बादशाह का दिल है उसका। पैसे को पानी की तरह बहानाजानता है। लूटना और लुटाना दोनों में प्रवीण है। हाथ का सच्चा और हिसाब का पक्का आदमी है।"

"तभी तो आपकी और उनकी पटगई। आय आवश्यकता से अधिक थी, इसलिए कभी झगड़े की नौबत नहीं आई! आय गिरजाती तो तब देखते आप लोग अपना-अपना बड़प्पन। हामिदअली साहब के आने पर कुछ दिन के लिए आप दोनों की क्या दशा होगई थी, याद है ना?"

"याद है शर्मा जी! बाजार भर के ऋणी होगए थे हम दोनों। कोत-वाली और कचहरी से बाहर निकलते लज्जा आती थी। वह तो रौब अपना इतना था कि दूकानदार साहस नहीं करसकते थे हमारे सामने जबान हिलाने का।" पेशकार रामदयाल सच बात को स्वीकार करतेहुए बोले।

मैंने प्रसन्न होकर कहा, "आपके जीवन में तिरछापन कतन नहीं है हेर-फेर नहीं हैं और वैसे देखने पर सारा जीवन ही तिरछा है, उसमें सीधा कुछ भी नहीं।"

"तुम्हारा अनुमान बिल्कुल ठीक है मेरे विषय में। मैं एक बच्चे जैसा सरल हूँ, परन्तु दुनियाँ के समक्ष मैं हव्वा बनकर रहा हूँ और रहरहा हूँ आज भी। हव्वा मैं अपनी रक्षा के लिए बना हूँ, दूसरे पर हमला करने के लिए नहीं।" वह बोले।

अस्थाना साहब हम लोगों की बातों पर ध्यान न देतेहुए बीच में ह बोलउठे, "क्षमा कीजिए पेशकार साहब! एक बात ध्यान मेंआ गई। मैंने सोच उसे आप लोगों के सामने रखदूँ। आप लोगों की बातें बीच में रुकगईं इसका मुझे खेद है, परन्तु ध्यान में आनेवाली बात इतनी मूल्यवान है कि···" वह गम्भीर होकर रुकगए और फिर कहना प्रारम्भ किया, "कल एक ब चक्कर में फँसा था मैं शर्मा जी! जाने कैसे सेठ दामोदरप्रसाद को यह प चलगया कि मैं भी उसी क्षेत्र से एसेम्बली का चुनाव लड़नेजारहा हूँ जिस सेठ दामोदरप्रसाद खड़े हैं।" इतना कहते-कहते उन्हें साँस चढ़गया।

"कमाल करतेहो अस्थाना साहब ! एसेम्बली का चुनाव लड़तेहो और सेठ दामोदरप्रसाद पर तुम अपने खड़ेहोने की सूचना पहुँचजाने से घबराते हो। इसमें घबराने की क्या बात है ? पत्र में डाटकर एक करारा लेख लिखो, जिससे होश उड़जाएँ सेठजी के। पूरा कच्चा चिट्ठा खोलकर रखदो उन का।" मैंने कहा।

अस्थाना साहब का फूलाहुआ साँस तनिक ठीक हुआ। मेरी बात से उन्हें कुछ बल मिला। चश्मा साफ़ करके फिर आँखों पर चढ़ातेहुए बोले, "यही तो मैं कहता हूँ शर्मा जी ! परन्तु इन गुण्डों का क्या इलाज है आपके पास ? कल घण्टाघर के नीचे मेरी गर्दन पकड़ली एक बदमाश ने और चौरस्ते पर खड़ा सिपाही मुस्करातारहा। वह तो मैं था शर्मा जी जो वहाँ से छूटआया। यदि आप जैसा कोई क़लमबाज़ होता तो शायद जीवन में दूसरा लेख लिखने की नौबत ही न आती।

राजनीति इतनी गन्दी होगई है कि इसमें कदम रखतेहुए भी घृणा [illegible]ती है।"

करीमखाँ इन लोगों की बातों में कोई दिलचस्पी नहीं लेरहा था। फर्राटे से दौड़तीहुई रेल की खिड़की के बाहर झाँककर जंगल की फसलों पर दृष्टि फैलाएहुए था। परन्तु पेशकार रामदयाल के कान हम दोनों की बातें सुनने में लगे थे। वह बड़े ध्यान से हमारी बातें सुनरहे थे।

वह गम्भीरतापूर्वक बोले, "तो सेठ दामोदरप्रसाद आजकल अपने विरुद्ध चुनाव लड़नेवालों पर गुण्डे भी छोड़नेलगे हैं।" उन्हें उस समय की बात याद आगई जब वह मेरठ का शासन चलाते थे। लीले पहलवान का अखाड़ा उन्हें याद आगा।

हम दोनों की बातें बीच में रोककर बोले, "भाई शर्मा जी ! यहाँ एक पण्डित रामखिलावन भी तो थे। उनकी क्या दशा है आजकल ?"

'पण्डित रामखिलावन की बात न पूछिए आप। अब उनकी गिनती साधारण लोगों में नहीं, नेताओं में है दीवानजी ? जन-संघ के वह मानेहुए नेता रहचुके हैं और अब आशा की जारही है कि आगामी चुनाव से पूर्व ही वह काँग्रेसी बनजाएंगे। काँग्रेस के प्लेटफार्म पर आना तो प्रारम्भ करदिया है उन्होंने।" मैंने संक्षेप में बताया।

"हमारे समय में यह महाशय भी अखाड़े चलाते थे, हिन्दू महासभा के ...ी थे, चन्दा उगाते थे। क्या आज भी वे अखाड़े चलते हैं?" उन्होंने ...छा।

"उनका विचार है कि अब भारत में हिन्दू और मुसलमानों के झगड़ने की कोई बात नहीं है। इसलिए अखाड़ों की आवश्यकता नहीं रही। वे सब अखाड़े बन्द पड़े हैं" मैंने कहा।

"तो क्या पण्डित रामखिलावन भी इस बार चुनाव में हिस्सा ले रहे हैं?" उन्होंने पूछा।

"यही तो मजेदार बात रहेगी इस बार। एक ही सीट पर सेठ दामोदर प्रसाद, पण्डित रामखिलावन, अस्थाना साहब और रामेश्वरी देवी चुनाव लड़नेवाले हैं। देखिए मैदान किसके हाथ रहता है।" मैंने कहा।

अलीगढ़-स्टेशन आने में और जितना समय लगा इधर-उधर की गप्पों में कटा। कोई विशेष बात नहीं हुई। दोपहर के दो बजे गाड़ी अलीगढ़ पहुँची और हम लोग एक ताँगा किराए पर करके उसपर सवारहोगए।

ताँगेवाले ने पूछा, "कहाँ चलना है बाबूजी?"

मैंने जेब से कार्ड निकालकर उसे सड़क का पता तो बतादिया परन्तु मेरा दिल धुकड़-पुकड़ में था कि कहीं यह कासिम मिरजा पेशकार रामदयाल के कासिम मिरजा से भिन्न हुए तो सब मामला गोल होजाएगा।

कोठी पर पहुँचकर मेरे दिल को संतोष हुआ। दोनों मित्र इस प्रकार प्यार के साथ आपस में मिले कि आनन्द आगया। करीमखाँ ने उसी अदब के साथ झुककर सलाम किया और कासिम मिरजा ने उसी करीने के साथ पूछा, "खुश तो हो करीमखाँ! कहाँ हो आजकल? मजे में तो कटरही है!"

"हुजूर देवबन्द में एक झोंपड़ा बनालिया था आपकी खिदमत में रहकर, वहीं गुजर-बसर कररहा हूँ।"

"आजकल यह साधारण आदमी नहीं हैं कोतवाल साहब! आपके करीम खाँ ने देवबन्द में तिमंजिली इमारत खड़ी करली है। आस-पास के लोगों में लेन-देन का भी सिलसिला कियाहुआ है। उससे इन्हें दो तीन रुपया महावार बचजाता है।" पेशकार साहब बोले।

"और क्या चाहिए हुजूर! खुदा दो रोटियाँ

यही सब कुछ है। आप लोगों की खिदमत से जो कुछ मिला उसी पर सब्र है।" अदब के साथ करीरखाँ बोला।

हम सब कोठी के अन्दर चलेगए। कासिम मिरजा हमें अपने दीवान-खाने में ले गए। दीवानखाने का ढंग लखनऊ का नवाबी ढंग था।

उसे देखकर पेशकार रामदयाल कासिममिरजा से बोले, "नक्शा ही बदल डाला आपने तो! अंग्रेजी ढंग को एकदम छोड़दिया। पोशाक भी बदलडाली। एक बार हामिदअली साहब के आने पर आपको पाजामे सिलानेपड़े थे। अब देखरहा हूँ कि सूट-बूट का नाम भी नहीं रहा।"

"जमाने के साथ इन्सान को बदलजाना चाहिए। वक्त के ताकतों से टकराना बेवकूफी है। अगर जमाने की ऐश लेनी है तो जैसा जमाना हो वैसे ही तुम भी बनजाओ।" मुस्कराकर कासिम मिरजा बोले।

"तो साहब क्षमा कीजिए! बिना परिचय के ही मुझे आपकी बात के बीच में बोलना पड़ा। बात मूल्यवान है इसलिए रुक भी नहीं सकता मैं कहने से। मैं पूछता हूँ, यह आपने क्या कहदिया? जैसा जमाना हो वैसे ही हम भी हो जाएँ। यदि जमाना पाजी हो तो हम भी पाजी होजाएँ।" और फिर मेरी ओर देखकर बोले, "सुना कुछ आपने शर्मा जी!" अस्थाना साहब ने कहा।

मुझे हँसी आगई अस्थाना साहब के जोश पर। मैं हँसी रोकताहुआ बोला, "यहाँ चुनाव का प्लेटफार्म नहीं है। सेठ दामोदरप्रसाद, रामेश्वरी देवी और पण्डित रामखिलावन में से एक भी नहीं है यहाँ। हम सभी नेताओं से नीचे, जनता के लोग हैं। कासिममिरजा रिटाइं आफीसर हैं और वैसे ही पेशकार सहाब तथा करीमखां भी। आज इन लोगों के पास अपने पदों की शक्ति नहीं हैं। उनके न रहने पर इन्हें दुनियाँ में रिल-मिलकर ही तो चलनाचाहिए। आखिर दुनियाँ से ऊपर कैसे उड़नेलगें?"

मेरी बात सुनकर कासिम मिरजा मुस्कराए और अस्थानासाहब की ओर ध्यान देतेहुए बोले, "तो आप भी चुनाव के उम्मेदवार हैं। कुछ कर-गुजरने का जोश हैं आप के दिल में भी। जमाने के पाजीपन को उखाड़ फेंकने का जो बीड़ा आपने उठाया हैं वह क़ाबिलेतारीफ़ है! मुझे दिली हमदर्दी है आपके साथ। आप जैसे तरक्कीपसन्द नेताओं के हाथों में हमारे मुल्क की

बागडोर आजाने पर मुल्क की तरक्की की क्या-क्या उम्मीद नहीं की जा-सकती ?”

पेशकार रामदयाल ने हमारा आपस में परिचय कराया । कासिम मिरजा को अपनी और मेरी रेल के डिब्बे में हुई भेंट की याद आई और उन्होंने पूछा, “आपको जो मैंने किस्सा सुनाया था उसका क्या किया आपने ? आप कहते थे कि आप उसे नाविल की शक्ल में पेश करेंगे ।”

“मैंने अपना काम पूरा करदिया और अपने बैग से ‘दीवान रामदयाल’ उपन्यास की एक प्रति निकालकर उन्हें भेंट की ।

कासिम मिरजा किताब को देखकर उछलपड़े और उसपर छपे पेशकार साहब के चित्र को देखकर बोले, “भाई खूब बनाई है तस्वीर भी तुमने पेश-कार सहाब की ।”

“तस्वीर ही नहीं, हमारी प्रशंसा भी खूब की हैं शर्माजी ने । बड़ी ही दिलचस्पी है और पूरी हमदर्दी के साथ हमारा किस्सा लिखा है । इनकी यही हमदर्दी मुझे आपके इनके पासतक खींचकरलेगई । पुस्तक इनकी छपचुकी थी और किस्सा अभी अधूरा ही था । आपको भी सब मालूम नहीं था । मालूम ही कहाँ से होता ? अलीगढ़ में आकर ऐसे बसे कि मित्रता पर पर्दा ही डाल दिया । मानो रामदयाल कभी आपका मित्र रहा ही नहीं था ।”

पेशकार रामदयाल की बात सुनकर कासिम मिरजा तनिक लज्जित से होकर बोले, “गलती तो वाकई हुई, लेकिन परदा ही तो था बीच में । उसे उठायाजासकता है । दिलों में तो कभी कोई फ़र्क नहीं आया ।”

“कभी नहीं और कभी आएगा भी नहीं ।” पेशकार रामदयाल बोले, “गुलाब अक्सर याद करती है आपको ।”

“अच्छी तो है गुलाब ? क्या हाल-चाल है उसका ?”

“मौज की कटरही है । ऐश की गुजर रही है । न कोई बालक, न बच्चा, अकेला दम है । मेरे बुढ़ापे का सहारा है ।” पेशकार रामदयाल बोले ।

“और आपके भाई हरदयाल के क्या हाल-चाल हैं ?” कासिम मिरजा ने पूछा ।

“हरदयाल की याद दिलादी आपने कासिम मिरजा ! यहाँ तक आने का सब मजा किरकिरा करदिया । आँखों के सामने हरदयाल के कुएं की कोठरी

यही सब कुछ है। आप लोगों की खिदमत से जो कुछ मिला उसी पर सब्र है।" अदब के साथ करीमखाँ बोला।

हम सब कोठी के अन्दर चलेगए। कासिम मिरजा हमें अपने दीवानखाने में ले गए। दीवानखाने का ढंग लखनऊ का नवाबी ढंग था।

उसे देखकर पेशकार रामदयाल कासिममिरजा से बोले, "नक्शा ही बदल डाला आपने तो! अंग्रेजी ढंग को एकदम छोड़दिया। पोशाक भी बदलडाली। एक बार हामिदअली साहब के आने पर आपको पाजामे सिलानेपड़े थे। अब देखरहा हूँ कि सूट-बूट का नाम भी नहीं रहा।"

"जमाने के साथ इन्सान को बदलजाना चाहिए। वक्त के ताकतों से टकराना बेवकूफी है। अगर जमाने की ऐश लेनी है तो जैसा जमाना हो वैसे ही तुम भी बनजाओ।" मुस्कराकर कासिम मिरजा बोले।

"तो साहब क्षमा कीजिए! बिना परिचय के ही मुझे आपकी बात के बीच में बोलना पड़ा। बात मूल्यवान है इसलिए रुक भी नहीं सकता मैं कहने से। मैं पूछता हूँ, यह आपने क्या कहदिया? जैसा जमाना हो वैसे ही हम भी हो जाएँ। यदि जमाना पाजी हो तो हम भी पाजी होजाएँ।" और फिर मेरी ओर देखकर बोले, "सुना कुछ आपने शर्मा जी!" अस्थाना साहब ने कहा।

मुझे हँसी आगई अस्थाना साहब के जोश पर। मैं हँसी रोकताहुआ बोला, "यहाँ चुनाव का प्लेटफार्म नहीं है। सेठ दामोदरप्रसाद, रामेश्वरी देवी और पण्डित रामखिलावन में से एक भी नहीं है यहाँ। हम सभी नेताओं से नीचे, जनता के लोग हैं। कासिममिरजा रिटाइ आफीसर हैं और वैसे ही पेशकार सहाब तथा करीमखां भी। आज इन लोगों के पास अपने पदों की शक्ति नहीं हैं। उनके न रहने पर इन्हें दुनियाँ में रिल-मिलकर ही तो चलनाचाहिए। आखिर दुनियाँ से ऊपर कैसे उड़नेलगें?"

मेरी बात सुनकर कासिम मिरजा मुस्कराए और अस्थानासाहब की ओर ध्यान देतेहुए बोले, "तो आप भी चुनाव के उम्मेदवार हैं। कुछ कर-गुजरने का जोश है आप के दिल में भी। जमाने के पाजीपन को उखाड़ फेंकने का जो बीड़ा आपने उठाया है वह क़ाबिलेतारीफ़ है! मुझे दिली हमदर्दी है आपके साथ। आप जैसे तरक्कीपसन्द नेताओं के हाथों में हमारे मुल्क की

शर्मा जी ! गलत तो नहीं है मेरी बात ?"

मैं अस्थाना साहब की ओर देखताहुआ बोला, "कैसी साधारण सी बात को समस्या बनादेते हो अस्थाना साहब ! आय वही चीज है जो आपको रामेश्वरी देवी के साथ मिलते ही होनेलगी थी, वही जो आपको रायिस बनने पर हुई थी, वही जो आपको संयुक्तराष्ट्र की साहित्य-सम्बन्धी योजनाओं में योग-दान देनेपर होनेलगी थी। आय वही है जो बिना कमाए अपने आप आपके पास चलीआए। जिसे प्राप्त करने में आपको मजदूरी न करनीपड़े।"

"मेरे मनकी बात कहदी आपने शर्माजी।" आमदनी का मतलब मेरी डिक्शनरी में बिल्कुल यही है जो आपने फरमाया। अस्थाना साहब मोटी आमदनी को आमदनी न कहकर योजनाओं का बजट कहते हैं। सेठ दामोदर प्रसाद भी बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाते हैं आजकल। कह नहीं सकते वह समय उन्हें याद है कि नहीं जब मेरठ की जनता ने उनकी अर्थी निकालकर उनकी हवेली के सामने उसपर जूते बरसाए थे और हाय-हाय के नारे लगाए थे।" कासिम मिरजा बोले।

"ये सभी बातें इसबार सेठ को चुनाव में सफल होने से रोकेंगी। मैंने सब नोट करली हैं अपनी नोटबुक में।" अस्थाना साहब बोले।

"अपनी नोटबुक को आप जेब में रखलीजिए। इससे सेठ दामोदरप्रसाद का बाल भी बाँका होनेवाला नहीं है।" गम्भीर राजनीतिज्ञ कासिम मिरजा बोले, "सेठ के आसन को यदि कोई डगमगा सकता है तो वह पंडित राम खिलावन है।" और फिर पेशकार रामदयाल की ओर मुँह करके बोले, "यार वह रामखिलावन का बच्चा भी खूब निकला। मुखर्जी के दिमाग पर चढ़कर उसने सूबे के जन-संघ का छत्र अपने सिरपर रखलिया और अब वह रंग भी बदलनेवाला है। आजकल काँग्रेस हाई कमाण्ड पर इसने जादू करदिया है। क्या करकेंटे की तरह रंग बदलता है ?"

कासिम मिरजा की राजनीति में इतनी जानकारी देखकर मैं आश्चर्य-चकित रहगया। अस्थाना साहब भी अपने ऊँचे [illegible]र से तनिक नीचे उतरआए। परन्तु पेशकार रामदयाल गम्भीर आवाज में बोले, "तो आपका मतलब है कि इस बार के चुनाव में पंडित रामखिलावन [illegible] मारजाएँगे। यह कदापि नहीं

होगा।"

दीवान रामदयाल की बात सुनकर हम सबकी दृष्टि उनके चेहरे पर जालगी। उन्होंने अपनी मूछों को मरोड़ी देकर शान के साथ सीना ऊपर को उभारदिया।

तभी कासिम मिरजा की बेगम दीवानखाने के अन्दर का द्वार खोलकर हम लोगों के समक्ष चलीआईं और मुस्कराकर बोलीं, "दोपहर बाद का नाश्ता दस्तरखान पर आचुका है। आप लोगों के पुराने किस्से तो जाने कबतक चलतेरहेंगे। इसलिए पहले नाश्ता करलीजिए और फिर ताजा होकर नई तय्यारी के साथ उनका सिलसिला शुरू कीजिए।"

"शुभ काम में देर नहीं करनी चाहिए।" कहता हुआ मैं सबसे पहले खड़ा होगया और सभी ने मेरे साहस की दाददी।

"साहस नहीं, भूख ने खड़ा किया है मुझे। भूख ही इन्सान को चलना सिखाती है और साहस खाने का सामान बटोरना सिखाता है। यहाँ खाने का सामान बिना बटोरे ही बेगम साहिबाँ की कृपा से मिलगया। साहस के प्रयोग की आवश्यकता ही नहीं पड़ी।" मैंने मुस्कराकर कहा।

हम सब खाने के दस्तरखान पर पहुँचगए।

: ३६ :

नाश्ते के पश्चात् हम लोग कोठी के सामने लॉन में आबैठे। कासिममिरजा की बेगम ने बनारसी पानों के बीड़े भेजे और सबने एक-एक अपने गाल में दबा लिया। पेशकार रामदयाल कासिम मिरजा की ओर देखतेहुए बोले, "मेरठ से रिटायर होकर आप अलीगढ़ चलेआए।"

"अलीगढ़ में आकर, जो रुपया आपने पैदा करदिया था उससे यह कोठी बनाडाली।" कासिममिरजा बोले।

"यह आपने बहुत अच्छा किया। एक ठिकाना बनालिया रहने का।" पेशकार रामदयाल ने कहा।

"इसमें मैंने कुछ नहीं किया पेशकार साहब ! रुपया आपने पैदा कराया था और उसे कोठी बनाने के लिए बचाया बेगम साहिबा ने ! मैं तो नौकरी के जमाने में बेगम साहिबा की फरमाइशें पूरी करने से ही तंग था। मुझे क्या पता था कि उन्हीं फरमाइशों से एक दिन इतनी आलीशान कोठी खड़ी होसकेगी। आधी कोठी का चार सौ रुपया महावार किराया आता है और आधी में मैं रहता हूं।" कासिम मिरजा ने बताया।

"आपको पेंशन भी तो मिलती होगी।" अस्थाना साहब ने पूछा।

पेंशन का नाम सामने आते ही पेशकार रामदयाल और कासिम मिरजा ने एक दूसरे की ओर देखा। करीमखाँ की दृष्टि भी उन्हीं दोनों से जामिली।

उनकी आकृतियों से मैंने ताड़लिया कि अवश्य कुछ दाल में काला है। मैंने मुस्कराते हुए कहा, "इतनी रकम कमालेने के पश्चात् यदि कोई अफ़सर बरखास्त भी होजाए तो क्या ग़म है? इससे उसकी सुफ़ेदी पर दाग़ नहीं लगता। नौकरी आमदनी के लिए ही तो की जाती है, शौक के लिए नहीं। आमदनी हो चुकने पर क्या नौकरी और क्या पेंशन ?"

"कुछ भी समझलीजिए शर्माजी ! परन्तु जिस दिलेरी के साथ कासिम मिरजा ने शहर कोतवाली ठुकराई वह भी कमाल की चीज़ थी। कलक्टर साहब की सारी अंग्रेजियत ख़ाक में मिलादी।" पेशकार रामदयाल सीना उभारकर बोले, "अंग्रेज कलक्टर की शान में जो शब्द आपने कहे उन्हें कहने का कलेजा किसी दूसरे के पास नहीं था।"

"मैं आपके साहस की दाद देता हूँ।" अस्थाना साहब बोले। "अंग्रेज के सामने सही या गलत, किसी भी तरह, डटकर आपने उत्तर दिया, यह देश-भक्ति का नमूना था। मैं आपकी जीदारी की आदर करता हूँ।"

मेरे चेहरे पर मुस्कान देखकर कासिम मिरजा सकुचागए और धीमी आवाज़ में बोले, "कद्र करने का कोई काम मैंने आज तक अपने जीवन में नहीं किया अस्थाना साहब ! नौकरी की, अपना पेट पाला और अपने बच्चों का पेट पाला। रिश्वत ली और उसीके सिलसिले में नौकरी खोदी। परन्तु उसका कोई अफसोस नहीं। इसीलिए अपने दोस्त पेशकार रामदयाल से इतने प्यार के साथ मिलरहा हूँ। अगर अफसोस होता तो इन्हें कोठी के अन्दर भी न घुसनेदेता।"

अस्थाना साहब की समझ में यह यह रहस्य न आया। पेशकार राम-दयाल बोले, "कासिम मिरजा ठीक कहरहे हैं। रिश्वत लेने और इस काम में कमाल हासिल करने की उस्तादी का सेहरा मेरे ही सर था। जब कासिम मिरजा को नौकरी से स्तीफादेना पड़ा तो मैं इनकी तनिक भी सहायता न करसका। हमदर्दी के अतिरिक्त और कोई चीज़ नहीं थी मेरे पास, जो मैं इन्हें देसकता था और मेरी हमदर्दी कासिम मिरजा ने स्वीकार की।

कासिम मिरजा के मुँह पर प्रशंसा नहीं कररहा हूँ शर्माजी, इनके जैसा अफ़सर मेरे जीवन में दूसरा नहीं आया। मेरे मेरठ जिले के शासन की इमारत की बुनियादें हातमसिंह के समय में रखीगई थीं और उसकी पहली मंजिल भी उनके सामने बनचुकी थी, परन्तु वह शानदार इमारत, जिसकी छतपर बैठकर पूरे जिले की हकूमत चलती थी, कासिम मिरजा की शहरकोतवाली पर ही खड़ीहुई थी।"

"ये सब चीजें तो मैं किताब के पहले हिस्से में लिखाचुका हूँ। अब ...सि मिरजा को अपनी अलीगढ़ की जिन्दगी पर प्रकाश डालनेदीजिए।" मैं बोला।

"आपका विचार बिल्कुल ठीक है। कहानी का वह भाग प्रकाश में चाहिए जो अभी तक ज्ञात नहीं है।" अस्थानासाहब बोले।

करीमखाँ हम लोगों की चौकड़ी से बाहर था। वह बेग़म साहिबाँ के सामने फर्श पर बैठा उनसे बातें कररहा था।

कासिम मिरजा जरा सँभलकर बैठतेहुए बोले, "तो आप लोग आज केवल मेरा किस्सा सुनने के लिए तशरीफ लाए हैं। मेरा अलीगढ़ का किस्सा बहुत छोटा है।

बेग़म साहिबाँ ने इस कोठी को तय्यार कराने में अपना सब जेवर बेच डाला और जिस दिन कोठी बनकर तय्यार हुई उस दिन कुल दो हजार रुपया हमारे पास बाकी बचा।"

"यानी सब कुछ कोठी में लगगया।" मैंने पूछा।

"पाई-पाई शर्मा जी! फिर मेरे सामने सवाल आया घर-खर्च चलाने का। घर बनालेना सरल है, परन्तु उसे चलाना जरा टेढ़ी खीर है और घर भी मामूली न बनाकर, बनाडाली कोठी। कोठी बनाने पर कोठी की शान कायम

रखनी जरूरी होगई और पास में था सिर्फ दो हजार रुपया।"

"तब क्या आपने कोई नया काम प्रारम्भ किया ?" मैंने पूछा।

"काम करना क्या सरल है शर्मा जी ! अफसरी करनेवाले का काम से क्या मतलब ? उसे तो मुफ्त की शराब चाहिए, मुफ्त की ऐश चाहिए, मुफ्त की तमाशबीनी चाहिए, मुफ्त का सिनेमा चाहिए, मुफ्त का सैर-सपाटा चाहिए, मुफ्त की होटल-बाजी चाहिए और मुफ्त का जेब-खर्च भी चाहिए। इन सब पर एक दम बंदिश लगगई थी।" कासिम मिरजा गम्भीरता पूर्वक बोले।

"और आपका जीवन कोठी की चहारदीवारों में बन्द होगया ?" मैंने पूछा।

पेशकार रामदयाल, जो अबतक चुपचाप बैठे सुनरहे थे, ज़रा उभरकर बोले, "यह बात ग़लत है शर्माजी ! क़ासिम मिरजा जैसा बुद्धिमान व्यक्ति कोठी की चहारदीवारी में बन्द होकर नहीं बैठसकता।"

कासिम मिरजा के चेहरे पर पेशकार रामदयाल की बात सुनकर मुस्कराहट खेलगई। वह कुर्ते की आस्तीनें सँवारतेहुए बोले, "पेशकार रामदयाल ठीक फरमाते हैं शर्माजी ! बन्दिश में रहना मेरी मौत है। उसे मैं सहन नहीं करसकता। मैंने अलीगढ़ के जीवन में एक नई ताजगी पैदा की। अपनी कोठी के आधे हिस्से में 'खुशदिल-क्लब' कायम किया और वह क्लब आज अलीगढ़ का...।"

"सब से प्रसिद्ध क्लब है।" अस्थाना साहब कासिम मिरजा की बात बीच में लपकतेहुए बोले, "इसमें कोई संदेह नहीं। कोई अखबार पढ़नेवाला और अलीगढ़ की खबरों पर दृष्टि डालनेवाला ऐसा व्यक्ति नहीं होसकता जो 'खुशदिल-क्लब' से अपरिचित हो।"

"खुदा के फ़जल से आज पेशकार साहब !" उनका कन्धा पकड़कर हिलाते हुए कासिम मिरजा बोले, "हमारा लगायाहुआ पौधा खूब फल-फूलरहा है। अलीगढ़ के शरीफ़ लोगों की जिन्दगी खुशनिल बनारखी है उसने।"

पेशकार रामदयाल और हम सब लोग कासिम मिरजा के चेहरे पर देख रहे थे। उनकी कहानी मौन रहकर सुनरहे थे। कासिम मिरजा ने फिर रोब के साथ आस्तीनें चढ़ाईं और बोले, "खुशदिल क्लब' की बदौलत ज

फिर एक बार वही ऐश ली पेशकार साहब ! जो कभी आपकी बदौलत मेरठ की शहर-कोतवाली में ली थी।"

फिर मेरी ओर देखकर बोले, "हमारा 'खुशदिल-क्लब' का काम खूब जमा शर्माजी ! खूब चलरहा है।"

"कमाल करदिया आपने कासिम मिरजा !" मैंने हाथ मिलातेहुए कहा। "आपने भी अपने जीवन को खूब बदला। कहाँ तो आप अफसर थे और काम से कोई सम्बन्ध रखते ही नहीं थे और कहाँ एक दम पूरे व्यवसाई बनबैठे।"

पेशकार रामदयाल के चेहरे पर मुस्कराहट छागई। वह एक लहजे के साथ बोले, "कोतवाल साहब ! सफलता में सफल व्यक्ति अपने मित्रों को भूल जाता है। नए मित्र मिलजाते हैं उसे, पुराने मित्र छूटजाते हैं।"

कासिम मिरजा ने पेशकार रामदयाल की बात सुनकर पेंतरा बदला और छाती में उभार लाकर कहा, "यह बात आपकी ग़लत है पेशकार साहब ! आपको छोड़कर आज तक कोई मेरी मित्रता का दम नहीं भरसका और न मेरी ही जबान ने किसी को मित्र कहकर पुकारा। 'खुशदिल-क्लब' मेरा नया था, जिसे मैंने यहाँ कोठी बनजाने के बाद शुरू किया और आज तक शरीफ़ लोगों की जमायत में बैठकर मैंने उसे काम नहीं कहा। तुम अपने ज़िगरी दोस्त हो, इसलिए तुमसे छिपाना भी मेरे लिए शर्म की बात है।"

मेरी ओर मुँह करके बोले, "सच जानिए शर्मा जी ! यदि आप अकेले मेरे पास आएहोते तो मैं हरगिज-हरगिज आपको अपने जीवन का यह राज न बताता। मेरा ऊपरी आवरण आप कभी भी न चीरपाते। परन्तु पेशकार साहब के सामने पर्दा रखना नालायक आदमी का काम है।"

इतना कहकर कासिम मिरजा ने पेशकार रामदयाल से आँखें मिलाईं और एक क्षण तक दोनों एक दूसरे को देखतेरहे। कितने दिन से भटकीहुई दो मित्रों की आँखें आपस में मिलगईं।

"मित्रता की सचाई देखी शर्मा जी !" पेशकार रामदयाल बोले।

"देख ही नहीं रहा हूँ, लिखता भी जारहा हूँ और साथ-साथ समझता भी जारहा हूँ। कासिम मिरजा ने अपने जीवन की आवश्यकताओं को प्राप्त करने का एक सुन्दर साधन बनालिया। मुफ्त की शराब, मुफ्त की तमाशबीनी, मुफ्त की ऐश, मुफ्त का खान-पीन, मुफ्त की नामवरी प्राप्त की और किसी

का हक़ नहीं छीना। नया साधन पैदा किया। प्रशंसा के योग्य काम किया। मैं दिल से प्रशंसा करता हूँ कासिम मिरजा की।" फिर कासिम मिरजा की ओर देखकर बोला, "आपका काम दिन-दूना रात-चौगुना फले-फूले।"

मेरी बात सुनकर अस्थाना साहब ने नाँक-भौं चढ़ातेहुए कासिम मिरजा की ओर मुँह करके कहा, "तो क्या 'खुशदिल-क्लब' में यह सब भी होता है जो शर्माजी ने बताया।"

"तो क्या आप 'खुशदिल-क्लब' को सिर्फ लीडरों के दिमाग़ी बुखार झाड़ने का प्लेटफार्म ही समझरहेहैं थे? क्लब की और दिलचस्पियों में एक दिलचस्पी यह भी थी कि मुख्तलिफ खयालात रखनेवाले लोगों के खयालातों की जानकारी हासिल कीजाए। इसके साथ और सब भी चलता है। नाच-गाने तो शरीफ़ जिन्दगी की ज़रूरतें हैं अस्थाना साहब! खाना-पीना उससे भी बड़ी जरूरत है। इनके बाद और सब दिमागपच्चियाँ आती हैं और उन्हें भी उस हद तक निभायाजाता है जिस हद तक एक शरीफ आदमी के लिए ज़रूरी है।"

कासिम मिरजा ने आज की बात के बीच में तीन बार 'शरीफ़ आदमी' शब्द का प्रयोग किया और मनुष्य-जाति के उस वर्ग के लिए किया जिसका वह अपने को एक सदस्य मानते थे।

मैंने पूरी कहानी को एक ओर छोड़कर उनसे कहा, "आपने सही अर्थ में एक 'शरीफ़ आदमी' का काम अपनाया। पहली परिभाषा आपने अपने शरीफ काम की यह बताई कि जिससे कोई काम नहीं किया जासकता। इससे सरकार के इनकम टैक्स-विभाग से तो आपने प्रारम्भ में ही छुट्टी प्राप्त करली।"

"ज्यादा खुलासा न कीजिए शर्माजी! काम तभी तक है जब तक उसका राज़ नहीं खुलता। समझ आप भी गए, और समझ मैं भी समझ रहा हूँ।"

बातों-ही-बातों में, सन्ध्या होगई। कहानी फिर भी अधूरी रही। कासिम मिरजा की शानदार फ़िटन कोठी के दरवाजे पर आकर खड़ी होगई।

कासिम मिरजा बोले, "चलिए अलीगढ़ की सैर करादूँ आपको। अलीगढ़ यूनीवर्सिटी दिखादूँ।"

हम चारों फ़िटन में बैठकर अलीगढ़ की सैर को चलेगए और वहीं कासिममिरजा की बेगम से गप्पें झाड़तेरहे।

बेगम ने पूछा, "देववन्द कैसा कस्बा है, करीमखाँ ?"

"बहुत नायाव, बेगम साहिबाँ ! देववन्द के क्या कहने हैं ? खूब तरक्की करता जारहा है। बाग़ात-ही-बाग़ात हैं शहर के चारों ओर। अरबी का शानदार मदरसा है। उसमें कई-सौ लड़का अरबी पढ़ता है।"

तुम्हारी वीवी के क्या हाल-चाल हैं ? मेरी तरह बूढ़ी होगई होगी बेचारी।" बेगम साहिबाँ ने पूछा।

"कोई ख़ास बूढ़ी नहीं हुई है बेगम साहिबाँ ! मजबूत काठी देखकर ही पसन्द की थी मैंने।" फिर मुस्कराकर बोला, "बेगम साहिबाँ ! बीवी को बूढ़ी कहने के लिए दिल नहीं चाहता। मेरी आँखों के सामने उनका वही हुस्न बरक़रार है जिसमें पहले दिन मैंने उसे बुर्का उतारकर देखा था।" बड़े ही सरल तरीके से करीमखाँ ने कहा ! बेगम साहिबाँ के सामने करीमखाँ बच्चे की तरह बातें करता था।

बेगम साहिबाँ को लुत्फ़ आगया करीमखाँ की बात सुनकर।

करीमखाँ ज़रा और उभरकर बोला, "बड़ी अक्लमन्द औरत है बेगम साहिबाँ ! क्या तारीफ करूँ उसकी ! आजकल तो घर का पूरा भार उसी के सिर पर है। मुझे तो वह जो कहदेती है, मैं करलेता हूँ। मेरा घर के किसी काम में कोई दखल नहीं है। खूब आमदनी करली है उसने, इतना मैं ज़रूर कहूँगा।"

"जरा सुनूँ भी तो कि क्या आमदनी करली है तुम्हारी बीवी ने ? हमसे तो तुम्हारी बीवी ही ज्यादा अक्लमन्द निकली।" मुस्कराकर बेगम बोलीं।

"यही छोटी कौमों को रुपया सूद पर देना शुरू करदिया था उसने। खुदा के फ़जल से उसका यह कारोबार ऐसा चला बेगम साहिबाँ ! ऐसा चला कि मज़ा आगया। मेरा काम तो अब बीवी के तकाजे उघानाभर रहगया है।"

"तब तो तुम्हारे काम में कोई खास फ़र्क नहीं आया करीमखाँ ! मेरठ में तुम पेशकार साहब के तक़ाजे उघाते थे और देववन्द में अपनी बीवी के।" बेगम साहिबाँ हँसकर बोलीं।

करीमख़ाँ को मजा आगया बेगम साहिबाँ की बात सुनकर। वह बोला, "बिल्कुल, बेगम साहिबाँ ! बिल्कुल !"

हम लोग सैर से लौटकर आए तो क्या देखा कि एक बड़े कमरे में पाँच

पलंग लगेहुए थे। करीमखाँ ने पेशकार रामदयाल के पलंग के पास एक नक्काशी-दार हुक्का लाकर रखा।

हुक्के को देखते ही पेशकार रामदयाल प्रसन्न होकर बोले, "कासिम मिरजा! कमाल कर दिया आपने। यानी वही हुक्का मौजूद है जिसपर एक दिन हम दोनों ने घूँट भरकर याराने की जिन्दगी शुरू की थी।" फिर मेरी ओर देखकर बोले, "शर्मा जी! आप इस हुक्के का मूल्य नहीं जानसकते। और जब हुक्के को ही नहीं जानसकते तो शराब की दोस्ती को क्या समझोगे? सच कहता हूँ ये ही वे दो चीजें हैं जो इन्सान को एक दूसरे से मिलासकती हैं। तुमने अगर हुक्के और शराब का शौक नहीं किया तो समझलो कि तुम अपनी आधी जिन्दगी खोबैठे।"

मेरे चेहरे पर उनकी बात सुनकर मुस्कराहट आगई। मैंने दिल से अनुभव किया कि वह जो कुछ भी कहरहे थे वह उनके दिल की आवाज थी—उसमें बनावट लेशमात्र भी नहीं थी। मैं बोला, "और जो भी सही, परन्तु आज वह ऐतिहासिक हुक्का देखने को मिला जिसपर दम लगाकर आप लोगों ने अपनी मित्रता प्रारम्भ की। यह हुक्का वास्तव में प्रशंसा के योग्य है, क्योंकि यह दो व्यक्तियों को मित्र बना सका। खेद यही है कि इस हुक्के ने आप दोनों को स्वार्थ के लिए आपस में बाँधा, अय्याशी के लिए आपस में बाँधा और घूसखोरी के लिए आपस में बाँधा।"

मेरी बात सुनकर पेशकार रामदयाल एक भोले बालक की तरह मेरे चेहरे पर देखते रहगए। फिर सचाई के साथ गम्भीरता पूर्वक उन्होंने स्वीकार करतेहुए कहा, "बात आपकी सोलह आने सही है शर्माजी! मिले हम लोग अपनी-अपनी गर्ज को लेकर। अपने सामने हमने कभी दूसरे को नहीं देखा, दूसरे को नहीं समझा। हमने एक खेल खेला दूसरों के साथ।"

"जिन्दगी एक खेल ही तो है शर्माजी!" कासिम मिरजा हुक्के पर चिलम रखतेहुए पेशकार रामदयाल के सामने खड़ेहोकर मुस्कराते हुए बोले। "जिन्दगी में दूसरों को देखता कौन है? खेल में पीछे रहजानेवाला ही दूसरों को देखता है। खुदा करे हमें कभी वह दर्जा हासिल न हो और हमें कभी हारनेवाला खेल न खेलनापड़े।"

कासिममिरजा की बात सुनक

अस्थानासाहब बहुत कम बोलते थे, परन्तु समझते बड़ी गहराई के साथ थे और जब कभी कोई बात किसी की जबान से उनके मत के विरुद्ध निकलजाती थी तो उनके माथे पर सिलवटें पड़नेलगती थीं, उनके होठ फड़कनेलगते थे और उनकी उँगलियों की मुठ्ठियाँ बँधनेलगती थीं। उनकी इन हरकतों को समझनेवाला केवल मैं ही एक आदमी था वहाँ। अन्य किसी को उस ओर इतनी गहराई के साथ देखना अवकाश नहीं था।

अस्थाना साहब को पुलिस की हवालातों में रहने का कई बार सौभाग्य प्राप्तहुआ था। उनका पुलिस द्वारा कियागया स्वागत उनके मस्तिष्क पर पुलिस के प्रति घृणा की तस्वीर खींचदेता था। उसी घृणा को मनमें लेकर वह पेशकार रामदयाल की कहानी सुनरहे थे। वह चश्मा साफ करके करीने के साथ बोले, "खिलाड़ी आप लोग जबरदस्त रहे। शर्माजी को दाद देनीचाहिए आपके कारनामों की।"

"परन्तु कर यह उल्टा हीरहे हैं अस्थानासाहब! यह हमारे दोस्त पेशकार रामदयाल को और हमको खुदगर्ज़ साबित करनाचाहते हैं। मैं आपसे ही सवाल करता हूँ कि दुनियाँ में खुदगर्ज कौन नहीं है? अगर कोई खुदगर्ज नहीं है तो वह गैर की गर्ज को कैसे समझसकता हैं?" बात की दिशा बदलकर कासिकमिरजा मुस्करातेहुए बोले।

कासिममिरजा का यह प्रश्न सुनकर अस्थानासाहब बिदकगए और करीने के साथ बोले, "आपके स्वार्थ में पुलिस के काले कारनामों की लम्बी सूची है महाशय!"

यह सुनकर कासिममिरजा को हँसी आगई। वह बोले, "जिन्हें आप काले कारनामे कहते हैं, वे हमारी जिन्दगी की वे घड़ियाँ हैं जब हमने अपनी नौकरियों के फर्ज़ की अदायगी की है जनाब! अब कहिए आप क्या कहते हैं?"

"अस्थाना साहब कहते नहीं, लिखते हैं।" मैं बीच में पड़कर बोला। मैं थोड़ा डरगया कि कहीं क्रांतिकारी और पुलिस की मुठभेड़ न होजाए।

"तो आप भी हमारी कहानी लिखरहे हैं?" कासिममिरजा ने पूछा।

"आज नहीं लिखरहे हैं तो लिख लेंगे कभी। आज़कल तो आप कनवेंशनों के चक्कर में पड़े हैं। ऐशियाई दुनियाँ के लेखकों की समस्याएँ हैं आपके सामने। आपके प्रगतिशील विचार हैं। राजनीति में भी प्रवेश है

आपका।" मैं वोला।

असथाना साहव उस समय मेरे कृतज्ञ थे जव मैं उनकी प्रशंसा कररहा था। मैं उनके गुणों का वखान कररहा था। विश्व के लिए उनके महान् जीवन का क्या महत्व है यह कासिममिरजा और पेशकार रामदयाल को यह समझारहा था।

उसी समय वेगम साहिवाँ ने भोजन की सूचना दी और हम सव लोग उठकर खाने के कमरे में चलेगए।

: ३७ :

उस रात्रि को हम लोग सो न सके, यदि यह कहूँ तो अनुचित न होगा। करीमखाँ की चारपाई वाहर वराँडे में थी और वह सोए भी खूव खर्राटे की नींद। उन्हें हम लोगों की वातचीत से कोई सम्वन्ध नहीं था।

हुक्के का कश लगाते ही पेशकार रामदयाल वोले, "भाई कासिममिरजा! आपका 'खुशदिल-क्लव' आपको मुवारिक हो, जिसकी वदौलत आपने यह ठाट-वाट वनालिया। अपने पुराने ज़िन्दगी के ढर्रे को वनाएरखा और जीवन की ऐश में कोई कमी नहीं आनेदी।"

कासिममिरजा मेरी ओर मुँह करकेवोले, "शर्माजी! इस क्लव की वदौलत अलीगढ़ में अपना वह रौव जमगया है कि ताल्लुकात और रसूकों के खयाल से मेरे मुकाविले पर कोई नहीं आसकता। अपना काम किसी खास गुटवन्दी में पड़ना नहीं है। अपने लिए काँग्रेस, जनसंघ, कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट प्रजा-सोशलिस्ट सव समान हैं। किसी को 'हाँ' नहीं, किसी को 'नाँ' नहीं [illegible]

मैंने कहा, "ठीक है आपका उसूल। यह दुनियाँ भ्रम का पिटारा है [illegible] के पिटारे में एक भ्रम की पुड़िया वनकर आप भी वैठे हैं।"

मेरी वात वीच में ही काटकर त्योरी वदलतेहुए [illegible] "तो इसका मतलव यह है कि आप सभी को धोखे में रखते हैं [illegible] विश्वासघात करते हैं।"

अस्थाना साहब की बात सुनकर कासिममिरजा को हँसी आगई। वह मेरी ओर घूमकर बोले, "शर्माजी! मुझे ऐसे राजनीति में दखल रखनेवाले लोगों की अक्ल पर तरस आता है जो धोखे और विश्वासघात को बीच में लाकर खड़ाकरते हैं।" फिर मुस्कराकर बोले, "जनाब! मैं अहिंसावादी हूँ। मैं किसी के दिल को चोट पहुँचाना पसन्द नहीं करता। जब तक पुलिस की नौकरी की, तब तक मैं हिंसावादी था, परन्तु जबसे 'खुशदिल-क्लब' का सेक्रेटरी बना हूँ, तब से मुझे अहिंसावादी बनना बननापड़ा है। जनता के काम ऐसे नहीं होते जनाब, जिनमें मुँहफट्ट आदमी कामयाब होसकें।" उन्होंने गम्भीर वाणीमें कहा।

कासिममिरजा की बात सुनकर पेशकार रामदयाल अपना माथा दबाते हुए बोले, "लाख रुपए की बात कहदी आपने कासिममिरजा! समय देखकर आदमी को पेंतरा बदलनाचाहिए। आपने खूब पेंतरा बदला। मैं दाद देता हूँ आपकी बुद्धिमानी की। यह पेंतरा न बदलते तो यह सब ठाट-बाट और वे यूनीवर्सिटी के पासवाली चार कोठियाँ कैसे खड़ीकरते?"

दीवान रामदयाल की बात सुनकर मेरे दिल में गुदगुदी होउठी और मैं मुस्कराकर अस्थानासाहब की ओर दृष्टि डालकर बोला, "मित्रवर, आप ठहरे क्रान्तिकारी वीर, यानी दुनियाँ को बदलडालने में आपका विश्वास है। परन्तु हमारे कासिममिरजा साहब देश के रचनात्मक कार्य-कर्त्ताओं में से हैं। एक आप हैं कि जिनके पास अपना मकान तो दूररहा, किराए का मकान भी नहीं है। एक कासिममिरज़ा हैं जिनका कोई काम काम नहीं है और पाँच कोठियाँ खड़ी करली हैं।"

मेरे व्यंग्य को कासिममिरजा समझतेहुए तिलमिलाकर बोले, "परन्तु शर्माजी! इन कोठियों की नींव किसी की बरबादी पर नहीं रखीगई। आबाद किया है मैंने कई-सौ घरानों को। रिश्वतें ज़रूर दिलवाई हैं अफ़सरों को, परन्तु जिन लोगों ने रिश्वतें दी हैं उनका उन रिश्वतों को देने से बढ़ा है, घटा नहीं। आज भी उसी तरह दिल मे गुलाम हैं वे सब आपके।"

मैं मुस्कराचर बोला, "इसीलिए तो परमात्मा से आपको यह सम्पन्नता प्रदान की है।" फिर पेशकार रामदयाल की ओर मुँह करके बोला, "काम आपने भी गाँव में जाकर यही किया होगा पेशकारसाहब! क्योंकि एक बार

पुलिस की नौकरी करलेने के पश्चात् कोई आदमी खेती करके कमाखाए, यह असम्भव है। अन्तर इतना ही रहा कि आपके रिश्वत देनेवाले पिसतेगए और कासिममिरजा के रिश्वत देनेवाले लोग फले-फूले।" फिर मैं अस्थाना साहब की ओर देखताहुआ बोला, "जैसे समाज को अपने चारों ओर कासिममिरजा ने बटोरा है, वैसी ही इनकी दशा है और जैसे समाज को पेशकारसाहब ने अपने आस-पास लिया है, वैसी ही इनकी दशा होगई। यही तो है समाजवाद मित्रवर ! कहिए क्या आपने भी किसी समाज का निर्माण किया है ?"

पेशकार रामदयाल हुक्के की नै होठों से हटाकर गम्भीरतापूर्वक बोले, "बात आपकी सच है शर्माजी! मेरे और कासिम मिरजा के काम में कोई अन्तर नहीं है। दोनों ने एक ही काम किया, बिल्कुल एक। मैं तुम्हारी बात को पूरी तरह समझरहा हूं।"

अस्थानासाहब की समझ में मेरी बात न आई और कासिममिरजा भी उसकी गहराई तक न पहुँचसके, परन्तु पेशकार रामदयाल अपनी करतूतों को पूरी तरह समझरहे थे।

सबका ध्यान मेरी ओर था। मैंने गम्भीरतापूर्वक कहना प्रारम्भ किया, "दुनियाँ में बहुत से काम हैं, परन्तु अर्थ सबका रुपया कमाना हैं, क्योंकि बिना रुपए के जीवन की गाड़ी आगे नहीं बढ़ती। आप दोनों मित्रों ने नौकरी और घूस से रुपया कमाना सीखा। जब नौकरियाँ जातीरहीं तो घूस का हुनर ही आप लोगों के जीवन का सहारा रहगया।"

"आपका फरमाना बजा है शर्मा जी ! हमें इस हुनर के अलावा और किसी हुनर का तजुरबा ही नहीं था। यह हुनर हम लोगों ने अपनी पूरी नौकरी का जीवन पूराकरके सीखा था।" कासिममिरजा बोले।

"तो आपके विचार से घूस लेना भी एक हुनर है ?" अस्थानासाहब ने पूछा।

"बहुत बड़ा हुनर है जनाब ! रिश्वत लेना ही नहीं देना भी मज़ाक नहीं है। वह तो साख थी अपनी इतनी जिससे अधिक कठिनाई नहीं हुई और उसी साख की बदौलत ये कोठियाँ खड़ी करलीं हैं। उस्ताद पेशकार रामदयाल से यही साख तो हमें विरासत में मिली थी नौकरी से बरखास्त होने पर।" प्रसन्नतापूर्वक कासिम मिरजा ने बताया।

"तो 'खुशदिल-क्लब' को आपने माध्यम बनाना सम्बन्ध पैदा करने का और उस सम्बन्ध का लाभ पहुँचाया अपने सम्पर्क में आनेवाले महानुभावों को।" मैंने कहा।

"बिल्कुल यही शर्मा जी! किसी को मैं बुलाने नहीं गया घूस देने के लिए। लोग आप-से-आप आनेलगे मेरे पास। मेरी रहमदिली और समाज-सेवा का डंका पिटगया पूरे जिले में। मैं अफ़सर से जनता का सेवक बन गया। इसीलिए अपना लिबास भी बदलडाला। सूट-बूट सब उठाकर रखदिए और पशमीने की बढ़िया खादी भंडार से कपड़ा लेकर शेरवानियाँ सिलवाईं। पायंजामे सिलवाए। पूरा लीडरी ठाट-बाट बनालिया अपना।" कासिम मिरजा ने करीने से बताया।

मैंने उनके चेहरे पर दृष्टि डाली और फिर पेशकार रामदयाल की ओर देखा। दो मित्रों की बातों में कितनी सचाई थी, इसका अनुमान लगाया।

मेरे कुछ कहने से पहले ही कासिम मिरजा फिर बोलउठे, "शर्मा जी पेशकार रामदयाल बैठे हैं सामने। इनके सामने झूठ बोलना हराम है। जो कुछ मैं कहरहा हूँ उसे पहचानलेना खाला जी का घर नहीं था। आप बेचारे तो मामूली लेखक ठहरे, यहाँ बड़े-बड़े तीसमारखाँ आते हैं और जूतियाँ चटखातेहुएचलेजाते हैं। हवा भी नहीं पासकते कासिममिरजा की।

कासिम मिरजा आज अलीगढ़ की स्यासत को जिस ओर भी चाहे मोड़ देने की ताकत रखता है अपने में। उसका उसकी खुशदिली से ही सरोकार है और इसीलिए सब उसकी इज्जत और कद्र करते हैं।"

कासिम मिरजा की बात सुनकर पेशकार रामदयाल की श्रद्धा कासिम मिरजा की बुद्धि पर न्यौछावर होगई। जब से उन दोनों का सम्पर्क हुआ था पेशकार रामदयाल कासिम मिरजा को बुद्धि का पथ-प्रदर्शक मानते आए थे। जबसे उनका कासिम मिरजा से साथ छूटा, तभी से उनके जीवन में गिरावट आई। इस सत्य को पेशकार रामदयाल ने आज अपनी और कासिम मिरजा सूरत पर लिखापाया।

कासिम मिरजा ने लेखक के लिए मामूली शब्द का प्रयोग किया, इससे मेरे दिल पर कोई चोट नहीं लगी, परन्तु अस्थाना साहब उसे सहन न कर

सके। वह अपने दिल की बेचैनी को बाहर निकालने के लिए बोले, "शर्मा जी ! जैसे लेखक वास्तव में आपके 'खुशदिल-क्लब' की राजनीति को नहीं भाँप सकते कासिम मिरजा ! परन्तु हम लोग तो राजनीति के कीड़े हैं।"

"ऐसे कीड़ों को मैं आज तक अपने जूते के नीचे कुचलता आया हूँ।" तनिक गम्भीर होकर कासिम मिरजा बोले। "आज से नहीं, सन तीस से जनाब ! मेरी शहर-कोतवाली का जमाना, वह जमाना था, जब राजभक्ति के कीड़े मेरे हन्टर के सामने तिलमिलाते थे।' पेशकार रामदयाल का कंधा पकड़कर हिलातेहुए बोले, "सुनाया नहीं है क्या आपने इन महाशय को हमारी शहर-कोतवाली का किस्सा ?"

पेशकार रामदयाल को दया आगई उनकी बात सुनकर और वह मजा-किया लहजे में बोले, "हमारे अस्थाना साहब की स्मृति तनिक हल्की है। वैसे यह 'दीवानरामदयाल' उपन्यास पढ़चुके हैं।"

"और तब यह हालत है आपकी ?" कासिम मिरजा बोले। "वह हमारी शहर-कोतवाली का जमाना था। आज हम भारत-सेवक हैं। आज भी स्यासत के कुत्ते दुम हिलाते हैं हमारे सामने। सुबह से शाम तक हमारे दीवानखाने में बैठकर देखिए कितनी दुमें हिलती दिखाईदेंगी आपको।"

मुझे कासिम मिरजा के जोश पर हँसी आरही थी और बेचारे अस्थाना साहब की क्रांति का जनाज़ा निकलजाना भी मैं सहन नहीं करसकता था। मैं बोला "आपकी योग्यता की कहानी पेशकार साहब से हम लोग सविस्तार सुनचुके हैं। जो कुछ उन्हें मालूम नहीं था, वह आपसे जानकर हार्दिक प्रसन्न हुई ? हमारे अस्थाना साहब को आपकी योग्यता को मानलेने में कोई संकोच की बात नहीं है। मेरे विचार से इन्हें आपके दो-चार शब्दों पर ही आपत्ति है।"

"उन्हें मैं बहुत खुशी के साथ वापस लेलूँगा। 'खुशदिल-क्लब' का सेक्रेटरी और भारत-सेवक कभी किसी को नाखुश करना पसंद नहीं करेगा।" कासिम मिरजा खुले दिल से बोले।

मैंने कहा, "आपने लेखक के साथ 'बेचारे' और 'मामूली' शब्दों का प्रयोग किया है। इनमेंसे 'बेचारे' शब्द को सहन किया जासकता है, परन्तु 'मामूली' शब्द को अस्थाना साहब सहन नहीं करसकते। दूसरी आपत्ति इन्हें 'स्यासी

कुत्ते' के 'दुम हिलाने' पर है। अस्थाना साहब का विचार है कि सभी 'कुत्ते' 'दुम' नहीं हिलाते। 'दुम' हिलाना पालतू कुत्तों का काम है। जो पालतू 'कुत्ते' नहीं हैं, वे दुम क्यों हिलाएँ? उन्हें तो किसी से टुकड़ा नहीं माँगना है। वे तो घूस नहीं लेते देते।"

"खाली रिश्वत लेनेदेने की ही बात नहीं है शर्माजी! उन्हें कीड़ा ही कहा जाए तो भी वे, वे कीड़े नहीं हैं जिन्हें कासिममिरज़ा अपने पैर के नीचे कुचल सकें। उनको कुचलने से पहले अपनी सुरक्षा के विषय में इन्हें हज़ार बार सोचना होगा।" अस्थाना साहब जरा उभरकर बोले।

अस्थाना साहब की बात सुनकर कासिममिरजा मुस्कराए और एक लहजे के साथ बोले, "अस्थाता साहब ठीक फरमाते हैं शर्माजी! ज़हरीले कीड़े भी होते हैं राजनीति में, परन्तु बहुत कम। उनका पूरी तरह ध्यान रखता है कासिम मिरजा। क्या मजाल जो वे भाँप भी पाए कि कासिममिरजा ी दो जिन्दगियाँ दो रास्तों पर वहती जारही हैं। अहिंसा और सहनशीलता का दायरा बड़ा लम्बा-चौड़ा है शर्माजी! उसमें सब कुछ समाजाता है। सच जानिए आप, बकरी और शेर एक घाट पर पानी पीते हैं।"

मुझे हँसी आगई कासिममिरजा की बात सुनकर। बड़ी ही गम्भीरता के साथ वह बयान कररहे थे और उतनी ही गम्भीरता के साथ पेशकार रामदयाल उन्हें सुनरहे थे।

मैंने कासिम मिरजा के जीवन को अपने मस्तिष्क की तराज़ू पर रखकर तोला तो देखा कि दोनों पलड़े सही वजन पर थे, बीच की सुई बीच के निशान पर थी। फिर उनके चेहरे पर देखा। इस बजुर्गी में भी यह स्वास्थ्य, कमाल था बस।

मैंने कहा, "कासिम मिरजा! आपकी दूसरी भेंट ने मेरे उपन्यास के एक अधूरे पात्र को पूरा करदिया। इसके लिए मैं आपका दिल से आभारी हूँ। जीवन अलग चीज हैं और उसे सही ढंग से चलाना अलग चीज। आपने अपने जीवन को खूब चलाया है। मैं दिल से दाद देता हूँ आपकी बुद्धिमता की। आज के राजनीतिक वातावरण में रहकर भी आप उससे अलग हैं, कमल हैं आप दुनियाँ की कीचड़ में। अपने सम्पर्क में आनेवालों को लाभ भी पहुँचाते हैं आप और उस लाभ पहुँचाने में यदि अपना भी कुछ दाल-दलिया करलेते

हैं। इसमें किसी को बुरा भी क्यों लगना चाहिए ? चाहे काम [illegible] करें और आपके बाल-बच्चे भूखों मरनेलगें, तो भला कौन आए आपकी सहायता करने के लिए ? जैसा समय हो उसे वैसा ही निभाना पड़ता है।"

"चाहे लाख बेईमानियाँ करनी पड़ें ?" अस्थाना साहब ने पूछा।

"बेईमानी और ईमानदारी को समझना बड़ा मुश्किल काम है अस्थाना !" कासिममिरजा गम्भीरता के साथ बोले, "सच और झूठ की समस्या तो आज तक पूरी-पूरी सामने नहीं आसकी। बड़े-बड़े [illegible] गए। आपकी और मेरी तो ताक़त ही क्या है, जो इन [illegible] समस्याओं का हल खोजने की कोशिश करें ?"

अस्थाना साहब को बात का कुछ उत्तर [illegible] कासिममिरजा को चैन नहीं आता था। वैसे अपनी कहानी की हर बात को वह [illegible] को उद्यत रहते थे। जो कुछ कहते थे वह सब [illegible] उन्हें कोई संकोच नहीं था। इसलिए अन्त में बोले, "मैंने जो कुछ भी आप लोगों से अबतक कहा, वह सब कहानी थी। कहानी सभी सच नहीं होती। उसमें नमक-मिर्च मिला हुआ होता है। कितना नमक-मिर्च है और कितनी सचाई, यह आप खुद समझिए। मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं है।"

"सम्बन्ध मेरा भी बहुत कम है मिरजासाहब ! नमक-मिर्च की छाँट करने का भार मैं पाठकों पर छोड़देता हूँ। [illegible] ऐसा नहीं करते। वह कहानी का दूसरा [illegible] अपने ही ऊपर लेकर चलते हैं। कहानी का [illegible] औजार हैं इनके पास। कई विलायतों से [illegible] हैं। इंग्लैंड, [illegible] रहे हैं यार !"

कासिममिरजा [illegible] बोले, "[illegible] हो ! इन अंग्रेजों के [illegible] में यही अब है।"

"तो आपका ——

हुए तो हड्डियाँ टूट जाएँगी कहानी की और यदि जख्म भी न भरसके तो जिन्दगी-भर के लिए नासूर और बन जाएँगे।"

अस्थाना साहव को कासिममिरजा की वात पर वहुत क्रोध आया। एक साधारण पुलिस का वर्खास्तशुदा अफ़सर, एक साधारण क्लव का सेक्रेट्री एक क्रांतिकारी लेखक की रचना-कला पर इस वेरहमी के साथ अपने विचार प्रकट करे, यह उनके लिए असहनीय होउठा। वह गम्भीरता के साथ वोले. "आदमी को अपनी सीमा से वाहर सोच-समझकर क़दम रखनाचाहिए कासिम मिरजा! आजकल लिखना मजाक नहीं है। संसार के लेखकों और आलोचकों के दृष्टि-कोण जानेविना किस्से घसीटतेजाना आज के लेखक का काम नहीं है। यह काम शर्मा जी करसकते हैं। मेरे सामने व्रेडल, क्रोंचे, टाल्सटाय, रिचर्डस और मार्क्स के सिद्धान्त हैं, जाने, फ्रायड, यूँग और एडलर की चेतना है। नित्शे, वर्गसाँ, रसेल, संतायन, जेम्स और ड्यूवी का दर्शन-चिंतन है। वताइए फिर आपकी कहानी को लेकर इन चिंतकों की कसौटियों पर जवतक पूरी तरह न कसलियाजाए, तवतक उसे विश्वजनीन वौद्धिकता का जामा कैसे पहनाया जासकता है?

चाहे मैंने कुछ भी नहीं लिखा, परन्तु संसार के सव लेखक मुझे लेखक मानते हैं। उनके सामने मेरी रचना जाती है। मेरी रचना शर्माजी की रचना नहीं है। वह-वह रचना होगी···।"

कासिम मिरजा वीच में ही अस्थाना साहव की वात को लपकतेहुए वोले, "जिसमें चाहे पेशकार रामदयाल, कासिममिरजा, रामेश्वरी देवी, गुलाव और हमारे करीमखाँ वगैरा की सही कहानी न आए परन्तु आपके व्रेडले क्रोचे, टाल्सटाय, रिचर्डस, मार्क्स, जाने, फ्रायड, यूँग, एडलर, नित्शे, वर्गसाँ, रसेल, संतायन, जेम्स और ड्यूवी की फ़िलाफसी जरूर आजाएगी। ऐसे किस्से में हमारी कोई दिलचस्पी नहीं है अस्थाना साहव! आप लिखें या न लिखें, उससे हमारा कोई सरोकार नहीं।"

"आपके सरोकार के लिए अस्थानासाहव रचना नहीं करते कासिममिरजा आपने ग़लत समझा है अस्थानासाहव को। अस्थाना साहव रचना करते हैं क़ला के लिए, अपने प्रयोगों के लिए।" मैंने कहा।

"तो फिर इन्हें अपनी कहानी लिखनीचाहिए। अपनी कहानी पर यह

जी चाहे जितने प्रयोग करें। हमारी कहानी पर [illegible] किसने दिया ?"

सामने बैठे पेशकार रामदयाल [illegible] मिरजा ने पूछा, "क्या आपसे इजाजत [illegible] ?"

मुझे हँसी आगई [illegible] कलाकार इस दुनियाँ का आदमी नहीं [illegible] लागू नहीं होते। वह [illegible] उसे आपसे आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं है। [illegible] आज्ञा लेनीपड़ती है।"

तभी मैंने आश्चर्यपूर्वक देखा कि [illegible]

"यानी रात समाप्त होगई !" [illegible]

"चाय की प्याली तो [illegible]

हम लोग सुबह [illegible] अपनी फिटन में हमें छोड़ने [illegible]

कासिम मिरजा [illegible] में जरा इस गरीब की [illegible]

"इस विषय में [illegible] मिरजा ! हमारे [illegible] नहीं करसकते।" मैंने कहा। [illegible]

: ३ :

हम [illegible] और उसमें [illegible]

दीवान [illegible] कहते हैं [illegible] की छानरहा [illegible] है।"

"इसमें क्या शक है ? कोतवालसाहब की काबलियत पर तो आप शुरू से ही शैदा रहे हैं।" करीमखाँ बोला।

"परन्तु करीमखाँ ! कासिममिरजा की बेग़म ने भी हक अदाकरदिया। मैं उन्हें एक ऐशपसन्द, खर्चीली औरत समझता था। मेरा विचार ग़लत निकला। कासिम मिरजा की बेगम ने यदि अपना जेवर बेचकर यह कोठी न बनवादीहोती तो कासिम मिरजा की सब योग्यता रखीरहजाती। 'खुशदिल क्लब बनता ही नहीं और यह शान-शौकत भी कासिममिरजा को प्राप्त न होती।"

"तब तो बेगम साहिबाँ को आप प्रारम्भ से ही गलत समझतेरहे हैं। बड़ी सादा और नेक तबियत औरत है। बड़ी रहमदिल और तहजीबयाफ्ता है। मुझपर तो हमेशा से बेचारी बड़ी मेहरबान रही हैं।" करीमखाँ बोला।

"क्या कुछ पूछती थीं मेरे बारे में ?" पेशकार रामदयाल ने पूछा।

"सभी कुछ पूछती थीं। यह पूछिए कि क्या नहीं पूछती थीं। आपके घर की बरबादी की बात सुनकर उन्हें बड़ा दुःख हुआ। आपकी तकलीफ़ की बात सुनकर कहने लगीं,"ऐसे ही वक्त में औरत की जरूरत होती है। मर्द कमा सकता है, कमाई को रखना औरत का काम है। दीवानजी की औरत होती तो इतनी कमाई के बाद उन्हें ये दिन न देखनेपड़ते। एक औरत के न होने से सारी काबलियत खाक में मिलगई।"

करीमखाँ की बात सुनकर मैंने देखा कि पेशकार रामदयाल के चेहरे का रंग बदल गया। उनकी आँखों में अतीत के चित्र अंकित होउठे। वह भावुकता में भरकर बोले, "कितना सही अनुमान है बेगम साहिबाँ का ! शीला होती तो मैं गाँव में क्यों जाता ? गाँव के उन चार खेतों की खातिर शीला मुझे कभी भी वहाँ अपने हाथ-पैर तुड़वाने के लिए न जानेदेती। बेग़म साहिबाँ ठीक कहती हैं करीमखाँ ! आदमी सिर्फ कमाना जानता है, उसे रखने का काम औरत का है......।" कहते-कहते दीवान रामदयाल की जबान रुकगई। शीला की स्मृति उनके मस्तिष्क में ताजा होगई।

फिर थोड़ी देर में वह मुस्कराकर बोले, "इन्सान सबकुछ करसकता है, परन्तु भाग्य को नहीं बदलसकता, हाथ की लकीरें नहीं काटीजातीं करीमखाँ! शीला का जितने दिन का साथ था, उससे अधिक कैसे रहसकता था ? इस जीवन

में जो कुछ ऐश करली वह सब उसी देवी की बदौलत करली।" कहते-कहते दीवान रामदयाल रुकगए।

"औरत खुदा की बहुत बड़ी नियामत है पेशकार साहब ! घर की दौलत है औरत, खानदान की इज्जत हैं औरत। आदमी के दिल की राहत है औरत, कुरबानी की इन्तहा है औरत। मेरी बीवी को देखलीजिए। क्या था मैं उस उस दिन जिस दिन उसे आप लिवाकर लाए थे। एक अदना-सा कर्जदार सिपाही था। उसीके मुकद्दर ने आज ऐश की जिन्दगी गुज़ररही है। घर में जो ऐश है, जो चहल-पहल है, कस्बे में जो इज्जत है, वह सब उसीकी बदौलत है।" करीमखाँ गम्भीरता के साथ बोला।

इन दोनों की बातें सहनकरना अस्थाना साहब के लिए कठिन होगया। काफी देर उन्होंने सहनकिया, परन्तु अब बात हद से गुजरचुकी थी। औरत की प्रशंसा में इस सीमा तक आगे बढ़ने को वह तय्यार नहीं थे। आँखों से चश्मा उतारकर उसे साफ़ करतेहुए बोले, "आप दोनों की आपसी बातचीत में हस्ताक्षेप करने का मुझे कोई अधिकार नहीं, परन्तु औरत को लेकर जो आप लोगों ने इतना किस्सा खड़ा करदिया हैं उसे सुनते-सुनते मेरे कान ऊबउठे हैं। औरत को आप लोग अपने मन की कठपुतली समझते हैं। जिन औरतों का आप जिक्र कररहे हैं वे औरत नहीं हैं, तभी कठपुतलियाँ हैं। घर से बाहर का जीवन उन औरतों ने नहीं देखा।"

"घर से बाहर की औरतों को मैं औरत नहीं मानता अस्थाना साहब ! जिस्म की बनावट से कोई इन्सानी ढाँचा मर्द या औरत नहीं होता। समझे आप ?" पेशकार रामदयाल ने कहा।

मुझे हँसी आगई उनकी बात सुनकर और मैं किसी प्रकार अपनी हँसी को रोकताहुआ बोला, "बात खूब कहीं आपने पेशकार साहब ! अस्थाना साहब को लाजवाब करदिया।" और फिर अस्थाना साहब से बोला, "आप समझे, पेशकार साहब क्या कहरहे हैं ?"

पेशकार रामदयाल मुस्करारहे थे। करीमखाँ की समझ में कु...
वह चुप होगए। अस्थाना साहब मुंह बिचकातेहुए बोले, "ये सब...
हैं। बदन की बनावट न सही, कार्य के ...
प्रथक-प्रथक समझेंगे ?"

"बिल्कुल समझेंगे।" पेशकार रामदयाल बोले, "बहुत से व्यक्ति जिस्म से पुरुष प्रतीत होनेवाले इन्सान वास्तव में स्त्री होते हैं और बहुत सी जिस्म से स्त्री प्रतीत होनेवाली स्त्रियाँ वास्तव में पुरुष होती हैं।" फिर मेरी ओर देखकर बोले, "शर्माजी ! आप भी ध्यान से नोट करतेजाइए जो मैं कहरहा हूँ। स्त्री और पुरुष की फिलासफी आपने काफी पढ़ीहोगी। स्त्री और पुरुष को ही लेकर आपका इतना बड़ा साहित्य का भंडार बना है, परन्तु स्त्री और पुरुष को समझता कोई नहीं, या यह कहिए कि बहुत कम लोग समझते हैं।"

अस्थाना साहब बड़े ध्यान से सुनरहे थे पेशकार रामदयाल की बात। पेशकारसाहब भी कम गम्भीरता से अपनी फिलासफी प्रस्तुत नहीं कररहे थे। वह बोले, "मनुष्य का जिस्म प्रथम चीज है और मनुष्य के काम प्रथक चीज हैं। जिस्म के कामसे इन्सान के कारनामे बिल्कुल अलग हैं।"

"आपका मतलब नहीं समझा मैं ?" अस्थानासाहब बोले।

"मेरा मतलब बिल्कुल स्पष्ट है। अर्थात् बच्चे पैदा करना जिस्म का काम। किसी स्त्री के विचार और काम पुरुष के होनेपर भी उसका जिस्म बच्चेपैदा करसकता है और ठीक इसके विरुद्ध एक पुरुष के विचार और काम स्त्री के होने पर भी उसका जिस्म बच्चे पैदा करने में असमर्थ रहता है...।" कहते-कहते पेशकार रामदयाल के चहरे पर मुस्कराहट आगई। वह बोले, "जनाब अस्थाना साहब ! आपने देखा होगा कि कभी औरत पुरुषों को छोड़जाती हैं और कभी पुरुष स्त्रियों को छोड़देते हैं। वहाँ ऐसी ही भूलें होती हैं। जिस्म से स्त्री और पुरुष जचनेवाले इन्सान आपस में टकराजाते हैं। मिसाल के तौरपर आप अपनी और रामेश्वरीदेवी की भेंट को ही लेलीजिए।"

मैंने कहा, "कमाल करदिया आपने मिसाल प्रस्तुत करने में। इससे सही मिसाल अस्थाना साहब के लिए दूसरी नहीं होसकती। मैं मानगया आपकी फिलासफी को।"

अस्थाना साहब चिढ़कर बोले, "क्या व्यर्थ की बातें करते हैं आप भी शर्माजी ! यह भी कोई फिलासफी है। विज्ञान का विरोध करके आपकी फिलासफी कितने दिन टिकसकेगी ?"

अस्थाना साहब के बिचकने को देखकर पेशकार रामदयाल के चेहरे पर रौनक आगई। वह लहजे के साथ बोले, "जनाब अस्थाना साहब ! आपको

समझनाचाहिए कि हमारा देश दार्शनिक विचारों का है। आत्मा स्त्री और पुरुष नहींहोती। आपका विज्ञान आत्मा से सम्बन्ध न रखकर जिस्म से सम्बन्ध रखता है। वह आत्मा से सम्बन्ध रखता ही नहीं। काम आत्मा करती है, जिस्म नहीं। आत्मा के निकलजाने पर आपका वैज्ञानिक शरीर न तो स्त्री रहता है और न पुरुष।"

अस्थानासाहब ने आज तक जिन राजनीतिक और साहित्यिक वाद-विवादों में भाग लिया था, उनमें ऐसी फिलासफी की बातें उनके समक्ष न आई थीं। उनकीदशा देखकर मैं बोला, "अस्थाना साहब! पेशकार साहब की फ़िलासफ़ी देखिए कितनी मौलिक है। आप पुरुष दिखाई देतेहुए भी स्त्री होसकते हैं और रामेश्वरी देवी स्त्री होने पर भी पुरुष होसकती हैं।"

मेरी बात सुनकर पेशकार रामदयाल उछल पड़े। वह तनिक सुधरकर बैठते हुए बोले, "शर्माजी! आज का इन्सान विचारों में क़ितना पिछड़ता जारहा है। वह विज्ञान के चक्कर में पड़ा है। वह इस नाशवान जिस्म का, जो कुछ दिखाई देजाता है, उसी को सच मानलेता है और कहता है अपने को प्रगति-शील विद्वान्।"

पेशकार रामदयाल फिर अस्थाना साहब की ओर होगए और गम्भीर मुस्कराहट होठों पर लाकर बोले, "तो मैं आपसे बीच की नस्ल की बात कर रहा था अस्थाना साहब! हमारे देश में ये नस्लें भी पहले जिस्म के विचार से नहीं बनती थीं, कर्म विचार से ही बनती थीं। महाभारत में शिखंडी जिस्म से औरत और मर्द न होकर बीच की नस्ल से था, परन्तु उसका काम गाना-बजाना नहीं था। वह भी अर्जुन और भीष्मपितामह की तरह हथियार लेकर युद्ध में लड़ता था।"

'कमाल करदिया आपने पेशकारसाहब!" मैं उनसे हाथ मिलाताहुआबोला, "हमारे अस्थानासाहब स्त्री के विषय में चाहे जितने भी कमजोर प्रमाणित हुए परन्तु क्रांति की इनमें कमी नही है। खूब बम पटकाए हैं आपने। अंग्रेजी शासन को उखाड़कर एक ओर फ़ेंकदिया। स्वतंत्र करदिया भारत को।"

इसमें क्या संदेह है?" मस्कराकर पेशकार रामदयाल बोले, "अस्थाना साहब की वीरता से कौन अपरिचित है?"

रेल तीव्र गति के साथ छुक-छुक करती दौड़ लगारही थी। करीमग

खिड़की से बाहर झाँकरहे थे। वह हम लोगों की बातों में विशेष रुचि नहीं लेरहे थे। ऐंजिन ने सीटी दी और रेल की चाल मन्दी पड़गई।

"बातों ही-बातों में खुर्जा जंकशन आगया प्रतीत होता है!" पेशकार रामदयाल बाहर झाँकतेहुए बोले।

"खुर्जा आगया।" करीमखाँ बोला।

"यहीं से तो हमें गाड़ी बदलनी होगी मेरठ के लिए।" मैंने कहा। हम स्टेशन पर उतरपड़े। मेरठ जानेवाली गाड़ी सामने ही खड़ी थी। हम उसमें जाकर बैठगए। गाड़ी आधे घण्टे में रवाना हुई।

मेरठ की गाड़ी में बैठकर पेशकार रामदयाल ने अपने गाँव का एक किस्सा सुनाया। बहुत सुन्दर था वह भी। एक पुरुष और स्त्री का किस्सा था। स्त्री के कारनामे पुरुष जैसे थे और पुरुष के स्त्री जैसे। परन्तु बच्चा पैदा करने का कार्य स्त्री ने ही किया। उनके पालन-पोषण का काम वह पुरुष करता था।

"क्या स्त्री थी वह भी शर्मा जी!" पेशकार रामदयाल बोले, "भोर के तड़के चार बजे हल-बैल लेकर खेत जोतनेजाती थी, खेती बोती थी, काटती और पैरों में डालती थी। दाँय चलाती थी और पलडा लेकर अनाज बरसाती थी। स्वयं अनाज की गाड़ी लेकर मंडी में बेचनेजाती थी। और उसका पति चक्की पीसता था, रोटी बनाता था, साग तोड़कर लाता था, सिल्ले चुगता था, धान खोटता था, घर लीपता और बुहारता था। बच्चों को रखना और उनका पालन-पोषण करना भी उसी का काम था।"

इतना कहकर वह अस्थाना साहब से बोले, "अब कहिए अस्थाना साहब! उनमें कौन पुरुष था और कौन स्त्री?"

यह सुनकर अस्थाना साहबको हँसी आगई। उनके चेहरे पर जो गम्भीरता छाईहुई थी वह जातीरही। वह मुस्कराकर बोले, "पेशकार साहब! आप की फिलासफ़ी दुनियाँ से निराली है। आपकी बात का क्या उत्तर दूँ?"

गाड़ी हापुड़-स्टेशन पर पहुँची तो वहाँ काफी भीड़ थी। उसी भीड़ में एक नेताजी फूल-मालाओं से लदे स्टेशन पर खड़े थे। हमारा डिब्बा ठीक उनके सामने जाकर रुका।

नेताजी का झोला और सामान हमारे डिब्बे में ही रखदियागया और गाड़ी चलने से एक मिनट पूर्व उन्होंने भी डिब्बे में प्रवेश किया। गार्ड ने

झंडी हिलाई और गाड़ी चलपड़ी।

नेताजी एक सीट पर विराजे और अपने गले की फूल-मालाओं को उतारकर एक ओर रखने के पश्चात् उन्होंने अपने डिव्वे में वैठे लोगों पर दृष्टि डाली। उनकी दृष्टि हमपर भी पड़ी। उनकी दृष्टि पेशकार रामदयाल पर पड़ी तो वह एक दम ऐसे चौंके, मानो उन्हें नीचे से किसी विच्छू ने काटलिया हो। वह मित्रता की भाव-भंगिमा के साथ तनिक लजाकर वोले, "अरे! पेशकार साहव! दर्शन ही दुर्लभ होगए आपके तो। मेरठ से ऐसे लापता हुए कि कहीं खोज-खवर ही नहीं छोड़ी अपनी। परन्तु आज मिले खूव। रेलगाड़ी भी जाने कव-कव के विछड़ों को अनायास ही मिलादेती हैं।"

"आपने पहचानलिया मुझे।" मुस्करातेहुए पेशकार रामदयाल वोले, "वैसे लीडर लोग पुराने सम्वन्धों को आजकल वहुत कम याद रखते हैं। यहाँ कैसे आना हुआ आपका? सुना है आजकल तो देश के वड़े-वड़े नेताओं में गिनती होनेलगी है आपकी?"

"नेता नहीं, सेवक हूँ मैं तो देश की जनता का। मेरी सेवाएँ क्या आपसे छिपी हैं? आप क्या नहीं जानते हैं मेरे विषय में? मैं तो देश और देश की जनता का पुराना सेवक हूँ। जव तक यह शरीर चलतारहेगा सेवा-पथ से पीछे कदम नहीं हटासकता।" नेताजी वोले।

"वैसे रहते कहाँ हैं आजकल?" पेशकार रामदयाल ने पूछा।

"मेरठ से मेरा सम्वन्ध इस जीवन में कभीं नहीं छूटसकता! नौचन्दी के मैदान में एक वागीचा लगाकर उसी में एक झोंपड़ा डालदिया है।" नेताजी वोले।

वात की दिशा वदलकर पेशकार रामदयाल वोले, "ज्ञात होता है चुनाव के लिए चक्कर लगायाजारहा है।

आपके विपक्ष में तो सम्भवतः सेठ दामोदरप्रसाद हैं।"

"क्या वात करते हैं आप भी पेशकार साहव! [illegible] खाकर हमारे सामने आएगा। उसे काँग्रेस का टिकट [illegible] नहीं है [illegible] काँग्रेस छोड़कर या तो जन-संघ में जानाहोगा [illegible] होगी। स्वतन्त्र उम्मीदवार के लिए चुनाव लड़ना [illegible] है" नेताजी वोले।

"तो क्या आप काँग्रेस के उम्मीदवार हैं?" पेशकार रामदयाल ने

आश्चर्य प्रकट करतेहुए पूछा ।

"जी हाँ ! कांग्रेस हाई-कमांड ने मेरा ही नाम स्वीकृत किया है । नीचे के लोगों को मैं कीड़े-मकोड़ों के समान समझता हूँ । दामोदरप्रसाद जैसे विपक्षी की मैं कोई चिन्ता नहीं करता ।" नेता जी बोले ।

उन दोनों की बातों से मैंने अनुमान लगाया कि नेता जी हों-न-हों पंडित रामखिलवान हैं । बात को और स्पष्ट करने के लिए मैं बीच में ही पेशकार रामदयाल की ओर मुँह करके बोला, "पेशकार साहब ने अपने नए मित्र का परिचय नहीं कराया हम लोगों से ।"

"परिचय क्यों नही कराऊँगा भला आपसे ?" पेशकार रामदयाल बोले, "आपका परिचय देना बहुत आवश्यक है । आप हैं हमारे पुराने परिचित पंडित रामखिलावन । मेरे विचार से इससे अधिक परिचय की आप लोगों को आवश्यकता नहीं है ।"

"बिल्कुल नहीं !" आँखों से चश्मा उतारकर उसे साफ करतेहुए अस्थाना साहब बोले, "आपका दर्शन करके हमें बहुत प्रसन्नता हुई । तो अब ने जन-संघ को छोड़कर काँग्रेस में पदार्पण करलिया हैं ?"

"प्रगति की राह का ठेका क्या आप समझते हैं कि आपके ही पास है ? क्या उसपर चलने का आपके विचार से किसी अन्य का अधिकार नहीं है ? जीवन के रास्ते बदलना ही तो जीवन है । बहताहुआ पानी सर्वदा साफ रहता है और ठहरेहुए पानी में सड़न पैदा होजाती है ।" मैंने गम्भीरता-पूर्वक कहा ।

मेरी बात सुनकर पंडित रामखिलावन पेशकार साहब से बोले, "मेरा परिचय तो आपने अपने मित्रों को देदिया, परन्तु अपने मित्रों का परिचय मुझे नहीं दिया ।"

इससे पूर्व कि पेशकार रामदयाल को हमारा परिचय देनापड़ता, मैं अस्थाना साहब की ओर संकेत करके बोला, "आप हमारे मित्र श्री जनार्दन अस्थाना साहब हैं । हिन्दी के विख्यात लेखक, कलाकार । अंग्रेंजी शासन-काल के जाने-माने क्रांतिकारी । रूस जाने पर आप साम्यवादी और कम्यूनिस्ट कहलाए । फिर कुछ दिन आप एम. एन. राय के साथ रहे । आजकल विश्व-जनीन मानवता के प्रसार का महत्वपूर्ण कार्य आपके कंधों पर है । ऐशियाई

देशों के लेखकों के कनवेंशन में आपने महत्वपूर्ण भाग लिया है और साहित्य तथा लेखकों की समस्याओं पर प्रकाश डाला है।"

मैंने देखा कि जब मैं श्री जनार्दन अस्थाना का परिचय दे रहा था तो उनकी मुख-मुद्रा बहुत गम्भीर होगई थी। उनकी आँखों में मेरे प्रति कृतज्ञता की झलक आई थी, क्योंकि वह जानते थे कि किसी भी नए व्यक्ति के समक्ष मुझसे अधिक प्रभावशाली ढंग से उनका परिचय अन्य कोई व्यक्ति नहीं करासकता।

पंडित रामखिलावन अस्थाना साहब का परिचय प्राप्त कर बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने खड़े होकर उनसे हाथ मिलाया। फिर मेरी तरफ मुँह करके बोले, "क्या आपका परिचय पाने का सौभाग्य नहीं मिलेगा मुझे?"

मैंने कहा, "अपने जैसे नगण्य व्यक्ति का आप जैसे महान् नेता के समक्ष क्या परिचय दूँ, मैं यही सोचरहा हूँ। परन्तु आपकी आज्ञा का पालन न करना भी मैं समझता हूँ कि भारी भूल होजाएगी। यज्ञदत्त शर्मा नाम से मुझे लोग पुकारते हैं। किस्से-कहानियाँ लिखता हूँ, बस यही मेरा साधारण सा परिचय है।"

यज्ञदत्त शर्मा नाम सुनकर पंडित रामखिलावन तनिक सकपकाकर बोले, "तो आप उपन्यासकार हैं।" पंडित रामखिलावन बोले।

"उपन्यासकार क्या, किस्से लिखलेता हूँ कुछ लोगों के जो जीवन में टकरा जाते हैं। लेखक तो सही अर्थ में हमारे अस्थाना साहब हैं। संसार भर का विज्ञान, दर्शन साहित्य, राजनीति और न जाने कितने प्रकार के शास्त्र आपके मस्तिष्क के कोनों में दबेपड़े हैं।"

पेशकार रामदयाल बात की दिशा बदलकर मुस्कराते हुए बोले, "पंडित रामखिलावन! आपकी प्रगति को देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। छुपेहुए रुस्तम निकले आप। बेचारे दामोदरप्रसाद से रुपया भी ऐंठा और उसे यश भी प्राप्त न करने दिया। सेठ बेचारे को जितने भी मिले, सब ऐसे ही मिले।"

"पैसा किसी के बाप की बपौती नहीं है पेशकार साहब! दमोदरप्रसाद ने वह गरीब मजदूरों का रक्त चूस-चूस कर प्राप्त किया है। मैंने वह अपने दिमाग के एक झटके से उसकी तिजोरी से बाहर निकलवालिया। दोनों में क्या अन्तर है? अब रही यश प्राप्त करने की बात सो वह पैसे से नहीं मिलता, सेवा से मिलता है। पैसेवाले लाखों बैठे हैं और [illegible]

आप देखेंगे कि उनके नीचे दबीहुई पूँजी खिसकती चलीजाएगी। पूँजी जनता की और जनता के पास पहुँचेगी। आज नहीं तो कल, जनता उसे छीनलेगी।"

"गाड़ी का डिब्बा लेक्चर का स्थान नहीं है पंडित रामखिलावन ! यहाँ उत्तेजित होनेवाली जनता भी नहीं है। इस व्याख्यान का प्रयोग आप जनता के बीच करेंगे तो आपके चुनाव में लाभ होगा। यहाँ, जहाँ बौद्धिकता के नित्य नए प्रयोग करने वाले कलाकार बैठे हैं, वहाँ आपकी ये घिसी-पिटी जनता, पूँजी, रोटी, कपड़ा और समाजवाद की बातें व्यर्थ हैं। काँग्रेसी समाजवाद से बहुत दूर आगे मास्को तक की बातें हमारे अस्थाना साहब समझचुके है, लिख पढ़ चुके हैं।" मैंने कहा।

पंडित रामखिलावन मेरे मुँह की ओर देखनेलगे। मैं मुस्कराकर बोला, "पंडित रामखिलावनजी ! पेशकार साहब के बीच में बोलउठने से मेरा परिचय अधूरा ही रहगया। पता नहीं आपसे फिर भेंट हो या न हो, इसलिए सोचता अपना पूरा परिचय आपको देडालूँ।"

मेरे इन शब्दों को सुनकर पंडित रामखिलवन के कान खरगोश के कानों की तरह मेरा परिचय सुनने के लिए खड़ेहोगए।

मैं मुस्कराकर बोला, "देखिए मैं कितनी विचित्र बात कररहा हूँ आपसे ? परिचय आपका चाहता हूं और कहरहा हूँ अपना परिचय देने की बात। इसे परिचय प्राप्त करने की कला समझलीजिए आप। इसी समय आपसे परिचय हुआ और इसी समय इतना खुलकर बातें करनेलगा, मानो आप मेरे बचपन के जानेपहचाने हैं। परन्तु जनता के सेवक से मुझ जैसे जनता के किस्से लिखने वाले का सम्बन्ध आप-से-आप घनिष्ट होजाता है।"

इतना कहकर मैंने अपने थैले से 'दीवान रामदयाल' उपन्यास की एक प्रति निकाली और उसपर पंडित रामखिलावन को 'सप्रेम-भेंट' लिखकर उनके हाथ में देताहुआ बोला, "परिचय अपना तो मैं आपको पूरा देचुका, परन्तु आपका परिचय अभी अधूरा ही है। जो कुछ भी है वह इस उपन्यास के पहले भाग में है। इसे आप पढ़कर देखलें और जो भूल रहगई हो, उसे लिखकर भेजदें। इससे आगे के जीवन का किस्सा भी कभी आप सुनासकें तो बड़ी कृपा हो। मेरे काम में देखिए पेशकार साहब, भाई करीमखाँ, श्री जनार्दन अस्थाना

कितनी दिलचस्पी लेरहे हैं। मैं आपका भी आभारी हूँगा यदि आप भी अपने चरित्र की झाँकी को निखारने में सहयोग प्रदान करें।"

पंडित रामखिलावन ने मेरे उपन्यास को उलट-पलटकर देखा। एक मिनट के लिए वह सकपकाए परन्तु तुरन्त ही उनके चेहरे पर मुस्कराहट आ-गई और वह मेरी ओर देखतेहुए बोले, "यों तो कहिए कि मेरी ही आपसे भेंट आज हुई है, आप तो मुझसे पहले से परिचित हैं। पेशकार साहब ने अपनी कहानी के साथ मेरी कहानी किस रोशनी में आपको सुनाई है यह मुझे पढ़कर देखना होगा। पढ़ने के पश्चात् मैं आपको पत्र लिखूँगा। पत्र ही नहीं, किसी दिन आपको अपनी झोंपड़ी पर आमंत्रित करूँगा। आशा है आप कष्ट करने की कृपा करेंगे।

पंडित रामखिलावन की बात सुनकर पेशकार रामदयाल बोले, "शुभ काम में देर अच्छी नहीं होती पंडित रामखिलावन! मेरा मत है कि आप आज रात्रि में ही इस पुस्तक को पढ़ें और कल संध्या को हम सबको अपने यहाँ आमंत्रित करें।"

"बहुत नेक राय देरहा हूँ मैं आपको क्योंकि यही समय है जब आप अपनी कहानी में शर्माजी से चार चाँद लगवासकते हैं। शर्माजी इस पुस्तक को कांग्रेस हाई कमाण्ड के सब सदस्यों को भेंट करनेवाले हैं।"

पंडित रामखिलावन पेशकार रामदयाल की बात सुनकर मुस्कराते हुए बोले, "आपकी आज्ञा टालने का साहस पंडित रामखिलावन में कहाँ [illegible] सकता है?"

दूसरे दिन संध्या को छः बजे का समय पंडित रामखिलावन के यहाँ [illegible] का निश्चित होगया।

दूसरे दिन संध्या को निश्चित समय पर हम सब पंडित रामखिलावन की कोठी पर पहुँचे। पंडित रामखिलावन ने [illegible] स्वागत किया। कोठी के बाहर बरांडे में कुर्सियाँ बिछी थीं [illegible]

कुर्सी पर बैठतेही चारों ओर दृष्टि [illegible] "भाई रामखिलावन, खूब उन्नति की [illegible] चमका।"

कठिन परिश्रम करनापड़ा है।" सीना उभारकर बोले।

"इसमें कोई संदेह नहीं।" पेशकार रामदयाल बोले, "विना परिश्रम के कोई व्यक्ति आगे नहीं बढ़ता।" पेशकार साहव के चेहरे पर मुस्कराट छागई। उनकी बाँछें खिलगईं और मूँछों पर ताव देने के लिए उनका हाथ मूँछों पर पहुँचगया।

पंडित रामखिलावन के जीवन का पूरा चित्र उनकी आँखों के समक्ष था। उनके जीवन का एक-एक पैंतरा उन्हें याद आया और वह मुस्कराकर बोले, "तो आजकल आपकी तूती वोलरही है मेरठ की राजनीति में ?"

पेशकार साहव की यह वात सुनकर मैं बोला, "इसमें कोई संदेह नहीं है पेशकार साहव! आजकल मेरठ में पंडित रामखिलावन का वोलवाला है। आपके काँग्रेसी विचारधारा को अपनालेने से जन-संघवालों की तो कमर ही टूटगई। आप ही तो प्राण थे उसके। आपके काँग्रेस में आने से वेचारे सेठ दामोदर प्रसाद का रंग फीका पड़गया।"

मेरी वात सुनकर पेशकार साहव खिलखिला हँसपड़े। वह क़हक़हे के साथ बोले, "वाह भाई वाह! पंडित रामखिलावन! सेठ को चित्त करदिया आपने। पूंजीपति सेठ की छाती पर साम्यवादी पंडित रामखिलावन चढ़बैठे। आपने एक ही तीर से दो चिड़ियों का शिकार किया।"

पंडित रामखिलावन पेशकार रामदयाल की वात सुनकर मन में प्रसन्न होतेहुए कृतज्ञतापूर्वक बोले, "यह सव आप जैसे वजुर्गों की कृपा का फल है पेशकार साहव! वरना अपने पास क्या था? खाली लोटा लेकर आए थे मेरठ में, और आज जिधर भी दृष्टि घूमजाती है उधर आपकी कृपा से सनसनी फैलजाती है।"

मैंने आश्चर्य के साथ देखा कि पंडित रामखिलावन ने पेशकार रामदयाल के पैर छूकर कहा, "पेशकार साहव! मैं गुरू मानता हूँ आपको अपना। आपने चाहे मुझे अपना चेला स्वीकार न किया हो, परन्तु मैं दिल से आपको अपना गुरू मानता हूँ। आपके ही नक्शेकदम पर चलकर मैंने यहाँ की राजनीति, समाज और व्यक्तिगत जीवन में सफलता प्राप्त की है।

आपका अनुकरण करके जो पहलवानी अखाड़ों की नीव मैंने डाली थी और उनमें जो पट्ठे पैदा किए, उन्हीं के दम पर यह रौव-दाव और दवदवा आज

रुपया जमा है। उसी पर अपनी लीडरी जमी है।"

"मैं समझाता हूँ, पंडित रामखिलावन !" गम्भीरतापूर्वक पेशकार रामदयाल बोले।

उसके पश्चात् बातों की दिशा रामेश्वरीदेवी और अस्थाना साहब की ओर घूमगई। पेशकार रामदयाल ने पूछा, "अच्छा पण्डित जी तनिक यह तो बताओ कि अस्थाना साहब की क्या स्थिति है मेरठ की राजनीति में ?"

यह सुनकर पंडित रामखिलावन ऐसे हँसे, ऐसे हँसे कि कुछ देर हँसी को रोक ही न सके। फिर गम्भीर होकर बोले, "अस्थाना साहब के हाल-चाल तो आप शर्माजी से पूछ सकते थे। इनके तो यह घनिष्टतम मित्रों में से हैं।"

पेशकार रामदयाल बोले, "शर्माजी से जो पूछना होगा वह इनसे पूछलूंगा तनिक आपका भी तो विचार जानलूँ इन सींकिया क्रांतिकारों के विषय में।"

हँसी को किसी प्रकार रोककर पण्डित रामखिलावन बोले, "अस्थाना साहब के लिए आपने सींकिया क्रांतिकारी शब्द का प्रयोग खूब किया। वास्तव में यह महाशय एक महान् क्रांतिकारी हैं। सुना है इन्होंने किसी चौकी पर कभी कोई हाथ का बना बम फेंककर किसी दीवान को घायल किया था। बस यही है इनका क्रांतिकारी जीवन। आजकल यह अपने को हिन्दी का एक महान् लेखक और राजनीति का प्रकांड पण्डित समझते हैं।"

पंडित रामखिलावन ने आगे क्या कहा, पेशकार रामदयाल ने नहीं सुना। उन्हें अपनी अनुपस्थिति में चौकी पर करीमखाँ के ऊपर फैंकेगए हथगोले की स्मृति होआई। उनके मनमें कई दिन से उठनेवाले विकल्प का समाधान मिल गया। वह समझगए कि करीमखाँ को हथगले से घायल करनेवाले क्रांतिकारी अस्थाना साहब ही थे। परन्तु आज उन्हें उसपर क्रोध नहीं आया। वह हँसकरबोले, "पंडित रामखिलावन ! तनिक सोचिए, वह जमाना भी क्या था ? उस ज़माने में पुलिस की चौकी पर हाथ का बना बम फेंकना भी कोई सरल कार्य नहीं था। बहादुरी की आवश्यकता थी उसके लिए भी।"

पेशकार रामदयाल की बात सुनकर मैं तनिक उभरकर बोला, "आपने सही कहा पेशकार साहब ! उन दिनों पुलिस की चौकी पर बम फेंकना तो क्या, उसकी ओर तिरछी दृष्टि से देखना भी साहस का काम था।"

मेरी वात सुनकर पेशकार रामदयाल ने भी मेरी ओर ध्यान से देखा और सरलतापूर्वक बोले, "शर्माजी ! जिस व्यक्ति पर आपके मित्र अस्थानासाहब ने बम फेंका था वह हमारे मित्र करीमखां हैं और जिसके धोखे में उनपर बम फेंकागया था वह पेशकार रामदयाल हैं।"

पेशकार रामदयाल की यह बात सुनकर मैंने कहा, "मैं आपके कहने से पूर्व ही इस रहस्य को अपनी पुस्तक में लिखचुका हूँ। मुझे यह सब कुछ मालूम है।"

ये बातें चल ही रही थीं कि तभी सामने से अस्थाना साहब आगए। यों अस्थाना साहब का पंडित रामखिलावन से सैद्धान्तिक मतभेद था और वह उनकी कोठी पर आना पसन्द नहीं करते थे, परन्तु आज मेरे और पेशकार रामदयाल के विशेष आग्रह पर उन्होंने आना स्वीकार करलिया था।

उन्हें आते देखकर मैंने कहा, "आयु बहुत लम्बी लेकर आए हैं अस्थाना साहब ! अभी हम सब उन्हें याद कररहे थे और वह आगए।"

अस्थाना साहब का पंडित रामखिलावन ने खड़े होकर स्वागत किया। तभी रामेश्वरीदेवी भी अपने किसी कार्य से वहाँ आगईं।

रामेश्वरीदेवी हम सबको देखकर मुस्करातीहुई बोलीं, "अब इस सभा में केवल दो व्यक्तियों की कमी है।"

रामेश्वरीदेवी की बात सुनकर पेशकार रामदयाल के चेहरे पर मुस्कराहट आगई। मैंने नम्रतापूर्वक पूछा, "वे दो महानुभाव कौन हैं ?क्या उनके नाम मैं जानसकता हूँ।"

पंडित रामखिलावन बोले, "रामेश्वरीदेवी का मतलब सेठ दामोदरप्रसाद और•••" इतना कहकर वह मौन होगए। दूसरे व्यक्ति का नाम उन्होंने नहीं लिया।

पेशकार रामदयाल बोले, "दूसरा नाम गुलाब का है। पंडित रामखिलावन ने गुलाब को निमंत्रित नहीं किया, इसका हमें हार्दिक खेद है। यदि वह स्वयं उन्हें बुलानेएँजाए तो वह आसकती हैं।"

पेशकार रामदयाल की बात सुनकर पंडित रामखिलावन के चेहरे पर हवाइयाँ उड़नेलगीं। वह डरे कि कहीं पेशकार रामदयाल उन्हें गुलाब को लाने के लिए न कहबैठें।

पंडित रामखिलावन के चेहरे पर दृष्टि डालकर पेशकार रामदयाल बोले, "घबराने की आवश्यकता नहीं है पंडित रामखिलावन ! गुलाब के घर जाने पर आपकी महानता कलंकित नहीं होगी। उस स्त्री को पहिचानना आप जैसे समाज-सेवक और राजनीतिज्ञ के लिए बहुत कठिन है।"

यह बात कहकर पेशकार रामदयाल का चेहरा गम्भीर होउठा। वह बोले, "पंडित ! आपकी आज की यह दावत हमने स्वीकार की। परन्तु अब हम चाय नहीं पीसकेंगे आपके यहाँ।" और इतना कहकर वह खड़ेहोगए।

पेशकार रामदयाल के खड़े होते ही सभा का रंग भंग होगया। पंडित रामखिलावन सिटपिटाए से घबराकर बोले, "पेशकार साहब ! आप क्रुद्ध होगए। आपने मेरी वर्तमान स्थिति को नहीं देखा।"

पेशकार रामदयाल बोले, "सब देखा है हमने पंडित रामखिलावन ! आपकी पूरी स्थिति से हम परिचित हैं। आपका हमसे क्या छिपा है ? हमसे अधिक आपको अन्य कौन जानसकता है ?"

इसपर रामेश्वरीदेवी मुस्कराकर सामने आतीहुई बोलीं, "अभी आपका बहुत कुछ छिपा है आपसे ! अब पंडित रामखिलावन वह पंडित रामखिलावन नहीं रहगए हैं। इन्हें आप साधारण व्यक्ति न समझें पेशकार साहब ! यदि आप आज्ञा करें तो मैं जासकती हूँ, बहन गुलाब क लिवाने के लिए।"

रामेश्वरी देवी की बात सुनकर मैं दंग रहगया। पेशकार रामदयाल की दृष्टि उनके चेहरे पर पड़ी तो मैंने देखा कि दो मोटे-मोटे आँसू लटकरहे थे। उनकी आँखों में उनकी दृष्टि रामेश्वरीदेवी की दृष्टि में गड़गई। दोनों एक क्षण एक दूसरे को देखतेरहे।

पंडित रामखिलावन की दृष्टि पेशकार रामदयाल के चेहरे पर पड़ी तो उन्हें थरथरी आगई। वह विनम्रतापूर्वक बोले, "मैं अपनी कार लेकर गुलाब को अभी बुलाएलाता हूँ पेशकार साहब !"

पंडित रामखिलावन की बात सुनकर पेशकार रामदयाल कहकहे के साथ हँसपड़े। बोले, "परेशान न हो पंडित रामखिलावन ! काफ़ी मेहमान एकत्रित होगए हैं यहाँ। गुलाब के आने की आवश्यकता नहीं है। वह आएगी भी नहीं यहां। यह समाज-सेवियों, क्रांतिकारियों और राजनीति के खिलाड़ियों का अखाड़ा है। वह घर-गृहस्थ की पवित्र देवी है। उसका इस मैदान में दौड़ने-

मेरी बात सुनकर पेशकार रामदयाल ने भी मेरी ओर ध्यान से देखा और सरलतापूर्वक बोले, "शर्माजी ! जिस व्यक्ति पर आपके मित्र अस्थानासाहब ने बम फेंका था वह हमारे मित्र करीमखां हैं और जिसके धोखे में उनपर बम फेंकागया था वह पेशकार रामदयाल हैं।"

पेशकार रामदयाल की यह बात सुनकर मैंने कहा, "मैं आपके कहने से पूर्व ही इस रहस्य को अपनी पुस्तक में लिखचुका हूँ। मुझे यह सब कुछ मालूम है।"

ये बातें चल ही रही थीं कि तभी सामने से अस्थाना साहब आगए। यों अस्थाना साहब का पंडित रामखिलावन से सैद्धान्तिक मतभेद था और वह उनकी कोठी पर आना पसन्द नहीं करते थे, परन्तु आज मेरे और पेशकार रामदयाल के विशेष आग्रह पर उन्होंने आना स्वीकार करलिया था।

उन्हें आते देखकर मैंने कहा, "आयु बहुत लम्बी लेकर आए हैं अस्थाना ! अभी हम सब उन्हें याद कररहे थे और वह आगए।"

अस्थाना साहब का पंडित रामखिलावन ने खड़े होकर स्वागत किया। तभी रामेश्वरीदेवी भी अपने किसी कार्य से वहाँ आगईं।

रामेश्वरीदेवी हम सबको देखकर मुस्करातीहुई बोलीं, "अब इस सभा में केवल दो व्यक्तियों की कमी है।"

रामेश्वरीदेवी की बात सुनकर पेशकार रामदयाल के चेहरे पर मुस्कराहट आगई। मैंने नम्रतापूर्वक पूछा, "वे दो महानुभाव कौन हैं ?क्या उनके नाम मैं जानसकता हूँ।"

पंडित रामखिलावन बोले, "रामेश्वरीदेवी का मतलब सेठ दामोदरप्रसाद और..." इतना कहकर वह मौन होगए। दूसरे व्यक्ति का नाम उन्होंने नहीं लिया।

पेशकार रामदयाल बोले, "दूसरा नाम गुलाब का है। पंडित रामखिलावन ने गुलाब को निमंत्रित नहीं किया, इसका हमें हार्दिक खेद है। यदि वह स्वयं उन्हें बुलानेएँ जाए तो वह आसकती हैं।"

पेशकार रामदयाल की बात सुनकर पंडित रामखिलावन के चेहरे पर हवाइयाँ उड़नेलगीं। वह डरे कि कहीं पेशकार रामदयाल उन्हें गुलाब को लाने के लिए न कहबैठें।

पंडित रामखिलावन के चेहरे पर दृष्टि डालकर पेशकार रामदयाल बोले, "घबराने की आवश्यकता नहीं है पंडित रामखिलावन ! गुलाब के घर जाने पर आपकी महानता कलंकित नहीं होगी। उस स्त्री को पहिचानना आप जैसे समाज-सेवक और राजनीतिज्ञ के लिए बहुत कठिन है।"

यह बात कहकर पेशकार रामदयाल का चेहरा गम्भीर होउठा। वह बोले, "पंडित ! आपकी आज की यह दावत हमने स्वीकार की। परन्तु अब हम चाय नहीं पीसकेंगे आपके यहाँ।" और इतना कहकर वह खड़ेहोगए।

पेशकार रामदयाल के खड़े होते ही सभा का रंग भंग होगया। पंडित रामखिलावन सिटपिटाए से घबराकर बोले, "पेशकार साहब ! आप क्रुद्ध होगए। आपने मेरी वर्तमान स्थिति को नहीं देखा।"

पेशकार रामदयाल बोले, "सब देखा है हमने पंडित रामखिलावन ! आपकी पूरी स्थिति से हम परिचित हैं। आपका हमसे क्या छिपा है ? हमसे अधिक आपको अन्य कौन जानसकता है ?"

इसपर रामेश्वरीदेवी मुस्कराकर सामने आतीहुई बोलीं, "अभी आपका बहुत कुछ छिपा है आपसे ! अब पंडित रामखिलावन वह पंडित रामखिलावन नहीं रहगए हैं। इन्हें आप साधारण व्यक्ति न समझें पेशकार साहब ! यदि आप आज्ञा करें तो मैं जासकती हूँ, बहन गुलाब क लिवाने के लिए।"

रामेश्वरी देवी की बात सुनकर मैं दंग रहगया। पेशकार रामदयाल की दृष्टि उनके चेहरे पर पड़ी तो मैंने देखा कि दो मोटे-मोटे आँसू लटकरहे थे। उनकी आँखों में उनकी दृष्टि रामेश्वरीदेवी की दृष्टि में गड़गई। दोनों एक क्षण एक दूसरे को देखतेरहे।

पंडित रामखिलावन की दृष्टि पेशकार रामदयाल के चेहरे पर पड़ी तो उन्हें थरथरी आगई। वह विनम्रतापूर्वक बोले, "मैं अपनी कार लेकर गुलाब को अभी बुलाएलाता हूँ पेशकार साहब !"

पंडित रामखिलावन की बात सुनकर पेशकार रामदयाल कहकहे के साथ हँसपड़े। बोले, "परेशान न हों पंडित रामखिलावन ! काफ़ी मेहमान एकत्रित होगए हैं यहाँ। गुलाब के आने की आवश्यकता नहीं है। वह आएगी भी नहीं यहाँ। यह समाज-सेवियों, क्रांतिकारियों और राजनीति के खिलाड़ियों का अखाड़ा है। वह घर-गृहस्थ की पवित्र देवी है। उसका इस मैदान में दौड़ने-

मेरी बात सुनकर पेशकार रामदयाल ने भी मेरी ओर ध्यान से देखा और सरलतापूर्वक बोले, "शर्माजी ! जिस व्यक्ति पर आपके मित्र अस्थानासाहब ने बम फेंका था वह हमारे मित्र करीमखां हैं और जिसके धोखे में उनपर बम फेंकागया था वह पेशकार रामदयाल हैं।"

पेशकार रामदयाल की यह बात सुनकर मैंने कहा, "मैं आपके कहने से पूर्व ही इस रहस्य को अपनी पुस्तक में लिखचुका हूँ। मुझे यह सब कुछ मालूम है।"

ये बातें चल ही रही थीं कि तभी सामने से अस्थाना साहब आगए। यों अस्थाना साहब का पंडित रामखिलावन से सैद्धान्तिक मतभेद था और वह उनकी कोठी पर आना पसन्द नहीं करते थे, परन्तु आज मेरे और पेशकार रामदयाल के विशेष आग्रह पर उन्होंने आना स्वीकार करलिया था।

उन्हें आते देखकर मैंने कहा, "आयु बहुत लम्बी लेकर आए हैं अस्थाना ! अभी हम सब उन्हें याद कररहे थे और वह आगए।"

अस्थाना साहब का पंडित रामखिलावन ने खड़े होकर स्वागत किया। तभी रामेश्वरीदेवी भी अपने किसी कार्य से वहाँ आगईं।

रामेश्वरीदेवी हम सबको देखकर मुस्करातीहुई बोलीं, "अब इस सभा में केवल दो व्यक्तियों की कमी है।"

रामेश्वरीदेवी की बात सुनकर पेशकार रामदयाल के चेहरे पर मुस्कराहट आगई। मैंने नम्रतापूर्वक पूछा, "वे दो महानुभाव कौन हैं ?क्या उनके नाम मैं जानसकता हूँ।"

पंडित रामखिखावन बोले, "रामेश्वरीदेवी का मतलब सेठ दामोदरप्रसाद और..." इतना कहकर वह मौन होगए। दूसरे व्यक्ति का नाम उन्होंने नहीं लिया।

पेशकार रामदयाल बोले, "दूसरा नाम गुलाब का है। पंडित रामखिलावन ने गुलाब को निमंत्रित नहीं किया, इसका हमें हार्दिक खेद है। यदि वह स्वयं उन्हें बुलानेएं जाए तो वह आसकती हैं।"

पेशकार रामदयाल की बात सुनकर पंडित रामखिलावन के चेहरे पर हवाइयाँ उड़नेलगीं। वह डरे कि कहीं पेशकार रामदयाल उन्हें गुलाब को लाने के लिए न कहबैठें।

पंडित रामखिलावन के चेहरे पर दृष्टि डालकर पेशकार रामदयाल बोले, "घबराने की आवश्यकता नहीं है पंडित रामखिलावन ! गुलाब के घर जाने पर आपकी महानता कलंकित नहीं होगी। उस स्त्री को पहिचानना आप जैसे समाज-सेवक और राजनीतिज्ञ के लिए बहुत कठिन है।"

यह बात कहकर पेशकार रामदयाल का चेहरा गम्भीर होउठा। वह बोले, "पंडित ! आपकी आज की यह दावत हमने स्वीकार की। परन्तु अब हम चाय नहीं पीसकेंगे आपके यहाँ।" और इतना कहकर वह खड़ेहोगए।

पेशकार रामदयाल के खड़े होते ही सभा का रंग भंग होगया। पंडित रामखिलावन सिटपिटाए से घबराकर बोले, "पेशकार साहब ! आप क्रुद्ध हो-गए। आपने मेरी वर्तमान स्थिति को नहीं देखा।"

पेशकार रामदयाल बोले,"सब देखा है हमने पंडित रामखिलावन ! आपकी पूरी स्थिति से हम परिचित हैं। आपका हमसे क्या छिपा है ? हमसे अधिक आपको अन्य कौन जानसकता है ?"

इसपर रामेश्वरीदेवी मुस्कराकर सामने आतीहुई बोलीं, "अभी आपका बहुत कुछ छिपा है आपसे ! अब पंडित रामखिलावन वह पंडित रामखिलावन नहीं रहगए हैं। इन्हें आप साधारण व्यक्ति न समझें पेशकार साहब ! यदि आप आज्ञा करें तो मैं जासकती हूँ, बहन गुलाब क लिवाने के लिए।"

रामेश्वरी देवी की बात सुनकर मैं दंग रहगया। पेशकार रामदयाल की दृष्टि उनके चेहरे पर पड़ी तो मैंने देखा कि दो मोटे-मोटे आंसू लटकरहे थे। उनकी आँखों में उनकी दृष्टि रामेश्वरीदेवी की दृष्टि में गड़गई। दोनों एक क्षण एक दूसरे को देखतेरहे।

पंडित रामखिलावन की दृष्टि पेशकार रामदयाल के चेहरे पर पड़ी तो उन्हें थरथरी आगई। वह विनम्रतापूर्वक बोले, "मैं अपनी कार लेकर गुलाब को अभी बुलाएलाता हूँ पेशकार साहब !"

पंडित रामखिलावन की बात सुनकर पेशकार रामदयाल कहकहे के साथ हँसपड़े। बोले, "परेशान न हो पंडित रामखिलावन ! काफ़ी मेहमान एकत्रित होगए हैं यहाँ। गुलाब के आने की आवश्यकता नहीं है। वह आएगी भी नहीं यहाँ। यह समाज-सेवियों, क्रांतिकारियों और राजनीति के खिलाड़ियों का अखाड़ा है। वह घर-गृहस्थ की पवित्र देवी है। उसका इस मैदान में दौड़ने-

मेरी बात सुनकर पेशकार रामदयाल ने भी मेरी ओर ध्यान से देखा और सरलतापूर्वक बोले, "शर्माजी ! जिस व्यक्ति पर आपके मित्र अस्थानासाहब ने बम फेंका था वह हमारे मित्र करीमखां हैं और जिसके धोखे में उनपर बम फेंकागया था वह पेशकार रामदयाल हैं।"

पेशकार रामदयाल की यह बात सुनकर मैंने कहा, "मैं आपके कहने से पूर्व ही इस रहस्य को अपनी पुस्तक में लिखचुका हूँ। मुझे यह सब कुछ मालूम है।"

ये बातें चल ही रही थीं कि तभी सामने से अस्थाना साहब आगए। यों अस्थाना साहब का पंडित रामखिलावन से सैद्धान्तिक मतभेद था और वह उनकी कोठी पर आना पसन्द नहीं करते थे, परन्तु आज मेरे और पेशकार रामदयाल के विशेष आग्रह पर उन्होंने आना स्वीकार करलिया था।

उन्हें आते देखकर मैंने कहा, "आयु बहुत लम्बी लेकर आए हैं अस्थाना ! अभी हम सब उन्हें याद कररहे थे और वह आगए।"

अस्थाना साहब का पंडित रामखिलावन ने खड़े होकर स्वागत किया। तभी रामेश्वरीदेवी भी अपने किसी कार्य से वहाँ आगईं।

रामेश्वरीदेवी हम सबको देखकर मुस्करातीहुई बोलीं, "अब इस सभा में केवल दो व्यक्तियों की कमी है।"

रामेश्वरीदेवी की बात सुनकर पेशकार रामदयाल के चेहरे पर मुस्कराहट आगई। मैंने नम्रतापूर्वक पूछा, "वे दो महानुभाव कौन हैं ? क्या उनके नाम मैं जानसकता हूँ।"

पंडित रामखिलावन बोले, "रामेश्वरीदेवी का मतलब सेठ दामोदरप्रसाद और..." इतना कहकर वह मौन होगए। दूसरे व्यक्ति का नाम उन्होंने नहीं लिया।

पेशकार रामदयाल बोले, "दूसरा नाम गुलाब का है। पंडित रामखिलावन ने गुलाब को निमंत्रित नहीं किया, इसका हमें हार्दिक खेद है। यदि वह स्वयं उन्हें बुलानेएँ जाए तो वह आसकती हैं।"

पेशकार रामदयाल की बात सुनकर पंडित रामखिलावन के चेहरे पर हवाइयाँ उड़नेलगीं। वह डरे कि कहीं पेशकार रामदयाल उन्हें गुलाब को लाने के लिए न कहबैठें।

पंडित रामखिलावन के चेहरे पर दृष्टि डालकर पेशकार रामदयाल बोले, "घबराने की आवश्यकता नहीं है पंडित रामखिलावन ! गुलाब के घर जाने पर आपकी महानता कलंकित नहीं होगी। उस स्त्री को पहिचानना आप जैसे समाज-सेवक और राजनीतिज्ञ के लिए बहुत कठिन है।"

यह बात कहकर पेशकार रामदयाल का चेहरा गम्भीर होउठा। वह बोले, "पंडित ! आपकी आज की यह दावत हमने स्वीकार की। परन्तु अब हम चाय नहीं पीसकेंगे आपके यहाँ।" और इतना कहकर वह खड़ेहोगए।

पेशकार रामदयाल के खड़े होते ही सभा का रंग भंग होगया। पंडित रामखिलावन सिटपिटाए से घबराकर बोले, "पेशकार साहब ! आप क्रुद्ध हो-गए। आपने मेरी वर्तमान स्थिति को नहीं देखा।"

पेशकार रामदयाल बोले,"सब देखा है हमने पंडित रामखिलावन ! आपकी पूरी स्थिति से हम परिचित हैं। आपका हमसे क्या छिपा है ? हमसे अधिक आपको अन्य कौन जानसकता है ?"

इसपर रामेश्वरीदेवी मुस्कराकर सामने आतीहुई बोलीं, "अभी आपका बहुत कुछ छिपा है आपसे ! अब पंडित रामखिलावन वह पंडित रामखिलावन नहीं रहगए हैं। इन्हें आप साधारण व्यक्ति न समझें पेशकार साहब ! यदि आप आज्ञा करें तो मैं जासकती हूं, बहन गुलाब को लिवाने के लिए।"

रामेश्वरी देवी की बात सुनकर मैं दंग रहगया। पेशकार रामदयाल की दृष्टि उनके चेहरे पर पड़ी तो मैंने देखा कि दो मोटे-मोटे आंसू लटकरहे थे। उनकी आँखों में उनकी दृष्टि रामेश्वरीदेवी की दृष्टि में गड़गई। दोनों एक क्षण एक दूसरे को देखतेरहे।

पंडित रामखिलावन की दृष्टि पेशकार रामदयाल के चेहरे पर पड़ी तो उन्हें थरथरी आगई। वह विनम्रतापूर्वक बोले, "मैं अपनी कार लेकर गुलाब को अभी बुलाएलाता हूँ पेशकार साहब !"

पंडित रामखिलावन की बात सुनकर पेशकार रामदयाल कहकहे के साथ हँसपड़े। बोले, "परेशान न हो पंडित रामखिलावन ! काफ़ी मेहमान एकत्रित होगए हैं यहाँ। गुलाब के आने की आवश्यकता नहीं है। वह आएगी भी नहीं यहां। यह समाज-सेवियों, क्रांतिकारियों और राजनीति के खिलाड़ियों का अखाड़ा है। वह घर-गृहस्थ की पवित्र देवी है। उसका इस मैदान में दौड़ने-

मेरी बात सुनकर पेशकार रामदयाल ने भी मेरी ओर ध्यान से देखा और सरलतापूर्वक बोले, "शर्माजी ! जिस व्यक्ति पर आपके मित्र अस्थानासाहब ने बम फेंका था वह हमारे मित्र करीमखां हैं और जिसके धोखे में उनपर बम फेंकागया था वह पेशकार रामदयाल हैं ।"

पेशकार रामदयाल की यह बात सुनकर मैंने कहा, "मैं आपके कहने से पूर्व ही इस रहस्य को अपनी पुस्तक में लिखचुका हूँ। मुझे यह सब कुछ मालूम है।"

ये बातें चल ही रही थीं कि तभी सामने से अस्थाना साहब आगए। यों अस्थाना साहब का पंडित रामखिलावन से सैद्धान्तिक मतभेद था और वह उनकी कोठी पर आना पसन्द नहीं करते थे, परन्तु आज मेरे और पेशकार रामदयाल के विशेष आग्रह पर उन्होंने आना स्वीकार करलिया था।

उन्हें आते देखकर मैंने कहा, "आयु बहुत लम्बी लेकर आए हैं अस्थाना साहब ! अभी हम सब उन्हें याद कररहे थे और वह आगए।"

अस्थाना साहब का पंडित रामखिलावन ने खड़े होकर स्वागत किया। तभी रामेश्वरीदेवी भी अपने किसी कार्य से वहाँ आगईं।

रामेश्वरीदेवी हम सबको देखकर मुस्करातीहुई बोलीं, "अब इस सभा में केवल दो व्यक्तियों की कमी है।"

रामेश्वरीदेवी की बात सुनकर पेशकार रामदयाल के चेहरे पर मुस्कराहट आगई। मैंने नम्रतापूर्वक पूछा, "वे दो महानुभाव कौन हैं ?क्या उनके नाम मैं जानसकता हूँ।"

पंडित रामखिलावन बोले, "रामेश्वरीदेवी का मतलब सेठ दामोदरप्रसाद और···" इतना कहकर वह मौन होगए। दूसरे व्यक्ति का नाम उन्होंने नहीं लिया।

पेशकार रामदयाल बोले, "दूसरा नाम गुलाब का है। पंडित रामखिलावन ने गुलाब को निमंत्रित नहीं किया, इसका हमें हार्दिक खेद है। यदि वह स्वयं उन्हें बुलानेएँजाए तो वह आसकती हैं।"

पेशकार रामदयाल की बात सुनकर पंडित रामखिलावन के चेहरे पर हवाइयाँ उड़नेलगीं। वह डरे कि कहीं पेशकार रामदयाल उन्हें गुलाब को लाने के लिए न कहबैठें।

पंडित रामखिलावन के चेहरे पर दृष्टि डालकर पेशकार रामदयाल बोले,
राने की आवश्यकता नहीं है पंडित रामखिलावन ! गुलाब के घर जाने
आपकी महानता कलंकित नहीं होगी। उस स्त्री को पहिचानना आप जैसे
ज-सेवक और राजनीतिज्ञ के लिए बहुत कठिन है।"

यह बात कहकर पेशकार रामदयाल का चेहरा गम्भीर होउठा। वह बोले,
डेत ! आपकी आज की यह दावत हमने स्वीकार की। परन्तु अब हम
नहीं पीसकेंगे आपके यहाँ।" और इतना कहकर वह खड़ेहोगए।

पेशकार रामदयाल के खड़े होते ही सभा का रंग भंग होगया। पंडित
खिलावन सिटपिटाए से घबराकर बोले, "पेशकार साहब ! आप क्रुद्ध हो-
। आपने मेरी वर्तमान स्थिति को नहीं देखा।"

पेशकार रामदयाल बोले,"सब देखा है हमने पंडित रामखिलावन ! आपकी
स्थिति से हम परिचित हैं। आपका हमसे क्या छिपा है ? हमसे अधिक
को अन्य कौन जानसकता है ?"

इसपर रामेश्वरीदेवी मुस्कराकर सामने आतीहुई बोलीं, "अभी आपका
त कुछ छिपा है आपसे ! अब पंडित रामखिलावन वह पंडित रामखिलावन
रहगए हैं। इन्हें आप साधारण व्यक्ति न समझें पेशकार साहब ! यदि
प आज्ञा करें तो मैं जासकती हूँ, बहन गुलाब क लिवाने के लिए।"

रामेश्वरी देवी की बात सुनकर मैं दंग रहगया। पेशकार रामदयाल की
ट उनके चेहरे पर पड़ी तो मैंने देखा कि दो मोटे-मोटे आँसू लटकरहे थे।
की आँखों में उनकी दृष्टि रामेश्वरीदेवी की दृष्टि में गड़गई। दोनों एक
ग एक दूसरे को देखतेरहे।

पंडित रामखिलावन की दृष्टि पेशकार रामदयाल के चेहरे पर पड़ी तो
हें थरथरी आगई। वह विनम्रतापूर्वक बोले, "मैं अपनी कार लेकर गुलाब
अभी बुलाएलाता हूँ पेशकार साहब !"

पंडित रामखिलावन की बात सुनकर पेशकार रामदयाल कहकहे के साथ
सपड़े। बोले, "परेशान न हो पंडित रामखिलावन ! काफ़ी मेहमान एकत्रित
गए हैं यहाँ। गुलाब के आने की आवश्यकता नहीं है। वह आएगी भी नहीं
हां। यह समाज-सेवियों, क्रांतिकारियों और राजनीति के खिलाड़ियों का
खाड़ा है। वह घर-गृहस्थ की पवित्र देवी है। उसका इस मैदान में दौड़ने-

वाले खिलाड़ियों के बीच में आने का क्या काम ?"

फिर मेरी तरफ मुँह करके बोले, "शर्माजी के घर वह केवल इसीलिए चलीगई थी कि वह एक गृहस्थ है।"

रामेश्वरीदेवी बोलीं, "इसमें कोई संदेह नहीं। गुलाब बहन एक पवित्र स्त्री है। उन्होंने पेशकार साहब के साथ अपने जीवन को जिस पवित्रता के साथ निभाया है, वह नारी-जीवन के लिए अनुकरणीय वस्तु है। वह समाज के ठेकेदारों और प्रगति के पुजारियों के लिए एक महान् चुनौती है।"

रामेश्वरीदेवी की बात सुनकर पेशकार रामदयाल के चेहरे पर प्रसन्नता की रेखा खिचगई। उन्होंने रामेश्वरीदेवी की ओर दृष्टि घुमाकर कहा, "रामेश्वरी ! तुमने गुलाब को सही पहचाना है। वह वास्तव में एक देवी है। मैं हृदय से उसकी पूजा करता हूँ। उसने अपना जीवन मेरे ऊपर न्यौछावर किया है और मैंने शीला की मृत्यु के पश्चात् उसे अपने जीवन का सर्वस्व ा है। वह न होती तो संभवतः आज पेशकार रामदयाल भी न होता।"

पेशकार रामदयाल की यह बात पंडित रामखिलावन और अस्थानासाहब ने साधारण बात मानकर सुनी, परन्तु रामेश्वरीदेवी ने उसे जिन कानों से सुना वे और ही कान थे। रामेश्वरीदेवी के हृदय पर पेशकार रामदयाल के वे शब्द ऐसे बजउठे, मानो किसी ने नगाड़े पर चोट की हो और कहा हो, "ऐ नारी ! तू भी क्या अपने को नारी कहने का दावा करसकती है ? तू अधूरी है इस जीवन में और अधूरी ही रहेगी। तेरा जीवन कभी पूर्ण नहीं होगा और तेरी अन्तिम स्थिति क्या होगी, इसका भी कोई निश्चित लक्ष्य तू अभी नहीं बनासकी।"

सभा का विचित्र-सा वातावरण देखकर अस्थाना साहब बोले, "आप लोग सब व्यक्तिगत बातों में फँसगए ! यह समाजवाद का युग है। समाज की बातें सोचिए। उसमें आप सभी लोग आजाएँगे।"

अस्थाना साहब की बात सुनकर पेशकार रामदयाल बोले, "आप ठीक कहते हैं अस्थाना साहब ! परन्तु समाज का स्थान व्यक्ति के बाद आता है। मैं पहले अपने बारे में सोचता हूँ, फिर गुलाब के बारे में सोचता हूँ और फिर मेरे गाँव में एक महिला है उसके बारे में सोचता हूँ। फिर अपने छोटे भाई के विषय में सोचता हूँ और तब और किसी ऐसे व्यक्ति के विषय में सोचता हूँ

जिससे मुझे कोई लाभ होसकता है। मैं कभी किसी ऐसी चीज के विषय में नहीं सोचता जिसमें मुझे कोई दिलचस्पी न हो।

हो सकता है मेरी इस मनोवृति को आप मेरा संकुचित दृष्टिकोण कहकर पुकारें, परन्तु मैं आपके इस पुकारने की किंचित्मात्र भी चिन्ता नहीं करता। आपके इस पुकारने को मैं आप लोगों की सैद्धान्तिक उछल-कूद समझता हूं। व्यावहारिक जीवन में आप लोग मुझसे कहीं अधिक स्वार्थी हैं। आप लोग कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। मैं जो कहता हूं वही करता भी हूं। यही अन्तर है आपमें और मुझमें।"

पेशकार रामदयाल की इस सत्यवादिता पर लट्टू होकर मैं बेसाख्ता बोल उठा, "कमाल करदिया आपने पेशकार साहब! कमाल की सत्यवादिता है। आपने कितनी स्पष्टता के साथ अपनी सच्ची विचारधारा प्रस्तुत करदी।"

मेरी बात सुनकर पेशकार रामदयाल का चेहरा खिलउठा। वह मुस्कराकर बोले, "शर्माजी! आपने मेरी सचाई की दाद दी, इसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ।"

रामेश्वरीदेवी पेशकार रामदयाल की बात सुनकर बोलीं, "पेशकार साहब! यह फ़ैशन का युग है। आज फैशन केवल कपड़े-लत्ते, खाने-पीने और और रहने-सहने तक ही सीमित नहीं रहगया है। वह विचारों की दुनिया में भी प्रवेश करचुका है।"

"तुम्हारा मतलब मैं नहीं समझा, रामेश्वरीदेवी!" पेशकार रामदयाल ने पूछा।

"मतलब स्पष्ट है। आज जितने भी इज्म आपको दिखाई देरहे हैं ये नव फैशन पर आधारित हैं। इनमें नाटकीय तत्त्व अधिक हैं और व्यावहारिक तत्त्व कम।"

पेशकार रामदयाल बोले, "तो कोरी दिखावटभर हैं ये सब सिद्धान्त और वाद। जीवन जैसा चलरहा है, वैसा चलरहा है। उसमें कोई अन्तर नहीं आता।"

"आने की सम्भावना भी कम है अभी! आज देश का जीवन पहले अधिक खोखला होता जारहा है। जीवन की सचाई का लोप होरहा वास्तविकता झूठ और सच की कल्पना और तर्क के परों प

विचित्र दशा होती जारही है राष्ट्र की। समाज की दशा अस्थिर होचुकी है।" रामेश्वरी देवी बोलीं।

मेज पर चाय आगई। चाय आने पर अस्थाना साहव के वदन में कुछ स्फूर्ति दिखाई दी। उन्होंने अपने रेशमी कुर्ते की आस्तीनें ऊपर चढ़ातेहुए प्यालियों में चाय उडेली। रामेश्वरी देवी ने उनमें दूध डाला और चीनी का वर्तन सामने सरकादिया। दावत में पंडित रामखिलावन ने पर्याप्त सामान जुटाया था। लाला के वाजार का नमकीन और वजाजे की खूँट वाली हलवाई की दूकान की मिठाई थी।

पेशकार रामदयाल वोले, "लाला के वाजार का नमकीन भी खूब वनता है शर्माजी ? दिल्ली का घंटेवाला हलवाई भी क्या नमकीन वनाएगा इसके सामने। और समोसे तो......।"

पेशकार साहव की वात को वीच में ही लपकते हुए मैं वोला, "प्रशंसा में लगे रहिए पेशकार साहव ! खाना प्रारम्भ कीजिए।"

कह तो गया मैं वात, परन्तु तुरन्त ध्यान आया कि वह खाएँ किसके हाथों से। उनके दोनों हाथ-वेकार थे। उनके कपड़े पहनाने तक का काम गुलाव भाभी करती थीं।

तभी रामेश्वी देवी का ध्यान उस ओर गया। वह लज्जित सी होकर वोलीं, "कितनी भूल हुई मुझसे उस दिन। शर्माजी के मकान पर आपसे यह भी न पूछा कि आपके वह दो मजवूत हाथ कहाँ चलेगए जिनसे...।"

पेशकार रामदयाल वोले, "हाँ-हां जिनसे मैं काँग्रेसियों की पीठ पर कोड़े वरसाया करता था। यही कहना चाहती थीं न तुम रामेश्वरी देवी ?"

रामेश्वरी देवी मुस्कराकर एक प्याली चाय वनाकर उनके पास लेआईं और पास वाली कुर्सी पर बैठकर उन्हें चाय पिलाई।

चाय पिलाते-पिलाते मुस्कराकर वोलीं, "वहन गुलाव की अनुपस्थिति आपको खलने नहीं दूँगी पेशकार साहव !"

रामेश्वरी देवी की वात सुनकर पंडित रामखिलावन बोले, "पुराने संवन्धों का आप इतना ध्यान रखती हैं इसका मुझे पता नहीं था रामेश्वरीदेवी !"

पंडित रामखिलावन के व्यंग का इससे पूर्व कि रामेश्वरी देवी कोई उत्तर देतीं, पेशकार रामदयाल गम्भीरतापूर्वक बोले, "पंडित रामखिलावन ! पुराने

बच्चों का आदर करता आपके ढूँढ़ने की बात नहीं है। [illegible]
टा समझता हूँ। [illegible]
न्ते हैं।

यही आज हमारे देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है कि आज जैसे लोग देश के
ता बन गए हैं। आपके नेतृत्व में देश स्वराज्य के किस घाट पर पहुँचेगा इसका
नुमान लगाना कठिन है।"

पेशकार साहब की बातें अध्यापक साहब बड़े ध्यान से सुन रहे थे। वह उनके अन्तिम वाक्य पर अपना मत प्रकट किए बिना न रह सके। वह बहुत ही गम्भीरतापूर्वक बोले, "मैं आपके विचारों से पूरी तरह सहमत हूँ पेशकार साहब! मुझे आज से पहले पता नहीं था कि आप राजनीति में प्रवेश रखते हैं। वरना अबतक मैंने आपके समक्ष कई गम्भीर प्रश्न रखे होते।"

"क्या रखे होते महाशय?" अध्यापक साहब की बात सुनकर चाय की प्याली मेज पर टिकाते हुए पंडित रामखिलावन बोले। उनकी त्योरी चढ़ी-हुई थी उस समय। उनके मस्तक पर पड़नेवाली सिलवटों के बीच मस्तक का चंदन चटाई की तरह सिमट गया था।

उनका मुँह देखकर रामेश्वरी देवी को हँसी आगई। वह हँसी मुस्कराहट में बदलकर बोलीं, "चाय पीना बन्द न कीजिए पंडित रामखिलावन! यह चाय-पार्टी है दंगल नहीं है राजनीति के सांडों का।"

रामेश्वरी देवी के मुख से 'सांडों' शब्द सुनकर पेशकार रामदयाल खूब हँसे, खूब हँसे और फिर रामेश्वरी की ओर देखकर बोले, "'सांडों' शब्द का प्रयोग तुमने खूब किया रामेश्वरी! वास्तव में आज राजनीति के जो अखाड़े दिखाई देते हैं उनमें सांडों की कुश्तियाँ होती हैं और जनता का चूरा होता है, उनकी मस्ती में बेचारी जनता पिसती है।"

जिस गम्भीरता के साथ पेशकार रामदयाल ने यह बात कही, उसका मुझ पर गम्भीर प्रभाव पड़ा परन्तु पेशकार रामदयाल खिलखिलाकर हँसपड़े।

रामेश्वरीदेवी ने देखा और अनुभव किया कि वह हँसना पेशकार रामदयाल के स्वभाव के विरुद्ध था। वह शीघ्र ही गम्भीर होकर बोले, "मैं आजकल उसी पिसी और कुचलीहुई देहात की जनता के ही बीच में रहता हूँ रामेश्वरी देवी!"

"मैंने सुना तो है कि आप आजकल देहात रहरहे हैं और अपनी तीस रुपए माहवार की पेन्शन में ही व्यतीत कररहे हैं।"

पेशकार रामदयाल ने आगे कुछ नहीं कहा। दावत के पश्चात् सभा विसर्जित हुई और पंडित रामखिलावन ने सभी को दावत में आने के लिए धन्यवाद दिया। चलते समय उन्होंने मुझसे पूछा, "आपकी पुस्तक अब कहाँ तक लिखी जाचुकी है ?"

मैंने सरल स्वभाव से कहा, "बस इन्हीं वाक्यों तक जो मेरी और आपकी जबानों से निकलरहे हैं।"

"यानी यह आज की दावत का किस्सा भी आपके उपन्यास में आएगा ?"

"निश्चित रूप से।" मैंने कहा और देखा कि पंडित रामखिलावन का मन प्रसन्नता से खिलउठा।

: ४० :

पेशकार रामदयाल की धीरे-धीरे अपने पहले सब साथियों से भेंट होगई थी। वे सब खुशहाल थे और उन्होंने जीवन में कुछ-न-कुछ स्थायी सम्पत्ति बना ली थी। उनके जीवन सुख चैन से व्यतीत होरहे थे।

पेशकार रामदयाल ने कभी कोई स्थायी सम्पत्ति नहीं बनाई। अपने चचा-ताऊ और उनके बाल-बच्चों की सम्पत्ति पर ही अपनी पुलिस की धौंस और गाँव के गुण्डों की शक्ति से वह अधिकार जमापाए थे।

आज अचानक उनकी तबियत कुछ खराब होगई और वह गुलाब से बोले, "गुलाब ! आज जी न जाने कैसा होरहा है। मचली-सी आरही है मुझे। मैं गाँव जानाचाहता हूँ।"

"बीमारी में लोग गाँव से शहर को दौड़ते हैं और आप गाँव जानाचाहते हो। बीमारी का इलाज यहाँ होसकता हैं या गाँव में ?" गुलाब ने गम्भीरता पूर्वक कहा।

उस समय मैं भी वहाँ पहुँचगया। मेरी ओर संकेत करके गुलाब भाभी

लीं, "शर्माजी जरा मुलाहजा फरमाइए पेशकारसाहव का। कल संध्या से
पके दुश्मनों की तवियत नासाज है और आपने गाँव जाने की धुन बाँध
ली है।"

गुलाब भाभी की बात सुनकर मैं बोला, "पेशकार साहब ! आप अप
उपचार कराएँ और तब गाँव जाएँ। वहाँ तो चिकित्सा का कोई प्रबन्ध न
होगा।"

परन्तु पेशकार रामदयाल ने मेरी और भाभी गुलाब की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह उठकर बैठे होगए और चलने की तैयारी करतेहुए बोले, "शर्मा जी ! मैं चाहता हूँ कि आप स्वयँ अपनी आँखों से चलकर मेरी तीस रुपए महावार की जिन्दगी देखें। मेरे जबानी जमा-खर्च पर लिखी आपकी कहानी में वह जान नहीं आसकती जो तब आएगी जब आप उसे अपनी आँखों से देखेंगे।"

पेशकार रामदयाल का गाँव जाने का दृढ़ संकल्प देखकर मैं बोला, "मैं चलूँगा आपके साथ। मेरा उपन्यास भी अपने अन्तिम दौर पर आचुका है।"

मेरी बात सुनकर पेशकार रामदयाल बोले, "आपको शीघ्रता तो नहीं है अपने उपन्यास को समाप्त करने की ?"

मैंने कहा, "मेरी शीघ्रता से क्या काम चलेगा पेशकार साहब ! मेरा उपन्यास तो मेरे नायक के अधिकार में है। जितना वह आगे बढ़ेगा, उतना ही उपन्यास भी आगे बढ़ताजाएगा।"

भाभी गुलाब ने उन्हें रोकने का लाख प्रयास किया परंतु वह रुके नहीं। भाभी गुलाब सामने खड़ी होकर बोलीं, "पेशकार साहब ! इतने सख्त तो आप आज तक पहिले कभी भी नहीं हुए गुलाब पर। गुलाब की हर फ़रमाइश आपने पूरी की है, परंतु आज देखरही हूँ कि आप अपने इरादे से टस-से-मस नहीं हो रहे।"

पेशकार रामदयाल बोले, "बैठ जाओ गुलाब !" और इतना कहकर उन्होंने गुलाब को अपने पास मसनद पर बिठा लिया।

गुलाब भाभी सहमी-सी मौन प्रस्तर के समान उनसे सटकर बैठ गईं। मैं भी बराबर में ही बैठा था।

तो लगता है कि अब फिर लौटना नहीं होगा। जीवन की मंजिल समाप्त हुआ चाहती है। मैं उस मंजिल को अपने उसी देहात में, अपने उन्हीं खेतों के बीच जहाँ मैं पैदा हुआ था, समाप्त करना चाहता हूँ।" यह कहते-कहते पेशकार रामदयाल की जवान रुकगई। गुलाब भाभी दौड़कर एक गिलास पानी लाई और उसमें से एक घूंट पानी पीकर उनका हलक़ कुछ तर हुआ।

पेशकार रामदयाल गुलाब की पीठ पर कोहनी रखकर बोले, "गुलाब! तुम्हें छोड़कर जाते मुझे कितना कष्ट होरहा है यह मेरी ज़बान नहीं कह सकती। अपने दिल को चीरकर मैं तेरे सामने रख नहीं सकता। ऐसी दशा में तू विश्वासकर कि मैंने अपने जीवन में शीला के पश्चात् यदि किसी को अपने दिल की मलका समझा है वह तू है।"

पेशकार रामदयाल की आँखों में आँसू आगए और मैंने देखा कि भाभी गुलाब की आँखों से अविरल अश्रु-धारा बहरही थी।

पेशकार रामदयाल बोले, "गुलाब! रो मत! संसार में जो आया है एक दिन अवश्य जाएगा। तुझे अकेली छोड़कर जारहा हूँ, इसका मुझे खेद है।" और फिर मेरी ओर मुंह करके बोले, "भाई शर्मा जी! न जाने-क्यों आपके साथ मेरा बहुत गहरा लगाव होगया है। आपको मैं अपना छोटे भाई समझनेलगा हूँ।"

मैं बोला, "सो तो मैं हूँ ही पेशकार साहब! मेरे योग्य कोई कार्य हो तो आप बिना संकोच कहसकते हैं।"

पेशकार रामदयाल की आँखें मेरे चेहरे पर थीं। वह धीरे-धीरे बोले, "शर्माजी यदि मैं इस बार गाँव जाकर न लौटसका तो क्या मैं आप पर विश्वास रख सकता हूँ कि आप गुलाब को हर रविवार को सिनेमा दिखाना न भूलेंगे और इसकी उतनी ही देखभाल रखेंगे जितनी आप अपनी किसी सगी भाभी की रखसकते हैं?

गुलाब संसार की दृष्टि में वेश्या है, परंतु मेरी दृष्टि में ऐसी सती साध्वी स्त्रियाँ बहुत कम हैं।"

पेशकार रामदयाल की दृष्टि मेरी आँखों पर टिकी थी और मेरी जवान से निकलनेवाले शब्दों को सुनने के लिए उनके कान आतुर थे।

गुलाब भाभी बोलीं, "पेशकार साहब! आप जब जाहीरहे हैं तो गुलाब

की क्या चिन्ता करते हैं ? [illegible]

इसकी [illegible]

खेल-तमाशे में नहीं [illegible]

होजाती है । [illegible]

ये दोनों ही [illegible]

वनवासी हैं । यह [illegible]

वाली मस्जिद [illegible]

मदरसे की जगह बड़ी तंग है ।"

मैंने देखा कि [illegible]

मुझसे उत्तर चाहते थे [illegible]

मैं गम्भीरतापूर्वक [illegible]

गुलाब भाभी [illegible]

तक मेरी सामर्थ्य [illegible]

नहीं होनेदूँगा ।"

मेरी बात सुनकर [illegible]

अनुभव किया कि [illegible]

नष्ट नहीं होगा । [illegible]

को छोड़ने के लिए [illegible] ।

मैंने अनुभव किया कि [illegible]

सा उठता था तो [illegible]

जाता था । परन्तु तुरन्त ही वह [illegible]

यह अनुभव नहीं होने देते थे कि [illegible]

[illegible]

हाई कमाण्ड से [illegible]

त्याग और [illegible]

को चुनाव का [illegible] ।

उनकी बात सुनकर [illegible]

साहब ! [illegible]

लिए ?"

"पैसे पेशकार साहब पार्टी स्वयं देगी।" अस्थाना साहब चश्मा ठीक करते हुए बोले।

"आप व्यर्थ दिल्ली जाने का खर्च कररहे हैं आस्थाना साहब ! पार्टी के दफ्तर में क्या नोट छापने की मशीन लगी है जो आपको खर्च···।" कहते-कहते दीवान साहब को दर्द उठखड़ाहुआ और वह बेंच पर लेटगए।

थोड़ी देर में उनका दर्द कुछ कम हुआ।

गाड़ी प्लेटफार्म पर आचुकी थी। मैंने सहारा देकर उन्हें गाड़ी में बिठाया। गुलाब भाभी उनके पास बैठगई।

जनार्दन साहब प्लेटफ़ार्म के दूसरी ओर दिल्ली जानेवाली गाड़ी की ओर लपक लिए। दिल्ली जानेवाली गाड़ी सहारनपुर से आई और पेशकार रामदयाल ने देखा कि उसके एक डिब्बे से करीमखाँ और उसकी बेगम उतरे।

वही पोशाक थी उनकी। लखपती होने पर भी बीवी का वही बुर्क़ा और उनका वही अलीगढ फ़ैशन का पायजामा। कोई अन्तर नहीं आया था किसी चीज़ में।

पेशकार साहब मुझसे बोले, "शर्माजी ! देखरहेहो मियाँ करीमखाँ और उनकी बेगम को गाड़ी से उतरते। ज़रा बुला तो लाओ उन्हें। उनसे भी चलते चलाव पर भेंट करलूँ।"

गुलाब ने पेशकार रामदयाल को सहारा देते हुए कहा, "मेरा आखरी हक़ छीनकर जारहे हो पेशकार साहब ! मैं चाहती थी कि यदि मैं पहले मरूँ तो मेरा सिर आपकी गोद में हो और यदि आप पहले खुदावन्दे ताला के पास जाने की तय्यारी करें तो आपका सिर मेरी गोद में हो।"

गाड़ी का डिब्बा खाली पड़ा था। ट्रेन छूटने में अभी एक घंटा था। यह गाड़ी यहीं से चलती थी हापुड़ की ओर।

पेशकार साहब भारी गले से बोले, "गुलाब ! बात तो तुम्हारी सही है, परन्तु मेरा गाँव जाना भी उतना ही आवश्यक है। छोटे भाई और भाभी रामदुलारी को भी मैं एक बार फिर देखलेनाचाहता हूँ। जो सबसे बड़ी इच्छा है मेरे मन की वह उन खेतों को देखने की है जिन्हें अपने भाइयों से छीनने में मैंने अपने हाथ-पैर तुड़वा लिए। मैं अपनी उस झोंपड़ी को देखना चाहता हूँ जिसमें रहकर मैंने तीस रुपए माहवार का जीवन काटा है

गुलाब !"

गुलाब बोली, "आपसे जिद करना बेकार है पेशकार साहब ! मैं जानती हूं कि आप अपनी जिद से हिलनेवाले नहीं हैं। आखिर मैं ही अपने दिल पर पत्थर रखकर बैठरहती हूं अभागिन और अपनी इन आंखों से कहती हूं कि तुम भी रोना बन्द करके आखरी बार अपने प्यारे को जी भरकर देखलो। उसकी शक्ल को अपने शीशों में इतना गहरा उतार लो कि जब तक तुम में रोशनी रहे, तुम्हें उस शक्ल के अलावा और कुछ दिखाई न दे।"

पेशकार साहब ने गुलाब को तनिक सँभालतेहुए कहा, "गुलाब खुदा हाफ़िज !"

"खुदा हाफ़िज।" भरे कंठ और डबडबाए नेत्रों से गुलाब ने कहा।

तभी दोनों ने देखा कि करीमखां और उनकी बेगम दोनों उसी ओर लपके चलेआरहे थे।

"भाई करीमखां ! तुमसे खूब भेंट हुई आज चलनेचलाव पर। कल अचानक मेरी तबियत खराब होगई और देखरहा हूं कि बराबर बिगड़ती ही जारही है। इसीलिए गांव जारहा हूं।" पेशकार रामदयाल ने कहा।

"परन्तु अजीब उल्टी बात कररहे हैं आप। बीमारी में लोग शहर को दौड़ते हैं और आप गांव को दौड़रहे हैं। करीमखां बोला।"

पेशकार रामदयाल मुस्कराकर बोले, "यही बात तो शर्मा जी और गुलाब कहरहे हैं, परन्तु मेरा मन कहता है कि मुझे गांव जाना चाहिए और अपने मन की बात को मैं नहीं टाल सकता, यह तुम खूब जानते हो।"

करीमखां चुप होगए पेशकार रामदयाल की बात सुनकर। वह जानते थे कि पेशकार रामदयाल किसी बात का एक बार इरादा करने के पश्चात् उसे बदलना नहीं जानते। अपने इरादे से एक इंच भी इधर-उधर होता उनने उन्हें कभी जीवन में नहीं देखा था।

पेशकार रामदयाल करीमखां की बेगम की ओर देखकर बोले, "बेगम ! तुम्हारे वे लजीज अंडे और चाय मैं कभी नहीं भूलता। सच जानो कि उनमें मुझे जो स्वाद आता था, वह कम चीजों में पासका हूं।"

करीमखां की बेगम की दृष्टि नीचे को होगई, परन्तु अपनी चीज की प्रशंसा सुनकर उसका दिल खिलउठा।

गाड़ी का ऐंजिन लगगया और उसने समय से एक मिनट पूर्व सीटी दी। गाड़ी का सिगनल गिरगया। गार्ड की सीटी बजी। उसने हरी झंडी हिलाई और गाड़ी चलपड़ी।

करीमखाँ ने पेशकार रामदयाल को सलाम किया। भाभी गुलाब उसके पास खड़ी रोरही थीं। वह बार-बार अपने बुर्के के पल्ले से अपनी आँखें पोंछती, पेशकार साहब ने खिड़की से गर्दन निकालकर देखी।

मैंने एक कम्बल पेशकारसाहब के सहारे के लिए लगाकर उन्हें लिटा-दिया। वह लेटकर बोले, "शर्माजी! गुलाब जैसी स्त्री मेरे देखने में नहीं आई। इसने मुझे इस ग़रीबी के समय में जितना निभाया है, उतना कोई घर की औरत भी नहीं निभासकती।"

"इसमें कोई संदेह नहीं।" मैंने कहा। "गुलाब भाभी बहुत नेक तबियत हैं। साधारण स्त्रियों से आपकी तुलना नहीं की जासकती। कमाल की सभ्यता है। बातें करती है तो मालूम होता है कि अभी-अभी होठों से फूल झड़ने लगेंगे।"

मेरे मुँह से गुलाब की प्रशंसा सुनकर पेशकार रामदयाल के चेहरे पर प्रसन्नता छागई। मैंने देखा कि उनके निस्तेज पड़े वदन में एक नई ताजगी-सी दिखाई दी और वह तनिक उभरकर बोले, "आपने ठीक कहा, शर्माजी! गुलाब के दाँतों की पंक्ति जो आज पत्थर की बनी हैं, हू-बहू इतनी ही सुन्दर और इकसार थी जवानी के दिनों में। यह सच है कि जब यह हँसती थी तो मुझे फूल झड़ते दिखाई देते थे।"

"युवाकाल में निश्चय ही गुलाब भाभी रूप की रानी रही होंगी।" मैंने कहा, "आज इस आयु में भी उनके सौंदर्य में कोई कमी नहीं आई है।"

"मेरे लिए शर्मा जी, गुलाब के जब और अब में कोई अन्तर नहीं है। मेरे सामने इसका वही पुराना रूप रहता है, जिसने मुझे एकदिन अपना बनाया था। रूप से भी अधिक मैं जिस चीज़ को प्यार करता हूँ वह है इसकी सभ्यता। कह नहीं सकता आपकी क़लम उसे कहाँ तक सही-सही अपने उपन्यास में प्रस्तुत करसकेगी।"

गाड़ी अपनी पूरी गति से आगे बढ़रही थी। पेशकार रामदयाल की आँखें कुछ झपकी-सी होगईं। मैंने उन्हें जगाया नहीं, क्योंकि सोने से भी तकलीफ में

ान मिलती है।

: ४१ :

दोपहर बारह बजे हम पेशकार रामदयाल के गाँव में पहुँचे। गाँव में प्रवेश किया ही था कि एक स्त्री से, जो सिर पर सरसों का गट्ठा रखे मस्तानी अदाँ से गाँव की ओर लपकी जारही थी, हमारी भेंटहुई।

पेशकार साहब को देखकर वह रुकगई और उनके साथ मुझे देखकर तनिक अन्दाज के साथ बोली, "पेशकार जी सहर से आय रह्ये हौ ?"

पेशकारसाहब बोले, "हाँ भाभी, मेरठ से आरहा हूँ। कल तबियत खराब सी हुई तो सोचा कि अपने देहात को चलूं। वहाँ तुम जो नहीं थी ना ? इसलिए तबियत नहीं लगी।"

रामदुलारी अपने कूल्हों पर दोनों हाथ रखकर खड़ी होतीहुई बोली, "कहा मैं ही रहगई हूँ आपकू बनाउन के लैयों ! सहर मैं गुलछर्रे उड़ावते फिरो हो और यहाँ आयकै हमैं उल्लू बनावन लग्ये।"

पेशकार रामदयाल ने उस स्त्री का एक शब्द भी नहीं सुना और वह रास्ते के एक ओर खेत के मेंढे पर धीरे से बैठगए। मैंने देखा कि उनके नेत्र बन्द होगए थे और उन्हें चक्कर आगया था। यदि मैं न संभालता तो शायद वह एक ओर को लुढ़कजाते।

उनकी यह दशा देखकर वह स्त्री अपने सिर पर रखा न्यार का गट्ठा एक ओर डालकर उधर लपकी और उसने पेशकार रामदयाल को संभालकर अपने घुटने का सहारा दिया।

मैं पासके एक कुए से अपना रूमाल भिगोकर लाया और उनके मूँह पर ठण्डे पानी के छींटेदिए।

थोड़ी देर में उन्हें होश आया। नेत्र खुले तो देखा कि वह स्त्री उन्हें संभाले बैठी थी। मैं भी उनके पास ही खड़ा था।

मैंने कहा, "चक्कर आगया था आपको ! मार्ग की थकान को आप

सहन न कर सके। थोड़ा और आराम करलीजिए यहीं, तब चलेंगे गाँव।"

"अचानक चक्कर आगया शर्माजी! सिर चकराने लगा और बदन गिरगया। यदि आप न सँभालते तो मैं ज़मीन पर लुढ़कजाता।" पेशकार साहब धीरे-धीरे बोले और फिर तनिक सँभलकर उठबैठे।

थोड़ी देर में वह कुछ और स्वस्थ हुए। तब तक उनका भाई हरदयाल भी आगया। उसने आगे बढ़कर दीवान रामदयाल के पैर छुए और पास बैठताहुआ बोला, "चक्कर आगया भय्या!"

"हाँ हरदयाल! परन्तु अब चिंता की कोई बात नहीं है। मैं ठीक हूँ।"

मेरा और हरदयाल का सहारा लेकर पेशकार रामदयाल खड़े होगए। फिर धीरे-धीरे हम लोग गाँव से बाहर एक फ़र्लांग की दूरी पर उनके कुए पर पहुँचे। वह स्थान पर्याप्त सुन्दर था। दो झोंपड़ियाँ पड़ी थीं और उनके चारों ओर केले के पेड़ों की बाढ़ लगी थी। उनमें से एक झोंपड़ी पेशकार रामदयाल की थी और दूसरी में जानवर बाँधेजाते थे। पेशकार रामदयाल की झोंपड़ी के बाहर एक खाट पड़ी थी और चार मूढ़े बिछे थे। पेशकार साहब अपनी खटिया पर लेटगए और मैं मूढ़े पर बैठगया।

पेशकार रामदयाल मेरी ओर मुँह करके बोले, "आपको कष्टदिया मैंने शर्माजी! परन्तु मजबूर था मैं। क्योंकि आपने अपना उपन्यास पूरा कराने का उत्तरदायित्व मेरे ऊपर डालदिया था।"

पेशकार साहब की बात सुनकर मैं मुस्कराताहुआ बोला, "पहले आप स्वस्थ होने की चिन्ता कीजिए, पेशकार साहब! उपन्यास तो पूरा हो ही जाएगा।"

पेशकार रामदयाल उठकर खाट पर बैठगए और हरदयाल की ओर संकेत करके बोले, "यह मेरा छोटा भाई है हरदयाल। इसी के कारण मुझे गाँव में आना पड़ा। यह किसी योग्य नहीं निकला। यदि पढ़-लिख जाता तो क्यों मैं....."सामने फैली ज़मीन की ओर संकेत करके बोले, "इस ज़मीन के लिए अपने हाथ-पैर तुड़वाता? क्यों अपने चचा-ताऊ और उनके बाल-बच्चों से शत्रुता बाँधता? मेरा गुजारा तो आप देखहीचुके हैं कि गुलाब के साथ रहकर भी होसकता था?"

मैंने गम्भीरतापूर्वक हरदयाल की ओर देखा।

"यह पढ़ा नहीं, इसीलिए मुझे सूझी कि इसे घर की जमीन में ही खेती पर लगादूं। परन्तु यह यहां भी कुछ नहीं करसका। [illegible], [illegible], गुलाब और लीले पहलवान को आप देख ही चुके हैं। उनसे कुछ कम [illegible] इन महाशय को भी मैंने नहीं दिया। कुछ अधिक ही दियाहोगा। परन्तु अन्तर यही रहा कि उन्होंने उसका सही प्रयोग किया और यह महाशय उसका सही प्रयोग न करसके।"

हरदयाल ने पेशकार रामदयाल के शब्द शर्बत के घूंट की तरह पीलिए; उसपर उनका कोई प्रभाव नहीं हुआ। वैसे शब्द न जाने कितने व्यक्तियों के सम्मुख पहले भी अनेकों बार दुहराए जाचुके थे।

वह स्त्री जिसने पेशकार साहब को संभाला था, अब भी उन्हें सहारा दिए बैठी थी और धीरे-धीरे उनके सर के बालों में उंगलियां डालकर कुछ देख रही थी। वह बहुत थकगए थे। लेटगए और उन्हें थोड़ी नींद की झपकी-सी आई तो स्त्री ने उनका सिर तकिए पर रखदिया। फिर किसी से कुछ कहे बिना ही वह लपककर गांव की ओर चलदी। हरदयाल भी धीरे से एक ओर को खिसकगया।

मैंने खड़े होकर आसपास के खेतों को देखा। झोंपड़ी के चारों ओर खड़े केलों पर लटकी गहलों को देखा, खेतों पर खिले फूलों को देखा, उसके बीच जंगल में शान के साथ खड़ी पेशकार रामदयाल की झोंपड़ी को देखा और उसके सामने खटिया पर लेटे पेशकार रामदयाल को देखा। मैं फिर आकर मूढ़े पर बैठ गया। मेरी दृष्टि पेशकार रामदयाल के चेहरे पर थी। उन्होंने थोड़ी देर में करवट ली और मेरी ओर को मुंह करके आंखें खोलीं।

मैं बोला, "अब कैसी तबियत है आपकी?"

"अब कुछ ठीक है शर्मा जी! रेल की यात्रा से फिर कुछ [illegible] और घिरनियां आनेलगी थीं।" पेशकार रामदयाल ने कहा।

"कमजोरी में घिरनियां अधिक आती हैं।" मैं बोला।

पेशकार रामदयाल खाट पर तनिक झुककर बैठगए [illegible] पुलन्दे में उन्होंने अपनी कमर लगाली। तभी सामने से [illegible] आदमी आता दिखाई दिया। वह उसी झोंपड़ी की ओर [illegible] देखकर वह बोले, "शर्मा जी, मैं सोचरहा था कि इस [illegible]

सुना डालूं, जिससे आपके उपन्यास की कहानी का सिलसिला बन जाए। परन्तु देखरहा हूँ कि यहाँ आने वालों से ही अवकाश नहीं मिलेगा।"

मैं बोला, "पहिले आप मिलने-जुलने वालों से बातें कीजिए। उपन्यास के किस्से को तो अभी जाने कितना और आगे बढ़ना है। आपके पास आने-जाने वाले स्वयं मेरे मस्तिष्क और हृदय पर आपका किस्सा लिखते जाएंगे। आप को बहुत कम कष्ट करना होगा।"

मेरी यह बात सुनकर पेशकार रामदयाल के होठों पर हँसी खेलउठी। वह मुस्कराकर बोले, "शर्मा जी! आप हर चीज से अपने मतलब की चीज निकाल लेते हैं, यह मैंने देखा है। इन्सान को यही करना भी चाहिए। इतनी लम्बी-चौड़ी दुनियाँ पड़ी है, अपना सबसे क्या सम्बन्ध? अपना सम्बन्ध तो सचमुच उसी से है जो अपने आस-पास की दुनियाँ है।"

वह आदमी चारपाई के पास आगया। उसने चादर में कोई चीज छिपाई हुई थी और छिपाकर ही वह उसे पेशकार रामदयाल को देना चाहता था।

पेशकार रामदयाल ने उसे छिपाया नहीं। वह बोले, यह देसी शराब बोतल है शर्मा जी! क्षमा कीजिए, मैंने आप से झूठ बोला कि अब मैं शराब नही पीता। परन्तु सच यह है कि मैं शराब के बिना रह ही नहीं सकता। यहाँ गाँव में यदि मुझे यह रमला न मिलगया होता तो मेरे लिए जीना कठिन था।"

मैं उसे देखकर बोला, "तो यह महाशय इसे स्वयं तय्यार करते हैं।"

"जी?" रमला ने कहा, "आप शौक करें तो आपको मेरी खूबी का पता चले। लाजवाब नशा करती है मेरे हाथ की खींचीहुई शराब बाबूजी?"

वह पेशकार साहब से बोला, "इस बार की शराब में कमाल का सरूर है दीवानजी! थाने में पाँच बोतलें पहुँचाई थीं। पाँच की आज उनकी फिर फरमाइश आई है। नए दारोगा जी ने बहुत पसन्द की।"

पेशकार रामदयाल बोले, "शर्माजी! देहात और शहर में कितना अन्तर है, देखा आपने? वहाँ जिन शौकों के लिए पैसा खर्च करना होता है, वे यहाँ मुफ्त प्राप्त होजाते हैं। हमारा यह लड़का बड़े कमाल की शराब खींचता है।"

"तभी तो यह आपकी विशेष कृपा का पात्र है।" मैंने कहा।

मेरी यह बात सुनकर पेशकार रामदयाल बोले, "जहाँ तक कृपादृष्टि की

बात है शर्मा जी ! वह मेरी हर उस इन्सान पर रहती है जो मेरा आदर करके चलता है। जब मैं आया था तो इस लड़के का नाम पुलिस के रजिस्टर में नम्बर दस के बदमाशों में दर्ज था और रोज़ाना रात को इसके मकान पर पुलिस आवाज लगाती थी। नाक में दम था बेचारे का।"

सामने खड़ा रमला कृतज्ञतापूर्वक हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाताहुआ बोला, "बाबू जी पेसकार साहब सच्च कहैं हैं, मेरा नाक में दम करा हुआ था इा थाने की पुलस ने।"

"इसे मैंने पुलिस के चंगुल से निकाला।" पेशकार रामदयाल गर्व से बोले और फिर रमला की ओर मुँह करके मूँछें चढ़ाते हुए पूछा, "क्यों वे, रमला ? क्या हाल था तेरा जब हम गाँव में आए थे ? पुलिसवाले तेरी हफ्ते में कितनी बार मरम्मत करते थे ? कितनी बेगार लीजाती थी मुझ से ?"

रमला को पेशकार रामदयाल के याद दिलाने से अतीत का ध्यान हो आया। वह खड़ा-खड़ा काँप रहा था। उसके बदन में एक थरथरी-सी आई और फिर अपने को सँभालकर बोला, "पेसकार साब सुकर मानूँगा हूँ आपका आपने मुझे और चाची कू पुलस के चुंगल से निकाल दिया। आपने दूसरी जिन्दगी बकसी है मुझे। आपकी बदौलत ही तो आज हाकम हुक्कामों तक में पूछ है मेरी।"

रमला की बात सुनकर पेशकार रामदयाल बोले, "मजे की जिन्दगी काटरहा है आजकल रमला। वह स्त्री जो रास्ते में मिली थी, इसी की चाची है और मेरी भाभी। बड़ी जीदार स्त्री है शर्मा जी ! शहरों में आपने तेज़-से तेज स्त्रियाँ देखी होंगी। परन्तु आज मैं आपको देहात की एक स्त्री दिखाने लाया हूँ। ज़रा इसे भी अपनी पैनी दृष्टि से देखिए।"

वह रमला से बोले, "अबे खड़ा क्या है ? जरा हुक्का ताज़ा करके एक चिलम तो भरला।"

रमला हुक्का लेकर कुए पर चला गया।

वह बोले, "गाँव में केवल घर-गृहस्थी की दब्बू स्त्रियाँ ही नहीं होतीं शर्मा जी ! जिन्दादिल स्त्रियाँ भी हैं। हमारी यह भाभी बड़ी जीदार स्त्री हैं। पीने-पिलाने भी में बड़ी ही रंगीन तबियतपाई है इसने। मेरे जीवन के ये अन्तिम दिन इसी की बदौलत कटगए। वरना न जाने क्या दशा होतीमेरी ?"

मैंने पूछा, "क्या इन्हीं का नाम रामदुलारी है ?"

"ठीक पहचाना आपने।" और फिर दो खेतों के बीच गाँव की ओर से आनेवाली वाट पर दृष्टि फैलाकर बोले, "सुनरहेहो वाट पर किसी के पैरों की आवाज ? मैं एक फर्लाङ्ग की दूरी से रामदुलारी के पैरों की आवाज को पहचान लेता हूँ।"

मैंने गाँव की ओर देखा तो सचमुच संध्या के झुटपुटे में वह स्त्री सिर पर वोहिया रखे आरही थी।

ग़ज़व की चाल थी उसकी। आयु पेंतालीस से कम न होगी परन्तु सीने का उभार ज्यों का त्यों था। दृष्टि सीधी और माथा उभराहुआ था। कद न वहुत लम्बा, न वहुत नाटा। वदन न वहुत मोटा, न वहुत पतला। रंग भी उसका मैंने देखा बीच के दर्जे का ही था परन्तु सफाई थी चेहरे पर। कोई झुर्री नहीं थी कहीं, कोई दाग-धव्वा नहीं था उसपर।

वह पेशकार रामदयाल की झोंपड़ी के सामने ऐसे आकर खड़ीहोगई जैसे किसी माँद के सामने शेरनी आखड़ीहुई हो। उसे देखकर पेशकार रामदयाल वोले, "यह हमारी भाभी हैं शर्मा जी ! यदि आपसे सच कहूँ तो इन्हीं की वदौलत मैं इस देहात में इतने दिन टिकपाया। यदि इनका सहारा मुझे न मिलाहोता तो मैंने यह देहात कभी का छोड़दिया होता। देखिए कितना ध्यान रखती हैं मेरा। हरदयाल अपनी घर-गृहस्थी की झंझटों में फँसा है और यह खाना वनाकर लेआई।"

रामदुलारी ने एक मूढ़े पर खाने का वोहिया टिका दिया और फिर झपटकर कुए से एक वाल्टी पानी भरलाई। वह सामने खड़ी होकर मुस्कराती हुई वोली, "थकान उतारन कू आप हाथ मुँह धोय लेंय। रोटी खायलें तो मेरा एक काम खतम हैजाय।"

रामदुलारी की वात सुनकर पेशकार रामदयाल वोले, "इनकी आज्ञा को मानने में मैं कभी आनाकानी नहीं करता शर्मा जी ! आज मेरे साथ आपको भी उसका पालन करना होगा।"

मुझे वड़ी भूख लगी थी। मैं वोला, "भाभी की आज्ञा, मेरे लिए न मानना और भी कठिन है।"

मैं मुँह हाथ धोकर मूढ़े पर सामने वैठगया। वीच में एक मूढ़े पर राम

दुलारी ने वोहिए से निकालकर रोटियाँ रखदीं। पानी के हाथ की मोटी-मोटी नमक की रोटियाँ थीं। उनके वीचों-वीच अचार की फाँक लगी थीं। एक कटोरे में प्याज के आलू थे। वस यहीं था भोजन।

पेशकार रामदयाल हँसतेहुए वोले, "ऐसा भोजन आपने कभी नहीं खाया होगा शर्माजी !"

मैं वोला, "यह सच है पेशकार साहव, कि मेरा नित्य का भोजन ऐसा नहीं है, परन्तु मैं इसे वड़े आनन्दपूर्वक खाऊँगा। मेरे सामने भूख लगने पर जो भी भोजन आजाता है, उसे मैं पूरी रुचि के साथ खाता हूँ। अधिक चटपटे भोजन में मेरी रुचि नहीं है।"

मेरी यह वात सुनकर पेशकार रामदयाल अपनी खाट के सिरहाने से रमला की लाई हुई वोतल उठाकर मेरे सामने करतेहुए वोले, "भोजन को आनन्दपूर्ण वनाने की इससे वढ़िया दवा आपको और नहीं मिलसकती शर्मा जी ! यह रद्दी-से-रद्दी भोजन को स्वर्ग का भोजन वना देती है !"

मैं मुस्कराकर वोला, 'पेशकार साहव ! भोजन तो वदलता नहीं [illegible] दवा से, हाँ, आदमी वदल जाता है; उसकी जवान वदल जाती है।"

मेरी वात सुनकर पेशकार रामदयाल खिलखिलाकर हँसपड़े। वोले, "शर्माजी आदमी को ही तो वदलना है। आदमी वदलजाए तो मोटे-से-मोटा खाने और मोटे-से-मोटा पहिनने में भी आनंद आनेलगे।"

"आप ठीक कहरहे हैं।" मैंने कहा। "इन्सान को वदलने की आवश्यकता है।"

पेशकार रामदयाल ने मेरे देखते-देखते वह देसी शराव की वोतल मुँह से लगाली और ठीक आधी वोतल पीकर दम लिया। फिर वोतल एक ओर रखदी और मेरी ओर देखकर वोले, "शर्माजी ! यह रामदुलारी है, [illegible] भाभी ! जिसका हमने कई वार आपसे जिक्र किया है।"

दीवान रामदयाल की यह वात सुनकर रामदुलारी के चेहरे पर [illegible] एक मुस्कान भरी लालिमा [illegible]। उसके सीने में उभार आया [illegible] उसके वदन में एक सिहरन सी [illegible]।

रामदुलारी मुझसे वोली, "[illegible] जी ! आप इनकी [illegible] करिये। दिवानजी [illegible] हैं। ये [illegible] कहा है और [illegible]

ोऊ नाँय जान सकत ।"

रामदुलारी की बात सुनकर मैं मन में मुस्कराया और अनुभव किया कि ाह स्त्री पेशकार रामदयाल की विशेषता को पहचानती थी। मैं मुस्कराकर ोला, "भाभी ! मैं तो आपका और इनका दोनों का ही विश्वास करता हूँ। ादि आप लोगों का विश्वास न करूँगा तो फिर किसका करूँगा ?"

"इतवार आदमी कू अपनी अक्कल करना चइए।" रामदुलारी ने कहा। "मेरा इन का कहा इतवार ! मैं इनन कू बनावत हूँ और ये मोकू बनावत हैं।" इतना कहकर रामदुलारी का चेहरा खिलखिला उठा।

"परन्तु मैं ऐसा नहीं मानता।" मैंने कहा। "मैं तो यह मानरहा हूँ कि आप दोनों मिलकर मुझे बनारहे हैं।"

मेरी बात सुनकर दीवान रामदयाल ठहाका मारकर हँस पड़े। बोले, "भाई खूब कहा तुमने शर्माजी ! सत्य भी यही है कि हम दोनों की बातें प्यार की मलाई में लिपटीहुई हैं। उनके मिठास का अनुमान हम ही लगा हैं, कोई अन्य नहीं। आपने उनका सही अनुमान लगाया, इसलिए मैं आपकी बुद्धिमत्ता की सराहना करता हूँ।"

रामदुलारी को फिर दीवान रामदयाल ने मेरा परिचय दिया और बताया कि मैं उनके ज़ीवन को लेकर एक पुस्तक लिखरहा हूँ।

रामदुलारी बोली,"म्हारी जिन्दगी पै आप किताब लिख रह्ये हैं ? कमाल आदमी हैं, आप भी। राम, किरसन कू लेकै कछु लिखते। गाँधी बाबा या पंडत जी कू लेकैं कछु लिखते, तौ इनाम पायजाते सरकार सैं, म्हारी जिन्दगी लिखने मैं आपकू कहा मिलैगा ?"

इतना कहकर उसने प्रश्नवाचक दृष्टि से मेरे चेहरे पर देखा।

मैं बोला, "भाभी, मैं आम आदमी के जीवन की सचाई खोजता फिरता हूं। राम, कृष्ण, गाँधी और जवाहर आम आदमी नहीं हैं। ये विशेष आदमी हैं और मैं विशेष आदमियों को आदमी नहीं मानता। इनके पीछे चलने से आम आदमियों के समाज का भला नहीं होसकता।"

मेरी बात सुनकर पेशकार रामदयाल दंग रह गए। रामदुलारी की समझ में कुछ न आया। अब हम खाना खाचुके थे। रामदुलारी खाने का बोहिया लेकर चलीगई। उससे और कोई विशेष बात नहीं हुई।

का सिरा पेशकार साहब के पैरों पर डालतेहुए कहा।

उसी समय हरदयाल खाना लेकर आगया।

"क्या लाए हो हरदयाल ?" पेशकार साहब ने पूछा।

"खाना लाया हूँ भय्या जी ! घरवाली के मैके में गमी होगई थी, सो वह परसों वहाँ चलीगई। घर पर खाना बनाने वाली कोई थी नहीं। ब्राह्मणी को बुलवाकर खाना बनवाने में देर होगई।" हरदयाल ने कहा।

"कोई बात नहीं। खाना मूढ़े पर रखदो और तुम जाकर आराम करो। हम लोग खापी लेंगे।" बड़ी सादगी से पेशकार रामदयाल ने कहा।

हरदयाल ने उनकी आज्ञा का पालन किया।

हरदयाल के जाने पर पेशकार रामदयाल गम्भीरतापूर्वक बोले, "तो "शर्मा जी अब कागज-कलम सँभाल लीजिए और लालटेन की रोशनी तनिक तेज कर लीजिए।"

मैंने झोपड़ी के बीच वाले बाँस में बँधी लालटेन की बत्ती तेज करदी और पर आलती-पालती लगाकर अपना पेड लेकर जेब से फाउन्टेनपेन निकाल लिया। मैं सुधर कर बैठगया और पेशकार रामदयाल ने खाट पर लेटे-लेटे मेरी ओर को करवट ली। करवट लेकर बोले, "तनिक कष्ट तो होगा आपको, परन्तु मजबूर हूँ मैं। वह सामने रखी बोतल मुझे पकड़ा दीजिए और फिर मैं बस पूरी तरह आपका उपन्यास पूरा कराने पर जुटजाऊँगा।"

मैंने शराब की बोतल उनके हाथ में देदी और देखा कि उन्होंने एक ही बार में शेष बोतल खाली करदी। ज़रा सुधरकर लेटते हुए बोले, "हां तो मैं अपनी नौकरी से प्रथक होकर यहाँ चलाआया।

उसी समय मेरे चचा भी अपनी नौकरी से पेंशन पाकर गाँव में आए और वह जो गाँव में प्रवेश करने पर आपने पक्का मकान देखा था, वह उन्हीं ने बनवाया था।"

"तो आपने जो पीछे कहा था कि आपके चचा गाँव से चलेजाने पर फिर लौटे ही नहीं, वह बात ग़लत थी। वह गाँव में लौटे और आबाद होने का उन्होंने प्रयत्न भी किया।" मैंने कहा।

"मैंने सचमुच ही वह बात ग़लत कही थी आपसे शर्मा जी ! मैं उसके लिए लज्जित हूँ। परन्तु अब जो कहूँगा वह सही-सही कहूँगा। मैं जब गाँव

में आया तो ताऊजी के लड़कों का बोलबाला था। लीले पहलवान के पट्टे गांव से नौ-दो-ग्यारह होचुके थे। हरदयाल दबी बिल्ली की तरह ताऊजी के लड़कों से कान कटारहा था।

मैं गाँव में आया तो मेरी जेब खाली थी।"

मैंने पूछा, "इतनी घूस ली तो क्या दस-बीस हजार भी जमा न करसके आप ?"

"क़सम लेलीजिए शर्माजी ! एक कौड़ी भी नहीं थी मेरी जेब में। मैंने गांव में आते ही सबसे पहले अपने चचा पर हाथ रखा और उन्हें किसी तरह ताऊजी के लड़कों से लड़ादिया। ताऊजी के लड़कों को भी उस समय बिना छनी चढ़ीहुई थी। पूरे परिवार की ज़मीन उनके हल के नीचे थी।"

"तो आपने-अपने चचा की पीठ ठोंकदी और कहदिया कि चचा रुपया मेरे पास नहीं है परन्तु और सब तरह मैं आपके साथ हूँ।" मैंने पेशकार रामदयाल की ओर देखतेहुए कहा।

"आपने मेरी जबान से निकले हुए ज्यों-के-त्यों शब्द दोहरा दिए शर्माजी ! मैंने बिल्कुल येही शब्द चचा से कहे और वह बोले, "बेटा पैसे की चिन्ता न करो। भाई साहब के लड़कों ने बेईमानी पर कमर बाँधी हुई है, इन्हें सबक मिलना ही चाहिए।"

"चचा का इतना आश्वासन प्राप्त कर आपका मार्ग साफ होगया और एक फ़ौजदारी भी होगई हल्की-मोटी, जिसमें आपने अपने ताऊजी के लड़कों को अच्छी-खासी मरम्मत करादी।" मैंने मुस्कराकरकहा।

मेरी यह बात सुनकर पेशकार रामदयाल चौकन्ने होउठे और मेरी ओर ध्यान से देखकर बोले, "शर्माजी! आपको अवश्य ज्योतिष का भी कुछ ज्ञान है। आपने यह जो कुछ कहा सोलह आने सही है।

मैंने ताऊजी के लड़कों की मरम्मत कराई और सब ज़मीन पर अधिकार करलिया। मेरा दबदबा फिर से गाँव भर पर जमगया।"

"फिर पूरी जमीन पर खेती करनी प्रारम्भ करदी आपने। आपके चचा ने आपको खेती में भी पूरी सहायता दी और आपने उस खेती में जो कुछ पैदा हुआ वह सब उठवाकर अपने घर में भरलिया। अपने चचा के घर एक दाना भी नहीं जानेदिया आपने।" मैंने गम्भीरतापूर्वक कहा। "यानी विश्वा-

ासघात किया आपने अपने चचा के साथ ?"

पेशकार रामदयाल की गर्दन झुकगई मेरे समक्ष। उन्होंने स्वीकार किया, 'यह सत्य है शर्माजी ! मैंने चचा के साथ विश्वासघात किया। परिणाम यह हुआ कि उन्होंने मेरा साथ छोड़ दिया। वह संतोष के साथ अपने घर जाकर बैठगए।"

"उनके घर जाकर बैठते ही आपके ताऊजी के लड़के अपनी जमीन आपसे छीनने को उठखड़ेहुए और उन्होंने आपके हाथ-पैर भी तोड़ दिए।" मैंने कहा।

"आपका अनुमान सही है शर्माजी ! मेरी बेईमानी का फल मुझे भगवान् ने बहुत शीघ्र दिया।" इतना कहकर पेशकार रामदयाल के बदन पर थरथरी-सी आगई। मैंने देखा कि क्रोध की रेखाएँ उनके चेहरे पर उभर आईं।

"ठीक है आपने जो कुछ किया, परन्तु यह सब आपके बड़प्पन के योग्य ीं था। आपके चचा पूरी जमीन कर कब्जा करने को तभी उद्यत हुए थे आपने यह करदिया था कि पंच-फैसला आप को स्वीकार होगा। जमीन पर अधिकार होजाने पर पंच-फैसला भी नहीं होने दिया आपने। आपके मन पर बेईमानी छागई। ऐसा काला दाग आपके जीवन में और कहीं भी देखने को नहीं मिलता।" मैं कहता जारहा था और पेशकार रामदयाल चुपचाप सुनते जारहे थे। "आप इस समय परिवार में सबसे बड़े हैं और परिवार की पूरी जायदाद आपके पास हैं। आप बारूद पर बैठे हैं। जिस दिन इसमें आग लगेगी उस दिन आपका परिवार भस्म होजायेगा।

आपका कर्त्तव्य था कि जिस दिन आपके हाथ में पूरे परिवार की जमीन आगई थी उसी दिन आप उसे तीन हिस्सों में बाँट देते। परिवार की पारस्परिक कलह की बुनियाद मिट जाती और आपकी सब इज्जत करते।"

मेरी बात सुनकर पेशकार रामदयाल बोले, "बात तो आपकी सही है, शर्माजी ! परन्तु इधर मैं कर्ज में दब गया हूँ उससे उभरने का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता। सोचता हूँ कि जिस ज़मीन के झगड़े में यह कर्ज़ हुआ है उसी की पैदावार से इसे पूरा करूँगा. परन्तु मैं देख रहा हूँ कि ज़मीन पड़ी रह जाती है और मैं कुछ भी नहीं कर पाता।"

"इसी तरह एक दिन आपकी आँखें मिच जाएँगी। इस ज़मीन को इसी

ा में छोड़कर आपके ताऊजी चले गए। उनके मरने के बाद आपके परिवार
क्या तूफान आया वह आपने देखा।

आज इस झोंपड़ी में बैठकर लिख रहा हूँ पेशकार साहब कि आपकी
आँखें निकलते ही उससे भी बड़ा तूफान आयेगा इस परिवार में। बुद्धिमत्ता
इसी में है कि आप इस उलझन को अपनी आँखों के सामने समाप्त करदें और
अपनी तीस रुपए माहवार के जीवन को शान्तिपूर्ण बनालें।"

पेशकार रामदयाल को हँसी आगई मेरी बात पर। वह बोले, "मैं शान्ति
का पुजारी नहीं हूँ शर्माजी! उथल-पुथल मुझे पसन्द है और उथल-पुथल में
ही दबदबा कायम होता है। खाली जेब लेकर मैं इस देहात में आया था और
आज पूरे परिवार की जमीन का मालिक हूँ। पूरे गाँव भर में मैं किसी के
द्वार पर कभी नहीं जाता। पूरा गाँव इसी द्वार पर, इसी जंगल की झोंपड़ी
पर टक्कर मारता है।

गाँव में जो भी अफसर आता है वह इसी झोंपड़ी पर आता है। यह है
इस गुरबत में भी पेशकार रामदयाल का दबदबा।" रौब के साथ पेशकार
रामदयाल बोले।

तभी मैंने देखा कि सामने से एक काली परछाईं सी आती दिखाई दी।
मैंने उधर गर्दन घुमाई तो पेशकार रामदयाल बोले, "रामदुलारी होगी।
रमला होगा उसके साथ।"

वे दोनों थे। दोनों के सिरों पर बड़े-बड़े न्यार के गट्ठे थे। उन्हें उन
दोनों ने झोंपड़ी के सामने पटक दिया और फिर जरा सुधरकर झोंपड़ी में घुसे।

मैंने पूछा, "इतनी रात को भी आप लोग काम करते हैं?"

पेशकार रामदयाल मुस्कराकर बोले, "शर्माजी कुछ काम रात में ही किए
जाते हैं। जैसे दूसरों के खेत से गड़ा-दो-गड़ा, न्यार काटने का काम रात में ही
होता है। इसे चोरी मत समझना आप, क्योंकि यह काम यहाँ सभी लोग करते
हैं। ऐसी दशा में जो नहीं करता उसे मैं मूर्ख समझता हूँ।"

रामदुलारी बोली, "यामें कहा सक है। म्हारे पड़ौस वालन के घर में रात
भर गँडासा चलत है। तो कहा वे अपने खेतन के न्यार की कुट्टी काटत हैं?
सब यूं ही अपना काम चलावत हैं।" फिर मेरी ओर देखकर बोली, "न्यार की
कमताई है गाम में बाबूजी! जानवरन का पेट तो पाटना ही होय है।

ुवान हैं विचारे। उननकू भूखा कैसे रहन दियाजाय ?"

रामदुलारी की बातें सुनकर मैं चुप होगया। कोई उत्तर नहीं था उसका। स्तव में जानवरों को भूखा कैसे रहने देते ?

रमला मेरे पास आकर बोला. "आप क्या कर रहे हैं बाबूजी ? आप तो छ लिख रहे हैं ?"

पेशकार रामदयाल बोले, "रमला यह नाविल लिखते हैं, जैसे तुमने मेरी ाट पर पड़े देखे होंगे। आजकल यह जो नाविल लिख रहे हैं उसमें तुम्हारा, ामदुलारी का और मेरा किस्सा है।" यह कहते-कहते पेशकार रामदयाल ो फिर बड़े जोर की खाँसी उठी। रामदुलारी तथा रमला ते उन्हें बड़ी ावधानी से सँभाला। तकिए के सहारे उन्हें धीरे से लिटा दिया। फिर उन्हें राब के नशे में नींद-सी आगई।

मेरे लिए भी रमला ने वहीं एक खाट बिछादी और मैं उस पर लेटगया। मला ने एक लोटा पानी लाकर मेरी पास रखदिया। रामदुलारी बोली, बाबूजी' हम लोग अब जारहे हैं। सवेरे आजाएँगे। आपको कष्ट नहीं होगा ़ प्रकार का।" और वे दोनों चले गए।

मुझे काफ़ी देर तक नींद नहीं आई। मैं पेशकार रामदयाल के विषय में ोचता रहा। मैंने देखा कि उस दशा में भी वह मस्त थे। उन्हें कोई चन्ता नहीं थी। जो होगया, सो होगया। जो करदिया सो करदिया। होने ौर करने के पश्चात् उसपर पछताना वह नहीं जानते थे।

पेशकार रामदयाल से जो टकराया, उसे उन्होंने चकनाचूर करदिया। नका अपना बदन भी भाइयों की लाठियों से चकनाचूर हुआपड़ा था, परन्तु नके दबदबे में कमी नहीं आई।

उस दिन मैं बहुत रात्रि तक उनके विषय में सोचतारहा। वहीं सोचते-ोचते मुझे पता नहीं कब नींद आगई।

: ४३ :

मैं प्रातःकाल उठा तो सूर्य उदय होचुका था और उसकी किरणों का प्रकाश झोंपड़ी में आरहा था। पेशकार रामदयाल मुझसे पहले जगे थे और रमला बाहर कुट्टी काटरहा था। झोंपड़ी से बाहर ही कुछ दूर बैलों की एक खोर था, जिसपर तीन हड्डियों के पिंजर मात्र बैल बँधे थे। हरदयाल कुए की मन पर बैठा कुल्ला कररहा था।

गांव वहाँ से लगभग एक फर्लाङ्ग की दूरी पर था और वहीं तक रास्ते के दोनों किनारों पर कुछ लोगों ने अपने घेर बनाकर गाँव से इस झोंपड़ी को मिलादिया था।

तभी मुझे रामदुलारी आती दिखाई दी। उसे देखकर पेशकार रामदयाल बोले, "आँखें ठीक से खुली या नहीं अभी आपकी शर्मा जी ! देखिए देहात का सुबह और शाम शहर के सुबह और शाम से कितना भिन्न है। यह परिन्दों की चहचहाहट और सूर्य की किरणों का घरों में दौड़कर भरजाना शहर में प्राप्त नहीं होता।

रामदुलारी लपकी चली आरही है। चाय बनाकर लाई होगी आपके लिए। इस औरत की जितनी भी प्रशंसा की जाए शर्माजी, उतनी ही कम है।

जिस दिन से मैं गाँव में आबाद हुआ मैंने इससे कहदिया कि रामदुलारी मेरी तीस रुपए की पेन्शन में बीस रुपए तेरे लिए हैं। तू इससे अपना और मेरा खाने-पीने का काम चला। बीस रुपए में ही इसने वह ठाट बनारखा है कि क्या कोई घर की औरत बनाएगी। मुझे कभी कोई कष्ट नहीं दिया इसने। पेन्शन आते ही बीस रुपए इसके हवाल करदेता हूँ।"

"इसीलिए हरदयाल आपसे रुष्ट रहता है।" मैंने खाटपर बैठतेहुए कहा।

हरदयाल के रुष्ट होने की बात सुनकर पेशकार रामदयाल बोले, "किसी

; रुष्ट होने की रामदयाल कभी चिन्ता नहीं करता, शर्माजी ! कोई रुष्ट होता हो तो हो, प्रसन्न रहता हो तोरहे। पेशकार रामदयाल के लिए वह सब बेसूद है। उसने अपने जीवन में कभी किसी से कुछ नहीं चाहा। कुछ किया ही है किसी के लिए, कुछ इच्छा नहीं रखी।

वैसे मैं जानता हूँ कि वह कुढ़ता है मेरी इस बात से। परन्तु शर्माजी ! आप देखरहे हैं कल शाम से, कितनी सेवा यह हमारी कररही है। क्या कोई घरवाली देखभाल करेगी अपने मर्द की, जो रामदुलारी मेरी करती है।"

"इसमें कोई संदेह नहीं।" मैंने कहा और तब तक रामदुलारी झोंपड़ी के सामने खड़ी थी। उसके एक हाथ में चाय से भराहुआ लोटा था और दूसरे में दो गिलास। चाय का लोटा उसने एक मूढ़े पर रखदिया और फिर गिलासों में चाय भरकर हम दोनों को दी।

"यह बेड-टी है हमारी शर्माजी !" पेशकार रामदयाल बोले,"रामदुलारी भाभी की बदौलत यह शौक भी अभी तक चलरहा है और रमला की कृपा से देसी शराब की भी कमी नहीं होती।

इन्ही दो चीजों के सहारे गाड़ी चलतीजारही है इस जीवन की। पैसे की कमी ने जीवन के अंतिम समय में जो स्थिति पैदा की, वह रामदुलारी ने पूरी करदी शर्माजी, यदि मैं यह कहूँ तो क्या आप मान लेंगे मेरी बात ?"

पेशकार रामदयाल की बात सुनकर मैंने मुस्कराकर रामदुलारी की ओर देखा। वह लजाने का अभिनय कररही थी, परन्तु उसकी तीखी दृष्टि कहरही थी, "कितने चालाक हो तुम दीवान जी ! मुझे ठगने के लिए ही तो तुम ये चिकनी-चुपड़ी बातें कररहे हो।"

परन्तु उसने कहा एक शब्द भी नहीं और मैंने भी कोई उत्तर नहीं दिया। रामदुलारी हम दोनों के बीच में पड़े मूढे पर बैठगई। हम दोनों चाय पीनेलगे, तभी हरदयाल भी उधर से निकला। उसने वह दृश्य देखा तो उसके दिल में थोड़ी जलन-सी हुई। उसने झाँका भी नहीं उस ओर और वह सीधा गाँव की ओर चलागया।

पेशकार रामदयाल ने रामदुलारी से पूछा, "इधर कई दिन में आया हूँ मैं। मुझसे पीछे झगड़ा-टंटा तो नहीं किया किसी ने ? तमसे हरदयाल ने कुछ कहा तो नहीं।"

रामदुलारी मुस्कराकर बोली, "वड़ा पागल है हरदयाल आपका। मैंने तो अब वाके मुँह लगना छोड़ दया है। जो वात गाँम का कोई आदमी आपकू नाँय कह सकत ऊ वकत फिरत है। पर जान देओ उन वातन कू।"

रामदुलारी की बात सुनकर पेशकार रामदयाल की त्योरी तनिक चढ़ी परन्तु साथ ही उतर गई। एक लहर-सी आई पानी की सतह पर और वह उसमें विलीन होगई। पानी की सतह फिर साफ थी। पेशकार रामदयाल के चेहरे पर वही मुस्कराहट थी।

रामदुलारी बोली, "ऊ जै जीतराम कू व्याह कै ल्याये हैना तम, ऊ भाग गई। ऊ सब टूम-टाम लै गई वाकी। जीतराम की अन्धी माँ तौ वाई दिन से बुखार में पड़ी है। रात दिन गाली देत है तमकू।"

पेशकार रामदयाल बोले, "अच्छा हुआ रामदुलारी! इसी पाजी ने ताऊ जी के लड़कों के मुकदमें में मेरे विरुद्ध गवाही दी थी। यह वदमाश अदालत में मेरे विरुद्ध खड़ा हुआ था।"

"भौत कोसै है तमकू पेशकार जी!" रामदुलारी बोली।

"कोसने दो हरामजादी को रामदुलारी! मेरी जो दशा है इससे ख़राब और क्या होगी और यदि होगी तो मैं उसे भी हँसतेहुए सहन करूँगा। परंतु अपना विरोध करनेवालों को, जब तक इस वदन में प्राण रहेंगे, सहन नहीं करूँगा। इससे अपने दबदबे में कमी आती है। यदि किसी व्यक्ति का दबदबा उठ जाए तो उनका सब कुछ उठगया। बिना दबदबे के जीवन को मैं लानत का जीवन समझता हूं शर्मा जी!" पेशकार रामदयाल बोले।

मैं चाय पीकर जंगल की ओर चलागया। वहाँ से लौटकर गाँव के कुछ लोगों में जाकर बैठा। उनसे वातचीत की। उनके काम-काज के विषय में विशेष जानकारी प्राप्त की मैंने। गाँव के रहन-सहन और आपसी सम्बन्धों के विषय में जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया। अपने विषय में मैंने किसी को कुछ नहीं बताया।

बातों में पेशकार रामदयाल का भी नाम आया। पेशकार रामदयाल गाँव भर के लोगों की चर्चा के विषय थे। उनके अन्दर सभी की दिलचस्पी थी। एक घबराहट थी सबके दिल में उनकी ओर से। उनके विरुद्ध जवान हिलाते भय लगता था आम लोगों को।

फिर भी एक व्यक्ति ने कहा, "बाबू जी, सच तो यह है कि पूरे गाँव की नाक में नकेल डाली हुई है पेशकार रामदयाल ने। आज इस स्वतन्त्रता के युग में क्या मज़ाल जो कोई नौकर उनसे अपनी मजदूरी पाजाएँ।"

दूसरा बोला, "किसी का लेकर देना तो पेशकार साहब ने सीखा ही नहीं। साधारण आदमी का तो साहस ही नहीं होता उनसे अपना दिया हुआ माँगने का।"

"पुलिस के छटे हुए छाकटे हैं बाबू जी! गाँव भर की जिन्दगी खराब करदी है इन्होंने, जिस दिन से यहाँ आए हैं। एक को एक से लड़ाकर अपना उल्लू सीधा किया है। इनकी इन चाल-पट्टियों में थाने वालों का भी दाल-दलियाँ होतारहता हैं। वे भी जब आते हैं तो इन्हीं की झोंपड़ी पर बैठकर गाँव के मुक़दमे करते हैं और रक़म फटकारकर ले जाते हैं।" तीसरे ने कहा।

चौथा बोला, "यार क्यों बुराई करते हो किसी की! मैं पूछता हूँ आप से, कि पेशकार रामदयाल कितनी बार किस-किस के मकान पर गए गाँव में? तुम लोगों की टाँट खुजाती है तो तुम ही उनके तलवे सहलाने के लिए जाते हो उनके पास और फिर उन्हीं की बुराई करते हो। लज्जा आनी चाहिए आप लोगों को।"

मैंने देखा भी नहीं था ठीक से कि वहीं एक खाट के पाए के पास रमला भी बैठा था। सब की बातें सुनकर वह पहले आदमी की ओर मुँह करके बोला, "क्यूँ चौधरी जी, आपका पेशकार साहब ने कहा लै लिया है जो उनकी बुराई करत हो? आपके लड़का को जब पुलस पकड़ कै लेगई ही तौ आप ही तौ उनके पैरन में जायकै पड़े हे। वै कब बुलाने आये हे आप कूँ?" और इसी तरह उसने सब की क़लई खोली।

बहुत से मुँह से बहुत सी बातें सुनीं। अधिकाँश लोग पेशकार रामदयाल से आतंकित थे। प्यार या श्रद्धा की भावना उनके प्रति गाँव के एक व्यक्ति में भी नहीं थी। परन्तु दबदबा उनका पूरा-पूरा था। हर आदमी क़ाँपता था उनके नाम से और आतंकित रहता था।

किसी का लेकर न देने की बात उनके जीवन में इसलिए आई कि वह अपने खर्चों पर, बहुत कुछ अधिकार करने के पश्चात् भी, पूरा अधिकार न कर सके।

कि एक रहस्य, जो मैं आज तक आपसे छिपाताआरहा हूँ,आज आप पर खोल ही दूं।"

पेशकार रामदयाल ने बड़े ध्यान से अपने कान मेरे मुँह की ओर लगा दिए।

मैं बोला, "आपके जीवन की बहुत-सी बातें जब मैंने सही-सही आपके समक्ष प्रस्तुत की तो आपने समझा कि मैं कोई ज्योतिषी हूँ। परन्तु सच यह है कि मैं आपका छोटा भाई हूँ। मैं, आपके उन्हीं चचा का लड़का हूँ जिन्हें आपने इस गाँव में नहीं बसने दिया। जिनकी बदौलत आप इस पूरे परिवार की ज़मीन के स्वामी बने।

अब मेरा आपकी इस जमीन से कोई लगाव नहीं है। आपने मेरा उपन्यास पूरा करादिया, इसके लिए मैं आभारी हूँ आपका।"

पेशकार रामदयाल की दृष्टि मेरे चेहरे पर पड़ी। उनकी जबान से निकला, "भय्या चचा कहाँ हैं ?"

मैंने कहा, "वहीं हैं जहाँ आप जाने की तैयारी कररहे हैं। वहीं उनसे आपकी भेंट होगी।"

पेशकार रामदयाल को फ़िर जोर की खाँसी उठी। मैंने आगे बढ़कर उन्हें सँभाला। रामदुलारी सामने खड़ी थी और रमला भी दौड़कर वहीं आ-गया था। परन्तु अब सबका आना व्यर्थ था। प्राणपखेरू उड़चुका था। मेरे हाथों में पेशकार रामदयाल का शव था। उनकी भूरी लम्बी मूछें ज्यों-की-त्यों तिड़कीहुई थीं। चेहरे की बनावट में कोई अन्तर नहीं आया था। जब हरदयाल वैद्यजी को लेकर आया तो उनकी आवश्यकता समाप्त होचुकी थी। फिर भी मैंने जेब से एक रुपया निकालकर वैद्यजी को दिया और वह उल्टे ही पैरों लौटगए।

हरदयाल यह सब देखकर घबराउठा। उसके पास दस रुपए भी नहीं थे पेशकार रामदयाल का दाह-कर्म-संस्कार करनेकेलिए। उसे ज्ञात नहीं था कि उसके भाई यों देखते-देखते उसे छोड़कर चलदेंगे।

उसकी चिंता देखकर मैंने उसे एक ओर लेजाकर पूछा, "चिंता की क्या बात है ? तुम भयभीत क्यों हो ?"

"मेरे पास एक रुपया भी नहीं है बाबूजी ! बड़े भाई साहब ने इस घर

को खोखला करके रखदिया। मर तो गए, परन्तु मुझे भी किसी [illegible] का नहीं छोड़गए। इनके ऋण लादगए हैं मुख्तार कि मेरी चार पीढ़ियाँ भी इनसे मुक्त नहीं होसकेंगी।" हरदयाल बोला।

मैंने हरदयाल की ओर देखा और धीरे से कहा, "[illegible] की चिन्ता मत करो। बीस सेर सामग्री, पांच सेर चंदन, दस सेर घी और जो कुछ [illegible] कराते हों उन सबका प्रबन्ध करलो।" इतना कहकर एक सौ रुपए का नोट निकालकर मैंने उनके हाथ पर रखदिया।

पेशकार रामदयाल की अर्थी उसी शान और दबदबे के साथ निकली जिस शान और दबदबे के लिए उन्होंने अपना जीवन लगाया था। गाँव का बच्चा-बच्चा अर्थी के पीछे साथ था।

गाँव का अंग्रेजी बाजा अर्थी के सामने था और विमान बनाकर उसपर सजधज के साथ पेशकार रामदयाल को लिटायागया था। मैंने अन्तिम बार उनका चेहरा देखा और एक बार फिर तब देखा जब वह चिता पर रखे गए।

हरदयाल ने अर्थी से फूँस निकालकर चिता में अग्नि प्रज्वलित की और आग के शोले आसमान को चूमनेलगे। घी और सामग्री की आहुतियाँ दी गईं और गाँव के पंडित ने मन्त्रों का गलत-सलत उच्चारण किया।

उसी समय मैंने हरदयाल को एक ओर बुलाया और जेब से पचास रुपए उसके हाथ में देता हुआ बोला, "मैं जारहा हूँ। इन रुपयों से ब्राह्मणों को जिमादेना।"

हरदयाल ने पचास रुपए लेलिए, परन्तु बोला एक शब्द नहीं।

मैंने कहा, "चिन्ता करने की क्या बात है हरदयाल भाई! अब तुम अपने जीवन को अपने तरीके पर चलाओ। पेशकार रामदयाल चलेगए। अब उनकी पीठ के पीछे कभी किसी से उनकी कोई बुराई न करना, बस मेरा इतना ही कहना है। यदि तुम मानसके तो मुझे प्रसन्नता होगी।"

मैं चलपड़ा। मार्ग में मेरी रामदुलारी से भेंट हुई। [illegible] पर बैठी वह रोरही थी। उसने वैधव्य की पीड़ा का वास्तव में [illegible] किया था। अपने असली पति का तो उसने मुँह भी नहीं देखा था [illegible] मुझे देखकर बोली, "बाबू जी! जारहे हैं आप।"

मैंने कहा, "हाँ भाभी! जारहा हूँ पेशकार साहब की [illegible]

ोच तक लाने के लिए आया था। सो किसी तरह वह यहाँ तक आगए। जहाँ ी मिट्टी थी वहीं ठिकाने लगगई।"

"कहा कधी फेर नाँय आओगे या गाम मैं ?" रामदुलारी ने पूछा।

मैंने कहा, "शायद नहीं।"

"तो अपना पता तौ बतावते जाओ! स्यात यू अभागन ही कधी आपकी ारन मैं आयजाय।"

मैंने जेब से डायरी निकालकर एक पर्चा फाड़ा और उसपर अपना पता लिखकर रामदुलारी को देतेहुआ कहा, "तुम्हें जब कोई कष्ट हो भाभी, तो तुम निसंकोच भाव से मेरे पास चलीआना।"

रामदुलारी ने डबडबाई आँखों से मेरी ओर देखा।

मैं बोला, "भाभी, संकोच न करना। मेरा पता तुम्हारे पास है। जब कोई कठिन समय आए तो अवश्य याद करना। मैं जानता हूँ कि जो गाँव त दिन तक पेशकार रामदयाल के दबदबे के नीचे पिसता और कराहता हा है, वह उनके मरने पर कितना उभरकर सिर पर चढ़ेगा। उसका प्रभाव हरदयाल पर ही अधिक होगा, तुम पर बहुत कम। बहुत कम होने पर भी कुछ अवश्य होगा।

यदि तुम उसे कभी सहन न करसको और शहर आनाचाहो, तो मुझे याद करलेना।"

: ४४ :

रामदुलारी को पेशकार रामदयाल की स्मृति में आँसू बहाते छोड़कर मैं आगे बढ़गया। पैर उठाता था मैं स्टेशन की ओर और मेरा पूरा बदन और मन गाँव की ओर खिचाजा रहा था। मेरी आँखों के सामने रह-रहकर अपने गाँव की पुरानी स्मृतियाँ आरही थीं। गाँव के उन सब पुरखाओं की सूरतें याद आरही थीं, जिन्हें मैंने बचपन में देखा था। गाँव के गलिहारे याद आ रहे थे, जिनमें धूल से भरा मै बचपन में बिना लँगोटी बाँधे घूमता फिरा था। वह मटर का खेत याद आ रहा था जिसमें बैठकर मैं एक दिन

ठी-मीठी कच्ची मटर की फलियाँ खाता रहा था और उनके स्वाद में दरसे जाना भूलगया था। गाँव के दगड़ों में खेली हुई कबड्डी और गुल्ली-ण्डा भी मेरे विचारों में आने से न बचसके। बाग में जाकर कच्ची आँबियाँ छोटा आम) खाने और पेड़ों पर चढ़कर पक्के आमों के लिए पेड़ के गुद्दों को बन्दरों की तरह हिलोरी देना भी मुझे याद आया। कितना प्यारा था वह समय ? न मन में कोई मैल था, न कल की कोई चिन्ता थी, खेल था, कूद थी और थोड़ा पढ़ने-लिखने का काम था।

उसके पश्चात एक दम गाँव से सम्बन्ध छूटगया। पिताजी सर्विस पर शहर चले गए और मैं उनके पास रहनेलगा।

मेरी अपनेताऊ जी के लड़के पेशकार रामदयाल से कभी जीवन में भेंट नहीं हुई। मैं उनकी सूरत से भी अपरिचित था, परन्तु उनके काम मेरे मस्तिष्क पर गहरे खुदेहुए थे।

पेशकार रामदयाल ने मेरे पिताजी के साथ कैसा व्यवहार किया। नौकरी से रिटायर होने पर जब वह गाँव पहुँचे तो उन्हें घर में नहीं घुसने दिया और उस जमीन का एक खूड भी उन्हें न दिया जिसे बचाने के लिए उन्होंने अपने जीवन की सारी कमाई उसपर लगादी थी। उन्होंने सादा-से सादा जीवन व्यतीत कर परिवार को ऋण-मुक्त किया था। पिताजी को पेशकार रामदयाल ने कैसे धोखा दिया, वह पूरा किस्सा मेरे मस्तिष्क में घूम रहा था। उसके पश्चात् गत दो दिन की पूरी घटना मेरी आँखों के समक्ष चित्रित होउठी।

मैंने गाँव की ओर मुँह करके उसे आदरपूर्वक नमस्कार किया और उस भूमि की मिट्टी में से एक चुटकी भरकर अपने मस्तक पर लगाली।

स्टेशन की ओर थोड़ा बढ़ने पर मैंने देखा कि गाँव की सब स्मृतियाँ आप-से-आप ओझल होगईं, परन्तु रामदुलारी अभी भी मेरी आँखों के समक्ष बैठी थी, मेरे साथ-साथ वह आगे बढ़रही थी और उसकी सूरत मेरा पीछा नहीं छोड़रही थी। स्टेशन पहुँचकर मैंने टिकट लेलिया और गाड़ी में बैठ गया परन्तु रामदुलारी की वे अश्रु बरसातीहुई आँखें मेरी आँखों में से न निकल सकीं।

गाड़ी चलपड़ी। मैंने अपनी सीट से उठकर एक बार अपने गाँव की ओर

फिर देखा। दूर तक आँखें फैलाईं, परन्तु कुछ दिखाई न दिया। आँखें साफ़ करने के लिए हथेली आँखों से लगाईं तो देखा मेरी आँखों में आँसू थे। मैंने जेब से रूमाल निकालकर आँखें पौंछलीं और फिर सीट पर जाकर बैठगया।

मेरठ-स्टेशन पर उतरकर मैंने आश्चर्य के साथ देखा कि मेरी आँखों की पुतलियों से रामदुलारी की सूरत ओझल होगई और उसका स्थान गुलाब ने लेलिया।

मुझे गुलाब के वे अन्तिम शब्द याद आए जो उन्होंने कहे थे, "शर्माजी! आपके सुपुर्द कररही हूँ अपने प्राणों को। देखती हूँ जिन्दगी की खबर लाते हो या मुर्दनी की।"

मैं गाड़ी से उतरकर प्लेटफार्म के बैंच पर बैठगया। मेरा सिर चकरा-रहा था। मेरा साहस नहीं होरहा था गुलाब के पास जाने का।

तभी प्लेटफार्म पर दिल्ली की गाड़ी आकर रुकी और उसी के एक डिब्बे से अस्थाना साहब अपना सुनहरी फ्रेम का चश्मा सुधारतेहुए उतरे। मुझे देखकर वह बोले, "शर्माजी! त्याग और क्रान्ति का कोई मूल्य नहीं रहा। मेरे पैसा होता तो मुझे कांग्रेस हाई कमांड से टिकट मिलजाता।"

"टिकट-विकट की बातें फिर करेंगे अस्थानासाहब! इस समय मेरा मूड ठीक नहीं है। पेशकार रामदयाल का देहान्त होगया। मुझे यह सूचना लेकर अभी गुलाब भाभी के पास जाना है।" मैंने गम्भीरतापूर्वक कहा।

मेरी बात सुनकर अस्थाना साहब ज़ोर से खिलखिलाकर हँसपड़े। वह इतने जोर से हँसे कि पहले कभी मैंने उन्हें कभी इस प्रकार हँसते नहीं देखा था।

वह बोले, "मर गया, अच्छा ही हुआ। धूर्त्त कहीं का। बड़ा भयंकर व्यक्ति था। तुम्हारी वजह से मैं इतने दिन उसके साथ अवश्य रहा शर्मा जी, परन्तु हर समय भय रहता था उसका कि पता नहीं क्या करदे।"

मैंने अस्थाना साहब की बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और खड़ाहोकर गेट की ओर चलदिया। मेरे पैर लड़खड़ारहे थे। गेट पार करके मैं ताँगा-स्टैण्ड पर पहुँचा तो देखा कि रामेश्वरीदेवी सामने खड़ी थीं।

मुझे देखकर वह मुस्करातीहुई बोलीं, "कल संध्या को आपके मकान पर गई थी। आपकी पत्नी से भेंट हुई। उन्होंने बताया कि आप अपना उपन्यास पूरा करने के लिए, उसके सही चित्र अंकित करने को गाँव गएहुए हैं। क्या

बेलीबाजार में गुलाब के मकान के नीचे तागाँ रोककर उससे उतरगया। मैंने ऊपर देखा तो चिक के अन्दर से गुलाब की दो आँखें झाँकती दिखाई दीं। मेरे पैर भारी होगए। जीने पर चढ़ना मेरे लिए कठिन होगया। किसी प्रकार साहस करके मैं ऊपर पहुँचा। दीवानखाने में जाकर खड़ा ही हुआ था कि गुलाब भाभी सामने आगईं।

मेरी सूरत देखते ही गुलाब भाभी ने समझलिया कि उसका प्रेमी संसार से विदा होगया। मैंने देखा वह काँपरही थीं। उन्होंने प्रश्नवाचक दृष्टि से मेरी ओर देखा।

मैंने डबडवाए नेत्रों से गुलाब के चेहरे पर दृष्टि डाली। हम दोनों की आँखों के एक साथ आँसू टपककर गालों पर रुकगए।

गुलाब भाभी खड़ी न रहसकीं। उसकी आँखों के सामने अन्धेरा छागया। उनके जीवन में अँधेरा होगया।

बहुत गम्भीरता के साथ उन्होंने जमीन पर बैठकर अपने हाथों की चूड़ियाँ ... और रुँधे कंठ से बोलीं, "शर्माजी! यह पेशकार साहब का सुहाग उन्हीं की याद में उतारकर इस जिस्म से अलग करती हूँ।"

उन्होंने अपनी माँग का सिंदूर पोंछडाला।

मुझसे देखा नहीं गया वह दृश्य। मैं बोला, "भाभी दिल पर पत्थर रखो और परमात्मा का ध्यान करो। वही व्याकुल हृदय को शान्ति प्रदान करने वाला है। मनुष्य की लाचारी का यही समय है और यही चीज है जिसे मनुष्य रोक नहीं सकता।"

गुलाब भाभी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

मैंने एक घण्टे पश्चात् वहाँ से विदाली।

o o o

गुलाब भाभी मेरे परिवार की एक सदस्य बनगईं। मेरे बच्चों को वह अपना बच्चा मानती थीं और मेरी पत्नी को वह उसकी माँ से भी अधिक प्यार करती थीं।

रामदुलारी भी अब गुलाब के ही पास आकर रहनेलगी थी। मेरे बच्चे रामदुलारी से बहुत हिलगए थे और वह भी उन्हें बड़ा प्यार करती थी।